नागा भाषा-भाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याएँ

नागा भाषा-भाषी छात्रों
की
हिन्दी सीखने की समस्याएँ

डॉ. रामकृपाल कुमार
एम.ए., पी-एच.डी.
प्राचार्य
मिजोरम हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, आइजोल

प्रकाशक
कुमार प्रकाशन, वैशाली

प्रकाशक :

कुमार प्रकाशन

भगवानपुर, वैशाली

प्रथमावृत्ति, १९८४ : १००० प्रतियाँ

●

मूल्य : ११५) रुपये

मुद्रक :

जैनसन्स प्रिन्टर्स

४/४५ तकिया वजीरशाह, सेठ गली, आगरा-३

प्राक्कथन

अहिन्दी-भाषी प्रदेशों में हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में अध्ययन-अध्यापन का विषय है। भाषा के विभिन्न स्तरों पर अध्येताओं के सामने द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखने की समस्याएँ उपस्थित होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं पर ही आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन को पाँच अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। पहले अध्याय में भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में नागा-भाषाओं का सामान्य परिचय दिया गया है। हिन्दी और नागा-भाषाओं में समानताओं और असमानताओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए नागालैण्ड के सन्दर्भ में हिन्दी-शिक्षण की स्थिति पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अन्तिम चरण में प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा के अन्तर्गत समस्या का स्पष्टीकरण, अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य, अध्ययन की सीमा, प्रयुक्त उपकरण और तकनीक पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरे अध्याय में नागा-भाषाओं की स्वनिम व्यवस्था, हिन्दी भाषा की स्वनिम व्यवस्था की सामान्य चर्चा के साथ-साथ नागाभाषी छात्रों की स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण किया गया है। अन्त में निष्कर्ष के रूप में त्रुटियों की प्रवृत्तियों के आधार पर उच्चारणिक शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

तीसरे अध्याय में नागा-भाषाओं तथा हिन्दी की नामिक रूप-रचना, क्रिया-रूप-रचना की सामान्य चर्चा के साथ नागाभाषी छात्रों की तत्सम्बन्धी त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष के रूप में त्रुटियों की प्रवृत्तियों के आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का उल्लेख किया गया है।

चौथे अध्याय में नागा-भाषाओं तथा हिन्दी की वर्तनी व्यवस्था की सामान्य चर्चा के साथ नागाभाषी छात्रों की वर्तनीगत त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष के रूप में त्रुटियों की प्रवृत्तियों के आधार पर वर्तनीगत शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

पाँचवें अध्याय में त्रुटियों के निष्कर्ष तथा त्रुटियों के कारणों पर प्रकाश डालते हुए आवश्यक सुझाव दिये गये हैं।

इस शोध-कार्य के लिए आवश्यक सामग्री तथा सूचनाओं के संकलन में नागालैण्ड के विद्यालय के हिन्दी अध्यापकों और छात्रों का योगदान उल्लेखनीय है। वे ही प्रेरणा के स्रोत तथा प्रथम सहयोगी रहे हैं। अत: उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना शोधकर्ता का प्रमुख कर्तव्य है।

केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग के तत्कालीन प्रभारी और प्रोफेसर डॉ. दामोदर ठाकुर तथा उनके सभी सहयोगियों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने पुस्तकालय की पुस्तकों तथा अनेक चर्चा-गोष्ठियों के द्वारा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से प्रस्तुत अध्ययन में सहायता पहुँचाई है। डॉ. राम पदार्थ शर्मा (प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, नेहू, शिलांग) का इस शोध-कार्य में निकट का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के भूतपूर्व निदेशक डॉ. गोपाल शर्मा के प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य है क्योंकि उन्होंने मेरी रुचि के अनुसार शोध-कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. बाल गोबिन्द मिश्र, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रति शोधकर्ता कृतज्ञ और श्रद्धावनत है क्योंकि समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों द्वारा उन्होंने शोधकर्ता का उत्साह बढ़ाया है।

शोधकर्ता डॉ. वि० कृष्णस्वामी अयंगार, रीडर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रति हृदय से आभारी है। आपने समुचित सुझावों के द्वारा शोधकर्ता को नवीन दृष्टि प्रदान की।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रोफेसर डॉ. रमानाथ सहाय, डॉ. न० वी० राजगोपालन तथा डॉ. अमर बहादुर सिंह के प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य हो जाता है। उन्होंने समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों द्वारा शोधकार्य में सहायता पहुँचाई है।

मैं पूजनीया डॉ. मनोरमा गुप्त के प्रति सादर आभार प्रकट करता हूँ क्योंकि आपकी असीम कृपा और स्नेह-भाव तथा लगातार मार्गदर्शन से यह शोधकार्य सम्पन्न हो सका है।

अन्त में, मैं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिसके अनुदान की सहायता से इस शोधकार्य को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना सम्भव हो सका।

— राम कृपाल कुमार

आमुख

अन्य भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में भाषिक व्याघात की संकल्पना ने सम्बद्ध सैद्धान्तिक अध्ययन को एक नयी दिशा प्रदान की है। अन्य भाषा-अधिगम की प्रक्रिया में मातृभाषा के व्याघात की इस संकल्पना ने व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान को एक महत्व-पूर्ण अध्ययन-क्षेत्र बना दिया है। इस प्रक्रिया में मातृभाषा और लक्ष्य-भाषा के व्यतिरेक के आधार पर सम्भावित पाठ्य-बिन्दुओं का निर्धारण किया जाता है। इस सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य में अन्य भाषा-शिक्षण कराते समय यह अनुभव किया गया कि व्यतिरेक के आधार पर निर्धारित पाठ्य-बिन्दु सदैव शिक्षार्थियों की समस्त अधिगम त्रुटियों की व्याख्या नहीं कर पाते। भाषावैज्ञानिक अध्ययन ने परम्परागत त्रुटि-विश्लेषण के क्षेत्र को एक नया परिप्रेक्ष्य दिया है। अन्य भाषा-अधिगम की प्रक्रिया के अध्येताओं ने भाषायी त्रुटियों का अधिक्रमीय स्तरण देखकर अन्तरभाषा की क्रमिकताओं की संकल्पना की है। इस प्रकार भाषा त्रुटि-विश्लेषण का अद्यतन विकास शिक्षाशास्त्र एवं भाषाविज्ञान दोनों के परिप्रेक्ष्यों से परिपोषित होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और भाषायी त्रुटि-विश्लेषण की सैद्धान्तिक भूमिकाओं को आधार बनाते हुए नागा-भाषाभाषी छात्रों के द्वारा हिन्दी-अधिगम में की जाने वाली भाषायी त्रुटियों का विशद विवेचन किया गया है। विद्वान शोधक ने अपने अध्ययन के लिए जो सामग्री एकत्र की है उसे वस्तुनिष्ठ सामग्री-संकलन-प्रविधियों का पालन करते हुए एकत्र किया गया है। एकत्र सामग्री वास्तविक भाषा-व्यवहार के अधिक से अधिक समीप हो, इस बात को ध्यान में रखते हुए ही विभिन्न संकलन-विधियों का प्रयोग किया गया है। पूर्व-निर्धारित एवं व्याख्या-यित विश्लेषण-विधियों का परिपालन करते हुए शोधक ने समस्त तथ्यों को वर्गीकृत और तालिकाबद्ध किया है और इसी विश्लेषण के आधार पर सुनिश्चित परिणाम निकाले हैं। यह अध्ययन शोध-प्रक्रिया की वस्तुनिष्ठता, विश्लेषण की क्रमबद्धता और स्पष्टता एवं परिणामों के प्रस्तुतीकरण, सभी दृष्टियों से एक स्तुत्य अध्ययन है। इस अध्ययन को नागा-भाषाभाषियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए अध्ययन-सामग्री तैयार करने एवं अध्यापन कराने दोनों के क्षेत्रों में सफलतापूर्व अनुप्रयुक्त किया जा सकता है। डॉ. कुमार ने सुदूर उत्तर-पूर्व की नागा-भाषाओं के अध्ययन के द्वारा उनके हिन्दी-अधिगम की त्रुटियों का विश्लेषण प्रस्तुत कर उन दुर्गम क्षेत्रों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन को एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान एवं भाषा-शिक्षण दोनों के लिए समान रूप से उपादेय होगी और लेखक इस क्षेत्र में भविष्य में और अधिक महत्वपूर्ण एवं आधारभूत शोध के द्वारा हिन्दी की श्रीवृद्धि करेगा।

निदेशक,
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

—बाल गोविन्दमिश्र

विषय-सूची

अध्याय — पृष्ठ

१. प्रस्तावना

अध्याय | पृष्ठ

अध्याय पृष्ठ

अध्याय | पृष्ठ

अध्याय पृष्ठ

अध्याय पृष्ठ

अध्याय पृष्ठ

नागालैंड
अंगामी
आओ
सेमा
लोथा
अ
स
म
मणिपुर
अरुणाचल प्रदेश
र्मा
ब

अध्याय 1

१.१ भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में नागा भाषाएं।

१.२ हिन्दी और नागा-भाषाओं में समानताएं और असमानताएँ।

१.३ वर्तमान भारत में अन्य भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण। (नागालैण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

१.४ प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा।

१

१.१ भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में नागा-भाषाएँ

प्रस्तुत अध्ययन नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं से सम्बन्धित है। नागा-भाषाओं के क्षेत्र, उनके प्रयोक्ता तथा भाषा की प्रकृति की चर्चा करने से पहले भारतीय भाषाओं का संक्षिप्त परिचय तथा हिन्दी भाषा के क्षेत्र एवं उनके बोलने वालों का सामान्य परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

१.१.१ भारत की भाषाएँ तथा उनके बोलने वाले

भारत एक बहुभाषी देश है। संसार के भाषा परिवारों में से चार भाषा-परिवार (भारोपीय, द्रविड़, चीनी तथा आस्ट्रो-एशियाटिक) के लोग भारत में रहते हैं। भारतीय जनगणना १९७१ ई. के अनुसार प्रमुख, अर्ध-प्रमुख एवं स्थानीय भाषाओं का कुल योग १६६२ है।

भारत के मुख्य भाषा परिवार, उनकी प्रमुख भाषाएँ, उनका क्षेत्र तथा उनके बोलने वालों की संख्या सहित विवरण निम्नलिखित है :

१.१.१.१ भारोपीय परिवार

भारोपीय परिवार की ही एक शाखा भारतीय आर्य भाषा उप-परिवार है। देश की लगभग ७५ प्रतिशत जनसंख्या इस भाषा-परिवार के अन्तर्गत आती है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की १५ भाषाओं में से ११ भाषाएँ इसी परिवार के अन्तर्गत आती हैं। शेष चार भाषाओं का उल्लेख द्रविड़ परिवार के अन्तर्गत किया गया है—

भाषाएँ	क्षेत्र	बोलने वालों की संख्या[1]
असमिया	असम	६८,०३,४६३
बंगला	पश्चिम बंगाल	३,३७,५४,४०८
गुजराती	गुजरात	२,०१,०५,८४६
मराठी	महाराष्ट्र	३,२७,६७,४२२
औड़िया	उड़िसा	१,५६,१०,७३६
पंजाबी	पंजाब	६८,६८,२७६
सिन्धी	विच्छिन्न रूप में उत्तरी भारत में	६,७७,०२३
कश्मीरी	कश्मीर	१६,१४,४४६
उर्दू	विच्छिन्न रूप में भारत के विभिन्न प्रदेशों में	२,३३,२३,०४७
संस्कृत	शास्त्रीय भाषा के रूप में लगभग सम्पूर्ण देश में	
हिन्दी	हिमाचल प्रदेश, पंजाब का कुछ भाग, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार	१६,२५,७७,६१२

१.१.१.२ द्रविड़ परिवार

भारत के चार भाषा परिवारों में बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से द्रविड़ भाषा परिवार का स्थान दूसरा है। भारतीय जनगणना १६७१ के अनुसार इसके बोलने वाले १०,७४,१०,८२० हैं जो भारत की आबादी का २४·४७ प्रतिशत है। इनकी चार मुख्य भाषाएँ—तेलुगु (आन्ध्र—४,४७,०७,६६७), तमिल (तमिलनाडु—३,५५,६२,७६४), कन्नड़ (कर्नाटक—२,१५,७५,०१६) तथा मलयाल्म (केरल—२,१६,१७,४३०) हैं।

१.१.१.३ तिब्बती-चीनी भाषा परिवार

तिब्बती-चीनी भाषा परिवार के दो मुख्य उप-परिवार—(१) सियामी-चीनी, तथा (२) तिब्बती-बर्मी भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं।

सियामी-चीनी उप-परिवार के अन्तर्गत केवल ताई समुदाय की एक ही भाषा 'खाम्ती' है जिसके बोलने वाले मात्र ३०० हैं जो अरुणाचल प्रदेश के निवासी हैं।

तिब्बती-बर्मी उप-परिवार की भाषाएँ अग्रलिखित आरेख से स्पष्ट हैं :

---

१ बोलने वालों की संख्या भारतीय जनगणना १६७१ के अनुसार दी हुई है। अन्यत्र भी भारतीय जनगणना १६७१ का ही अनुसरण किया गया है।
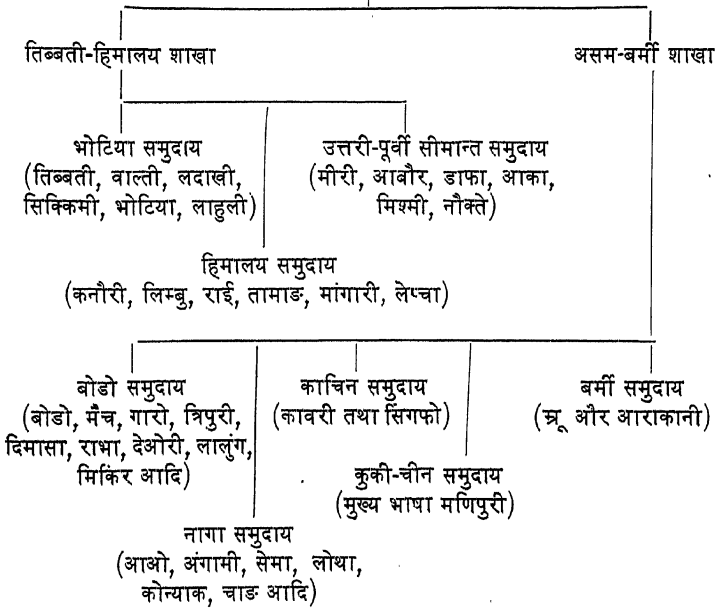
१.१.१.४ आस्ट्रिक परिवार

इस भाषा परिवार की दो शाखाएँ भारत में बोली जाती हैं—मुण्डा शाखा तथा मौन-ख्मेर शाखा।

मुण्डा शाखा—इसके अन्तर्गत मुण्डा समुदाय की भाषाएँ आती हैं। इनमें सन्थाली, मुण्डारी, हो, भूमिज, कोरकू, खड़िया और सोरा भाषाएँ सम्मिलित हैं। मुण्डा समुदाय की भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग ५८ लाख है।

मौन-ख्मेर शाखा—इसके अन्तर्गत खासी और निकोबारी समुदाय की भाषाएँ आती हैं। इनमें खासी भाषा मुख्य है जो मेघालय राज्य की खासी हिल्स जिले की भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या ३,८४,००६ है। निकोबारी समुदाय की भाषाएँ मुख्यतः निकोबार द्वीप में बोली जाती हैं इनके बोलने वालों की संख्या लगभग १४ हजार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारतीय संविधान में उल्लिखित १५ भाषाओं के बोलने वालों की संख्या भारत की कुल आबादी का ९० प्रतिशत है। शेष १० प्रतिशत में अन्य सभी भाषाएँ और स्थानीय बोलियाँ आती हैं।

१.१.२ हिन्दी भाषा

हिन्दी भारोपीय परिवार के अन्तर्गत भारतीय आर्य भाषा परिवार की सदस्या है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी संसार की भाषाओं में अपना तीसरा स्थान रखती है। उत्तरी चीनी और अंग्रेजी के बाद इसका ही स्थान है। (चाटुर्ज्या—६४-६५)। इस दृष्टि से हिन्दी का स्थान भारत में सर्वोच्च है।

'हिन्दी' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से दो अर्थों में किया जाता है, विस्तृत और संकुचित।

विस्तृत अर्थ में हिन्दी, हिन्दी प्रदेश में बोली जाने वाली ब्रज, अवधी, मैथिली भोजपुरी आदि प्रायः सत्रह बोलियों का द्योतक है।

संकुचित अर्थ में हिन्दी खड़ीबोली साहित्यिक हिन्दी का परिचायक है।

शिक्षा के सन्दर्भ में खड़ीबोली हिन्दी का रूप ही प्रचलित है। विशिष्ट उद्देश्यों के अनुरूप हिन्दी के पुनः तीन रूप मिलते हैं—

१. शिक्षा का माध्यम—मातृभाषा हिन्दी।
२. राजभाषा या क्षेत्रीय भाषा हिन्दी।
३. राष्ट्रभाषा हिन्दी।

हिन्दी के इन उद्देश्यपरक रूपों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

(१) **शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी**—हिन्दी-भाषी प्रदेशों बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा में मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षा का माध्यम है।

(२) **राजभाषा या क्षेत्रीय भाषा हिन्दी**—हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी राजभाषा के पद पर सुशोभित है। सभी सरकारी और गैर-सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग होता है। अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी अभी राजभाषा का स्थान नहीं ले सकी है।

(३) **राष्ट्रभाषा हिन्दी**—राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी केवल भारतीय जन-समुदाय द्वारा बोली ही नहीं जाती वरन् सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं, समाचार-पत्र तथा पत्रिकाओं, चल-चित्रों, व्यावसायिक क्षेत्रों एवं राजनैतिक आन्दोलनों की भी भाषा रही है।

क्षेत्र-विस्तार के कारण हिन्दी में विविधता भी आ गयी है जो इसकी व्यवस्था को लोचदार बनाये हुए है। सरसता, सुबोधता तथा सर्वग्राहिकता की प्रवृत्ति के कारण यह निरन्तर समृद्ध होती जा रही है। अपनी समृद्ध साहित्यिक परम्परा तथा संप्रेषणीयता के फलस्वरूप हिन्दी भारत में ही नहीं, विदेशों में भी अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है।

१.१.२.१ हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भाषा के क्षेत्र के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश, पंजाब का कुछ भाग, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार प्रदेश आते हैं। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं जिनके अन्तर्गत मुख्यत: १७ बोलियाँ हैं।

१.१.२.२ हिन्दी की उपभाषाएँ तथा उनके बोलने वाले

पाँचों उपभाषाओं, उनकी बोलियों तथा उनके बोलने वालों की संख्या (कोष्ठक में) निम्नलिखित है :

(१) **पश्चिमी हिन्दी**—खड़ीबोली (५६,८६,१२८), ब्रज (७६,१८६), हरियाणी, बुँदेली (२२,०६५), कन्नौजी।

(२) **पूर्वी हिन्दी**—अवधी (५,२८,२८१), बघेली (५,५७,०३४), छत्तीसघड़ी (२६,६२,०३८)।

(३) **राजस्थानी**—पश्चिमी राजस्थानी (६२,४२,४४६), उत्तरी राजस्थानी (४८,४२७), पूर्वी राजस्थानी (८१,५१४), दक्षिणी राजस्थानी (११,४२,५७८)।

(४) **पहाड़ी**—पश्चिमी पहाड़ी (६,५६,५५६), मध्यवर्ती पहाड़ी (१८,३६,८२१)।

(५) **बिहारी**—भोजपुरी (७६,६४,७५५), मगही (२६,१८,६०२), मैथिली (४६,८४,८११)।

१.१.२.३ विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी की स्थिति

हिन्दी-भाषी प्रदेशों के अलावा हिन्दी भारत के विभिन्न राज्यों में बोली और समझी जाती है। भारत की पूरी आबादी के २६·६७ प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। भारतीय जनगणना १९७१ के अनुसार भारत के प्रत्येक राज्य में हिन्दी बोलने वालों की संख्या तथा कुल आबादी का प्रतिशत इस प्रकार है—

विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी बोलने वालों की संख्या

राज्य	हिन्दी बोलने वालों की संख्या	कुल आबादी का प्रतिशत
आन्ध्र प्रदेश	१,८६,०४८	०·४३
असम, मेघालय	७,५७,०२३	४·७४
बिहार	१,९७,८७,४२६	३५·११
गुजरात	३,३७,६६२	१·२६
जम्मू और कश्मीर	४२,७६६	०·९३
केरल	१०,२६५	०·०५
मध्यप्रदेश	३,२८,७३,०७९	७८·९२

महाराष्ट्र	१७,६०,००८	३·४६
मणिपुर	६,७०२	०·६०
मैसूर	१,२६,८४२	०·४४
नागालैण्ड	१४,४४६	२·८०
उड़ीसा	२,४०,५५२	१·१०
पंजाब, हिमाचल प्रदेश हरियाणा तथा चण्डीगढ़	१,३१,६६,५४८	४८·२३
राजस्थान	१,५६,७२,४४५	६०·८५
तमिलनाडु	६३,७६०	०·१५
त्रिपुरा	२२,४७१	१·४४
उत्तर प्रदेश	७,१६,२४,०७१	८१·४२
पश्चिम बंगाल	२४,७४,६८६	५·५१
अंडमान निकोबार	१३,६८२	१२·१६
अरुणाचल प्रदेश	११,१०३	२·३७
दादर और नगरहवेली	१,१०६	१·५०
दिल्ली	३०,६०,६८१	७५·२७
गोवा-दमन-दिउ	१०,७०१	१·२५
लक्षदीप	५८	०·१८
पाण्डिचेरी	८६५	०·१६

१.१.३ नागा-भाषाएँ, उनकी उपभाषाएँ, उनका क्षेत्र तथा जनसंख्या

नागा-भाषाएँ मुख्यतः नागालैण्ड में बोली जाती हैं। नागालैण्ड १८८१ ई. से १६५७ ई. तक असम राज्य के अन्तर्गत 'नागा हिल्स' जिले के नाम से जाना जाता था। १६५७ ई. से १६६३ ई. तक यह 'नागा हिल्स और तुएनसाङ एरिया' के नाम से प्रसिद्ध रहा। पहली दिसम्बर १६६३ ई. को 'नागालैण्ड' राज्य के रूप में घोषित हुआ। इसका क्षेत्रफल ६३६६ वर्ग मील है तथा भारतीय जनगणना १६७१ ई. के अनुसार जनसंख्या ५,१६,४४६ है।

नागालैण्ड में अब सात जिले हैं—कोहिमा, मोकोकचूङ, तुएनसाङ, फेक, वोखा, जुनहेबोतो तथा मोन। कोहिमा नागालैण्ड की राजधानी है जो समुद्र-तल से ४८०० फीट की ऊँचाई के एक सुरम्य पहाड़ी पर बसी हुई है।

१.१.३.१ नागा-भाषाएँ

नागा-भाषाएँ तिब्बती-चीनी परिवार के अन्तर्गत तिब्बती-बर्मी उप-परिवार की भाषाएँ हैं। नागा भाषा समुदाय बोलियों की एक लम्बी शृंखला से निर्मित है। इन बोलियों में पर्याप्त भिन्नताएँ वर्तमान हैं। नाथन ब्राउन (१८३७) ने इन नागा-

भाषाओं को तीन वर्गों—'नोक्ते', 'कोन्याक' और 'आओ'—में विभाजित किया। सर. जी. ग्रियर्सन (१९०३) ने नागा-भाषाओं के वर्गीकरण का प्रथम स्मरणीय कार्य किया। आर. शेफर (१९५७) ने उत्तरी नागा-भाषाओं का वर्गीकरण किया। जी. ई. मेरीसन (१९६७) का उत्तर-पूर्वी भारत के नागा-भाषाओं का वर्गीकरण अपेक्षाकृत आधुनिक तथा प्रारूपात्मक (Typological) अध्ययन पर आधारित है।

नागालैण्ड में बोली जाने वाली कुल बोलियों की संख्या लगभग २२ है—आओ, अंगामी, सेमा, लोथा, कोन्याक, चोक्री, चाङ, साङ्तम, फोम, यीमचूङ्र, कुकी, रेङ्मा. खेजा, रोङ्मेई, जैमी, लियाङ्मेइ, पोचुरी, खियाङ्गण, कचारी, माओ, माकवारे और तिरखिर।

नागाभाषी परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा के एक मिलते-जुलते रूप का प्रयोग करते हैं, जिसे नागामिज की संज्ञा दी जाती है। नागामिज एक पिजिन (Pidgin) भाषा है जो सम्पूर्ण नागालैण्ड में बोली और समझी जाती है। अपढ़ या कम पढ़े-लिखे लोगों के बीच यह सम्पर्क भाषा का काम करती है। आकाशवाणी, कोहिमा से इस भाषा में समाचार प्रसारित होता है। यह असमी, बंगला, हिन्दी तथा नागा भाषाओं के सम्मिश्रण से निर्मित एक खिचड़ी भाषा है।

१.१.३.२ नागा उपभाषाएँ, उनका क्षेत्र तथा जनसंख्या

भौगोलिक आधार पर नागालैण्ड की २२ नागा-भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :

वर्ग १—आओ, लोथा, साङ्तम, यीमचुङ्र, खियाङ्गण, माकवारे और तिरखिर।

वर्ग २—अंगामी, सेमा, कचारी, कुकी, जैमी, लियाङ्मेइ, रोङ्मेइ, रेङ्मा, चाक्री, खेजा, पोचुरी और आओ।

वर्ग ३—कोन्याक, फोम और चाङ।

इन २२ भाषाओं में आओ, लोथा, अंगामी एवं सेमा ही प्रमुख हैं क्योंकि शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में अन्य भाषाओं की अपेक्षा इनकी प्रमुखता है। प्रस्तुत अध्ययन में इन्हीं चार भाषाओं को आधार मानकर शोधकार्य किया गया है। इस दृष्टि से इनका परिचय प्राप्त करना उचित होगा।

१.१.३.२.१ आओ भाषा

नागा-भाषाओं में आओ भाषा का प्रमुख स्थान है। 'आओ' शब्द का अर्थ 'गया' होता है जो आओबा (Aoba) क्रिया (जाना) का भूतकालिक रूप है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से कोन्याक भाषा के बाद इसका दूसरा स्थान है। आओ भाषा बोलने वाले आओ या आओर कहलाते हैं तथा नागालैण्ड के मोकोकचूङ जिले के लगभग ६३ गाँवों में बसे हुए हैं। आओ भाषी लोग अपने निवास-क्षेत्र को 'आओ

लिमा' (Ao lima) कहते हैं। 'लिमा' शब्द का अर्थ 'देश' या 'प्रदेश' है। 'आओ' लोगों के मुख्य गाँव मेलोङ्यीमसेन, लोङ्पा, मोपाङ्चुकिन, ऊङ्मा, तुली और चाङ्की हैं। उङ्मा इनका सबसे बड़ा गाँव है। अधिकांश आओ ईसाई धर्मावलम्बी हैं।

आओ क्षेत्र के दक्षिण-पूर्व में साङ्तम, दक्षिण में सेमा, दक्षिण-पश्चिम में लोथा, उत्तर-पूर्व में कोन्याक तथा पूर्व में फोम और चाङ् भाषा-भाषी हैं।

आओ भाषा की दो मुख्य बोलियाँ हैं मुङ्सेन और चोङ्ली। मुङ्सेन मोकोकचूङ् गाँव में मानक रूप में प्रयुक्त होती है। इसमें लोकगीतों की समृद्ध परम्परा है।

चाङ्की (मुख्य रूप से चाङ्की गाँव की बोली) मुङ्सेन की एक उपबोली है जो आओ क्षेत्र के दक्षिण-पूर्व में बोली जाती है।

चोङ्ली आओ क्षेत्र के उत्तरी और पूर्वी भाग में आधे से अधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाती है। ईसाई धर्म-प्रचारकों ने इसी बोली के माध्यम से धर्म-प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि चोङ्ली का प्रचार धीरे-धीरे समस्त आओ क्षेत्र में हो गया। आज चोङ्ली ही आओ की साहित्यिक भाषा है। शिक्षा का माध्यम यही चोङ्ली है तथा मैट्रिकुलेशन तक के लिए मातृभाषा के रूप में स्वीकृत है। आओ भाषा के इसी रूप को प्रस्तुत अध्ययन का आधार माना गया है।

१.१.३.२.२ लोथा भाषा

लोथा वोखा जिले के निवासियों की मातृभाषा है। इसके बोलने वाले लोथा कहे जाते हैं। लोथा-भाषी अपने को 'क्योन' (Kyon) कहते हैं जिसका अर्थ 'आदमी' होता है। असमियों ने सबसे पहले इनके लिए 'ओता' (Ota) का प्रयोग किया जिसका अर्थ 'लता' होता है। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने इसका उच्चारण 'ल्होता' (Lhota) किया। स्वतन्त्रता के बाद यही 'ल्होता' आज के लोथा के रूप में परिवर्तित हो गया।

लोथा भाषियों के उत्तर में आओ, पूर्व में सेमा, पश्चिम में मिकिर और अंगामी तथा दक्षिण में रेङ्मा भाषा-भाषी हैं। भारतीय जनगणना १९७१ ई. के अनुसार लोथा बोलने वालों की संख्या ३६,९४९ है।

लोथा की दो बोलियाँ हैं—लोयो (Loyo) और न्ड्रेङ (Ndreng)। लोयो दोयाङ नदी के उत्तर में तथा न्ड्रेङ दोयांग नदी के दक्षिण में बोली जाती है। वोखा जो लोथा का जिला मुख्यालय है, न्ड्रेङ के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यही बोली शिक्षा का माध्यम है तथा इसी में पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण हुआ है। लोथा भाषी क्षेत्र में लोथा छठवीं कक्षा तक मातृभाषा के रूप में तथा आठवीं कक्षा तक अतिरिक्त भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

१.१.३.२.३. अंगामी भाषा

नागालैण्ड के कोहिमा जिले में बोली जाने वाली भाषाओं में अंगामी का सर्व-

प्रमुख स्थान है। यह अंगामी कबीले की मातृभाषा है। कोहिमा जिले में बसने वाले चाखेसांग, रेंगमा, पोचुरी, जेलियांग इत्यादि कबीले भी अंगामी भाषा को समझ और बोल लेते हैं। कोहिमा जिले के नागाओं की सम्पर्क भाषा के रूप में अंगामी को स्वीकार किया जा सकता है। यह भाषा पश्चिम में दीमापुर तक, पूर्व में चिचामा तक बोली जाती है।

अंगामी क्षेत्र के दक्षिण में माओ और तांखुल नागा, दक्षिण-पश्चिम में जेमी, पश्चिम में असम राज्य के मिकिर, उत्तर-पूर्व में सेमा और पूर्व में चोक्री भाषाभाषी हैं। ये अंगामी कोहिमा तथा कोहिमा के चारों तरफ कई गाँवों में घने रूप से बसे हुए हैं। 'कोहिमा बस्ती' इनका सबसे बड़ा गाँव है जो कोहिमा शहर के समीप है। भारतीय जनगणना १९७१ ई. के अनुसार अंगामी बोलने वालों की संख्या ४३,५९९ है।

अंगामी भाषा की कई बोलियाँ हैं। प्रत्येक गाँव की बोली का अपना विशेष स्वरूप है तथापि हर एक गाँव का आदमी दूसरे गाँव की बोली को अच्छी तरह समझ लेता है। अंगामी भाषा की तीन मुख्य बोलियाँ चोक्री, खोनोमा और कोहिमा हैं। चाक्री को अब पूर्वी अंगामी के रूप में एक भिन्न भाषा माना जाने लगा है।

ग्रियर्सन ने भारतीय भाषा सर्वेक्षण में श्री मैकावे (१८८७) के व्याकरण के आधार पर अंगामी व्याकरण की रूपरेखा प्रस्तुत की है। श्री हट्टन (१९२१) ने भी अपनी पुस्तक 'अंगामी नागा' में श्री मैकावे जी के व्याकरण को आधार मानकर अंगामी व्याकरण पर सामग्री प्रस्तुत की है। किन्तु श्री मैकावे जी का व्याकरण मुख्य रूप से जोत्समा, खोनोमा और मोजेमा गाँव की बोलियों पर आधारित है। आज खोनोमा बोली अंगामी की मानक बोली नहीं है। अंगामियों ने कोहिमा बोली को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया है। सभी प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ कोहिमा बोली में ही हैं। प्रस्तुत अध्ययन का आधार भी यही बोली है।

अंगामी भाषा का अध्यापन पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक मातृभाषा के रूप में होता है।

१.१.३.२.४ सेमा भाषा

सेमा एक नागा भाषा है तथा इसके बोलने वाले भी सेमा कहे जाते हैं। सेमा शब्द अपने मूल रूप 'समी' (Sumi) से निकला है। 'समी' एक यौगिक शब्द है। इसमें दो शब्द 'स' (Su) और 'मी' (mi) है। 'स' शब्द 'बहुत' का पर्याय है और 'मी' शब्द का अर्थ आदमी होता है। इसी प्रकार 'समी' शब्द का अर्थ बहुत आदमी होता है।

सेमा नागालैण्ड के केन्द्र भाग जुनहेबोतो जिले की भाषा है। इसके उत्तर में आओ, दक्षिण में अंगामी, पूरब में यीमचुंगर तथा पश्चिम में लोथा हैं, सांगतम और

रेंगमा क्रमशः इनकी उत्तरी और दक्षिणी-पश्चिमी कोण में सटे हुए हैं। भारतीय जनगणना १९७१ ई. के अनुसार सेमा बोलने वालों की संख्या ६५,२२७ है।

सेमा भाषा की मुख्य चार बोलियाँ हैं —

(१) दोयांग नदी के तट पर बसे लेजामी और उसके चारों तरफ बोली जाने वाली पश्चिमी बोली।

(२) खेजा क्षेत्र के अन्तर्गत चिजेमी गाँव में बोली जाने वाली पूर्वी सेमा।

(३) चिजोलिमी गाँव और उसके चारों तरफ बोली जाने वाली 'चिजोलिमी बोली'।

(४) जुनहेबोतो शहर में तथा उसके चारों तरफ बोली जाने वाली 'केन्द्रीय बोली'।

पूर्वी सेमा पर खेजा का प्रभाव है। 'केन्द्रीय बोली' ही सेमा की मानक बोली है तथा सेमा भाषा के सभी प्रकाशन इसी बोली में हैं। प्रस्तुत अध्ययन का आधार यही केन्द्रीय बोली है।

जुनहेबोतो जिले के सभी विद्यालयों में कक्षा पाँचवीं तक प्रायः सभी विषयों की शिक्षा का माध्यम सेमा भाषा है। राज्य सरकार ने मातृभाषा के रूप में सेमा का शिक्षण कक्षा छठवीं तक स्वीकार किया है। सेमा भाषा का शिक्षण सेमा भाषी क्षेत्र में भाषा के रूप में कक्षा आठवीं तक होता है।

१.२ हिन्दी और नागा भाषाओं में समानताएँ और असमानताएँ

हिन्दी और नागा भाषाओं के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक सन्दर्भ अलग-अलग रहे हैं। दो भिन्न परिवार की भाषाएँ होने के कारण प्रत्येक स्तर पर असमानताओं का होना स्वाभाविक है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवेचन करने पर दोनों भाषाओं में कई स्तरों पर समानताएँ तथा असमानताएँ स्पष्ट होती हैं। हिन्दी और नागा भाषाओं का तुलनात्मक विवेचन इसी दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया गया है।

१.२.१ ध्वनि-व्यवस्था

ध्वनि व्यवस्था पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि नागा भाषाओं तथा हिन्दी भाषा में पाँच स्वर स्वनिम तथा ग्यारह व्यंजन स्वनिम समान रूप से पाये जाते हैं, जो इस प्रकार हैं—

स्वर स्वनिम—/ ई /, / ऊ /, / ए /, / ओ / तथा / आ /

व्यंजन स्वनिम—/ प /, / त /, / क /, / च /, / म /, / ज /, / म /, / न /
/ ल /, / व / तथा / य /

हिन्दी के कुछ स्वनिम कुछ नागा-भाषाओं में उपलब्ध हैं परन्तु वे चारों

नागा-भाषाओं में नहीं मिलते। किन्तु हिन्दी के कुछ स्वर तथा व्यंजन स्वनिमों का नागा-भाषाओं में नितान्त अभाव है। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है—

हिन्दी के / फ /, / थ /, / ख /, / छ /, / न्ह /, / ल्ह /, / म्ह / स्वनिम अंगामी, सेमा तथा लोथा में पाये जाते हैं परन्तु आओ में इनका सर्वथा अभाव है। हिन्दी के / ब /, द /, / ग / स्वनिम केवल अंगामी और सेमा में मिलते हैं।

हिन्दी के स्वर स्वनिम / अ /, / इ /, / उ /, / ऐ / तथा / औ / नागा भाषाओं में स्वनिम स्तर पर उपलब्ध नहीं हैं। हिन्दी की सभी घोष महाप्राण ध्वनियाँ, उत्क्षिप्त तथा मूर्धन्य ध्वनियाँ भी नागा-भाषाओं में नहीं मिलतीं।

नागा-भाषाओं के अनेक स्वनिम हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। आओ भाषा के / १ /, / ḷh / तथा / ɯ / स्वनिम हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। अंगामी के / bv /, / dz /, / my /, / R /, / Rh /, / ɯ / इत्यादि स्वनिम तथा लोथा के / ŋh /, / pv /, / tsh / आदि स्वनिम भी हिन्दी में नहीं मिलते। नागा-भाषाओं के / ü / स्वर-स्वनिम का भी हिन्दी में अभाव है। हिन्दी के कई स्वनिम ऐसे हैं जो नागा-भाषाओं में सहस्वन के रूप में हैं तथा नागा-भाषाओं के कुछ स्वनिम ऐसे हैं जो हिन्दी में सहस्वन हैं।[1]

नागा-भाषाएँ सुर (Tone)-प्रधान हैं। सुर यहाँ स्वनिम के रूप में वर्तमान हैं। सुर में परिवर्तन लाकर एक ही ध्वनि को कई रूपों में उच्चरित किया जाता है और इस उच्चारण-भेद के कारण एक ही शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों को व्यक्त करने में समर्थ होता है; यथा— आओ भापा के 'आपू' शब्द के उच्चारण में सुरात्मक भिन्नता द्वारा पुल, फूँकना, उधार लेना, सीटी बजाना, गिरफ्तार करना, कन्धे पर ढोना, चमकना, पकड़ना आदि अनेक अर्थ द्योतित होते हैं। हिन्दी में इस प्रकार की सुर-व्यवस्था का नितान्त अभाव है।

१.२.२ रूप-रचना

नागा-भाषाओं के रूप साधक प्रत्यय जिनसे लिंग, वचन, कारक तथा काल द्योतन होता है, हिन्दी की भाँति संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया में प्रयुक्त होते हैं; परन्तु इस प्रक्रिया में अन्तर यह है कि हिन्दी में इन प्रत्ययों के योग से अधिकांशतः मूल रूप में परिवर्तन होता है जबकि नागा-भाषाओं में कुछ अपवादों को छोड़कर मूल रूप अविकृत रहते हैं।

१.२.२.१ लिंग-व्यवस्था

हिन्दी में दो लिंग—पुल्लिग और स्त्रीलिंग—हैं किन्तु नागा-भापाओं में चार लिंग—पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग तथा उभयलिंग—की व्यवस्था है। यह व्यवस्था

---

१ देखें सारिणी १५।

प्राकृतिक है। संज्ञा तथा क्रिया-रूपों पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हिन्दी में लिंग क्रिया के लिए व्याकरणिक कोटि है। शब्द-रचना के स्तर पर लिंग प्रत्यय संज्ञा तथा विशेषण के रूपों को प्रभावित करते हैं।

१.२.२.२. वचन-व्यवस्था

नागा-भाषाओं में भी हिन्दी की भाँति दो वचन हैं एकवचन और बहुवचन। नागा-भाषाओं के बहुवचन प्रत्यय शब्द के मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं करते, किन्तु हिन्दी के बहुवचन प्रत्यय कुछेक अपवादों को छोड़कर शब्दों के मूल में परिवर्तन करते हैं।

१.२.२.३ कारक-व्यवस्था

नागा-भाषाओं में हिन्दी की भाँति ही सभी कारकों का प्रयोग होता है किन्तु नागा-भाषाओं में कर्म तथा सम्बन्ध कारक द्योतित करने के लिए प्रत्ययों का प्रयोग नहीं होता। दूसरी विशेषता यह है कि नागा-भाषाओं में कारक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया-रूपों को प्रभावित नहीं करते किन्तु हिन्दी में यह प्रभाव ही महत्वपूर्ण है।

१.२.२.४ पुरुष

नागा-भाषाओं में हिन्दी की भाँति तीनों पुरुषों उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष—के एकवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। विशेषता यह है कि नागा भाषाओं में इन पुरुषों का क्रिया की रूप-रचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

१.२.२.५ काल : अर्थ

नागा भाषाओं में हिन्दी की भाँति विभिन्न कालों तथा अर्थों के द्योतक प्रत्यय क्रिया रूपों के साथ जुड़कर काल तथा अर्थ की रचना करते हैं, किन्तु ये प्रत्यय क्रिया के मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं करते। हिन्दी में काल तथा अर्थ के प्रत्यय क्रिया के मूल रूप में परिवर्तन लाते हैं।

१.२.२.६ वाच्य

नागा-भाषाओं में कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के प्रयोग की परम्परा नहीं है। अधिकांशतः कर्तृ वाच्य का ही प्रयोग होता है। हिन्दी भाषा में कर्तृ वाच्य के साथ-साथ कर्मवाच्य तथा भाववाच्य का प्रयोग होता है।

१.२.३ शब्द-रचना

कहा जा चुका है कि नागा-भाषाएँ भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी से पूर्णरूपेण भिन्न परिवेश में विकसित हुई हैं। समकालिक दृष्टि से भी हिन्दी अतिशय संक्रमणशील भाषा रही है, किन्तु नागा-भाषाएँ एकान्तिक रूप में विकसित हुई हैं। अतः नागा-भाषाओं एवं हिन्दी के रूपिम व्यवस्था में पर्याप्त अन्तर

विद्यमान है। फिर भी इन भाषाओं में रूपिम व्यवस्था की दृष्टि से कुछ समानताएँ पायी जाती हैं। ये समानताएँ असमिया एवं बाजारू हिन्दी के सम्पर्क के फलस्वरूप विकसित हुई हैं। नागा-भाषाओं में बहुत से देशी-विदेशी आगत शब्द हैं। कुछ ध्वनि परिवर्तनों के साथ ये शब्द नागा-भाषाओं में घुलमिल गये हैं; यथा—

हिन्दी	**आओ**
कलम	कोलम
चिट्ठी	शीती
स्याही	स्याई

इत्यादि।

ऐसे शब्दों के अतिरिक्त शेष शब्द नागा-भाषाओं के अपने हैं और इनके पीछे उनकी सांस्कृतिक अस्मिता विद्यमान है। उदाहरण के लिए, नागा-भाषाओं में 'मिथुन' शब्द एक पशु विशेष के लिए प्रयुक्त जातिवाचक संज्ञा है। चूँकि उस पशु की स्थिति हिन्दी-भाषी प्रदेशों में नहीं है, अतः उससे सम्बद्ध किसी नाम का हिन्दी में सर्वथा अभाव है। इसी प्रकार हिन्दी के यज्ञ, सिंदूर, सुहाग आदि शब्दों के लिए नागा-भाषाओं में कोई पर्याय नहीं मिलते क्योंकि इनकी संकल्पना उन भाषाओं में नहीं है।

रूपों से शब्दों की संरचना होती है। ये रूप व्युत्पादन (Derivation), समासीकरण (Compounding) तथा पुनरुक्ति (Reduplication) की प्रक्रिया के माध्यम से शब्दों की रचना करते हैं। शब्द-निर्माण की यह प्रक्रिया नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में समान रूप से दिखायी पड़ती है; परन्तु इस प्रक्रिया के क्षेत्र में अन्तर विद्यमान है। व्युत्पादन की प्रक्रिया के उदाहरणस्वरूप नागा-भाषाओं में पूर्व-प्रत्यय प्रायः क्रियाओं में लगते हैं, संज्ञाओं और विशेषणों के साथ इनका योग नहीं के बराबर है किन्तु हिन्दी में पूर्व-प्रत्यय (उपसर्ग) संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया-रूपों के साथ समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।

शब्द-निर्माण प्रक्रिया का दूसरा स्तर समासीकरण है जो दो मुक्त रूपों के योग से बनता है। नागा-भाषाओं में द्वन्द्व समास के अतिरिक्त अन्य समासों की रचना की प्रक्रिया स्पष्ट नहीं है। हिन्दी में समासीकरण की प्रक्रिया प्रभूत रूप में वर्तमान है।

शब्द-निर्माण की तीसरी प्रक्रिया पुनरुक्ति है। नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में पुनरुक्ति द्वारा शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया समान है। हिन्दी में नागा-भाषाओं की अपेक्षा यह प्रक्रिया अधिक दिखायी पड़ती है।

१.१.४ वाक्य-रचना

नागा भाषाओं में हिन्दी की भाँति सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्यों की रचनाएँ होती हैं। आधारभूत वाक्य साँचों में पदक्रम की दृष्टि से भी

समानता है, किन्तु दोनों भाषाओं के पदबन्ध-संरचना स्तर पर कुछ अन्तर विद्यमान है; यथा—नागा भाषाओं में विशेषक हिन्दी के विपरीत शीर्ष के बाद आता है।

१.२.५ प्रयोग

अर्थ के स्तर पर नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में अविकारी शब्दों में रूपभेद है, परन्तु प्रयोग के क्षेत्र में अधिक समानताएँ मिलती हैं। केवल नकारात्मक निपातों के प्रयोग में ही भिन्नता स्पष्ट होती है। नागा-भाषाओं में सम्बन्धवाची तथा कर्मकारक सूचक परसर्गों का अभाव है, शेष परसर्गों का प्रयोग मिलता है। हिन्दी में 'ने', 'को', 'से' परसर्गों के प्रयोग में जितनी विधि निषेध की जटिलताएँ हैं, उतनी जटिलताएँ नागा-भाषाओं में नहीं हैं।

नागा-भाषाओं में रंजक क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता। सहायक क्रियाओं का भी प्रयोग अधिक नहीं होता। हिन्दी में सहायक क्रियाओं तथा रंजक क्रियाओं का प्रयोग बहु-प्रचलित है।

१.२.६ लिपि-व्यवस्था

हिन्दी की लिपि देवनागरी है। ध्वन्यात्मकता इस लिपि की विशेषता है। जितने स्वनिम हैं, उनको व्यक्त करने के लिए लगभग उतने ही वर्णिम हैं। हिन्दी में मात्रा की व्यवस्था उच्चारण की कठिनाइयों को बहुत सीमा तक कम कर देती है। इसके विपरीत नागा-भाषाओं की लिपि रोमन है। चूँकि इन भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था रोमन लिपि के लिए अपरिचित है, अतएव इन भाषाओं की समस्त ध्वनियों का लिप्यांकन रोमन के २६ लिपि संकेतों के माध्यम से नहीं हो सकता। नागा-भाषाओं के स्थानीय विशेषज्ञों ने रोमन लिपि में ही कुछ जोड़-घटाकर नागा-भाषाओं की प्रकृति के अनुसार लिपि चिह्न बनाने की चेष्टा की है; यथा —ɯ > ü, ɣ > gh, ḷh > r आदि।

१.३ वर्तमान भारत में अन्य भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण (नागालैण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

स्वतन्त्रता के पश्चात भारतवर्ष में अनेक शिक्षा आयोग गठित हुए। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट भाषा-नीति का प्रतिपादन किया। शिक्षा आयोग (१९६६) ने अपने प्रतिवेदन में त्रिभाषा सूत्र के अनुसार निम्नलिखित तीन भाषाओं के शिक्षण की सिफारिश की—

(१) मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा।

(२) केन्द्र की राजभाषा या सह-राजभाषा।

(३) एक आधुनिक भारतीय भाषा या विदेशी भाषा जिसे संख्या १ या २ में न लिया गया हो और जो शिक्षा के माध्यम से भिन्न हो।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ सर्वत्र तीन भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। इन तीन भाषाओं में प्रथम भाषा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा है। द्वितीय भाषा के रूप में कुछ अपवादों को छोड़कर सर्वत्र हिन्दी पढ़ाई जाती है। अपवाद स्वरूप कई प्रदेशों (केरल, उड़ीसा, बंगाल, असम, नागालैण्ड आदि) में हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का शिक्षण कहीं अनिवार्य माना गया है तो कहीं वैकल्पिक है। आमतौर पर इसका शिक्षण पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक होता है। सप्ताह में दो से लेकर चार अन्तर तक इसके लिए निर्धारित हैं।

१.३.१ नागालैण्ड में हिन्दी शिक्षण की स्थिति

नागालैण्ड के पाठ्यक्रम में हिन्दी पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। पाँचवीं और छठवीं कक्षा के लिए सप्ताह में तीन अन्तर तथा सातवीं और आठवीं कक्षा के लिए सप्ताह में चार अन्तर निर्धारित हैं।

नागालैण्ड में राजकीय माध्यमिक (Middle) विद्यालयों तथा राजकीय उच्च विद्यालयों की संख्या क्रमशः १७० और ४८ है। इनमें कम से कम एक-एक हिन्दी शिक्षक अनिवार्य रूप से नियुक्त किया गया है तथा हिन्दी का शिक्षण अनिवार्य रूप से होता है। नागालैण्ड में सरकारी मान्यता प्राप्त १०७ माध्यमिक तथा ५३ उच्च विद्यालय हैं।[1] इन विद्यालयों में भी हिन्दी शिक्षकों की नियुक्तियाँ हो रही हैं।

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए नागालैण्ड सरकार की तरफ से १५ नवम्बर, १९६८ ई. को दीमापुर में एक 'हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान' की स्थापना हुई। इसमें आजकल नागाभाषी छात्रों के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा संचालित चतुर्वर्षीय हिन्दी शिक्षक डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा दीमापुर में एक 'राष्ट्रभाषा विद्यालय' की भी स्थापना हुई है जिसमें नागालैण्ड के कोने-कोने से नागाभाषी छात्र आकर हिन्दी पढ़ते हैं तथा वर्धा समिति की 'प्राथमिक' से लेकर 'कोविद' तक की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं।

१.३.२ नागालैण्ड में हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की समस्याओं को तीन भागों में विभक्त कर देखा जा सकता है—(१) पाठ्य-वस्तु (पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तक), (२) अध्यापक, (३) अध्येता।

---

१ शिक्षा निदेशालय, नागालैण्ड, वार्षिक प्रतिवेदन १९७९।

१.३.२.१ पाठ्य-वस्तु

नागालैण्ड में हिन्दी शिक्षण की समस्याओं पर विचार करें तो पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों की समस्या सदैव वर्तमान रही है। पाठ्यक्रम में भाषायी कौशलों के शिक्षण का न तो प्रावधान है और न उसके लिए व्यवस्था ही है। अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सीखते समय उच्चारण की दृष्टि से कठिनाई के जो स्तर हो सकते हैं, मातृभाषा का जो व्याघात हो सकता है, उसकी ओर न तो संकेत है न दिशा-निर्देश। इसी प्रकार वाचन और लेखन से सम्बन्धित अनेक शिक्षण बिन्दु भी उपेक्षित ही हैं।

हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों पर दृष्टिपात करने पर हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ और भी गम्भीर दिखती हैं। पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में भाषावैज्ञानिक, समाज भाषावैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक स्रोतों का समुचित उपयोग नही हो पाया है। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित राष्ट्रभाषा हिन्दी भाग I, II, III तथा IV नागालैण्ड के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश से अछूती रही है। नागालैण्ड-भाषा-परिषद कोहिमा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी रीडर' के पाठों में विषयवस्तु की दृष्टि से विविधता रही है किन्तु भाषावैज्ञानिक दृष्टि से पाठों में अनुस्तरण का अभाव रहा है। १९८० ई० से पाठ्य-पुस्तकों में पर्याप्त परिवर्तन किया गया है। नई प्रकाशित हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों को पाँचवी कक्षा से आठवी कक्षा तक के लिए मान्यता प्राप्त हुई है किन्तु ये पुस्तकें भी नागालैण्ड के पर्यावरण को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गयी हैं। इनके पाठ न तो अनुस्तरित हैं और न नागाभाषी छात्रों के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश, उनकी रुचि तथा अभिवृत्ति आदि पर आधारित हैं। नागालैण्ड में वर्षों से जो हिन्दी पाठ्य-पुस्तक की समस्या रही है, वह आज भी उसी तरह बनी हुई है।

१.३.२.२ अध्यापक

नागालैण्ड में दो प्रकार के हिन्दी अध्यापक हैं—(१) नागाभाषी हिन्दी अध्यापक, तथा (२) गैर-नागाभाषी (इनमें अधिकांशतः हिन्दी अध्यापक हिन्दी-भाषी हैं) हिन्दी अध्यापक। नागाभाषी हिन्दी अध्यापक की सामान्य योग्यता तथा हिन्दी की योग्यता अनिवार्य न्यूनतम योग्यता से कम है। अधिकांश शिक्षक मैट्रिक की भी योग्यता नहीं रखते।

गैर-नागाभाषी हिन्दी शिक्षकों (कुछेक को छोड़कर) को द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के लिए कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है। अतः अप्रशिक्षित होने के कारण वे भाषा-शिक्षण की अधुनातन विधियों से परिचित नहीं हैं। जहाँ तक हिन्दी अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्था का प्रश्न है, हिन्दी के लिए सप्ताह में तीन अन्तर हैं और वे भी प्रायः अन्तिम अन्तर में निर्धारित होते हैं जिसमें प्रायः छुट्टी हो जाया

करती है । विद्यालय के प्रशासन में भी हिन्दी अध्यापक का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है । अत: हिन्दी अध्यापक हीन-ग्रन्थियों से ग्रसित होता है ।

१.३.२.३ अध्येता

नागालैण्ड में हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है किन्तु इसका परीक्षण आवश्यक नहीं है । चूँकि परीक्षा आवश्यक नहीं है, इसलिए छात्र हिन्दी पढ़ने के लिए उत्प्रेरित नहीं होते । यह उनकी रुचि पर निर्भर करता है कि वे कक्षा में बैठें या न बैठें । इस प्रकार हिन्दी शिक्षण का कोई वातावरण नहीं बन पाता । परीक्षण में लेखन-कौशल का ही प्राय: परीक्षण होता है, श्रवण, भाषण और वाचन कौशलों का प्राय: परीक्षण नहीं लिया जाता । शिक्षण में श्रवण, भाषण और वाचन कौशलों की उपेक्षा के कारण इन कौशलों के अधिगम तथा अभ्यास में छात्र रुचि नहीं लेते ।

१.३.३ अनुसन्धान कार्य

नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं से सम्बन्धित अभी तक कोई प्रमाणित तथा ठोस अनुसन्धान कार्य नहीं हुआ है । इस दिशा में प्रस्तुत शोधकार्य ही प्रथम प्रयास है ।

१.४ प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन निश्चित दिशा में किया गया एक प्रयास है । अत: यह आवश्यक हो जाता है कि समस्या विशेष का स्पष्टीकरण उसकी आवश्यकता, अध्ययन के उद्देश्य, सीमा, प्रयुक्त उपकरणों तथा तकनीकों का परिचय दिया जाय ।

१.४.१ समस्या का स्पष्टीकरण

नागाभाषी छात्र जब द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखते हैं, तब भाषा के सभी स्तरों पर उन्हें कठिनाइयाँ होती हैं । ये कठिनाइयाँ उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत होती हैं । ये कठिनाइयाँ ही नागाभाषी छात्रों के लिए हिन्दी भाषा अधिगम की मुख्य समस्याएँ हैं ।

मातृभाषी छात्र अन्य भाषा की अधिगम प्रक्रिया में उत्पन्न कठिनाइयों के कारण अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । ऐसी स्थिति में अध्येता सामान्यत: अशुद्ध प्रयोगों द्वारा भाषायी नियमों का उल्लंघन करते हैं । शिक्षण के क्षेत्र में इन्हें त्रुटियाँ कहा गया है । वस्तुत: ये 'त्रुटियाँ' ही नागाभाषी छात्रों के लिए हिन्दी अधिगम और शिक्षण की 'समस्याएँ' हैं ।

भाषा सीखते समय 'भाषायी त्रुटियों का होना' भाषा-अधिगम-प्रक्रिया का अपरिहार्य अंग है । प्रश्न है कि क्या ये 'त्रुटियाँ' स्वत: भाषा सीखने की समस्याओं के समाधान हो सकती हैं ? इस सम्बन्ध में कार्डर (१९६७) त्रुटियों के महत्व को निम्नांकित तीन बिन्दुओं के रूप में चित्रित करते हैं :

(१) त्रुटियाँ शिक्षक को यह बताती हैं कि उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में छात्र ने कितनी प्रगति की है तथा कितना सीखना शेष है ।

(२) शोधकर्ता के लिए वे भाषा अधिगम प्रक्रिया का प्रमाण देती हैं, साथ ही वे यह भी बताती हैं कि छात्र भाषा अधिगम के लिए किन-किन उपायों या युक्तियों का उपयोग करता है ।

(३) स्वयं छात्र के लिए वे इसलिए महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हैं कि त्रुटियों द्वारा वह भाषा अधिगम की प्रक्रिया में भाषायी परिकल्पनाओं की परख कर सकता है ।

इसी प्रकार विल्किन्स (१९७४ : २०४) ने भी त्रुटियों को भाषा शिक्षण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाओं का स्रोत माना है । इसके द्वारा छात्रों की सम्भावित त्रुटियों का पूर्वानुमान किया जा सकता है । अत: स्पष्ट है कि 'त्रुटियाँ' भाषा सीखने की समस्याओं के अध्ययन, विश्लेषण एवं समाधान में सहायक हो सकती हैं ।

१.४.२ प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता

नागाभाषी छात्र अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते समय अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं जिनका सम्बन्ध भाषा के विभिन्न पक्षों से है । वे कक्षा में जो कुछ सीख पाते हैं, उसका अभ्यास तथा प्रयोग भाषायी परिवेश के अभाव में नहीं हो पाता । भाषायी परिवेश या तो उनकी मातृभाषा का है या नागामिज का है । अत: हिन्दी सीखते समय उनकी मातृभाषा और नागामिज ('पिजन' भाषा) दोनों ही हिन्दी अधिगम को प्रभावित करती हैं । अत: नागाभाषी छात्र हिन्दी सीखते समय विभिन्न प्रकार की युक्ति के द्वारा भाषा के विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । चूँकि शोधकर्ता ने राजकीय हिन्दी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, दीमापुर (नागा-लैण्ड) में आठ वर्षों तक प्राध्यापक के पद पर कार्य किया है, अत: उसके सामने नागा-भाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याएँ उभर कर आयीं । इन समस्याओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण तथा उनके निदान की दिशा में अब तक कोई ठोस कार्य नहीं हुआ है । अत: समस्या की गम्भीरता और अध्ययन की अत्यधिक आवश्यकता को देखते हुए शोधकर्ता ने यह उचित समझा कि वह नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं का भाषावैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक दृष्टि से विवेचन करे और आवश्यक निदान तथा सुझाव प्रस्तुत करे । प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में किया गया एक शोधकार्य है ।

१.४.३ अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर किया गया है । ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(१) अध्ययन का पहला उद्देश्य उन भाषायी त्रुटियों की विविधता से परि-चित होना है जिन्हें नागाभाषी छात्र कक्षा पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक करते हैं ।

(२) अध्ययन का दूसरा उद्देश्य त्रुटियों की प्रवृत्तियों से परिचित होना है तथा यह भी देखना है कि कौन-सी त्रुटियाँ अधिक होती हैं और कौन-सी कम।

(३) त्रुटियों के विश्लेषणकर्ता एवं भाषा-शिक्षण के विशेषज्ञों के अनुसार द्वितीय भाषा के प्रयोग में त्रुटियों के अनेक कारण हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उन कारणों की खोज करना है।

(४) अनेक भाषा विशेषज्ञों का मत है कि मातृभाषा और उद्दिष्ट भाषा की संरचनाओं के मौलिक अन्तर के कारण त्रुटियाँ होती हैं। प्रश्न है, क्या नागाभाषी छात्रों के हिन्दी के प्रयोग में की जाने वाली त्रुटियों का कारण हिन्दी और नागा भाषाओं की संरचनाओं का मौलिक अन्तर है? इसका उत्तर प्राप्त करना भी इस शोध का उद्देश्य है।

(५) मातृभाषा के प्रभाव के कारण की जाने वाली त्रुटियों का संकलन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण करना भी प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है जिससे हिन्दी भाषाविद्, पाठ्य-पुस्तक लेखक, हिन्दी भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले शोधकर्ता तथा हिन्दी भाषा के शिक्षक लाभान्वित हो सकें।

(६) प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य नागाभाषी छात्रों द्वारा हिन्दी के प्रयोग में की जाने वाली त्रुटियों के आधार पर कुछ ऐसे निष्कर्ष निकालने हैं जिनसे इन छात्रों की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा उनकी हिन्दी सीखने की उपलब्धियों के बीच सकारात्मक या नकारात्मक सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

(७) इन निष्कर्षों के सन्दर्भ में नागाभाषी छात्रों के लिए हिन्दी-शिक्षण के विशिष्ट परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण शिक्षण-बिन्दु निर्धारित करना भी इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

१.४.४ अध्ययन की सीमा

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ निश्चित सीमाएँ हैं। ये निम्नलिखित हैं :

(१) यह अध्ययन पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा के नागाभाषी छात्रों—आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा— की उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों से ही सम्बन्धित है।

(२) प्रत्येक भाषा के दो-दो विद्यालयों का चयन किया गया तथा प्रत्येक भाषा के दो-दो सौ छात्रों (कुल आठ सौ छात्रों) की त्रुटियों को अध्ययन का आधार बनाया गया।

(३) सामग्री संकलन का आधार मुख्यतः प्रश्नावली तथा मुक्त रचना हैं। आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं अध्यापकों तथा छात्रों से साक्षात्कार किया गया है।

(४) सर्वेक्षण की प्रक्रिया में निर्दिष्ट विद्यालयों तथा कक्षाओं में छात्रों की जितनी त्रुटियाँ प्राप्त हो सकीं, उन्हें ही संकलित किया गया तथा उनका विश्लेषण

करने का प्रयास किया गया है। त्रुटियों के विश्लेषण में उनकी प्रवृत्ति-निर्धारण पर ही विशेष बल दिया गया है।

१.४.५ प्रयुक्त उपकरण और तकनीक

नागाभाषी छात्रों के हिन्दी प्रयोग--उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनी-गत--में पायी जाने वाली त्रुटियों के संकलन में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गयी है :

१.४.५.१ प्रश्नावली

अध्ययन में तीन प्रकार की प्रश्नावलियों का उपयोग किया गया है। छात्रों के लिए प्रश्नावली[1] दो प्रकार की है। एक के माध्यम से उनके हिन्दी प्रयोग, रूप रचनागत (नामिक और क्रिया), शब्द रचनागत, प्रयोग एवं वाक्य रचनागत त्रुटियों का संकलन किया गया है। दूसरी प्रश्नावली में उनके सामाजिक और आर्थिक पृष्ठ-भूमि से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन किया गया। इस प्रश्नावली में छात्रों के माता-पिता से सम्बन्धित सूचनाएँ संकलित करने का उद्देश्य यह था कि यह भलीभाँति निश्चित किया जा सके कि ये छात्र वस्तुतः नागाभाषी छात्र हैं। इस प्रश्नावली में माता-पिता के पेशे से सम्बन्धित सूचनाएँ इसलिए माँगी गयीं जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति का पता चल सके। गाँव या शहर के नाम से सम्बन्धित सूचनाएँ इस तात्पर्य से माँगी गयी थीं कि वह छात्रों की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का आधार बन सके। दूसरे शब्दों में यह पता लगाना था कि वे छात्र शहरी, अर्ध-शहरी या ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। तीसरी[2] प्रश्नावली अध्यापकों के लिए निर्मित है जिसका उद्देश्य छात्रों की भाषायी त्रुटियों से सम्बन्धित विशिष्ट सूचनाएँ प्राप्त करना है।

१.४.५.२ उच्चारण परीक्षण तालिका[3]

उच्चारण परीक्षण के लिए एकल ध्वनियों, शब्द-युग्मों, वाक्यांशों तथा वाक्यों का वाचन के माध्यम से उच्चारण करवाया गया। वाचन के अतिरिक्त अनुकरण उच्चारण के माध्यम से भी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों को संकलित किया गया।

१.४.५.३ साक्षात्कार

प्रश्नावली द्वारा प्राप्त सूचनाओं के अतिरिक्त अध्यापक तथा छात्रों से साक्षात्कार भी किया गया। अध्यापकों के साथ साक्षात्कार में छात्रों की त्रुटियों, शिक्षण की समस्याओं से सम्बन्धित सुझाव प्राप्त किये गये।

छात्रों से साक्षात्कार में हिन्दी सीखने की कठिनाइयों से सम्बन्धित उनके

---

१ देखें परिशिष्ट २, ४
२ देखें परिशिष्ट ६
३ देखें परिशिष्ट १

विचार संकलित किये गये, साथ ही प्रत्येक भाषा के तीस-तीस छात्रों से मुक्त वार्तालाप भी करवाये गये। वार्तालाप के विषय उनके शहर, गाँव तथा विद्यालय थे। वार्तालाप के क्रम में पायी जाने वाली उच्चारण सम्बन्धी तथा व्याकरणिक त्रुटियों का संकलन किया गया।

१.४.५.४ **उत्तर-पुस्तिकाएँ**

छात्रों की उत्तर-पुस्तिकाएँ सामग्री संकलन का प्रमुख आधार बनीं। इसमें परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाएँ एकत्रित की गयीं और उनके आधार पर त्रुटियों का संकलन किया गया। शोधकर्ता ने कुछ प्रश्नों[1] का उत्तर लिखने के लिए दिया। उनसे ये उत्तर-पुस्तिकाएँ भी त्रुटि-संकलन का मुख्य स्रोत बनीं। मुक्त प्रश्नोत्तर के लिए तीन प्रश्न पूछे गये। पहला रूपरेखा के आधार पर चार-पाँच अनुच्छेदों में लेख लिखना था। दूसरे प्रश्न में दस वाक्यों का एक पत्र लिखना था तथा तीसरे प्रश्न में 'बड़े दिन की छुट्टी' पर दस वाक्यों का एक अनुच्छेद लिखना था।

इस प्रकार के प्रश्नों की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि छात्रों को इस बात का आभास नहीं मिल सका कि उनकी त्रुटियों का संकलन किया जा रहा है।

इस प्रकार का लिखित कार्य अधिक उपयोगी इस दृष्टि से यह सिद्ध हुआ कि इनका उत्तर लिखने में छात्र हिन्दी के प्रयोग में जितनी त्रुटियाँ कर सकते थे, उसकी उन्हें पूरी छूट थी।

१.४.५.५ **त्रुटि-विश्लेषण तकनीक**

त्रुटियों के वर्गीकरण तथा विश्लेषण के लिए कुछ निश्चित प्रक्रियाएँ अपनायी गयीं।

सबसे पहले उच्चारण परीक्षण तालिका के आधार पर प्राप्त त्रुटियों का अध्ययन किया गया। उन्हें कार्ड पर उतारा गया तथा उन्हें स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिकता से सम्बन्धित तीन वर्गों में विभक्त कर उनका विश्लेषण किया गया।

प्रत्येक उत्तर-पुस्तिका का अच्छी तरह अध्ययन किया गया। इसके पश्चात् प्रत्येक त्रुटि को रेखांकित किया गया तथा उन्हें कार्ड पर उतारा गया। तत्पश्चात् उन त्रुटियों को दो श्रेणियों में रखा गया—(१) व्याकरणिक त्रुटियाँ, और (२) वर्तनीगत त्रुटियाँ। व्याकरणिक त्रुटियों को पुनः पाँच वर्गों—(१) नामिक-रचना, (२) क्रिया-रचना, (३) शब्द-रचना, (४) प्रयोग, तथा (५) वाक्य-रचना—में वर्गीकृत किया गया। पुनः प्रत्येक वर्ग की त्रुटियों को छोटी-छोटी इकाइयों में वर्गीकृत किया गया।

इसी प्रकार वर्तनीगत त्रुटियों को सबसे पहले तीन वर्गों—(१) स्वर, (२)

---

१ देखें परिशिष्ट ३

अनुनासिक और अनुस्वार, तथा (३) व्यंजन— में वर्गीकृत किया गया तथा पुनः इन वर्गों की छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित किया गया।

त्रुटियों को उपर्युक्त वर्गों में वर्गीकृत करने के पश्चात् विभिन्न प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति गणना की गयी तथा गणनांक (स्कोर) को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया जिससे उन क्षेत्रों पर समुचित प्रकाश डाला जा सके जिनमें छात्र सबसे अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

सारिणी के रूप में गणनांकों को प्रस्तुत करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि सारिणी के भिन्न-भिन्न खानों (कॉलम) में अंकित श्रेणियाँ एक-दूसरे से सामान्यतः भिन्न हों।

अध्याय २

नागाभाषी छात्रों की हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण से सम्बन्धित त्रुटियाँ, निष्कर्ष एवं शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

२.१ स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ।

२.२ नागा-भाषाओं की स्वनिम व्यवस्था।

२.३ हिन्दी-भाषा के स्वनिम।

२.४ निष्कर्ष एवं शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण।

२

भाषा का मूलस्वरूप उच्चरित है। अतः सार्थकता तथा प्रभावितता की दृष्टि से उच्चारण की शुद्धता अपेक्षित है। उच्चारण की शुद्धता से तात्पर्य है—भाषा विशेष की ध्वनि व्यवस्था का सही प्रयोग करना। नागाभाषी छात्र अन्य भाषा हिन्दी की ध्वनि-व्यवस्था से पूर्णतः परिचित नहीं होते, अतः उनके उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। नागाभाषी छात्रों द्वारा की गयी उच्चारणगत त्रुटियों को निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है :

२.१ स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

उच्चारणगत त्रुटियों में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों से सम्बन्धित त्रुटियाँ तथा अनुनासिकता से सम्बन्धित त्रुटियों की चर्चा की गयी है।

२.१.१ स्वर ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र स्वर ध्वनियों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। इन त्रुटियों में कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। स्वर सम्बन्धी त्रुटियों का वर्गीकरण इसी आधार पर किया गया है :

२.१.१.१ दीर्घीकरण

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सीखते समय नागाभाषी छात्र स्वरों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। उच्चारण-परीक्षण के लिए प्रयुक्त सामग्री के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्रों के हिन्दी स्वरों के उच्चारण में दीर्घीकरण की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है— वे 'अ' के स्थान पर 'आ', 'इ' के स्थान पर 'ई' तथा 'उ' के स्थान पर 'ऊ' का उच्चारण करते हैं। 'अ' के स्थान पर 'आ' की उच्चारण त्रुटियाँ केवल शब्द के आदि और मध्य स्थिति में देखी गयीं; जैसे—

अमर > आमर, कमल > कामाल। चूँकि हिन्दी शब्दों के अन्त में 'अ' स्वर का उच्चारण सामान्यतः नहीं होता, अतः यहाँ उच्चारणगत त्रुटियों का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

इ > ई तथा उ > ऊ से सम्बन्धित उच्चारणगत त्रुटियाँ शब्द के आदि, मध्य और अन्त तीनों ही स्थितियों में होती है, यथा - इ > ई = इनाम > ईनाम, कविता > कवीता, प्रति > प्रती, उ > ऊ = दुख > दूख, बहुत > बहूत, साधु > साधू ।

नागाभाषी छात्रों के उच्चारण में हिन्दी के ह्रस्व स्वरों के स्थान पर दीर्घ उच्चारण की प्रक्रिया दिखायी पड़ती है । दीर्घीकरण की ये उच्चारणिक त्रुटियाँ आओ और सेमा की अपेक्षा अंगामी और लोथा भाषी छात्रों द्वारा अधिक की गयी हैं। सारिणी १ से यह बात स्पष्ट है ।

२.१.१.२ **ह्रस्वीकरण**

नागाभाषी छात्र हिन्दी के दीर्घ स्वरों का ह्रस्व उच्चारण भी करते पाये गये हैं । ये छात्र 'आ', 'ई', 'ऊ' के स्थान पर क्रमशः 'अ', 'इ', 'उ' का उच्चारण करते हैं । 'आ' के स्थान पर 'अ' का उच्चारण केवल शब्द के आदि और मध्य की स्थिति में होता है । 'ई' तथा 'ऊ' के स्थान पर 'इ', 'उ' का उच्चारण शब्द के आदि, मध्य और अन्त तीनों ही स्थितियों में होता है, सारिणी २ से यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

ह्रस्वीकरण की ये उच्चारणिक त्रुटियाँ भी आओ और सेमा की अपेक्षा अंगामी और लोथा-भाषी छात्रों द्वारा अधिक हुई हैं ।[1]

सर्वेक्षण में यह भी पाया गया है कि छात्र एक ही शब्द में कभी ह्रस्व से दीर्घ, कभी दीर्घ से ह्रस्व की उच्चारणगत त्रुटियाँ करते हैं; जैसे वापस, वपास । ऐसी स्थिति में त्रुटियों का मिश्रित रूप सामने आता है । इसका कारण भ्रम हो सकता है ।

२.१.१.३ **स्वर-व्यत्यय**[2]

नागाभाषी छात्र स्वर-व्यत्यय की त्रुटियाँ भी करते पाये गये । 'अ' के स्थान पर 'औ' का उच्चारण करते हैं । यह प्रवृत्ति शब्द के तीनों ही स्थितियों में पायी जाती है । यथा—खबर > खोबोर, बादल > बादोल, रत्न > रोत्नो ।

उल्लेखनीय यह है कि 'अ' का उच्चारण पूर्णतः 'औ' न होकर ह्रस्व 'ओ' / ə / (badəl, khəbər rətnə) होता है । अवृत्ताकार 'अ' से वृत्ताकार 'औ' की ये उच्चारणिक त्रुटियाँ सभी नागाभाषी छात्रों में लगभग समान रूप से पायी जाती है ।

---

१ सारिणी २ देखें ।

२ **टिप्पणी** : एक स्वर के स्थान पर दूसरे स्वर के प्रयोग की त्रुटि को 'स्वर व्यत्यय' कहा गया है । इस अर्थ में दीर्घीकरण-ह्रस्वीकरण इत्यादि की त्रुटियाँ भी स्वर व्यत्यय ही हैं । किन्तु उन त्रुटियों के लिए अलग-अलग नाम दिये गये हैं । इनके अतिरिक्त एक स्वर के स्थान पर दूसरे स्वर के प्रयोग की त्रुटियों को स्वर व्यत्यय के अन्तर्गत रखा गया है ।

सारिणी १

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
दीर्घीकरण	अ > आ		अमर > आमर	कमल > कमाल	×	
		आओ	√	√	×	५०
		लोथा	√	√	×	८०
		अंगामी	√	√	×	७०
		सेमा	√	√	×	६०
	इ > ई		इनाम > ईनाम	कविता > कवीता	प्रति > प्रती	
		आओ	√	√	√	४०
		लोथा	√	√	√	७०
		अंगामी	√	√	√	६०
		सेमा	√	√	√	४०
	उ > ऊ		दुख > दूख	बहुत > बहूत	साधु > साधू	
		आओ	√	√	√	४०
		लोथा	√	√	√	७०
		अंगामी	√	√	√	६०
		सेमा	√	√	√	४०
कुल						६८०

सारिणी २

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
ह्रस्वीकरण	आ > अ		गाना > गना	हमारा > हमरा	×	
		आओ	√	√	×	३०
		लोथा	√	√	×	५०
		अंगामी	√	√	×	४०
		सेमा	√	√	×	३०
	ई > इ		तीन > तिन	गरीब > गरिब	गनी > गनि	
		आओ	√	√	√	२०
		लोथा	√	√	√	५०
		अंगामी	√	√	√	४०
		सेमा	√	√	√	४०
	ऊ > उ		दूर > दुर	कसूर > कसुर	डाकू > डाकु	
		आओ	√	√	√	२०
		लोथा	√	√	√	६०
		अंगामी	√	√	√	५०
		सेमा	√	√	√	२५
कुल						

हिन्दी सीखने से पूर्व ये छात्र नागामिज[1] की ध्वनियों से परिचित होते हैं और उनका ही उच्चारण करते हैं। नागामिज में 'अ' के स्थान पर 'ओ' अधिक मुखर है। इसके प्रभाव से नागाभाषी छात्र इस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

नागाभाषी छात्र 'ए' तथा 'ऐ' का उच्चारण 'इ' करते पाये गये हैं। ए>इ की उच्चारणिक त्रुटियाँ शब्दों के आदि, मध्य स्थिति में तथा 'ऐ'>इ की उच्चारणिक त्रुटियाँ केवल शब्द के आदि में ही मिलती हैं।

इस प्रकार की उच्चारणिक त्रुटियाँ सभी नागाभाषी छात्रों में लगभग समान रूप से पायी गयीं। सारिणी ३ से सभी बातें स्पष्ट होती हैं।

सारिणी ३

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
स्वर-व्यत्यय	अ>ओ		खबर> खोबोर	बादल> बादोल	रत्न> रोत्नो	
		आओ	√	√	√	१२०
		लोथा	√	√	√	१००
		अंगामी	√	√	√	१००
		सेमा	√	√	√	११०
	ए>इ		बेचता> बिचता	जलेबी> जलिबी		
		आओ	√	√	×	१६
		लोथा	√	√	×	२०
		अंगामी	√	√	×	२०
		सेमा	√	√	×	२०

१ नागालैण्ड की एक पिजिन की भाषा जिसकी चर्चा पहले अध्याय (पृष्ठ ९) में की गयी है।

स्वर-व्यत्यय	ऐ > इ		ऐमा > इमा			
		आओ	√	×	×	१०
		लोथा	√	×	×	१५
		अंगामी	√	×	×	२५
		सेमा	√	×	×	३०
कुल						६०५

२.१.१.४ संध्यक्षर ध्वनियाँ

नागाभाषी छात्र अर्ध-विवृत 'ऐ' का उच्चारण अर्ध-संवृत 'ए' तथा अर्ध-विवृत 'औ' का उच्चारण अर्ध-संवृत 'ओ' करते हैं। ऐ, ए की उच्चारणिक त्रुटियाँ शब्द के आदि और मध्य में देखी गयीं। किन्तु औ, ओ की उच्चारणिक त्रुटियाँ शब्द की तीनों ही स्थितियों में दिखायी पड़ती हैं। नागाभाषी छात्र संध्यक्षर स्वर के रूप में 'ऐ', औ के उच्चारण में भी त्रुटियाँ करते हैं; यथा—वे 'भइया' के स्थान पर 'भैया' या 'भाया' उच्चारण करते पाये गये।

आओ और सेमा की अपेक्षा अंगामी और लोथा भाषी छात्र इस प्रकार की उच्चारणिक त्रुटियाँ अधिक करते हैं। सारिणी ४ से यह बात स्पष्ट होती है।

सारिणी ४

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
संध्यक्षर	ऐ → ए		पैदल → पेदल	विवैला → विवेला	×	
		आओ	√	√	×	१३०
		लोथा	√	√	×	५०
		अंगामी	√	√	×	४०
		सेमा				

संध्यक्षर	औ→ओ		औरत→ ओरत	सरौता→ सरोता	सौ→सो	
		आओ	√	√	√	५०
		लोथा	√	√	√	५५
		अंगामी	√	√	√	५५
		सेमा	√	√	√	५०
	अउ→ओ		अउषधि→ ओषध	×	×	
		आओ	√	×	×	५०
		लोथा	√	×	×	७०
		अंगामी	√	×	×	६०
		सेमा	√	×	×	५०
	अइ→ए		×	भइया→ भेया	×	
		आओ	×	√	×	४०
		लोथा	×	√	×	७५
		अंगामी	×	√	×	५०
		सेमा	×	√	×	५०
कुल						६०५

२.१.१.५ स्वर-अप्रयोग

नागाभाषी छात्र प्रायः हिन्दी शब्दों के उच्चारण में मध्य स्वर का प्रयोग नहीं करते; यथा—आइए→आए, खाइए→खाए, जाइए→जाए ।

इस प्रकार का त्रुटिपूर्ण उच्चारण औरों की तुलना में अंगामी-भाषी छात्र कम करते हैं क्योंकि अंगामी में / e / और / i / का संयोग मिलता है। पदबन्ध स्तर पर नागाभाषी छात्र 'ले आया' का उच्चारण 'लेया' करते हैं।

सारिणी ५

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
स्वर लोप	इए → ए		×	आइए → आए	×	
		आओ	×	✓	×	७०
		लोथा	×	✓	×	८०
		अंगामी	×	✓	×	१५
		सेमा	×	✓	×	२०
कुल						१८५

२.१.१.६ **संकीर्ण दोष**

नागाभाषी छात्रों के उच्चारण में स्वर सम्बन्धी कुछ अन्य प्रकार की त्रुटियाँ भी पाई गयीं; यथा—

लजीले → लाजले , कौवा → काआ

किताब → कताब , देखा → दखा आदि।

इन त्रुटियों को संकीर्ण दोष कहा गया है। इनमें किसी प्रकार का क्रम नहीं देखा जा सका।

२.१.२ **व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में भी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। इनका विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया गया है :

२.१.२.१ **अल्पप्राण-महाप्राण**

नागा-भाषी छात्र हिन्दी की महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राण ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। वे 'भ', 'घ', 'झ' तथा 'ध' के स्थान पर क्रमशः

'ब', 'द', 'ज' तथा 'ग' का उच्चारण करते पाये गये। यह प्रवृत्ति शब्दों के आदि, मध्य और अन्त तीनों ही स्थितियों में दिखायी देती है।

महाप्राण घोष से अल्पप्राण घोष की उच्चारणगत त्रुटियाँ अन्य तीन नागा-भाषी छात्रों की अपेक्षा आओ-भाषी छात्र अधिक करते हैं।

महाप्राण अघोष से अल्पप्राण अघोष के रूप में भी उच्चारणगत त्रुटियाँ शब्दों के आदि, मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में पाई गयीं। सारिणी ६ से यह बात स्पष्ट होती है :

सारिणी ६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
महाप्राण अल्पप्राण	भ → ब		भात → बात	सँभाल → सँबाल	लाभ → लाब	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	√	√	√	१२५
		अंगामी	√	√	√	११५
		सेमा	√	√	√	१२०
	ध → द		धनी → दनी	विधवा ← विदवा	मगध → मगद	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	√	√	√	१२५
		अंगामी	√	√	√	११५
		सेमा	√	√	√	१२०

महाप्राण अल्पप्राण	घ → ग		घर → गर	मघन → मगन	बाघ → बाग	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	√	√	√	१२५
		अंगामी	√	√	√	११५
		सेमा	√	√	√	१२०
	झ → ज		झरना → जरना	सूझता → सूजता	समझ → समज	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	√	√	√	१२५
		अंगामी	√	√	√	११५
		सेमा	√	√	√	१२०
	फ → प		फल → पल	कफन → कपन	गफ → गप	
		आओ	√	√	√	१४०
		लोथा	√	√	√	६०
		अंगामी	√	√	√	५०
		सेमा	√	√	√	५०

महाप्राण अल्पप्राण	थ → त		थक → तक	कथनी → कतनी	साथ → सात	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	√	√	√	६०
		अंगामी	√	√	√	५०
		सेमा	√	√	√	६०
	छ → च		छल → चल	मछली → मचली	कुछ → कुच	
		आओ	√	√	√	१४०
		लोथा	√	√	√	५०
		अंगामी	√	√	√	५०
		सेमा	√	√	√	६०
	ख → क		खत → कत	लखन → लकन	चख → चक	
		आओ	√	√	√	१३०
		लोथा	√	√	√	५०
		अंगामी	√	√	√	५०
		सेमा	√	√	√	५०
कुल						३२४०

२.१.२.२ **अघोष-घोष**

आओ तथा लोथा भाषी छात्र शब्द के आदि तथा मध्य में 'प' का 'ब' उच्चारण करते पाये गये; यथा— पल बल, कपाल कबाल। किन्तु ऐसी त्रुटियाँ अंगामी

आओ और लोथा भाषी छात्र शब्दों की तीनों स्थितियों में 'च' का 'ज' उच्चारण करते पाये गये। अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों द्वारा किसी घोष से अघोष की त्रुटियाँ नहीं हुई।

आओ तथा लोथा भाषी छात्र घोष ध्वनियों का उच्चारण अघोष ध्वनियों के रूप में 'ग' का 'क' शब्द की तीनों स्थितियों में करते पाये गये। सारिणी ७ से यह बात स्पष्ट होती है :

सारिणी ७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
अघोष → घोष	प → ब		पल → बल			
		आओ	√	—		६०
		लोथा	√		—	५०
		अंगामी	×	×	×	×
		सेमा	×	×	×	×
	च → ज		चला → जला	बचपन → बजपन	मच → मज	
		आओ	√	√	√	१३५
		लोथा	√	√	√	१००
		अंगामी	×	×	×	×
		सेमा	×	×	×	×

घोष→ अघोष	ग→क		गमला→ कमला	पागुर→ पाकुर	पग→पक	
		आओ	√	√	√	६०
		लोथा	√	√	√	७५
		अंगामी	×	×	×	×
		सेमा	×	×	×	×
कुल						५००

२.१.२.३ **मूर्धन्य-दंत्य**

छात्र मूर्धन्य ध्वनियों के स्थान पर दंत्य ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। ये छात्र ट→त, ठ→थ~त, ड→द, ढ→ध~द का उच्चारण शब्दों के आदि, मध्य, अन्त तीनों ही स्थितियों में करते हैं। सारिणी ८ से यह स्पष्ट हो जाता है :

सारिणी ८

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
मूर्धन्य-दंत्य	ट→त		टमाटर→ तमातर	मटर→ मतर	चोट→चोत	
		आओ	√	√	√	१६०
		लोथा	√	√	√	१७०
		अंगामी	√	√	√	१५०
		सेमा	√	√	√	१७०

ड → द		डस → दस	खडन → खंदन	दंड → दंद	
	आओ	√	√	√	१८०
	लोथा	√	√	√	१६०
	अंगामी	√	√	√	१३०
	सेमा	√	√	√	१५०
ठ → त		ठठेरा → ततेरा	बैठना → बैतना	आठ → आत	
	आओ	√	√	√	१३०
	लोथा	√	√	√	१२०
	अंगामी	√	√	√	११०
	सेमा	√	√	√	१२०
ढ → द		ढक्कन → दक्कन	ढोता → दोता	बुड्ढी → बुड्दी	
	आओ	√	√	√	१३०
	लोथा	√	√	√	१३०
	अंगामी	√	√	√	१००
	सेमा	√	√	√	१२०
कुल					२१७०

२.१.२.४ ऊष्म ध्वनियाँ

छात्र तालव्य 'श' का उच्चारण दंत्य 'स' के रूप में शब्दों की तीनों स्थितियों में करते हैं; यथा—शहर → सहर, मशक → मसक, यश → यस ।

इस प्रकार की उच्चारणिक त्रुटियाँ अंगामी और सेमा भाषी छात्रों की अपेक्षा आओ और लोथा भाषी छात्रों ने अधिक कीं। सारिणी ९ से यह स्पष्ट हो जाता है।

सारिणी ९

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
ऊष्म ध्वनियाँ	श→स		शक्कर→ सक्कर	मशक→ मसक	यश→यस	
		आओ	√	√	√	२००
		लोथा	√	√	√	२००
		अंगामी	√	√	√	१५०
		सेमा	√	√	√	१४०
कुल						६९०

२.१.२.५ उत्क्षिप्त लुंठित

छात्र 'ड़' और 'ढ़' के स्थान पर 'र' और 'र्ह' का उच्चारण करते हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ शब्दों के मध्य और अन्त स्थितियों में पायी गयीं। सारिणी १० से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

सारिणी १०

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
उत्क्षिप्त-लुंठित	ड़ → र		×	लड़का लरका	पहाड़ पहार	
		आओ	×	✓	✓	२३५
		लोथा	×	✓	✓	३३०
		अंगामी	×	✓	✓	३००
		सेमा	×	✓	✓	२००
	ढ़ → र्ह		×	पढ़ना पर्हना	बाढ़ बार्ह	
		आओ	×	✓	✓	२८०
		लोथा	×	✓	✓	३२०
		अंगामी	×	✓	✓	३००
		सेमा	×	✓	✓	२३०
कुल						२२३५

२.१.२.६ 'ह्' का अप्रयोग

छात्र हिन्दी शब्दों के अन्त में 'ह्' का उच्चारण नहीं करते, यथा 'जगह्' के स्थान पर 'जगा' का उच्चारण मिलता है। ऐसी त्रुटियाँ नागा-भाषा-भाषियों द्वारा लगभग समान रूप से हुई हैं। सारिणी ११ से यह स्पष्ट हो जाता है।

सारिणी ११

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
अप्रयोग	ह्→ϕ		×	×	जगह→जगा	
		आओ	×	×	√	९०
		लोथा	×	×	√	९०
		अंगामी	×	×	√	८०
		सेमा	×	×	√	९०
कुल						३५०

२.१.२.७ **व्यंजन-गुच्छ**

नागा-भाषी छात्र हिन्दी व्यंजन-गुच्छों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं। आओ और सेमा भाषी छात्र व्यंजन+र के उच्चारण में तीनों ही स्थितियों में त्रुटियाँ करते हैं; यथा—क्रम→कम, विक्रम→विकम, शुक्र→शुक।

इस प्रकार की उच्चारणिक त्रुटियाँ अंगामी और लोथा भाषी छात्रों में कम पायी गयीं।

'य' के योग से निर्मित व्यंजन-गुच्छों की उच्चारणिक त्रुटियाँ आओ तथा सेमा भाषी छात्रों द्वारा शब्दों की तीनों स्थितियों में तथा अंगामी और लोथा भाषी छात्रों द्वारा अन्त में पायी गयीं; यथा—व्यस्त→वयस्त, अव्यय→अवय, कर्त्तव्य→कर्त्तवय, त्यक्त→तयक्त, इक्यावन→इकावन, व्याख्या→वयखया।

ग+ल व्यंजन-गुच्छों की उच्चारणिक त्रुटियाँ सभी छात्रों द्वारा शब्द के आदि में तथा प+प, प+य, ल+म, स+म व्यंजन-गुच्छों की उच्चारणिक त्रुटियाँ शब्द की अन्त स्थिति में पायी गयीं। सारिणी १२ से इनकी स्थिति स्पष्ट होती है।

सारिणी १२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
व्यंजन संयोग	क+र		क्रम → कम	विक्रम → विकम	शुक्र → शुक	
		आओ	√	√	√	१५०
		लोथा	×	×	×	×
		अंगामी	×	×	×	×
		सेमा	√	√	√	१२५
	व+य		व्यस्त → वयस्त	अव्यय → अवय	कर्तव्य → कर्तवय	
		आओ	√	√	√	१२५
		लोथा	×	×	√	१००
		अंगामी	×	×	√	७५
		सेमा	√	√	√	१५०
	ग+ल ष+प		ग्लानि → गलानी	×	बाष्प → बाषप	
		आओ	√	×	√	१००
		लोथा	√	×	√	६०
		अंगामी	√	×	√	५०
		सेमा	√	×	√	७५

व्यंजन संयोग	त+य ष+य		त्यौहार→ तयोहार	×	मनुष्य→ मनुषय	
		आओ	√	×	√	५०
		लोथा	√	×	√	५५
		अंगामी	√	×	√	५०
		सेमा	√	×	√	६०
	ल+म		×	×	जुल्म→ जुलुम	
		आओ	×	×	√	६०
		लोथा	×	×	√	६०
		अंगामी	×	×	√	५५
		सेमा	×	×	√	६५
	स+म		×	×	किस्म→ किसिम	
		आओ	×	×	√	७०
		लोथा	×	×	√	५०
		अंगामी	×	×	√	४०
		सेमा	×	×	√	५०
कुल						१६६५

२.१.२.८. संकीर्ण दोष

व्यंजन सम्बन्धी कुछ अन्य प्रकार की उच्चारणिक त्रुटियाँ भी पायी गयीं; यथा—कृपा→कार्पा, सवार→स्वार।

इन त्रुटियों में किसी प्रकार का क्रम नहीं देखा जा सका।

२.१.३. अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

नागा-भाषी छात्र हिन्दी की अनुनासिकता का उच्चारण तीनों स्थितियों में नहीं कर पाते। अनुनासिकता के स्थान पर या तो वे निरनुनासिक उच्चारण करते हैं या नासिक्य ध्वनि के रूप में उच्चारण करते हैं।

२.१.३.१ अनुनासिक-निरनुनासिक

अनुनासिकता का उच्चारण निरनुनासिक रूप में शब्दों की तीनों स्थितियों में होता है। सारिणी १३ में यह बात स्पष्ट होती है।

सारिणी १३

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अन्त	
अनुनासिक निरनुनासिक	ँ > ×		आँचल → आचल	पहुँच → पहुच	कहाँ → कहा	
		आओ	\	\	\	१६५
		लोथा	✓	✓	\	१००
		अंगामी	✓	\	\	८०
		सेमा	✓	✓	\	३०
कुल						३७५

२.१.३.२ अनुनासिक-नासिक्य

अनुनासिकता का उच्चारण नासिक्य ध्वनियों के रूप में शब्दों की आदि और मध्य स्थितियों में मिलता है; यथा—

सारिणी १४

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषाएँ	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
अनुनासिक नासिक्य	̐ > =		आदि	मध्य	अन्त	
			चाँद → चान्द	छलाँग → छलान्ग	×	
		आओ	√	√	×	१५०
		लोथा	√	√	×	१७०
		अंगामी	√	√	×	१६०
		सेमा	√	√	×	१७०
कुल						६५०

२.२ नागा भाषाओं की स्वनिम व्यवस्था

एक ही भाषा-परिवार की भाषा होते हुए भी नागा-भाषाओं की स्वनिम-व्यवस्था में पर्याप्त अन्तर विद्यमान है। प्रस्तुत अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है।

२.२.१ स्वर-स्वनिम

नागा-भाषाओं—आओ, अंगामी, सेमा और लोथा—में ६ स्वर-स्वनिम / i /, / e /, / ɯ /, / a /, / u / तथा / o / समान रूप से पाये जाते हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

/ i / (ई) : यह संवृत, अग्र, अवृताकार स्वर-स्वनिम है। चारों भाषाओं में इस स्वनिम का प्रयोग शब्दों की तीनों स्थितियों—आदि, मध्य और अन्त—में होता है। लोथा में इसके दो सह-स्वन पाये जाते हैं। निम्नलिखित विवरण से यह बात स्पष्ट है :—

भाषाएँ		आदि	मध्य	अन्त
आओ / i /		ita (चांद)	sipa (कौन)	ki (घर)
लोथा / i /	[ɪ] अल्प-संवृत	×	kɪkho (ताज)	×
	[i]	itseŋ (संख्या)	liru (खराब मिट्टी)	noci (दर्द)

	आदि	मध्य	अन्त
अंगामी / i /	itacie (ईंट)	'kimie (पत्नी)	ki (घर)
सेमा / i /	isi (आज)	kili (विनिमय)	ti (वह)

/ e / : यह अर्ध-संवृत, अग्र, अवृताकार स्वर-स्वनिम है। यह आओ, लोथा तथा सेमा भाषा में शब्दों की तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होता है। अंगामी भाषा के केवल मध्य और अन्त की स्थिति में इसका प्रयोग होता है, यथा

भाषाएँ		आदि	मध्य	अन्त
आओ / e /	[é]	×	pélh (साँप)	×
	[e]	entok (फेंकना)	meca (चींटी)	tene (नाक)
सेमा / e /	[E] (अर्ध-संवृत अर्ध-विवृत के मध्य)	×	ʌ nhEy (पुराना)	×
	[e]	eno (और)	sephe (मांस)	me (गला)
लोथा / e /		ehuŋ (दृश्य)	serə (बर्फ)	nte (तुम)
अंगामी / e /		×	pera (चिड़िया)	le (गर्मी)

/ ɯ /, / ə / : हिन्दी के ह्रस्व 'अ' से मिलते-जुलते ये दोनों स्वनिम नागा भाषाओं में विभिन्न स्थितियों में पाये जाते हैं :—

/ ɯ / : यह आओ-भाषा में संवृत, पश्च, अगोलाकार स्वर-स्वनिम है। सेमा भाषा में यह संवृत, पश्च, किंचित अवृताकार स्वर-स्वनिम है। सेमा में इसके दो सह-स्वन हैं। निम्नलिखित विवरण से यह स्पष्ट है :—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / ɯ /		×	sɯŋ (लकड़ी)	kɯ (मेरा)
सेमा / ɯ /	/ i / (संवृत, मध्य, अवृताकार)	×	imkɯ (कीमत)	×
	[ɯ]	×	kinɯsɯ (लकड़ी)	zɯ (सोना)

/ ∂ / : यह मध्य-संवृत विवृत, अवृताकार, मध्य स्वर-स्वनिम है। अंगामी में शब्दों की तीनों स्थितियों में तथा लोथा भाषा में शब्दों के मध्य और अन्त में इसका प्रयोग होता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
अंगामी / ∂ /	∂bou	t∂iR∂	t∂f∂
	(नगाड़ा)	(वर्षा)	(कुत्ता)
लोथा / ∂ /	×	f∂ro	h∂mr∂
		(कुत्ता)	(रोटी)

/ a / : यह विवृत, मध्य, अवृताकार स्वर-स्वनिम है। नागा-भाषाओं में तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होता है। आओ में इसके दो सह-स्वन हैं; यथा—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / a /	[ʌ] (अर्ध-विवृत, पश्च, अवृताकार	ʌḷhu (आना)	wʌh (जाओ)	maŋʌ (मक्खी)
	[a]	ak (सूअर)	paḷh (उसका)	pa (वह)
लोथा / a /		a (मैं)	larva (सस्ता)	ŋika (काला)
अंगामी / a /		a (मैं)	thayie (केला)	kiya (शादी)
सेमा / a /		awo (सूअर)	tave (पूर्ण)	xa (फसल)

/ u / : यह संवृत, पश्च, वृताकार स्वर-स्वनिम है। यह आओ, अंगामी एवं लोथा भाषा की तीनों स्थितियों में आता है। सेमा भाषा में यह शब्द के मध्य और अन्त में प्रयुक्त होता है। लोथा में इसके दो सह-स्वन हैं; यथा—

		आदि	मध्य	अन्त
लोथा / u /	[u] (मध्य में ह्रास-उन्मुख सुर के प्रथम अक्षर में निम्न संवृत, पश्च, वृताकार)	×	kura (पतला)	×
	[u] (सर्वत्र)	uŋkona (वृत)	okum (ऋतु)	eru (वर्षा)

	आदि	मध्य	अन्त
आओ / u /	upa (पिता)	tucw (तेल)	eiu (पत्ते)
अंगामी / u /	u (हाँ)	bulie (कमीज)	Pu (बोलना)
सेमा / u /	×	buzu (अनुभव करना)	ku (पुकारना)

/ o / : यह अर्ध-संवृत, पश्च, अवृताकार स्वर-स्वनिम है। आओ, सेमा तथा लोथा भाषा के शब्दों की तीनों स्थितियों में तथा अंगामी में मध्य और अन्त में यह प्रयुक्त होता है। आओ में इसके दो सह-स्वन हैं; यथा—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / o /	[ə] (अर्ध-विवृत, पश्च, वृताकार, कंठ ध्वनियों के आगे या पीछे प्रयोग)	əKə (मामा)	nəŋ (पर)	tʌcəŋ (अच्छा)
	[O] (सर्वत्र)	onək (हम)	tanol̥h (लड़का)	nal̥ho (फूल)
लोथा / o /		ocə (पानी)	sono (कसाई)	helo (यहाँ)
अंगामी / o /		×	Zoza (दीवाल)	bo (पेड़)
सेमा / o /		opu (तुम्हारा पिता)	Posɯ (दौड़ना)	no (तुम)

२.२.२ व्यंजन स्वनिम

आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा भाषा में निम्नलिखित १२ व्यंजन स्वनिम समान रूप से पाये जाते हैं :—

/ P /, / t /, / K /, / C /, / S /, / Z /, m /, / n /, / b /, / l /, / W / तथा / Y /। इनका वर्णन निम्नलिखित है :—

/ P / : यह अल्पप्राण, अघोष, द्वयोष्ठ्य, स्पर्श व्यंजन स्वनिम है। आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा में इसकी स्थिति अग्रवत है :—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / P /	[Ph] (अघोष, महाप्राण, द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, आदि में P के साथ)	Palh (उसका)	×	×
	[b] (घोष, अल्पप्राण, द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, केवल मध्य में दो स्वरों के बीच)	×	čuba (राजा)	×
	[P] (सर्वत्र)	Pezɯ (चाट)	apu (चमकना)	atep (चुल्हा)
लोथा / P /	[P] (अघोष, अल्पप्राण, द्वयोष्ठ्य स्पर्श, केवल अन्त में अमूर्त)	×	×	olop> (कब्र)
	[P] (आदि और मध्य में)	Pəŋnoy (शिक्षक)	oporo (चाचा)	×
अंगामी / P /		PeRa (पक्षी)	Zope (कृमि)	×
सेमा / P /		Pa (वह)	ʌpu (पिता)	×

/ t / : यह अघोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श व्यंजन स्वनिम है। आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषा में इसकी स्थिति निम्नवत् है :—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / t /	[th] (अघोष, महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श, केवल आदि में t के साथ)	telh (दम)	×	×
	[d] (घोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श, केवल मध्य में दो स्वरों के बीच तथा नासिक्य के बाद)	×	Kunda (घंटा)	×
	[t] (सर्वत्र)	ti (आठ)	Kuta (कैसा)	tepset (मारना)

		आदि	मध्य	अन्त
लोथा / t /	[d] (घोष, अल्पप्राण, दंत्य, स्पर्श, केवल मध्य में अपने वर्ग के नासिक्य के साथ)	×	randamo (प्रार्थना)	×
	[t̪] (आदि, मध्य में)	t̪irok (छ)	ot̪oŋ (पेड़)	
सेमा / t /	[t] (अघोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श केवल अग्र स्वर के पहले)	ti (वह)	ʌte (पुराना)	
	[t̪] (अघोष, अल्पप्राण दंत्य, स्पर्श, सर्वत्र)	t̪ixa (आधा)	ʌt̪u (बगीचा)	
अंगामी / t /		tekhu (बाघ)	dzieken̥o (चाकू)	

/ K / : यह अघोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्श व्यंजन स्वनिम है। आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा भाषा में इसकी स्थिति निम्नवत् है :—

		आदि	मध्य	अन्त
लोथा / K /	[K'] (अघोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्श, केवल अंत में अमुक्त)	×	×	yoŋkok' (चम्मच)
	[g] (घोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्श केवल मध्य में)	×	Sənrəga (इन्द्र धनुष)	×
	[K] (अन्य सर्वत्र)	Kyon (आदमी)	toku (नौ)	×
अंगामी / K /		kiya (शादी)	meku (ठंढा)	
सेमा / K /		ka (शासन)	ʌki (घर)	

/ C / : यह अघोष, अल्पप्राण, तालव्य, स्पर्श संघर्षी व्यंजन स्वनिम हैं। आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा में इसकी स्थिति निम्नवत् है :—

		आदि	मध्य	अन्त
सेमा / č /	[č] (अघोष, अल्पप्राण तालव्य, स्पर्श संघर्षी, मध्य स्वर के पहले नहीं आता)	ču (खाया)	ʌči (ठोम)	×
	[c] (अघोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श संघर्षी, मध्य स्वर तथा ɯ के पहले आता है)	cɯ (नाग)	ʌcɯ (कुत्ता)	×
अंगामी / č /		cickRlc	kecie	×
		(चट्टान)	(नम्मच)	
लोथा / č /		ceŋrd	oco	×
		(पानी का साँप)	(पैर)	

/ s / : यह अघोष, वर्त्स्य, संघर्षी स्वनिम है। विभिन्न नागा-भाषाओं में इसकी स्थिति निम्नलिखित है :—

		आदि	मध्य	अन्त
आओ / s /	[š] (अघोष, तालव्य, संघर्षी, केवल आदि, मध्य में / i / के साथ)	ši (मांस)	uši (बोझ)	×
	[s] (अघोष, वर्त्स्य, संघर्षी, केवल आदि और मध्य में जब / i / का अनुकरण न हो)	sak (देखना)	asɯ (मरना)	×
सेमा / s /	[š] (अघोष, तालव्य, संघर्षी, केवल आदि, मध्य में मध्य-स्वरों को छोड़ शेष स्वरों के आगे)	ši (करना)	ʌšo (गोटी)	×
	[s] (अघोष, दंत्य, संघर्षी, केवल आदि, मध्य में सर्वत्र)	sa (सांड)	ʌsa (बाल)	×
अंगामी / s /	अघोष, वर्त्स्य, संघर्षी	soza	Puosə	×
		(दीवान)	(पंख)	
लोथा / s /	अघोष, वर्त्स्य, संघर्षी	sovan	osi	×

/ z / : यह घोष, वत्स्र्य, संघर्षी स्वनिम है। विभिन्न नागा-भाषाओं में इसकी स्थिति निम्नलिखित है :—

		आदि	मध्य	अन्त
सेमा / z /	[z] (घोष, तालव्य, संघर्षी, u, i, l के पहले केवल आदि और मध्य में)	ze (स्वयं)	ʌze (नाम)	×
	—[j] (घोष, तालव्य, स्पर्श संघर्षी, o के बाद केवल मध्य में)	×	loji (खिलाना)	×
	[z] (घोष, वत्स्र्य, संघर्षी अन्यत्र)	za (बोलना)	ʌzɯ (पानी)	×
आओ / z /	घोष, वत्स्र्य, संघर्षी	zɯlu (लिखना)	azɯ (कुत्ता)	×
अंगामी / z /	घोष, वत्स्र्य, संघर्षी	Zebe (जीभ)	Kizə (संसार)	×
लोथा / z /	घोष, वत्स्र्य, संघर्षी	zəmo (रात)	ezə (दास)	×

/ m / : यह घोष, द्वयोष्ठय, नासिक्य स्वनिम है। विभिन्न नागा-भाषाओं में इसकी स्थिति निम्नलिखित है :—

		आदि	मध्य	अन्त
लोथा / m /	[m'] (घोष, द्वयोष्ठ्य, नासिक्य, केवल अंत में अमुक्त)	×	×	oŋəm' (कोब्रा)
	[m] (घोष, द्वयोष्ठ्य, नासिक्य, आदि अंत में)	milani (शाम)	temo (गाना)	×
आओ / m /	(घोष, द्वयोष्ठ्य, नासिक्य, तीनों स्थिति में)	mi (आग)	ama? (भलना)	ʌčam (पीना)

	आदि	मध्य	अन्त
अंगामी / m / (घोष, द्वयोष्ठ्य, नासिक्य दो स्थिति में)	mi (आग)	Kimie (पत्नी)	×
सेमा / m / (घोष, द्वयोष्ठ्य, नासिक्य, दो स्थिति में)	me (कंठ)	timi (आदमी)	×

/ n / : यह घोष, वर्त्स्य, नासिक्य स्वनिम है। आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा भाषा में इसकी निम्न स्थिति है :—

	आदि	मध्य	अन्त
आओ / n / (घोष, वर्त्स्य, नासिक्य)	na (तुम)	ana (दो)	sén (रुपया पैसा)
लोथा / n̪ / (घोष, अल्पप्राण, दंत्य)	nəŋhori (बच्चा)	miani (ग्राम)	oton (ललाट)
अंगामी / n / (घोष, वर्त्स्य, नासिक्य)	no (तुम)	Kinomie (परिवार)	×
सेमा / n / (घोष, वर्त्स्य, नासिक्य)	no (तुम)	ʌnu (बच्चा)	×

/ ŋ / : यह घोष, कंठ्य, नासिक्य स्वनिम है। आओ और लोथा भाषा के शब्दों की तीनों स्थितियों में तथा अंगामी और सेमा के आदि व मध्य में प्रयुक्त होता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
आओ / ŋ /	yaŋsi (दुत्कारना)	aŋa (आज्ञा पालन करना)	Koŋ (कहाँ)
लोथा / ŋ /	ŋaro (शिशु)	Khəŋ.ı (कठोर)	yaŋuŋ (गली)
अंगामी / ŋ /	ŋ (देखना)	Peŋou (पाँच)	×
सेमा / ŋ /	ŋo (सकना)	Puŋu (पाँच)	×

/ l / : यह घोष, वर्त्स्य, पार्श्विक स्वनिम है। लोथा भाषा के शब्दों की तीनों स्थितियों तथा आओ, अंगामी, सेमा भाषा के शब्दों के आदि और मध्य में प्रयुक्त होता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
लोथा / l /	lizə (मिट्टी)	eloK' (बादल)	Kozal (नाखून)
आओ / l /	la (वह स्त्री)	tali (अधिक)	×
अंगामी / l /	li (वर्तन)	dzəle (उबालना)	×
सेमा / l /	lo (अवसर)	ʌla (मार्ग)	×

/ w / : यह घोष, द्वयोष्ठ्य, अर्ध-स्वर है। यह आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा भाषा के शब्दों की आदि और मध्य स्थिति में प्रयुक्त होता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
आओ / w /	wal̥hu (कौवा)	awəŋ (गर्म)	×
लोथा / w /	woro (चिड़िया)	owo (पत्ते)	×
अंगामी / w /	we (पतला)	Kewe (पुराना)	×
सेमा / w /	wo (जाना)	itiwo (कौवा)	×

/ y / : यह घोष, तालव्य, अर्ध-स्वर है। यह आओ और लोथा भाषा के शब्दों के तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होता है तथा अंगामी और सेमा भाषा के शब्दों के आदि और मध्य में आता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
आओ / y /	yaŋi (यहाँ)	Keyi (बाघ)	taŋ (गलत)
लोथा / y /	yoŋKoK' (चम्मच)	tiyiŋ (सात)	Pəŋnoy (शिक्षक)
अंगामी / y /	yasau (दुल्हा)	Kiya (शादी)	×
सेमा / y /	ye (पीना)	ʌya (सम्बन्ध)	×

नागा-भाषाओं में उपर्युक्त १२ व्यंजन स्वनिमों के अतिरिक्त अन्य व्यंजन स्वनिम भी हैं जो भाषा विशेष के संदर्भ में ही प्रयुक्त होते हैं।

२.२.३ स्वर-संयोग

नागा-भाषाओं में स्वर-संयोग की स्थिति पायी जाती है। आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषा में ये स्थितियाँ इस प्रकार हैं

	आदि	मध्य	अन्त
आओ	a+i (aika —बहुत)	a+i (tain —पुराना)	o+a (uoa आशीर्वाद देना)
लोथा	×	a+o (saoci साम्राज्य)	o+a (koa खुला हुआ)
अंगामी	×	i+e (nmieRhi — खिलौना)	o+u (Phikhou जूता)
सेमा	×	i+a (athiazu — भाई)	o+u (qhou नीचे)

२.२.४ व्यंजन संयोग

नागा-भाषाओं में व्यंजन संयोग की विभिन्न स्थितियाँ प्राप्त होती है; यथा

	आदि	मध्य	अन्त
आओ	P+lh (Plhoŋ —दोनों	P+P (eleppa —पट्टी	w+k (awk झाड़ देना)
लोथा	nh+r (nh+a —मथनी)	P+y (epyəŋ — भरा हुआ)	×
अंगामी	kh+R (khRi — तसला)	K+R (fəkhRə चुड़ैल)	×
सेमा	th+k (thkuh —बढ़ना)	m+k (zimki —किनारा	×

नागा-भाषाओं में व्यंजन संयोग मध्य की स्थिति में अधिक पाये जाते हैं। लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषा में व्यंजन संयोग अन्त की स्थिति में प्रायः नहीं मिलते।

२.३ हिन्दी भाषा के स्वनिम

हिन्दी भाषा के स्वर-स्वनिम, व्यंजन स्वनिम, स्वर संयोग, व्यंजन संयोग तथा अनुनासिकता के निम्नलिखित उदाहरण हैं :—

२.३.१ स्वर-स्वनिम

हिन्दी भाषा में दस स्वर-स्वनिम हैं :—

ई ऊ
इ उ
ए अ ओ
ऐ औ
आ

२.३.२ व्यंजन स्वनिम

हिन्दी भाषा में व्यंजन स्वनिम ३५ हैं :—

प	त	—	च	ट	क
फ	थ	—	छ	ठ	ख
ब	द	—	ज	ड	ग
भ	ध	—	झ	ढ	घ
म	—	न	—	ण	—
म्ह	—	न्ह	—	—	—
—	—	र	—	—	—
—	—	—	—	ड़	—
—	—	—	—	ढ़	—
—	—	ल	—	—	—
—	—	ल्ह	—	—	—
—	—	स	श	—	ह
व	—	—	य	—	—

२.३.३ स्वर संयोग

शब्दों के आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में स्वर-संयोग मिलते हैं; यथा—**आओगे, गाइए, खाइए ।**

२.३.४ व्यंजन संयोग

शब्दों के आदि, मध्य तथा अन्त की स्थिति में व्यंजन संयोगों के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं; यथा—

प+र	प्रकाश	अप्रिय	विप्र
न+य	न्याय	कन्या	अन्य आदि

हिन्दी में स्वर संयोग तथा व्यंजन संयोग शब्दों की तीनों स्थितियों में पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं किन्तु नागा-भाषाओं में स्वर संयोग तथा व्यंजन संयोग के प्रयोग की मात्रा हिन्दी की अपेक्षा बहुत सीमित है ।

२.३.५ अनुनासिकता

हिन्दी में सभी स्वरों की अनुनासिक रूप भी मिलता है; यथा—

	आदि	मध्य	अन्त
अँ	अँगीठी	महँगा	
आँ	आँचल	छलाँग	कहाँ
इँ	इँगुवा	घुइँया	
ईं	ईंगुर	—	परछाईं

	आदि	मध्य	अन्त
उँ	उँगली	पहुँच	—
ऊँ	ऊँघना	—	खड़ाऊँ
एँ	रेंगना	दहेंडी	चनें
ऐं	ऐंठना	—	हैं
ओं	घोंसला	खरोंच	हों
औं	औंधा	घरौंधा	भौं

नागा-भाषाओं में नासिक्य व्यंजन संयोग की प्रवृत्ति अवश्य है, यथा लोथा में ŋ+p (loŋpru—चट्टान) किन्तु जिस प्रकार हिन्दी में अनुनासिकता के प्रयोग का बाहुल्य है, उस प्रकार नागा-भाषाओं में अनुनासिक प्रयोग नहीं होता।

सारिणी १५ से हिन्दी तथा नागा-भाषाओं के स्वर तथा व्यंजन स्वनिमों का तुलनात्मक विवरण स्पष्ट हो जाता है।

२.४ निष्कर्ष एवं शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

नागाभाषी छात्र हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। ये त्रुटियाँ मुख्यतः स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों में विविध रूप में दृष्टिगत होती हैं। इनके आधार पर उनकी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है। ये निम्नलिखित हैं :

२.४.१ स्वर-ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु

नागाभाषी छात्रों ने ह्रस्व स्वरों के उच्चारण के स्थान पर दीर्घ स्वरों के उच्चारण की कुल ६८० त्रुटियाँ कीं। इनमें लोथाभाषी छात्रों ने २२०, अंगामी-भाषी छात्रों ने १९० तथा सेमा और आओ भाषी छात्रों ने क्रमशः १४० और १३० त्रुटियाँ कीं। नागा-भाषाओं में स्वर-स्वनिमों की व्यवस्था से यह स्पष्ट होता है कि ह्रस्व स्वर स्वनिम-स्तर पर प्रयोग में नहीं आते। यही कारण है कि नागाभाषी छात्र उच्चारण में दीर्घीकरण की त्रुटियाँ करते हैं।

ठीक इसके विपरीत दीर्घ उच्चारण के स्थान पर ह्रस्व उच्चारण की प्रवृत्ति भी स्पष्ट होती है। इसका कारण सम्भवतः भ्रम है। ह्रस्वीकरण की कुल ४३० त्रुटियाँ पायी गयीं। इनमें आओभाषी छात्रों ने १२०, सेमा ने ११०, लोथा ने १०० तथा अंगामीभाषी छात्रों ने १०० त्रुटियाँ कीं।

स्वर व्यत्यय में 'अ' के स्थान पर 'औ' के उच्चारण की त्रुटियाँ ४३० हुईं; 'ए' तथा 'ऐ' के स्थान पर 'इ' उच्चारण करने की त्रुटियाँ मात्र १७५ हुईं तथा संध्यक्षरों में 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' उच्चारण करने की त्रुटियाँ ३६० हुईं। मध्य स्वर के अप्रयोग की त्रुटियाँ मात्र १८५ हुईं। इससे स्पष्ट है

सारिणी १५

स्वनिम	हिन्दी						आओ						लोथा						अंगामी						सेमा					
	स्वनिम			सहस्वनिम			स्वनिम			सहस्वनिम			स्वनिम			सहस्वनिम			स्वनिम			सहस्वनिम			स्वनिम			सहस्वनिम		
स्वर-स्वनिम	आदि	मध्य	अन्त	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत	आदि	मध्य	अंत
/i/ (ई)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-
/I/ (इ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	✓	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
/e/ (ए)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	×	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-
ɛ (ऐ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
/u/ (ऊ)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	×	✓	✓	-	-	-
ʊ (उ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	✓	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
/o/ (ओ)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	×	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-
ɔ (औ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
(ə) (अ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×
/ɑ/ (आ)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-
/a/	×	×	×	×	×	×	×	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	✓	✓	-	-	-
/p/ (प)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	×	✓	✓	-	-	-
/ph/ (फ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	✓	×	×	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/b/ (ब)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	✓	×	×	×	×	×	×	×	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/bh/ (भ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
/t/ (त)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/th/ (थ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	✓	×	×	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/d/ (द)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	✓	×	×	×	×	×	✓	×	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/dh/ (ध)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
/c/ (च)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-
/ch/ (छ)	✓	✓	✓	-	-	-	×	×	×	×	×	×	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-	✓	✓	×	-	-	-

	हिन्दी						आओ						लोथा						अंगामी						सेमा					
/j/ (ज)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✓	✗
/jh/ (झ)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
(ṭ) (ट)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/ṭh/ (ठ)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/ḍ/ (ड)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/ḍh/ (ढ)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/k/ (क)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/kh/ (ख)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/g/ (ग)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/gh/ (घ)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/m/ म	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/mh/ (म्ह)	✗	✓	✗	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/n/ (न)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/nh/ (न्ह)	✗	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/ṇ/ (ण)	✗	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/r/ (र)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/ṛ/ (ड़)	✗	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/ṛh/ (ढ़)	✗	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✗
/l/ (ल)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/lh/ (ल्ह)	✗	✓	✗	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/s/ (स)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/š/ (श)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✓	✓	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✗	✗	✗	✓	✓	✗
/h/ (ह)	✓	✓	✓	-	-	-	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/w/ (व)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/y/ (य)	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-
/z/ (ज़)	✗	✗	✗	✗	✗	✗	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-	✓	✓	✗	-	-	-

	हिन्दी						आओ						लोथा						अंगामी						सेमा					
/y/ (5·)	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	✓	–	–	–	✓	✓	✓	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–
/ɣ/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/β/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/c/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	✓	✓	x
/f/ (फ़)	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–
/v/ (व़)	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–
/ž/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/n̆/ (ञ)	x	x	x	x	✓	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–
/n̆h/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–	✓	✓	x	–	–	–
/ʔ/	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/ʔh/	x	x	x	x	x	x	✓	✓	✓	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/bv/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/dz/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/m̥/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/R/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/Rh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/wh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/ɥh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x
/lv/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/tsh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/Yh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/yh/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	–	–	–	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
/q/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–
/x/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–
ɣ	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	–	–	–

के आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों में त्रुटियों की समान प्रवृत्तियाँ वर्तमान हैं। संध्यक्षरों की कुल ९०५ त्रुटियों में आओ ने २७०, लोथा ने २५०, अंगामी ने २०५ तथा सेमा भाषी छात्रों ने १८० त्रुटियाँ कीं।

इस प्रकार कुल स्वर-ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ २७३० हुईं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इनमें सबसे अधिक त्रुटियाँ दीर्घीकरण की मिलती हैं।[1]

त्रुटियों की आवृत्ति-गणना तथा त्रुटियों के प्रकार को दृष्टि में रखते हुए स्वर-ध्वनियों के निम्नलिखित उच्चारणिक शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) दीर्घीकरण ←→ ह्रस्वीकरण

(ख) संध्यक्षर

(ग) स्वर व्यत्यय

(घ) मध्य स्वर का प्रयोग—अभ्यास

२.४.२ व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणिक त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु

छात्रों ने महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राण के उच्चारण की ३२४० त्रुटियाँ कीं। इनमें सबसे अधिक त्रुटियाँ (११६०) आओभाषी छात्रों ने कीं। लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों ने लगभग समान—क्रमशः ७२०, ६६०, ७००—त्रुटियाँ कीं।

दूसरा स्थान उत्क्षिप्त से लुंठित उच्चारणगत त्रुटियों (२२४५) का है। मूर्धन्य से दंत्य उच्चारण करने की त्रुटियाँ २१७० हुईं। आवृत्ति-गणना की दृष्टि से इसका तीसरा स्थान है। व्यंजन संयोग की त्रुटियाँ १६६५ हुईं। ऊष्म (श>स) ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ ६९०, अघोष-घोष की त्रुटियाँ ५०० तथा 'ह्' के अप्रयोग की त्रुटियाँ मात्र ३५० हुईं।[2]

व्यंजन ध्वनियों की कुल उच्चारणगत त्रुटियाँ १०८५० हुईं जिनमें सबसे अधिक त्रुटियाँ (३३९५) आओभाषी छात्रों ने कीं। लोथाभाषी छात्रों ने २७७०, सेमाभाषी छात्रों ने २४३५ तथा अंगामीभाषी छात्रों ने २२५० त्रुटियाँ कीं। नागा-भाषाओं में व्यंजन स्वनिम व्यवस्था से यह स्पष्ट होता है कि आओ-भाषा में व्यंजन स्वनिमों की संख्या बहुत कम है, इसलिए आओभाषी छात्र हिन्दी के व्यंजन स्वनिमों के उच्चारण में अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

नागा-भाषाओं में महाप्राण ध्वनियों का उच्चारण अधिक मुखर नहीं है। अतः नागाभाषी छात्र हिन्दी की महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में अधिक त्रुटियाँ करते हैं।

---

१ देखें सारिणी १६, पृष्ठ ६३।

२ देखें सारिणी १७, पृष्ठ ६४।

त्रुटियों की आवृत्ति, प्रकार तथा शिक्षण-क्रम की दृष्टि से व्यंजन ध्वनियों के निम्नलिखित उच्चारणिक शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) अल्पप्राण ←→ महाप्राण
(ख) अघोष ←→ घोष
(ग) मूर्धन्य ←→ दंत्य
(घ) उत्क्षिप्त ←→ लुंठित
(ङ) ऊष्म (श ←→ स) ध्वनियाँ
(च) 'ह' ←→ प्रयोग
(छ) व्यंजन संयोग

२.४.३ अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु

नागाभाषी छात्रों ने अनुनासिकता के स्थान पर निरनुनासिकता का उच्चारण किया है। इसकी कुल त्रुटियाँ ३७५ है जिनमें सबसे अधिक त्रुटियाँ (१२५) आओ-भाषी छात्रों की हैं। लोथाभाषी छात्रों ने १००, अंगामी ने ८० तथा सेमाभाषी छात्रों ने ७० त्रुटियाँ कीं।

अनुनासिकता के स्थान पर संयुक्त अनुनासिक उच्चारण करने की ६५० त्रुटियाँ हुईं जिनमें आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों ने क्रमश. १५०, १७०, १६०, १७० त्रुटियाँ कीं। इनमें लगभग समान प्रवृत्तियाँ स्पष्ट है।[1]

त्रुटियों की आवृत्ति की दृष्टि से अनुनासिकता से सम्बन्धित निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) अनुनासिकता ←→ संयुक्त नासिक्य
(ख) अनुनासिक ←→ निरनुनासिक

२.४.४ समस्त ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियों का निष्कर्ष

समस्त ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ १४६०५ हुईं जिनमें सबसे अधिक त्रुटियाँ व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में १०८५० हुईं। स्वर ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ २७३० हुईं तथा अनुनासिकता के उच्चारण की त्रुटियाँ मात्र १०२५ हुईं। इन कुल त्रुटियों में सबसे अधिक त्रुटियाँ ४२६५ आओभाषी छात्रों ने की। लोथा-भाषी छात्रों ने ३८९५ त्रुटियाँ कीं। सेमाभाषी छात्रों ने ३२७० तथा अंगामीभाषी छात्रों ने ३१७५ त्रुटियाँ कीं।[2]

---

१ देखें सारिणी १८, पृष्ठ ६५।
२ देखें सारिणी १९, पृष्ठ ६६।

सारिणी १६

स्वर-ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

(मारिणी १ मे मारिणी ५ नक की कुल त्रुटियों का कुल योग)

भाषाएँ	दीर्घीकरण	ह्रस्वीकरण	स्वर व्यत्यय	संध्यक्षर	स्वर अप्रयोग	कुल त्रुटियों की संख्या
	त्रुटियों की संख्या					
आओ	१३०	७०	१५५	२७०	७०	६९५
लोथा	२२०	१६०	१४५	२५०	८०	८५५
अंगामी	१९०	१३०	१४५	२०५	१५	६८५
सेमा	१४०	९५	१६०	१८०	२०	५९५
आओ + लोथा + अंगामी + सेमा	६८०	४५५	६०५	९०५	१८५	२८३०
संकीर्ण त्रुटियाँ					२००	३०३०

सारिणी १७

व्यंजन-ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

(सारिणी ६ से सारिणी १२ तक की त्रुटियों का कुल योग)

भाषाएँ	महाप्राण + अल्पप्राण	अघोष-घोष	मूर्धन्य-दंत्य	तालव्य-दंत्य	उत्क्षिप्त-लुंठित	ह का अप्रयोग	व्यंजन संयोग	कुल त्रुटियों की संख्या
	त्रुटियों की संख्या							
आओ	११६०	२७५	५६०	२००	५५५	६०	५५५	३३६५
लोथा	७२०	२२५	५६०	२००	६५०	६०	३२५	२७३०
अंगामी	६६०	—	४६०	१५०	६००	८०	२१०	२२५०
सेमा	७००	—	५६०	१६०	४३०	६०	५१५	२४३५
आओ + लोथा + अंगामी + सेमा	३२४०	५००	२१३०	६६०	२२३५	३५०	१६६५	१०८५०
संकीर्ण त्रुटियाँ							३००	११२५०

सारिणी १८

अनुनासिक-ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

(सारिणी १३ से १४ की कुल त्रुटियों का योग)

भाषाएँ	अनुनासिक-निरनुनासिक	अनुनासिक-संयुक्त नासिक्य	कुल त्रुटियों की संख्या
	त्रुटियों की संख्या		
आओ	१२५	१५०	२७५
लोथा	१००	१७०	२७०
अंगामी	८०	१६०	२४०
सेमा	७०	१७०	२४०
आओ+ लोथा+ अंगामी+ सेमा	३७५	६५०	१०२५

सारिणी १९

स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

(सारिणी १६, १७ तथा १८ की त्रुटियों का कुल योग)

भाषाएँ	स्वर ध्वनियाँ	व्यंजन ध्वनियाँ	अनुनासिक ध्वनियाँ	कुल त्रुटियों की संख्या
	त्रुटियों की संख्या			
आओ	५९५	३३९५	२७५	४२६५
लोथा	८५५	२७७०	२७०	३८९५
अंगामी	६८५	२२५०	२४०	३१७५
सेमा	५९५	२४३५	२४०	३२७०
आओ + लोथा + अंगामी + सेमा +	२७३०	१०८५०	१०२५	१४६०५
संकीर्ण त्रुटियाँ			५००	१५१०५

अध्याय ३

नागाभाषी छात्रों के हिन्दी प्रयोग (व्याकरणिक पक्ष) से सम्बन्धित त्रुटियाँ, निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

३.१ नामिक-रूपरचना।

३.२ क्रिया-रूपरचना।

३.३ शब्द-रचना।

३.४ विविध प्रयोग।

३.५ वाक्य-रचना।

३

नागाभाषी छात्र नामिक (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) रूप-रचना, क्रिया-रूप-रचना, शब्द-रचना, विभिन्न प्रयोग तथा वाक्य-रचना में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया गया है। इनके आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं तथा शिक्षण-बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं।

३.१ नामिक-रूपरचना

नामिक-रूपरचना के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूप-रचना से सम्बन्धित त्रुटियों का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। त्रुटियों से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए नागा-भाषाओं तथा हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूपावली पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् त्रुटियों के निष्कर्ष के आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

३.१.१ संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप रचनागत त्रुटियाँ (लिंग, वचन तथा कारक की दृष्टि से)

नागाभाषी छात्र संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूपों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त रचना के आधार पर प्राप्त त्रुटियों को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। इनका विवेचन तथा विश्लेषण निम्नवत् है:

३.१.१.१ संज्ञा रूप रचनागत त्रुटियाँ

छात्र वचन और कारक की दृष्टि से संज्ञा रूपों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। इस दृष्टि से संज्ञा रूप रचनागत त्रुटियों को अग्रलिखित आठ वर्गों में विभाजित किया गया है :

३.१.१.१.१ पुल्लिग आकारांत संज्ञा मूल रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र पुल्लिग आकारांत संज्ञा मूल रूप की निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

(क) घोड़ों (घोड़े) घास खाते हैं।
लड़कों (लड़के) खेलते हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूप का बहुवचन तिर्यक रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) आकाश में तारा (तारे) हैं।
मैदान में लड़का (लड़के) खेलते है।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन मूल रूप के स्थान पर एकवचन मूल रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ करते हैं।

३.१.१.१.२ पुल्लिग आकारांत संज्ञा-तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र पुल्लिग आकारांत संज्ञा तिर्यक रूप रचना मे निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते पाये गये :

(क) मैं कई रास्ते (रास्तों) से आया।
लड़के (लड़कों) ने गाना गाया।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन तिर्यक रूपों के बदले बहुवचन मूल रूपों का प्रयोग दिखायी देता है।

(ख) बच्चा (बच्चे) को खेलने दो।
मेरा बकरा (मेरे बकरे) को मत मारो।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र एकवचन तिर्यक रूपों के स्थान पर एकवचन मूल रूपों का प्रयोग करते हैं।

(ग) घोड़ेओं (घोड़ों) ने चने खाए।
लड़काओं (लड़कों) ने खाना खाया।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन तिर्यक रूपों के स्थान पर कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ उपर्युक्त दो प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा बहुत कम हुईं।[1]

३.१.१.१.३ पुल्लिग अन्य शब्दों (आदमी, साधु आदि) के मूल रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग से सम्बन्धित अग्रलिखित दो प्रकार की त्रुटियाँ करते पाये गये :

---

१ संज्ञा रूप रचनागत समस्त त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियों के लिए देखें सारिणी २०, पृष्ठ ७३।

(क) आदमियों (आदमी) खाना खाते हैं ।
साधुओं (साधु) सत्य कहते हैं ।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूपों का बहुवचन तिर्यक रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखती है ।

(ख) शिक्षकें (शिक्षक) अच्छी तरह सिखाते हैं ।
आदमियाँ (आदमी) घर में बैठे हैं ।

उपर्युक्त त्रुटियों में छात्र बहुवचन मूल रूपों को कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों में प्रयोग करने की त्रुटियाँ करते हैं ।

इस प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति पहले प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा कम है ।

३.१.१.१.४ पुंल्लिग अन्य शब्दों (आदमी, साधु आदि) के तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

छात्र इस वर्ग में निम्नलिखित दो प्रकार की त्रुटियाँ करते पाये गये :

(क) साधु (साधुओं) ने सत्य कहा ।
कवि (कवियों) ने कविता बनायी ।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन तिर्यक रूपों का बहुवचन मूल रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति दिखायी देती है ।

(ख) साधों (साधुओं) ने सत्य कहा ।
आदमियाँ (आदमियों) ने भात खाया ।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्रों ने बहुवचन तिर्यक रूपों के स्थान पर कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों का प्रयोग किया है ।

पहले प्रकार की त्रुटियों की तुलना में दूसरे प्रकार की ये त्रुटियाँ बहुत कम हुईं ।

३.१.१.१.५ स्त्रीलिंग इकारांत, ईकारांत, आकारांत आदि के मूल रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग से सम्बन्धित निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) नागालैण्ड में कई नदी (नदियाँ) हैं ।
हमारा (हमारे) गाँव में कई बुढ़िया (बुढ़ियाँ) हैं ।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूपों का एकवचन मूल रूपों में प्रयोग दिखायी पड़ता है ।

(ख) बकरियों (बकरियाँ) घास खाती हैं ।
दीमापुर में सभी जातियों (जातियाँ) रहती हैं ।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूपों का बहुवचन तिर्यक रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

(ग) दीमापुर में जातों (जातियाँ) बहुत हैं।
यहाँ ऐसी रीतीयों (रीतियाँ) नहीं हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन मूल रूपों का कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों में प्रयोग करते हैं।

३.१.१.१.६ स्त्रीलिंग इकारांत, ईकारांत, आकारांत आदि की तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग में निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते पाये गये हैं :

(क) छुट्टियाँ (छुट्टियों) में हम खेलते हैं।
नागालैण्ड की नदियाँ (नदियों) में पानी नहीं है।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन तिर्यक रूपों का बहुवचन मूल रूपों में प्रयोग करते हैं।

(ख) नदी (नदियों) के किनारे पेड़ हैं।
कई लड़की (लड़कियों) ने खाना खाया।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन तिर्यक रूपों का एकवचन मूल रूपों में प्रयोग करते हैं।

(ग) बकरीओं (बकरियों) ने घास खाया।
हम रीतीओं (रीतियों) के अनुसार काम करते हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन तिर्यक रूपों का कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों में प्रयोग करते हैं।

इस वर्ग में पहले प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति सबसे अधिक है; दूसरे और तीसरे प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है।

३.१.१.१.७ स्त्रीलिंग अन्य शब्द (लता, वधु, आँख आदि) के मूल रूप की त्रुटियाँ

छात्र इस वर्ग में निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) माता (माताएँ) बच्चों को प्यार करती हैं।
गाय का दो आँख (आँखें) होती हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूपों का एकवचन मूल रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) लताओं (लताएँ) पैर पकड़ती हैं।
माताओं (माताएँ) बच्चों को प्यार करती हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूपों का बहुवचन तिर्यक रूपों में प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है।

(ग) पुत्रबधुयों (पुत्रबधुएँ) सास की सेवा करती हैं।
लतियों (लताएँ) पैर पकड़ती हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन मूल रूप का कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूप में प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

इस वर्ग के पहले और दूसरे प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है। तीसरे प्रकार की त्रुटियाँ अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

३.१.१.१.८ स्त्रीलिंग अन्य शब्दों (लता, वधु आदि) के तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग में निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) माता (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया।
लता (लताओं) ने पैर पकड़ा।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन तिर्यक रूपों का एकवचन मूल रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) पुत्रवधुएँ (पुत्रवधुओं) ने सास की सेवा की।
माताएँ (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया।

इस प्रकार की त्रुटियों में बहुवचन तिर्यक रूपों का बहुवचन मूल रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखायी पड़ती है।

(ग) मातायों (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया।
लतायों (लताओं) ने पैर पकड़ा।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र बहुवचन तिर्यक रूपों का कल्पित बहुवचन तिर्यक विकृत रूपों में प्रयोग करते हैं।

इस वर्ग की त्रुटियों में पहले और दूसरे प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है। इनकी तुलना में तीसरे प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति कम है। निम्नलिखित सारिणी से उपर्युक्त सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं :

सारिणी २०

संज्ञा रूप रचनागत त्रुटियाँ

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	योग
१. पुल्लिंग आकारांत मूल रूप	बहुवचन मूल बहुवचन तिर्यक (३५७) बहुवचन मूल एकवचन मूल (२४१)	आओ	१०२	५०	१५२
		लोथा	१२६	१८	१४४
		अंगामी	११५	३५	१५०
		सेमा	१२८	२४	१५२
		कुल	४७१	१२७	५९८

२. पुल्लिग आकारांत तिर्यक रूप	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन मूल (२६६)	आओ	११२	३०	१४२
	एकवचन तिर्यक> एकवचन मूल (२६०)	लोथा	१३८	३५	१७३
	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन तिर्यक विकृत रूप (१५२)	अंगामी	१२३	२१	१४४
		सेमा	१३५	४४	१७९
		कुल	५०८	१३०	६३८
३. पुल्लिग अन्य शब्द मूल रूप	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक (४८२)	आओ	१४३	२५	१६८
	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक विकृत रूप (२०२)	लोथा	१६२	१२	१७४
		अंगामी	१५१	२०	१७१
		सेमा	१५५	१६	१७१
		कुल	६११	७३	६८४
४. पुल्लिग अन्य शब्द तिर्यक रूप	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन मूल (३०६)	आओ	८५	१३	९८
	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन तिर्यक विकृत रूप (१३२)	लोथा	११४	४	११८
		अंगामी	९४	१०	१०४
		सेमा	१०६	१२	११८
		कुल	३९९	३९	४३८
५. स्त्रीलिंग ईकारांत आदि मूल रूप	बहुवचन मूल> एकवचन मूल (२४५)	आओ	११३	३८	१५१
	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक (२३५)	लोथा	१६८	७	१७५
	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक विकृत रूप (१५४)	अंगामी	१२६	२८	१५४
		सेमा	१३१	२३	१५४
		कुल	५३८	९६	६३४
६. स्त्रीलिंग ईकारांत आदि तिर्यक रूप	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन मूल (४५८)	आओ	१२२	१९	१४१
	बहुवचन तिर्यक> एकवचन मूल (१०५)	लोथा	१७०	१३	१८३
	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन तिर्यक विकृत रूप (१०३)	अंगामी	१३८	१७	१५५
		सेमा	१७२	१५	१८७
		कुल	६०२	६४	६६६

७. स्त्रीलिंग अन्य शब्द मूल रूप	बहुवचन मूल> एकवचन मूल (३०७)	आओ	१५७	६३	२२०
	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक (२६८)	लोथा	१७९	२९	२०८
	बहुवचन मूल> बहुवचन तिर्यक	अंगामी	१६८	४५	२१३
		सेमा	१७५	३८	२१३
	विकृत रूप (२४४)	कुल	६७९	१७५	८५४
८. स्त्रीलिंग अन्य शब्द तिर्यक रूप	बहुवचन तिर्यक> एकवचन मूल (२६०)	आओ	१५५	—	१५५
	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन मूल (२५७)	लोथा	१८६	—	१८६
	बहुवचन तिर्यक> बहुवचन तिर्यक	अंगामी	१६३	—	१६३
		सेमा	१६९	—	१६९
	विकृत रूप (१५६)	कुल	६७३	—	६७३

३.१.१.२ **सर्वनाम रूप रचनागत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र सर्वनाम रूपों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त रचना के आधार पर प्राप्त त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नवत् है :[1]

३.१.१.२.१ **पुरुषवाचक सर्वनाम रूपों की त्रुटियाँ**

छात्र उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनाम रूपों के प्रयोग में निम्नलिखित चार प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) मुझे (मैं) ने आज दिनभर खाना नहीं खाया।
तुम्हें (तुम) से चला नहीं जाता।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र सामान्य तिर्यक रूपों का कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूपों में प्रयोग करते हैं।

(ख) मैं (मुझे) गाँव अच्छा लगता है।
तुम (तुम्हें) सुबह उठना चाहिए।

इस प्रकार की त्रुटियों में सामान्य तिर्यक तथा कम तिर्यक रूपों का मूल रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ग) मुझे (मैं) हिन्दी सीखने दीमापुर आया।
उससे तुम्हें (तुम) बातचीत करोगे।

---

१ सर्वनाम रूप रचना की समस्त त्रुटियाँ सारिणी-२१ में प्रस्तुत की गई हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में मूल रूपों का कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(घ) मेरा का (मेरा) नाम निजोविले है।

मोरा (मेरा) गाँव का नाम लोत्मा है।

इस प्रकार की त्रुटियों में सम्बन्धवाची रूपों का कल्पित विकृत रूपों में प्रयोग किया गया है।

३.१.१.२.२ निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक सर्वनामों की रूप-रचनागत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग में निम्नलिखित पाँच प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) यह (इस) ने खाना खाया।

कौन (किस) ने खाना खाया ?

इस प्रकार की त्रुटियों में सामान्य तिर्यक रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) यह (इसे) मत मारो।

वह (उसे) स्कूल जाना है।

इस प्रकार की त्रुटियों में कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूपों का मूल रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ग) इन्हें (इन) से चला नहीं जाता।

उन्हें (उन्हों) ने खाना खाया।

इस प्रकार की त्रुटियों में सामान्य तिर्यक रूपों का कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(घ) उस (उसे) जाने दो।

किस (किसे) खाना है ?

इस प्रकार त्रुटियों में छात्र कर्म/सम्प्रदान रूपों के स्थान पर सामान्य तिर्यक रूपों का प्रयोग करते हैं।

(ङ) किसी (किस) ने खाना खाया ?

जिसी (जिस) ने खाना खाया।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र सामान्य तिर्यक रूपों के स्थान पर कल्पित विकृत रूपों का प्रयोग करते हैं।

इस वर्ग में पहले प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति सबसे अधिक है। दूसरे, तीसरे और चौथे प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है। पाँचवें प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति सबसे कम है।

३.१.१.२.३ अनिश्चयवाचक सर्वनाम की रूप-रचनागत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र इस वर्ग की त्रुटियों में निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) कोई (किसी) ने खाना खाया।
कोई (किसी) को कोहिमा जाना है।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र तिर्यक रूपों का मूल रूपों में प्रयोग करते हैं :

(ख) किस (किसी) ने खाना खाया।
किन (किन्हीं) को जाने दो।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र अनिश्चयवाचक सर्वनाम के तिर्यक रूपों का प्रश्नवाचक सर्वनाम के विभिन्न रूपों में प्रयोग करते हैं।

(ग) किसा (किसी) से कलम ले लो।
किन्हा (किन्हीं) से यह काम होगा।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र तिर्यक रूपों का कल्पित विकृत रूपों में प्रयोग करते हैं।

इस प्रकार की त्रुटियाँ इस वर्ग के पहले और दूसरे प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा कम हुईं। सारिणी २१ से उपर्युक्त सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

३.१.१.३ विशेषण रूप-रचनागत त्रुटियाँ

संज्ञा तथा सर्वनामों की भाँति नागाभाषी छात्र विशेषण रूपों के प्रयोग में भी विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर त्रुटियों का विवरण तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.१.१.३.१ आकारान्त विशेषणों की रूप-रचनागत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र आकारान्त विशेषणों की रूप-रचना में निम्नलिखित चार प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) छोटा (छोटे) लड़के खेलते हैं।
हरा (हरे) खेत अच्छे लगते हैं।
ऊँचा (ऊँचे) पहाड़ पर गाँव हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में तिर्यक रूप 'ए' को मूल रूप 'आ' में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) छोटा (छोटी) लड़की खेलती है।
नारोला अच्छा (अच्छी) लड़की है।

इस प्रकार का त्रुटियों में स्त्रीलिंग विशेषण रूपों का पुल्लिग विशेषण रूपों में प्रयोग करने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है।

(ग) कोहिमा बड़ी (गड़ा) शहर है।
हरी (हरा) खेत अच्छा लगता है।

सारिणी २१

सर्वनाम रूप-रचनागत त्रुटियाँ

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	कुल
१. उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष	सामान्य तिर्यक > कर्म/सम्प्रदान तिर्यक (५८१)	आओ	३५८	१९६	५५४
	सामान्य तिर्यक, कर्म/सम्प्रदान तिर्यक > मूलरूप (८५६)	लोथा	४८२	१०५	५८७
	मूल > कर्म/सम्प्रदान तिर्यक (४७२)	अंगामी	४१६	१०५	५२१
	सम्बन्धवाची तिर्यक > कल्पित विकृत रूप (३४८)	सेमा	४९८	१२७	५९५
		कुल	१७२४	५३३	२२५७
२. निश्चयवाचक प्रश्नवाचक एवं सम्बन्ध-वाचक	सामान्य तिर्यक > मूल रूप (६८७)	आओ	३०५	११६	४२१
	कर्म/सम्प्रदान तिर्यक > मूल रूप (३०८)	लोथा	४५३	४८	५०१
	सामान्य तिर्यक > कर्म/सम्प्रदान तिर्यक (२९२)	अंगामी	३१८	१२७	४४५
	कर्म/सम्प्रदान तिर्यक > सामान्य तिर्यक (२७७)	सेमा	३८८	१०६	४९७
	सामान्य तिर्यक > कल्पित विकृत रूप (१०२)	कुल	१४६४	४००	१९९६
३. अनिश्चय-वाचक	तिर्यक रूप > मूल रूप (३०६)	आओ	८०	२६	१०६
	तिर्यक रूप > तिर्यक प्रश्नवाचक (१०४)	लोथा	११३	१५	१२८
	तिर्यक > कल्पित विकृत रूप (७७)	अंगामी	९५	२२	११७
		सेमा	११८	१८	१३६
		कुल	४०६	८१	४८७

इन त्रुटियों में पुल्लिंग रूप का स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(घ) बड़ी (बड़े) लड़के खेलते हैं।
अच्छी-अच्छी (अच्छे-अच्छे) कपड़े पहनते हैं।

इस प्रकार की त्रुटियों में तिर्यक रूप 'ए' का स्त्रीलिंग ईकारान्त रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

विशेषण रूप-रचनात्मक त्रुटियों का विवरण निम्नलिखित सारिणी से स्पष्ट है:

सारिणी २२

विशेषण रूप-रचनागत त्रुटियाँ

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	कुल
आकारांत	तिर्यक रूप 'ए' मूल रूप 'आ' (२०८)	आओ	५६	१०८	१६४
	स्त्रीलिंग रूप पुल्लिग रूप (१६५)	लोथा	७७	३५	११२
	पुल्लिग रूप स्त्रीलिंग रूप (१०८)	अंगामी	६३	९२	१५५
	तिर्यक रूप 'ए' स्त्रीलिंग रूप 'ई' (७७)	सेमा	७१	५६	१२७
		कुल	२६७	२९१	५५८

३.१.२ नागा-भाषाओं में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूपावली (लिंग, वचन एवं कारक की दृष्टि से)

नागा-भाषाओं में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के रूपों पर लिंग, वचन एवं कारक के प्रत्ययों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु नागा-भाषाओं में लिंग, वचन एवं कारक की स्पष्ट व्यवस्था है। नागा-भाषाओं का परिचय प्राप्त करने के लिए इनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.१.२.१ नागा-भाषाओं में संज्ञा की रूपावली (लिंग, वचन एवं कारक की दृष्टि से)

नागा-भाषाओं में अर्थ के आधार पर संज्ञाओं के पाँच प्रकार हैं— व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक तथा द्रव्यवाचक। रूप के आधार पर नागा-भाषाओं की संज्ञाओं का कोई वर्ग नहीं बनता क्योंकि संज्ञा रूपों पर वचन और कारक प्रत्ययों का कोई प्रभाव नहीं पडता।

३.१.२.१.१ नागा-भाषाओं में लिंग एवं वचन व्यवस्था

चूँकि लिंग-प्रत्यय तथा लिंग-व्यवस्था रूपात्मक (Inflectional) न होकर व्युत्पादक (Derivational) है, इसलिए नागा-भाषाओं में लिंग-प्रत्यय तथा लिंग-व्यवस्था की चर्चा आगे शब्द-रचना के प्रकरण में हुई है।

वचन-व्यवस्था

नागा-भाषाओं में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन। आओ में एकमात्र बहुवचन प्रत्यय 'तेम', अंगामी में 'को', सेमा में 'को' तथा लोथा में 'तेन' और 'स्यांग' हैं। ये वहुवचन प्रत्यय शब्द के मूल रूप में कोई परिवर्तन नही करते, यथा :

आओ : आजबोङ+तेम = आजबोङतेम
कुत्ता+बहुवचन प्रत्यय = कुत्ते
अंगामी : ष्फफ्फू+को = ष्फफूको
कुत्ता+बहुवचन प्रत्यय = कुत्ते
सेमा : आत्सेली+को = आत्मेलीको
कुत्ता+बहुवचन प्रत्यय = कुत्ते
लोथा : फरोपोङ+तेन = फरोपोङतेन
फरोपोङ+स्याङ = फरोपोङस्याङ
कुत्ता+बहुवचन प्रत्यय = कुत्ते

३.१.२.१.२ नागा-भाषाओं में कारक-व्यवस्था

नागा-भाषाओं में कारकों के सभी भेद पाये जाते हैं। परन्तु चारों नागा-भाषाओं में कारक प्रत्यय भिन्न-भिन्न हैं। निम्नलिखित सारिणी में इनके प्रत्यय तथा प्रयोग स्पष्ट हो जाते हैं :

सारिणी २३

कारक	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
कर्त्ता-कारक	'इ' ~ ϕ पारनोकी माया इन्याकर —वे काम करते हैं। कोदाङ पा आमेन —जब वह बैठा।	'ना' ओम्बो ना छिती एरानाला —वह चिट्ठी लिखता है।	'ऐ' पुओ ऐ पू — उसने कहा।	'ये', 'नो' नोये आलो अनी तुम अच्छे हो। पानो तिपी — उसने वैसे कहा।

कर्म-कारक	ϕ तानुरी काकत आजङर. —बच्चा पुस्तक पढ़ता है।	ϕ आम्बो ना काको खाला. —वह पुस्तक पढ़ता है।	ϕ, 'बू' पुओ ऐ लेश फ्रया. —वह चिट्ठी पढ़ता है। आबू फ्रचिए —मुझको पढ़ने दो।	ϕ निङ्नो आमितीख चेनी. —हम नमक खरीदते हैं।
करण-कारक	'आगी' पाई कोलोम आगी शिती. —वह कलम से चिट्ठी लिखता है।	ना ओम्बो ना एराफेन ना छिती एरानाला. —वह कलम से चिट्ठी लिखता है।	से पुओ पेन से थुया. —वह कलम से लिखता है।	पेस पानो कोलोम पेस येकिले येआनी. —वह कलम से चिट्ठी लिखता है।
सम्प्र-दान	आतेम~आसशी~नेम नी आतेम आमचक आक चाङ. —मेरे लिए रोटी दो।	त्सोकोना आ त्सोकोना रूती आपिआ. —मेरे लिए रोटी दो।	ला आला निख्रदा खाशचिए. —मेरे लिए रोटी दो।	गेङ्नो इ गेङ्नो आशो त्सलो. —मेरे लिए रोटी दो।
अपा-दान कारक	'नुङो' मेरेन मोकोकचूङ नुङी आरूर. —मेरेन मोकोकचूङ से आता है।	'ना' न्रीनिमो ना वोखाए ना रोआला. —न्रीनिमो वोखा से आता है।	'नून्' वित्सोनी कोहिमा नून्. —वित्सोनी कोहिमा से आता है।	'लो नो' विहोसे जुनहेबोतो लोनो इगी. —विहोसे जुनहेबोतो से आता है।
संबंध-कारक	ϕ मेरेन काकत. —मेरेन की किताब।	ϕ न्रीनिमो ओत्सोलोव. —न्रीनिमो की लड़की।	ϕ तेसोविलिए लेश. —तेसोविलिए की चिट्ठी।	ϕ होखिशे ङ. —होखिशे की लड़की।

अधि-करणं	**'ताक, ताङ, नुङ'** ओनोकी आज-ताक आजकेर. —हम कुत्ते पर प्रहार करते हैं। पा की ताङ लियेर. —वह घर में है। पारनोक तुली नुङ लियेर. —वे तुली में हैं।	**'लो'** जखू लो ओङो वाना. —नदी में मछली है। ओतोङ लो वोरो वाना. —पेड़ पर चिड़िया है। ओतोङो वोरो वाना. —पेड़ पर चिड़िया है।	**'नू, गी'** केनू खो बा. —नदी में मछली है। सिबोगी पेरा बा. —पेड़ पर चिड़िया है।	**'लो'** आगोकी लो आखा आनी. —नदी में मछली है। आसबो लो आगओ आनी. —पेड़ पर चिड़िया है।
संबो-धन कारक	**'ओ'** ओ किबुआ ! —हे प्रभु !	**'ओ'** ओ ओप्व्रइओ ! —हे प्रभु !	**'हेई'** हेई आ पुओ ! —हे मेरे पिता !	**'ओ'** ओ अन्प्यू ! —हे प्रभु !

स्पष्ट है कि नागा-भाषाओं में सम्बन्धकारक के अतिरिक्त शेष सभी कारकों के सूचक विभक्ति-प्रत्यय मिलते हैं। कर्मकारक के विभक्ति-प्रत्यय का भी अंगामी में सीमित प्रयोग होता है। शेष तीन भाषाओं में कर्म-कारक प्रत्यय शून्य ही हैं।

३.१.२.२ नागा-भाषाओं में सर्वनाम के रूप

नागा-भाषाओं में सर्वनामों के ६ प्रकार पाये जाते हैं—पुरुषवाचक, निज-वाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक, निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक। इन सर्वनाम-रूपों पर कारक तथा वचन-प्रत्ययों का प्रायः कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन रूपों से सम्बन्धित उल्लेखनीय तथ्य यह है कि आओ, लोथा तथा अंगामी में उत्तम पुरुष बहु-वचन के लिए दो-दो रूप मिलते हैं—श्रोता-रहित और श्रोता-सहित। आओ, लोथा एवं सेमा भाषाओं में अन्य पुरुष एकवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के लिए अलग-अलग रूपों का प्रयोग होता है। सेमा में अन्य पुरुष बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के लिए भी अलग-अलग रूपों का प्रयोग होता है। आओ, अंगामी तथा सेमा में अनिश्चय-वाचक सर्वनाम के नकारात्मक रूप भी मिलते हैं। अग्रलिखित सारिणी से यह बात स्पष्ट होती है :

सारिणी २४

नागा-भाषाओं में सर्वनाम के रूप

सर्वनाम	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
१. पुरुषवाचक उ० पु०				
एकवचन	नी (मैं)	आ (मैं)	आ (मैं)	नी (मैं)
बहुवचन	ओनोक (श्रोता-रहित) (हम) ओसेनोक (श्रोता-सहित) (हम)	ए (श्रोता-रहित) (हम) एते (श्रोता-सहित) (हम)	हिए (श्रोता-रहित) (हम) न्को (श्रोता-सहित) (हम)	निङ् (हम)
म० पु० एकवचन	ना (तुम)	नी (तुम)	नो (तुम)	नो (तुम)
बहुवचन	निनोक (तुम)	न्ते (तुम)	निएको (तुम)	नोङ् (तुम)
अ० पु० एकवचन	पा (पु०), ला (स्त्री०) वह वह	ओम्बो (पु०), ओन्बो (स्त्री०) वह वह	पुओ वह	पा (पु०), ली (स्त्री०) वह वह
बहुवचन	पारनोक (वे)	ओन्ते (वे)	ऊको (वे)	पोनोङ् (पु०), लीनोङ् (स्त्री०) वे वे
२. निजवाचक एकवचन	सासा स्वयं	बोबो (स्वयं)	थुओ (स्वयं)	गोशी/कुतोशी (स्वयं)
बहुवचन	—	—	—	—
३. सम्बन्धवाचक एकवचन	शिबा, कोबा, केची (जो) इबा, इबाची (वह)	ओछो (प्राणीवाचक) (जो) न्तिओ (अप्राणीवाचक) (जो)	×	खी खी
बहुवचन	शिर/शिरनोक (जो)	ओछ्वाङ/होच्याङ (जो)	×	खी खी

४. प्रश्नवाचक एकवचन बहुवचन	शिबा, केची (कौन) (क्या)	ओछो, न्तिओ (कौन) (क्या)	सुपुओ (पु०), शुप्फुओ (स्त्री०) (कौन) (कौन) किउ (अप्राणीवाचक) (कौन) केदिपुओ, किछपुओ (क्या) (क्या)	खिउ/खू, किउ/कू (कौन) (क्या)
५. निश्चयवाचक एकवचन बहुवचन	या आची इबा (यह) (वह) (यह, वह) इतेम (ये, वे)	शी ची (यह) (वह) शियाङ चिआङ (ये) (वे)	हाउ सउ लुऊ (यह) (वह) (वह) हाको सको लुको (ये) (वे) (वे)	ही हुपाउ तिपाउ (यह) (वह) (वह) हिपाको हुपाको तिपाको (ये) (वे) (वे)
६. अनिश्चयवाचक एकवचन बहुवचन	कार केची लाङका (कोई) (कुछ) (कुछ) शिङा केचा (कोई नहीं) (कुछ नहीं)	न्छुआ ओछोनो (कोई) (कोई) न्तिओना एचोमा (कुछ) (कुछ)	केहोउपुओ म्हापुओ (कोई) (कुछ) केहोउपुओरेइमो (कोई नहीं) म्हापुओरेइमो (कुछ नहीं)	खामी किउआनी (कोई) (कुछ) खुनोमू कुमू (कोई नहीं) (कुछ नहीं)

३.१.२.३ नागा-भाषाओं में विशेषण के रूप

नागा-भाषाओं में विशेषण के चार प्रकार मिलते हैं—गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा सार्वनामिक। इनसे सम्बन्धित नागा-भाषाओं में भिन्न-भिन्न रूप हैं; यथा—गुणवाचक विशेषण 'अच्छा' के लिए आओ, अंगामी, लोथा तथा सेमा में क्रमशः रूप 'ताचुङ', 'वी', 'म्होम' तथा 'आकिवी' हैं। संख्यावाचक विशेषण 'दुगुना' के लिए आओ, अंगामी, लोथा तथा सेमा में क्रमशः रूप 'आनाबेन', देकेनिए', 'यान्चोएनी' तथा 'गुथूकिनी' हैं। इसी प्रकार, परिमाणवाचक विशेषण 'सब' के लिए आओ, अंगामी, लोथा तथा सेमा में क्रमशः 'आचाक', 'पेते', 'तोप्व' तथा 'कम्त्स' प्रयुक्त होते हैं।

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सभी प्रकार के सर्वनामों का प्रयोग विशेषणवत होता है।

नागा-भाषाओं के विशेषण रूपों से सम्बन्धित उल्लेखनीय प्रमुख तथ्य यह है कि इन विशेषण रूपों पर लिंग, वचन तथा कारक के प्रत्ययों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

३.१.३ हिन्दी भाषा में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूपावली (लिंग, वचन एवं कारक की दृष्टि से)

हिन्दी भाषा में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के रूप, लिंग, वचन एवं कारक प्रत्ययों से प्रभावित होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन करना समीचीन होगा।

३.१.३.१ संज्ञा की रूपावली

अर्थ की दृष्टि से हिन्दी संज्ञाओं के पाँच प्रकार हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक तथा द्रव्यवाचक। परन्तु रूपों के आधार पर हिन्दी संज्ञाओं के दो प्रकार निर्धारित किये जाते हैं :

(क) **गणनीय**—जिन संज्ञाओं की गणना की जा सकती है और जिनके रूप, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं।

(ख) **अगणनीय**—जिनकी गणना नहीं की जा सकती और जिनके रूप पर वचन और कारक का प्रभाव नहीं पड़ता।

हिन्दी भाषा में संज्ञा रूपों पर लिंग, वचन और कारक प्रत्ययों का प्रभाव पड़ता है। इन प्रत्ययों और उनकी व्यवस्था का संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा।

३.१.३.१.१ हिन्दी में लिंग, वचन और कारक की व्यवस्था

हिन्दी में लिंग प्रत्यय तथा लिंग व्यवस्था की चर्चा शब्द-रचना के प्रकरण में आगे विस्तार से की गयी है।

हिन्दी में दो वचन—एकवचन और बहुवचन तथा आठ कारक—कर्ता, कर्म,

करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण तथा सम्बोधन---हैं। इन कारकों के द्योतक विभक्ति प्रत्यय ने, को, से, के लिए, का, के, की, में, पर, हे, ओ इत्यादि हैं।

वचन और कारक विभक्तियों के प्रत्यय मिलकर संज्ञा-रूपों का निर्माण करते हैं। इस रूप-रचना के आधार पर हिन्दी गणनीय संज्ञाओं के मुख्यतः दो रूप हैं-- मूल रूप और तिर्यक रूप।

मूल रूप---जिस संज्ञा के साथ परसर्गों का प्रयोग नहीं होता, उसे संज्ञा का मूल रूप कहते हैं।

तिर्यक रूप---जब संज्ञाएँ परसर्ग (ने, को, से आदि) के साथ वाक्य में प्रयुक्त होती हैं तो संज्ञा का तिर्यक रूप निष्पन्न होता है।

संज्ञा रूपावली के आधार पर संज्ञाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(क) पुल्लिग आकारान्त (घोड़ा, लड़का आदि)

(ख) पुल्लिग अन्य शब्द (आदमी, साधु, कवि, छात्र आदि)

(ग) स्त्रीलिंग इकारान्त, ईकारान्त और आकारांत (आति, नदी, बुढ़िया आदि)

(घ) स्त्रीलिंग अन्य शब्द (लता, वधु, आँख आदि)

इन चारों वर्गों की संज्ञा रूपावली में प्रयुक्त प्रत्यय निम्नलिखित सारिणी से स्पष्ट होते हैं :

सारिणी २५

	एकवचन मूल रूप	बहुवचन मूल रूप	एकवचन तिर्यक रूप	बहुवचन तिर्यक रूप
पुल्लिग आकारान्त	ϕ	ए	ए	ओं
पुल्लिग शेष शब्द	ϕ	ϕ	ϕ	ओं
स्त्रीलिंग नदी आदि	ϕ	आँ	ϕ	ओं
स्त्रीलिंग शेष शब्द	ϕ	एँ	ϕ	ओं

इन चारों वर्गों में मूल और तिर्यक रूप होते हैं। इस प्रकार संज्ञा रूपावली के कुल ४ × २ = ८ वर्ग बनते हैं। नागाभाषी छात्र इनसे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

३.१.३.३ हिन्दी भाषा में सर्वनामों के रूप

हिन्दी में सर्वनामों के ६ प्रकार प्रचलित हैं---पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चय-वाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक तथा सम्बन्धवाचक।

हिन्दी सर्वनाम का रूप-रचना में वचन और कारकों की प्रमुख भूमिका होती है, पुरुष और लिंग की नहीं, क्योंकि पुरुष और लिंग सर्वनामों में समाहित होते हैं। वचन और कारक के आधार पर सर्वनाम रूप-रचना को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(क) पुरुषवाचक—उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष
(ख) निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक
(ग) अनिश्चयवाचक
(घ) आदरार्थ तथा निजवाचक

उपर्युक्त चारों वर्गों की रूप-सारिणी इस प्रकार है—

सारिणी २६
पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक	मूल	सामान्य तिर्यक	कर्म/सम्प्रदान तिर्यक	सम्बन्धवाची तिर्यक
उत्तम पुरुष—				
एकवचन	मैं	मुझ/मैं	मुझे	मेरा, मेरी, मेरे
बहुवचन	हम	हम	हमें	हमारा, हमारी, हमारे
मध्यम पुरुष—				
एकवचन	तू	तुझ, तू	तुझे	तेरा, तेरी, तेरे
बहुवचन	तुम	तुम	तुम्हें	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे

सारिणी २७
निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक

सर्वनाम	मूल	सामान्य तिर्यक	कर्म/सम्प्रदान तिर्यक
निश्चयवाचक :			
निकटवर्ती—एकवचन	यह	इस	इसे
बहुवचन	ये	इन, इन्हों	इन्हें
दूरवर्ती—एकवचन	वह	उस	उसे
बहुवचन	वे	उन, उन्हों	उन्हें
प्रश्नवाचक—एकवचन	कौन, क्या	किस	किसे
बहुवचन	कौन, क्या	किन, किन्हों	किन्हें
सम्बन्धवाचक—एकवचन	जो	जिस	जिसे
बहुवचन	जो	जिन, जिन्हों	जिन्हें

सारिणी २८
अनिश्चयवाचक सर्वनाम

सर्वनाम	मूल	तिर्यक
अनिश्चयवाचक—एकवचन	कोई	किसी
बहुवचन	कोई	किन्हीं

आदरार्थ तथा निजवाचक :

'आप' सर्वनाम रूप पर वचन और कारक प्रत्ययों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। केवल निजवाचक 'अपना', 'अपनी', 'अपने' में सम्बन्धवाची प्रत्यय ना, नी, ने के कारण आप>अप हो गया है जिसमें मध्य 'आ' का 'अ' होना रूप स्वनिमिक परिवर्तन का द्योतक है।

३.१.३.३ **हिन्दी भाषा में विशेषण के रूप**

हिन्दी में विशेषण के पाँच प्रकार होते हैं—गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक तथा कृदन्त विशेषण (बहता पानी, चलता लड़का आदि)।

रूप-रचना की दृष्टि से विशेषण की व्याकरणिक कोटियाँ लिंग, वचन और कारक हैं। लिंग संज्ञा की प्राकृतिक और व्याकरणिक कोटि दोनों हैं किन्तु यह विशेषणों के लिए पूर्णतः व्याकरणिक कोटि है।

विशेषण के रूप अपने विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार प्रभावित होते हैं। जब विशेषणों का प्रयोग संज्ञावत होता है तब ये एकवचन तथा बहुवचन में कारकों के मूल तथा तिर्यक रूपों द्वारा प्रकट होते हैं; यथा—**बड़ों** ने यह कार्य किया।

लिंग, वचन और कारक की विभक्तियाँ केवल आकारान्त विशेषणों में स्पष्ट होती हैं, इसलिए रूप-रचना की दृष्टि से विशेषणों के केवल दो वर्ग बनते हैं :

वर्ग १ : आकारान्त विशेषण—हरा, काला, पीला आदि। आकारान्त विशेषणों के मूल रूपों का तिर्यक रूपों में 'ए' होता है,; यथा—अच्छा>अच्छे, काला>काले।

वर्ग २ : अन्य विशेषण—लाल, नकली, बाजारू आदि। इन विशेषण रूपों पर लिंग, वचन तथा कारकों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

३.१.४ **निष्कर्ष एवं शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण**

नागाभाषी छात्रों के संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूपों के प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों के विवेचन तथा विश्लेषण के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकलते हैं। इनके आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया जा सकता है।

३.१.४.१ संज्ञा रूप-रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु

(क) नागाभाषी छात्र संज्ञा रूप-रचना में सबसे अधिक त्रुटियाँ बहुवचन मूल रूप के स्थान पर बहुवचन तिर्यक रूप के प्रयोग में करते हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ मूल रूप पुल्लिग आकारान्त तथा पुल्लिग अन्य, मूल रूप स्त्रीलिंग इकारान्त, आकारान्त आदि तथा स्त्रीलिंग अन्य के प्रयोग में दिखायी पड़ती हैं। इनकी त्रुटि संख्या १३७२ है।

(ख) ये छात्र बहुवचन तिर्यक रूप के स्थान पर मूल रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ भी करते हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ तिर्यक रूप पुल्लिग आकारान्त तथा पुल्लिग अन्य, तिर्यक रूप स्त्रीलिंग इकारान्त आदि तथा स्त्रीलिंग अन्य में अधिक दिखायी पड़ती हैं। इस प्रकार की त्रुटियों की संख्या पहले प्रकार की त्रुटियों की संख्या के लगभग समान है क्योंकि दोनों की त्रुटि संख्या क्रमशः १३१७ और १३७२ है।

(ग) बहुवचन मूल रूप के स्थान पर एकवचन मूल रूप की त्रुटियाँ पुल्लिग आकारान्त, स्त्रीलिंग इकारान्त आदि तथा स्त्रीलिंग अन्य (लता आदि) के मूल रूपों में दिखायी पड़ती हैं। इनकी त्रुटि संख्या ७९५ है।

(घ) बहुवचन मूल के स्थान पर बहुवचन तिर्यक कल्पित विकृत रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ पुलिंग अन्य, स्त्रीलिंग, इकारान्त आदि, स्त्रीलिंग अन्य में दृष्टिगोचर होती हैं। इनकी त्रुटि संख्या ६०० है।

(च) बहुवचन तिर्यक रूप के स्थान पर तिर्यक कल्पित विकृत रूप की त्रुटियाँ पुल्लिग आकारान्त, पुल्लिग अन्य, स्त्रीलिंग ईकारान्त आदि तथा स्त्रीलिंग अन्य के तिर्यक रूपों में मिलती है। इनकी संख्या ४४३ है।

(छ) बहुवचन तिर्यक रूप के स्थान पर एकवचन मूल रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ स्त्रीलिंग इकारान्त आदि, स्त्रीलिंग अन्य के तिर्यक रूपों में पायी जाती हैं। इनकी संख्या ३९५ है।

(ज) एकवचन तिर्यक रूप के स्थान पर एकवचन मूल रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ केवल पुल्लिग आकारान्त तिर्यक रूप में दिखायी देती हैं। इनकी संख्या २९० है।

कुल त्रुटियों की संख्या ५१८५ है जिन्हें आवृत्ति क्रम तथा प्रवृत्तियों की दृष्टि से वर्गीकृत किया गया है। छात्रों द्वारा की गयी कुल ५१८५ त्रुटियों में नियन्त्रित रचना (प्रश्नावली पर आधारित) की त्रुटियाँ ४४८१ हैं तथा मुक्त रचना की मात्र ७०४ हैं। प्रश्नावली की त्रुटियाँ आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों द्वारा क्रमशः ९८९, १२४३, १०७८ तथा ११७१ तथा मुक्त रचना की त्रुटियाँ क्रमशः २३८, ११८, १७६ तथा १७२ की गयीं। सारिणी २९ से उपर्युक्त सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं :

सारिणी २९

संज्ञा रूप-रचनागत त्रुटियों की प्रवृत्तियों का सारांश

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की प्रवृत्तियों की आवृत्ति	प्रवृत्तियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. बहुवचन मूल ↓ बहुवचन तिर्यक	पुल्लिग आकारांत मूलरूप पुल्लिग अन्य शब्द मूलरूप स्त्रीलिंग ईकारांत आदि मूलरूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द मूलरूप	३५७ ४८२ २३५ २९८	१३७२	३६·६
२. बहुवचन तिर्यक ↓ बहुवचन मूल	पुल्लिग आकारांत तिर्यकरूप पुल्लिग अन्य शब्द तिर्यकरूप स्त्रीलिंग ईकारांत आदि तिर्यकरूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द तिर्यकरूप	२९६ ३०६ ४५८ २५७	१३१७	२५·४
३. बहुवचन मूल ↓ एकवचन मूल	पुल्लिग आकारांत मूलरूप स्त्रीलिंग ईकारांत आदि मूलरूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द मूलरूप	२४१ २४५ ३१२	७९५	१५·३
४. बहुवचन मूल ↓ बहुवचन तिर्यक विकृत रूप	पुल्लिग अन्य शब्द मूलरूप स्त्रीलिंग ईकारांत आदि मूलरूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द मूलरूप	२०२ १५४ २४४	६००	११·५
५. बहुवचन तिर्यक ↓ बहुवचन तिर्यक, बिकृत रूप	पुल्लिग आकारांत तिर्यकरूप पुल्लिग अन्य शब्द तिर्यकरूप स्त्रीलिंग ईकारांत आदि तिर्यकरूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द तिर्यकरूप	५२ १३२ १०३ १५६	४४३	८·६

६. बहुवचन तिर्यक ↓ एकवचन मूल	स्त्रीलिंग ईकारांत आदि तिर्यक रूप स्त्रीलिंग अन्य शब्द तिर्यक रूप	१०५ २६०	३६५	७·१
७. बहुवचन तिर्यक ↓ एकवचन मूल	पुल्लिग आकारांत तिर्यक रूप	२९०	२९०	५·५
कुल ७	२१	५१८५	५१८५	१००

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण :

त्रुटियों की आवृत्ति-गणना के आधार पर तथा विभिन्न संज्ञा-रूपों में त्रुटियों की प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(१) बहुवचन मूल रूप → बहुवचन तिर्यक रूप
(२) बहुवचन तिर्यक रूप → बहुवचन मूल रूप
(३) बहुवचन मूल रूप → एकवचन मूल रूप
(४) बहुवचन तिर्यक रूप → एकवचन मूल रूप
(५) एकवचन तिर्यक रूप → एकवचन मूल रूप

३.१.४.२ **सर्वनाम रूप-रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु**

नागाभाषी छात्रों ने सर्वनाम रूप-रचना-सम्बन्धी कुल ४७१० त्रुटियाँ कीं। इन त्रुटियों में निम्नलिखित सात प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

(क) **सामान्य तिर्यक, कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप→मूल रूप की त्रुटियाँ**— उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक तथा अनिश्चय-वाचक सर्वनाम रूपों के प्रयोग में इस प्रकार की कुल त्रुटियाँ २४५७ हुईं। इसमें

सारिणी ३०

संज्ञा रूप-रचनागत त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की संख्या का भाषावार विवरण

त्रुटियों के प्रकार	आओ			लोथा			अंगामी			सेमा			कुल त्रुटियों की संख्या	प्रतिशत
	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल		
१. पुंल्लिग आकारांत मूलरूप	१०२	५०	१५२	१२६	१८	१४४	११५	३५	१५०	१२८	२४	१५२	५९८	११·६
२. पुंल्लिग आकारांत तिर्यक रूप	११२	३०	१४२	१३८	३५	१७३	१२३	२१	१४४	१३५	४४	१७९	६३८	१२·३
३. पुंल्लिग अन्य शब्द मूलरूप	१४३	२५	१६८	१६२	१२	१७४	१५१	२०	१७१	१५५	१६	१७१	६८४	१३·२
४. पुंल्लिग अन्य शब्द तिर्यक रूप	८५	१३	९८	११४	४	११८	९४	१०	१०४	१०६	१२	११८	४३८	८·५
५. स्त्रीलिंग ईकारांत आदि मूलरूप	११३	३८	१५१	१६८	७	१७५	१२६	२८	१५४	१३१	२३	१५४	६३४	१२·२

६. स्त्रीलिंग ईकारांत आदि तिर्यक रूप	१२२	१९	१४१	१७०	१३	१८३	१३८	१७	१५५	१७२	१५	१८७	६६६	१२·८
७. स्त्रीलिंग अन्य शब्द मूलरूप	१५७	६३	२२०	१७९	२९	२०८	१६८	४५	२१३	१७५	३८	२१३	८५४	१६·५
८. स्त्रीलिंग अन्य शब्द तिर्यक रूप	१५५	—	१५५	१८६	—	१८६	१६३	—	१६३	१६९	—	१६९	६७३	१२·९
कुल	९८९	२३८	१२२७	१२४३	११८	१३६१	१०७८	१७६	१२५४	११७१	१७२	१३४३	५१८५	१००

कुल प्रश्नावली की त्रुटियाँ ४४८१
कुल मुक्त रचना की त्रुटियाँ ७०४

कुल त्रुटियाँ ५१८५

सबसे अधिक संख्या निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक और सम्बन्धवाचक रूपों से सम्बन्धित त्रुटियों की है।

(ख) **सामान्य तिर्यक→कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष रूप-रचना की ५८१ त्रुटियाँ हुईं और निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक तथा सम्बन्धवाचक रूप-रचना की २९२ त्रुटियाँ हुईं। कुल त्रुटियों की संख्या ८७३ है।

(ग) **मूल रूप→कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष रूप-रचना की ४७२ त्रुटियाँ हुईं।

(घ) **सम्बन्धवाची रूप→कल्पित विकृत रूप की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष रूप-रचना की ३४८ त्रुटियाँ पायी गयीं।

(ङ) **कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप→सामान्य तिर्यक रूप की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक तथा सम्बन्धवाचक रूप-रचना की कुल २७७ त्रुटियाँ हुई हैं।

(च) **सामान्य तिर्यक रूप→कल्पित विकृत रूप की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में अनिश्चयवाचक रूप-रचना की केवल ७७ त्रुटियाँ तथा निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक एवं सम्बन्धवाचक रूपों की १०२ त्रुटियाँ हुईं।

(छ) **अनिश्चयवाचक सामान्य तिर्यक रूप→प्रश्नवाचक की त्रुटियाँ**—इस प्रकार की त्रुटियों में अनिश्चयवाचक रूपों की १०४ त्रुटियाँ हुईं।

कुल ४७१० त्रुटियों में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष रूप-रचना से सम्बन्धित त्रुटियाँ २२५७ हैं।

कुल ४७१० त्रुटियों में प्रश्नावली पर आधारित ३५९४ त्रुटियाँ तथा मुक्त रचना पर आधारित कुल १०१४ त्रुटियाँ हुईं। प्रश्नावली की त्रुटियों में आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों ने क्रमशः ७४३, १०४८, ८२९, ९७४ त्रुटियाँ तथा मुक्त रचना की त्रुटियों में इन्होंने क्रमशः ३३८, १६८, २५४ तथा २५४ त्रुटियाँ कीं। सारिणी ३१ से यह बात स्पष्ट है :

सारिणी ३१

सर्वनाम रूप-रचनागत त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की संख्या का भाषावार विवरण

त्रुटियों के प्रकार	आओ			लोथा			अंगामी			सेमा			कुल त्रुटियों की संख्या	प्रतिशत
	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल		
१. उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष	३५८	१९६	५५४	४८२	१०५	५८७	४१६	१०५	५२१	४६८	१२७	५९८	२२५७	४७.९
२. निश्चयवाचक प्रश्नवाचक सम्बन्धवाचक	३०५	११६	४२१	४५३	४८	५०१	३१८	१२७	४४५	३८८	१०९	४९७	१८६४	३९.७
३. अनिश्चयवाचक	८०	२६	१०६	११३	१५	१२८	९५	२२	११७	११८	१८	१३६	४८७	१०.३
४. अन्य	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	१०२	२.१
कुल	७४३	३३८	१०८१	१०४८	१६८	१२१६	८२९	२५४	१०८३	९७४	२५४	१२२८	४७१०	१००

कुल प्रश्नावली की त्रुटियाँ ३५९४

कुल मुक्त रचना की त्रुटियाँ १०१४

कुल त्रुटियाँ ४७१०

सारिणी ३२

सर्वनाम रूप-रचनागत त्रुटियों की प्रवृत्तियों का सारांश

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की प्रवृत्तियों की आवृत्ति	प्रवृत्तियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. सामान्य तिर्यक/ कर्म/सम्प्रदान तिर्यक ↓ मूल रूप	उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष निश्चयवाचक, प्रश्न-वाचक, सम्बन्धवाचक अनिश्चयवाचक	८५६ १२९५ ३०६	२४५७	५२·१
२. सामान्य तिर्यक ↓ कर्म/सम्प्रदान तिर्यक	उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष निश्चयवाचक, प्रश्न-वाचक, सम्बन्धवाचक	५८१ २९२	८७३	१८·४
३. मूल रूप ↓ कर्म/सम्प्रदान तिर्यक	१ उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष	४७२	४७२	१०·१
४. सम्बन्धवाची रूप ↓ कल्पित विकृत रूप	१ उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष	३४८	३४८	७·२
५. कर्म/सम्प्रदान तिर्यक ↓ सामान्य तिर्यक रूप	२ निश्चयवाचक, प्रश्न-वाचक, सम्बन्धवाचक	२७७	२७७	५·७
६. सामान्य तिर्यक ↓ कल्पित विकृत रूप	२ निश्चयवाचक, प्रश्न-वाचक, सम्बन्धवाचक ३ अनिश्चयवाचक	१०२ ७७	१७९	३·८
७. अनिश्चयवाचक सामान्य तिर्यक | तिर्यक प्रश्नवाचक	३ अनिश्चयवाचक	१०४	१०४	२·७
कुल ७	१२	४७१०	४७१०	१००

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

त्रुटियों की आवृत्ति-गणना के आधार पर तथा सर्वनामों के विभिन्न रूपों में त्रुटियों की प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं। शिक्षण-बिन्दुओं को अनुस्तरित रूप में प्रस्तुत किया गया है :

(१) **सामान्य तिर्यक, कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप→मूल रूप**—इन रूपों से सम्बन्धित अभ्यास उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्ध-वाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनामों के रूपों में कराना आवश्यक है।

(२) **सामान्य तिर्यक रूप→कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप**—इनका अभ्यास उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक तथा सम्बन्धवाचक सर्वनाम रूपों में कराना उचित होगा।

(३) **मूल रूप→कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप**—इनका अभ्यास उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष सर्वनाम रूपों में कराना अपेक्षित है।

(४) **कर्म/सम्प्रदान तिर्यक रूप→सामान्य तिर्यक रूप**—इनका अभ्यास निश्चय-वाचक, प्रश्नवाचक तथा सम्बन्धवाचक सर्वनाम रूपों में कराना उचित होगा।

(५) **अनिश्चयवाचक सामान्य तिर्यक→प्रश्नवाचक**—इनका अभ्यास केवल अनिश्चयवाचक सर्वनाम रूपों में कराना उचित होगा।

३.१.४.३ **विशेषण रूप-रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दु**

आकारांत विशेषणों की रूप-रचना में प्रवृत्तियों की दृष्टि से सबसे अधिक त्रुटियाँ २०८ तिर्यक रूप 'ए' के स्थान पर मूल रूप 'आ' के प्रयोग की हुई हैं। स्त्री-लिंग रूप 'ई' के स्थान पर पुल्लिंग रूप 'आ' के प्रयोग की त्रुटियाँ १६५ हुईं तथा पुल्लिंग 'आ' के स्थान पर स्त्रीलिंग 'ई' के प्रयोग की त्रुटियाँ १०८ हुईं। सबसे कम त्रुटियाँ तिर्यक रूप 'ए' के स्थान पर स्त्रीलिंग ईकारांत के प्रयोग की कुल ७७ हुईं।

विशेषण रूप-रचनागत कुल त्रुटियाँ ५५८ हैं। प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त त्रुटियाँ आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों ने क्रमशः ५६, ७७, ६३ तथा ७७ कीं तथा मुक्त रचना के माध्यम से प्राप्त त्रुटियों में इन्होंने क्रमशः १०८, ३५, ९२ तथा ५६ कीं।

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

आवृत्ति-गणना के आधार पर तथा विशेषणों के आकारांत रूपों में त्रुटियों की प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

१. तिर्यक रूप 'ए' → मूल रूप 'आ'
२. स्त्रीलिंग रूप 'ई' → पुल्लिंग रूप 'आ' }
   पुल्लिंग रूप 'आ' → स्त्रीलिंग रूप 'ई' }
३. तिर्यक रूप 'ए' → स्त्रीलिंग रूप 'ई'

३.२ क्रिया-रूपरचना

क्रिया-रूपरचना के अन्तर्गत नागाभाषी छात्रों द्वारा काल, वाच्य आदि की दृष्टि से की गई क्रिया-रूपरचनागत त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। त्रुटियों से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में क्रिया के विभिन्न रूपों तथा काल, वाच्य के प्रयोग पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् त्रुटियों पर आधारित निष्कर्ष निकाले गये हैं तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

३.२.१ क्रिया रूप-रचनागत त्रुटियाँ—प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की दृष्टि से

नागाभाषी छात्र क्रिया के प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की दृष्टि से क्रिया रूप-रचनागत विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त रचना के आधार पर प्राप्त त्रुटियों का विवरण तथा विश्लेषण निम्नलिखित है :

३.२.१.१ विधि रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र विधि रूप के प्रयोग की निम्नलिखित तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) वह बाजार गया (जाये)।
  हम खाना खाया (खाएँ)।
  तू भात खाया (खाओ)।

उपर्युक्त प्रकार के प्रयोगों में छात्र प्रत्यक्ष विधि रूप के स्थान पर सामान्य भूत रूप का प्रयोग करते हैं।

(ख) क्या वे चिट्ठी लिखोगे (लिखें) ?
  मैं घर से आऊँगा (आऊँ)।

उपर्युक्त त्रुटियों में विधि रूप के स्थान पर सामान्य भविष्यत रूप का प्रयोग मिलता है।

(ग) तुम कलम उठाओं (उठाओ)।
  क्या हम भात खायेंअ (खाएँ) ?
  क्या वह किताब पढ़ेअ (पढ़े) ?

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में प्रत्यक्ष विधि रूप के स्थान पर कल्पित विकृत रूप का प्रयोग मिलता है, किन्तु इस प्रकार के कल्पित विकृत रूपों के प्रयोग की त्रुटियाँ पहले और दूसरे प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा बहुत अधिक हैं।

३.२.१.२ सामान्य भविष्यत रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र सामान्य भविष्यत रूप के प्रयोग की अग्रलिखित दो प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) वह हाथ-मुँह धोइएगा (धोएगा)।
मेरेन लकड़ी काटिएगा (काटेगा)।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र सामान्य भविष्यत रूप के स्थान पर परोक्ष विधि रूप का प्रयोग करते हैं।

(ख) हम मैच देखूँगे (देखेंगे)।
क्या तुम सोगे (सोओगे) ?
वह ईश्वर की प्रार्थना करोगा (करेगा)।

इस प्रकार की त्रुटियों में सामान्य भविष्यत रूप के स्थान पर कल्पित विकृत रूप का प्रयोग मिलता है। इस प्रकार की त्रुटियों की संख्या इस वर्ग के पहले प्रकार की त्रुटियों की संख्या से बहुत अधिक है।

३.२.१.३ **सामान्य भूत रूप की त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र सामान्य भूत काल—क्रिया-रूपों की रचना में निम्नलिखित दो प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) हम ईश्वर की प्रार्थना कराया (की)।
घोड़ा दौड़ाया (दौड़ा)।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र सामान्य भूत रूपों के स्थान पर प्रेरणार्थक रूपों का प्रयोग करते हैं।

(ख) मैंने हिन्दी सीख लेया (ली)।
उसने कमाल कर देया (दिया)।

उपर्युक्त त्रुटियों में सामान्य भूत रूप के स्थान पर कल्पित विकृत रूप का प्रयोग हुआ है।

३.२.१.४ **कर्मवाच्य रूप की त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र कर्मवाच्य के प्रयोग में निम्नलिखित दो प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

(क) फल खाता (खाया) जाता है।
फल खा (खाया) जाता है।
पेड़ काट (काटा) जाता है।

उपर्युक्त त्रुटियों में छात्र कर्मवाच्य रूप का गलत प्रयोग करते हैं।

(ख) ताला खोल्या (खोला) जाता है।
सिनेमा देख्या (देखा) जाता है।

उपर्युक्त त्रुटियों में कर्मवाच्य रूप के स्थान पर कल्पित विकृत रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.२.१.५ भाववाच्य रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र भाववाच्य रूप के प्रयोग में निम्नलिखित चार प्रकार की त्रुटियाँ करते पाये गये :

(क) नारोला से सो (सोया) नहीं जाता ।
मुझ से उठ (उठा) नहीं जाता ।
बच्चों से चल (चला) नहीं जाता ।

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में भाववाच्य रूप के स्थान पर कर्तृ वाच्य के गलत प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

(ख) मुझ से उठाया (उठा) नहीं जाता ।
तुम्हें से बेठाए (बैठा) नहीं जाता ।

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में छात्र भाववाच्य रूप के स्थान पर प्रेरणार्थक रूपों का गलत प्रयोग करते हैं ।

(ग) नारोला से सोना (सोया) नहीं जाता ।
लड़की से हँसना (हँसा) नहीं जाता ।

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में भाववाच्य रूप के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

(घ) मुझसे उठया (उठा) नहीं जाता ।
तुमसे अच्छी तरह बैठया (बैठा) नहीं जाता ।

इस प्रकार की त्रुटियों में छात्र भाववाच्य के स्थान पर कल्पित विकृत रूप का प्रयोग करते हैं ।

३.२.१.६ क्रियार्थक संज्ञा रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र क्रियार्थक संज्ञा रूप की निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

मैं स्कूल पढ़ना (पढ़ने) जाता हूँ ।
विहोतो हमेशा सिनेमा देखना (देखने) जाता है ।
मैं खेल देखना (देखने) जाता हूँ ।

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में छात्र क्रियार्थक संज्ञा रूप में अपेक्षित परिवर्तन नहीं करते ।

३.२.१.७ धातु रूप की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र धातु रूपों के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

लड़की घर जाने (जा) नहीं सकता ।
मैं दौड़ने (दौड़) नहीं सकता ।
हम लोग रूटी खाने (खा) नहीं सकता ।

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में धातु-रूपों के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा-रूपों के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है । निम्नलिखित सारिणी से काल, वाच्य, प्रकार आदि की दृष्टि से क्रिया रूप-रचनागत त्रुटियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ३३

क्रियारूप-रचनागत त्रुटियाँ—काल, वाच्य आदि की दृष्टि से

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	योग
१. विधि रूप	विधि रूप→ सामान्य भूत (६२३)	आओ	४२६	१४८	५७४
	विधि रूप→	लोथा	५९५	८२	६७७
	सामान्य भविष्यत (६१६)	अंगामी	४८८	११७	६०५
	विधि रूप→	सेमा	५१०	१०३	६१३
	कल्पित विकृत रूप(१२३०)	कुल	२०१९	४५०	२४६९
२. सामान्य भविष्यत	सामान्य भविष्यत→ परोक्ष विधि (५८७)	आओ	४६३	१५३	६१६
	सामान्य भविष्यत→	लोथा	६२७	९१	७१८
	कल्पित विकृत रूप (२११५)	अंगामी	५४२	१३२	६७४
		सेमा	५७८	११६	६९४
		कुल	२२१०	४९२	२७०२
३. सामान्य भूत	सामान्य भूत→ प्रेरणार्थक रूप (८६)	आओ	३५	४६	८१
	सामान्य भूत→	लोथा	५६	२७	८३
	कल्पित विकृत रूप (२३८)	अंगामी	३१	४४	७५
		सेमा	४८	३७	८५
		कुल	१७०	१५४	३२४
४. कर्मवाच्य	कर्मवाच्य→ अशुद्ध कर्तृवाच्य (५७६)	आओ	१५०	—	१५०
	कर्मवाच्य→	लोथा	१७२	—	१७२
	कल्पित विकृत रूप (७७)	अंगामी	१६३	—	१६३
		सेमा	१६८	—	१६८
		कुल	६५३	—	६५३

५. भाववाच्य	भाववाच्य→ अशुद्ध कर्मवाच्य (५२२)	आओ	१६५	१८	१८३
	भाववाच्य→ प्रेरणार्थक रूप (७२)	लोथा	१८२	—	१८२
	भाववाच्य→ क्रियार्थक संज्ञारूप (६८)	अंगामी	१७६	१६	१९२
	भाववाच्य→ कल्पित विकृत रूप (८५)	सेमा	१८४	६	१९०
		कुल	७०७	४०	७४७
६. क्रियार्थ संज्ञा	क्रियार्थक संज्ञा→ अपरिवर्तित रूप (११२)	आओ	५५	४८	१०३
७. धातु—क्रियार्थक संज्ञा	धातु→ क्रियार्थक संज्ञारूप (३१७)	लोथा	७३	२७	१००
		अंगामी	६८	४३	१११
		सेमा	७७	३८	११५
		कुल	३७३	१५६	४२९

३.२.२. **नागा-भाषाओं में क्रियाओं के रूप (प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की दृष्टि से)**

नागा-भाषाओं में क्रियाओं के मूल रूपों में प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की दृष्टि से प्राय: कोई रूपगत परिवर्तन नहीं होता। निम्नलिखित विवरण से यह बात स्पष्ट होती है :

३.२.२.१ **क्रियाओं के प्रकार**

नागा-भाषाओं में अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं के रूप मिलते हैं, प्रेरणार्थक रूप भी वर्तमान हैं। इन भाषाओं में मूल क्रियाओं के साथ कुछ प्रत्ययों के योग से प्रेरणार्थक रूप की रचना होती है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

भाषा	**धातु रूप**	**प्रेरणार्थक प्रत्यय**	**प्रेरणार्थक रूप**
आओ	स (आसबा—मरना)	—दाक्त्स	सदाक्त्स (मरवाना)
लोथा	म्पेन (पहनना)	—तोक	म्पेनतोक (पहनाना)
अंगामी	बुलिए (पहनना)	—श	बुलिएश (पहनाना)
सेमा	इथी (जानना)	—पे	इथिपे (जनाना)

३.२.२.२ **काल**

नागा-भाषाओं में तीन काल—वर्तमान, भूत तथा भविष्यत हैं। अग्रांकित आरेख से इनके उपभेद स्पष्ट होते हैं :

वर्तमान काल
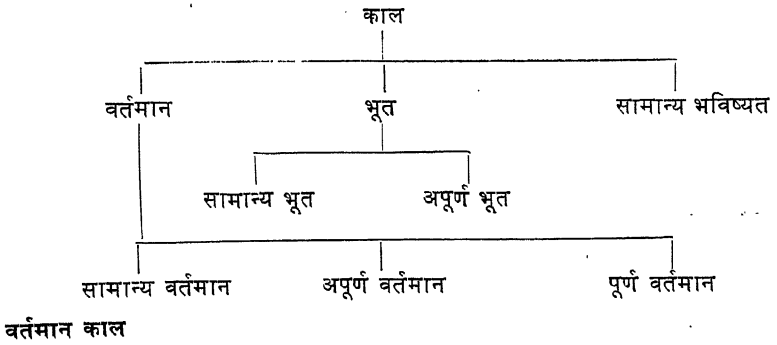
इन कालों का प्रत्यय सहित संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :

सामान्य वर्तमान :

भाषा	धातु रूप	प्रत्यय		सामान्य वर्तमान रूप
आओ	आशी (कहना)	–एर्~र	>	आशिर (····कहता है)
लोथा	रो (आ)	–आला~ला	>	रोआला (····आता है)
अंगामी	फ्र	–या	>	फ्रया (····पढ़ता है)
सेमा	इगी (आ)	ϕ	>	इगी (····आता है)

अपूर्ण वर्तमान :

आओ	आरु (आ)	–दागी	>	आरुदागी (····आ रहा है)
लोथा	रो (आ)	–आला	>	रोआला (···आता/आ रहा है)
अंगामी	फ्र (पढ़)	–ज्हिए	>	फ्रज्हिए (··· पढ़ रहा है)
सेमा	इथी (जान)	–आनी~नी	>	इथिआनी (····जान रहा है)

पूर्ण वर्तमान :

आओ	आरू (आ)	–ओगो	>	आरूओगो (····आया है)

लोथा	रो (आ)	—थाका/थाक	>	रोथाका (···आया है)
अंगामी	फ (पढ़)	—लिएते	>	फलिएते (····पढ़ा है)
सेमा	इगी	—वेआ	>	इगिवेआ (····आया है)

भूत काल :

सामान्य भूत :

भाषा	धातु रूप	प्रत्यय		सामान्य भूत रूप
आओ	आशी (कह)	ϕ	>	आशी (····कहा)
लोथा	रो (आ)	—छो	>	रोछो (····आया)
अंगामी	फ (पढ़)	—वाते		(फवाते) (····पढ़ा)
सेमा	इगी (आ)	—ए	>	इगिए (····आया)

अपूर्ण भूत :

				अपूर्ण भूत रूप
आओ	जलू (लिख)	—आ लिआस	>	जलुआलिआस (····लिख रहा था)
लोथा	रो (आ)	—छो	>	रोछो (आया/आ रहा था)
अंगामी	फ	—वाते	>	फवाते (पढ़ा/पढ़ रहा था)
सेमा	इथी	—आ	>	इथिआ (····जान रहा था)

भविष्यत काल :

समान्य भविष्य :

भाषा	धातु रूप	प्रत्यय	सामान्य भविष्यत
आओ	आओ (जा)	—त्स	आओत्स (····जायेगा)

लोथा	रो (आ)	–उ	रोउ (····आयेगा)
अंगामी	फ (पढ़)	–तुओ	फतुओ (····पढ़ेगा)
सेमा	इगी (आ)	–नानी	इगिनानी (····आयेगा)

३.२.२.३ **अर्थ**

नागा-भाषाओं में चार अर्थ हैं—निश्चयार्थ, सन्देहार्थ, आज्ञार्थ तथा संकेतार्थ। इनकी रूप-रचना इस प्रकार होती है :

(**क**) **निश्चयार्थ** : निश्चयार्थ में वर्तमान काल, भूतकाल तथा सामान्य भविष्यत काल के रूप आते हैं। इनका वर्णन किया जा चुका है।

(**ख**) **सन्देहार्थ**—सन्देहार्थ के दो रूप होते हैं—संदिग्ध वर्तमान और संदिग्ध भूत। इनकी रूप-रचना निम्नलिखित है :

संदिग्ध वर्तमान :

आओ पा **आरुया आलित्सआ,**
वह आ रहा होगा।

यहाँ आरु (आ) क्रिया-रूप के साथ या अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त तथा आली (होना) के साथ 'त्स' (सामान्य भविष्यत काल का प्रत्यय) जुड़ा है।

लोथा—मूल क्रिया के साथ 'वान थाकू त्सो' के प्रयोग से संदिग्ध वर्तमान बनता है; यथा—

ओम्बो ना खा **वान थाकू त्सो**
वह (ने) पढ़ रहा होगा।

अंगामी—मूल क्रिया के साथ 'बा' और 'न्हिए' के सम्मिलित प्रयोग से संदिग्ध वर्तमान रूप बनता है; यथा—

पुओ फ **बा न्हिए**
वह पढ़ रहा होगा।

सेमा—मूल क्रिया के साथ 'आगी लुवी' के प्रयोग से संदिग्ध वर्तमान रूप बनता है; यथा—

पाये इथी **आगी लुवी**
वह (ने) जानता होगा।

संदिग्ध भूत :

आओ—धातु के साथ 'आसत्सआ~सदी' प्रत्यय के प्रयोग से संदिग्ध भूत की रचना होती है; यथा—

पा आरूर आसत्सआ, पा आरूर सदी
वह आया होगा। वह आया होगा।

लोथा—मूल धातु के बाद 'थाक्छोत्सो' के प्रयोग से संदिग्ध भूत रूप बनाया जाता है; यथा—

ओम्बो ना खा थाक्छोत्सो
वह (ने) पढा होगा।

अंगामी—पूर्ण वर्तमान काल क्रिया के बाद 'न्हिए' के प्रयोग से संदिग्ध भूत रूप बनाया जाता है; यथा—

पुओ फ़लिएते न्हिए
उसने पढ़ा होगा।

सेमा—मूल क्रिया के साथ 'वे' प्रत्यय लगाकर तथा बाद में 'आगिनिआ' के प्रयोग से संदिग्ध भूत बनाया जाता है; यथा—

पाये चिलुवे आगिनिआ
उसने सुना होगा।

(ग) **आज्ञार्थ :**

आओ—मूल क्रिया के साथ 'आङ'~'ङ'~'चाङ' प्रत्यय के योग से आज्ञार्थ रूप बनाया जाता है। इन तीनों प्रत्ययों में 'आङ' ही अधिक प्रचलित है। आज्ञार्थ रूप बनाते समय 'आ' से आरम्भ होने वाले धातु रूपों का 'आ' कहीं लुप्त होता है, और कहीं बना रहता है; यथा—

मूल धातु	प्रत्यय		आज्ञार्थ रूप
आशी	–आङ	>	शिआङ
(कह)			(कहो)
आरु (आ)	–ङ		आरुङ (आओ)
आवोक (छोड़)	–चाङ		वोकचाङ (छोड़ो)

लोथा—मूल धातु के साथ सामान्यतः 'आ' प्रत्यय के योग से आज्ञार्थ रूप निष्पन्न होता है। कभी-कभी 'ऊ' प्रत्यय का भी होता है; यथा—

धातु रूप	प्रत्यय	आज्ञार्थ रूप
रो (आ)	–आ	रोआ (आओ)
वो (जा)	–आ	वोआ (जाओ)

अंगामी—मूल क्रिया में 'लिएचिए' प्रत्यय के योग से आज्ञार्थ रूप बनता है। आदरसूचक विधि रूप 'शथिए' के योग से तथा निषेधार्थ रूप 'हिएचिए' प्रत्यय के के योग से बनता है; यथा—

सामान्य प्रयोग	—	नो फ लिएिचिए तुम पढ़ो ।
आदरार्थ प्रयोग	—	नो फ शथिए आप पढ़िए ।
निषेधार्थ प्रयोग	—	नो फ हिएचिए तुम पढ़ो मत ।

सेमा—मूल क्रिया के साथ '–लो' प्रत्यय के योग से सामान्य आज्ञार्थ तथा 'केविलो' निपात के प्रयोग से निषेधसूचक आज्ञार्थ रूप बनाया जाता है; यथा—

सामान्य प्रयोग	—	नोनो वुलो तुम जाओ ।
निषेधार्थ प्रयोग	—	नोनो वुकेविलो तुम जाओ मत ।

(घ) **संकेतार्थ :**

नागा-भाषाओं में संकेतार्थ के दो रूप मिलते हैं—अपूर्ण संकेतार्थ और पूर्ण संकेतार्थ; यथा—

अपूर्ण संकेतार्थ :

आओ—अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त के बाद 'आली आसवो' के प्रयोग द्वारा अपूर्ण संकेतार्थ रूप बनता है; यथा—

ना आरूया आली आसबो,	निवा आताला
तुम आते होते तो	मैं भी प्रतीक्षा करता ।

लोथा—लोथा भाषा में संकेतार्थ के द्योतन के लिए पूर्वार्द्ध वाक्य की क्रिया के साथ '–सेलिवो' और उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के साथ '–खातोला' प्रत्यय का प्रयोग होता है; यथा—

न्ते ना न्त्सिया सालिवो,	आ पो हा न्त्सिव खातोला
तुम मुझको जानते होते तो	मेरे पिता को भी जानते होते ।

अंगामी—पूर्वार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद 'लिरो'~'रो' (यदि) तथा उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद 'लिएतुओ' के प्रयोग से अपूर्ण संकेतार्थ बनता है; यथा—

निएको आ सी लिरो, आ पुओ रेई सिलिएतुओ
तुम लोग मुझे जानते यदि **तो** मेरे पिता को भी जानते ।

सेमा—सेमा भाषा में पूर्वार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद 'आए' तथा उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद 'नानी' प्रयोग से अपूर्ण संकेतार्थ बनता है; यथा—

चाला चो नोना इइथिआए आपुओगे इथिनानी.
यदि तुम लोग मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते ।

पूर्ण संकेतार्थ :

आओ—सामान्य भूतकालिक क्रिया-रूप के बाद 'आसबो' का प्रयोग करके पूर्ण संकेतार्थ रूप बनाया जाता है; यथा—

निनोकी नी मेतेत आसबो, क बुआ मेतेतेला.

तुम लोगों ने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जानते ।

लोथा—अपूर्ण संकेतार्थ की भाँति पूर्ण संकेतार्थ रूप भी बनाया जाता है। इसमें पूर्वार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद '–सालिवो' तथा उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद '–खातोला' का प्रयोग होता है; यथा—

न्ते ना आ न्त्सिछो सालिवो आ पो हा न्त्सिव खातोला.

तुम ने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जानते होते ।

अंगामी—पूर्वार्द्ध वाक्य की मूल क्रिया के बाद 'वे' (तो) तथा उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद 'तुओवेअ' के प्रयोग द्वारा पूर्ण संकेतार्थ बनाया जाता है; यथा—

निएको आ सिकेच सिएवे आ पुओ रेई सिलिएतुओवेअ.

तुम लोगों ने मुझ को जाना होता तो मेरे पिता को भी जाने होते ।

सेमा—अपूर्ण संकेतार्थ की भाँति ही पूर्ण संकेतार्थ रूप बनाया जाता है। इसमें पूर्वार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद '–आए' तथा उत्तरार्द्ध वाक्य की क्रिया के बाद '–नानी' का प्रयोग होता है; यथा—

चाला चा नोना इ इथिआए आ पुओगे इथिनानी.

यदि तुम लोगों ने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जाने होते ।

नागा-भाषाओं के काल तथा अर्थद्योतक प्रत्यय सारिणी ३४ से स्पष्ट होते हैं।

३.२.२.४ वाच्य

नागा-भाषाओं में अधिकांशतः कर्तृवाच्य का प्रयोग होता है। कर्मवाच्य या भाववाच्य के प्रयोग प्रचलित नहीं हैं। 'चिट्ठी भेजी गयी' (कर्मवाच्य), नारोला से चला नहीं जाता (भाववाच्य) आदि वाक्य-प्रयोग नागा-भाषाओं में प्रचलित नहीं हैं। इन वाक्यों के स्थान पर क्रमशः आओ में

शिती योक
(चिट्ठी भेजी)
नारोला मेचाचातेतर
(नारोला चल नहीं सकती)

का प्रयोग होता है। इसी प्रकार लोथा, अंगामी तथा सेमा में भी कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के प्रयोग नहीं मिलते ।

सारिणी ३४

नागा-भाषाओं में काल तथा अर्थद्योतक प्रत्यय

	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
१. सामान्य वर्तमान	–एर / –र	–आला / –ला	–या	–ϕ (शून्य प्रत्यय)
२. अपूर्ण वर्तमान	–दागी	–आला	–ज्हिए	–आनी / –नी
३. पूर्ण वर्तमान	–ओगो	–थाका/थाक	–लिएते	–वेआ
४. सामान्य भूत	–ϕ (शून्य प्रत्यय)	–छो	–वाते	–ए
५. अपूर्ण भूत	–आ + –लियास	–छो	–वाते	–आ
६. सामान्य भविष्यत	–त्स	–उ	–तुओ	–नानी
७. १-संदेहार्थ (संदिग्ध वर्तमान)	–या आलित्सआ	–वान थाकू त्सो	–बा न्हिए	–आगी लुवी
२-संदेहार्थ (संदिग्ध भूत)	–आसत्सआ	–थाक छो त्सो	–लिएते न्हिए	–वे आगिनिआ
८. आज्ञार्थ	–आङ	–आ	–लिए~चिए –हिएचिए (निषेधार्थ) –थिए (आदरार्थ)	–लो
९. १-संकेतार्थ (अपूर्ण संकेतार्थ)	–या आली आसबो	–सालिवो—खातोला	–लिरो—लिएतुओ	–आए—नानी
२-संकेतार्थ (पूर्ण संकेतार्थ)	–आसबो	–सालिवो—खातोला	–वे—तुओवेअ	–आए—नानी

३.२.३ हिन्दी भाषा में क्रिया के रूप : प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की दृष्टि से

३.२.३.१ हिन्दी में क्रिया के प्रकार

हिन्दी में क्रिया के सामान्यतः दो प्रकार हैं—सकर्मक और अकर्मक तथा दो प्रकार की धातुएँ मिलती हैं—मूल और यौगिक । मूल धातुएँ भी दो प्रकार की होती हैं—सामान्य और 'ह्रस्वीकृत' । यहाँ ह्रस्वीकृत धातु को स्पष्ट करना आवश्यक है । हिन्दी में कुछ क्रियाओं के दो रूप मिलते हैं । इन दोनों रूपों का आपस में सम्बन्ध है । इनमें से एक सकर्मक है और दूसरा रूप अकर्मक है । हम इन अकर्मक रूपों को ही सुविधा के लिए ह्रस्वीकृत रूप कह रहे हैं; यथा—

खोलना—खुलना (ह्रस्वीकृत)
काटना—कटना (ह्रस्वीकृत)

नागा-भाषाओं में ह्रस्वीकृत धातु बनाने की प्रक्रिया नहीं है ।

हिन्दी में यौगिक धातुएँ दो हैं—प्रेरणार्थक धातुएँ और नामिक धातुएँ । हिन्दी में '–आ' प्रत्यय के योग से प्रथम प्रेरणार्थक तथा '–वा' प्रत्यय के योग से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनता है; यथा—

दौड़ना दौड़ाना दौड़वाना

नागा-भाषाओं में द्वितीय प्रेरणार्थक रूप नहीं मिलता । इन भाषाओं में मूल धातु के साथ परप्रत्यय (Suffix) के योग से प्रेरणार्थक धातुएँ बनती हैं ।

हिन्दी में संज्ञा तथा सर्वनाम में कुछ प्रत्ययों के योग से नामिक धातुएँ बनती हैं; यथा—

संज्ञा : हाथ हथियाना
सर्वनाम : आप अपनाना

नागा-भाषाओं में नामिक के साथ प्रत्यय के योग से नामिक धातुओं के निर्माण की सुदृढ़ परम्परा नहीं है ।

हिन्दी भाषा में क्रिया-रूप वचन, लिंग तथा पुरुष से प्रभावित होता है । इसके विपरीत, नागा-भाषाओं में क्रिया-रूप वचन, लिंग तथा पुरुष के प्रभाव से मुक्त होते हैं ।

३.२.३.२ **काल : अर्थ**

हिन्दी में क्रिया के कालों के मुख्य तीन भेद—वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यत काल तथा मुख्य पाँच अर्थ—निश्चयार्थ, सम्भावनार्थ, सन्देहार्थ, आज्ञार्थ तथा संकेतार्थ मिलते हैं—

हिन्दी में इन सभी अर्थों के अनुसार १६ प्रकार के कालों की रचना होती है (गुरु–३६१) । सारिणी ३५ से ये सोलह काल स्पष्ट होते हैं :

सारिणी ३५

निश्चयार्थ	सम्भावनार्थ	सन्देहार्थ	आज्ञार्थ	संकेतार्थ
१. सामान्य वर्तमान २. पूर्ण वर्तमान ३. सामान्य भूत ४. अपूर्ण भूत ५. पूर्ण भूत ६. सामान्य भविष्यत	७. सम्भाव्य वर्तमान ८. सम्भाव्य भूत ९. सम्भाव्य भविष्यत	१०. संदिग्थ वर्तमान ११. संदिग्ध भूत	१२. प्रत्यक्ष विधि १३. परोक्ष विधि	१४. सामान्य संकेतार्थ १५. अपूर्ण संकेतार्थ १६. पूर्ण संकेतार्थ

नागा-भापाओं में सम्भावनार्थ के अन्तर्गत सम्भाव्य वर्तमान, सम्भाव्य भूत तथा सम्भाव्य भविष्यत रूप नहीं होते। इसी प्रकार, आज्ञार्थ में परोक्ष विधि का प्रयोग नहीं होता।

३.२.३.३ वाच्य

हिन्दी क्रिया का प्रयोग तीन वाच्यों—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है। किन्तु नागा-भाषाओं में कर्मवाच्य तथा भाववाच्य रूप प्रचलित नहीं है। केवल कर्तृवाच्य में ही क्रिया का प्रयोग मिलता है।

३.२.४ क्रियारूप रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर संकलित क्रिया रूप-रचनागत त्रुटियों के विवेचन और विश्लेषण के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आते हैं।

३.२.४.१ निष्कर्ष

नागाभाषी छात्र क्रिया-रूपरचना की सबसे अधिक त्रुटियाँ विधि रूप, सामान्य भविष्यत, सामान्य भूत, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य रूप के स्थान पर कल्पित विकृत रूप के प्रयोग में करते हैं। क्रिया रूप-रचना की कुछ ७३२४ त्रुटियों में केवल कल्पित विकृत रूप के प्रयोग की त्रुटियाँ ३७४५ हैं।

विधि-रूप के स्थान पर सामान्य भूत (६२३), सामान्य भविष्यत (६१६) तथा सामान्य भविष्यत के स्थान पर परोक्ष विधि (५८७), कर्मवाच्य के स्थान पर अशुद्ध कर्तृवाच्य (५७६), भाववाच्य के स्थान पर अशुद्ध कर्तृवाच्य (५२२), धातु के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा (३१७), क्रियार्थक संज्ञा का अपरिवर्तित रूप (११२), सामान्य भूत के स्थान पर अशुद्ध प्रेरणार्थक रूप (७२) तथा भाववाच्य के स्थान पर

क्रियार्थक संज्ञा के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। आवृत्ति-गणना के अनुसार इन प्रवृत्तियों को क्रमिक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इन प्रवृत्तियों में सामान्य भविष्यत के स्थान पर कल्पित विकृत रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति सबसे अधिक है तथा भाववाच्य के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा के प्रयोग की प्रवृत्ति सबसे कम है। निम्नलिखित सारिणी से त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ तथा त्रुटियों के प्रकार स्पष्ट होते हैं :

सारिणी ३६

क्रियारूप-रचनागत त्रुटियों की प्रवृत्तियों का सारांश

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की प्रवृत्तियों की संख्या	प्रवृत्तियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. ....→ कल्पित विकृत रूप	विधि रूप	१२३०		
	सामान्य भविष्यत	२११५		
	सामान्य भूत	२३८	३७४५	५१·१
	कर्मवाच्य	७७		
	भाववाच्य	८५		
२. विधि रूप → सामान्य भूत	विधि रूप	६२३	६२३	८·५
३. विधि रूप → सामान्य भविष्यत	विधि रूप	६१६	६१६	८·४
४. सामान्य भविष्यत → परोक्ष विधि	सामान्य भविष्यत	५८७	५८७	८·०
५. कर्मवाच्य → अशुद्ध कर्तृ वाच्य	कर्मवाच्य	५७६	५७६	७·९
६. भाववाच्य → अशुद्धकर्तृ वाच्य	भाववाच्य	५२२	५२२	७·३
७. धातुरूप → क्रियार्थक संज्ञा रूप	धातुरूप	३१७	३१७	४·३
८. क्रियार्थक संज्ञा— अपरिवर्तित रूप	क्रियार्थक संज्ञा	११२	११२	१·५
९. सामान्य भूत—प्रेरणार्थक रूप	सामान्य भूत	८६	८६	१·२
१०. भाववाच्य—प्रेरणार्थक रूप	भाववाच्य	७२	७२	०·९
११. भाववाच्य—क्रियार्थक संज्ञा रूप	भाववाच्य	६८	६८	०·९
कुल ११	१५	७३२४	७३२४	१००

सारिणी ३७

क्रियारूप-रचनागत त्रुटियों के प्रकार में कुल त्रुटियों का भाषावार विवरण

त्रुटियों के प्रकार	आओ			लोथा			अंगामी			सेमा			कुल त्रुटियों की संख्या	प्रतिशत
	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल		
१. विधि रूप	४२६	१४८	५७४	५९५	८२	६७७	४८८	११७	६०५	५१०	१०३	६१३	२४६९	३३·४
२. सामान्य भविष्यत	४६३	१५३	६१६	६२७	९१	७१८	५४२	१२३	६७४	५७८	११६	६९४	२७०२	३७·४
३. सामान्य भूत	३५	४६	८१	५६	२७	८३	३१	४४	७५	४८	३७	८५	३२४	४·४
४. कर्मवाच्य	१५०	—	१५०	१७२	—	१७२	१६३	—	१६३	१६८	—	१६८	६५३	८·८
५. भाववाच्य	१६५	१८	१८३	१८२	—	१८२	१७६	१६	१९२	१८४	६	१९०	७४७	१०·८
६. क्रियार्थक संज्ञा ७. धातु रूप	५५	४८	१०३	७३	२७	१००	६८	४३	१११	७७	३८	११५	४२९	५·२
कुल	१२९४	४१३	१७०७	१७०५	२२७	१९३२	१४६८	३५२	१८२०	१५६५	३००	१८६५	७३२४	१००

कुल प्रश्नावली की त्रुटियाँ ६०३२
कुल मुक्त रचना की त्रुटियाँ १२९२

कुल त्रुटियाँ ७३२४

३.२.४.२ शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

क्रियारूप-रचनागत त्रुटियों के प्रकार, प्रवृत्तियों तथा आवृत्ति-गणना के आधार पर निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) सामान्य भविष्यत ←→ परोक्ष विधि
(ख) विधि रूप ←→ सामान्य भूत, सामान्य भविष्यत
(ग) भाववाच्य, कर्मवाच्य ←→ कर्तृवाच्य
(घ) धातु रूप ←→ क्रियार्थक संज्ञा
(ङ) सामान्य भूत ←→ प्रेरणार्थक रूप

३.३ शब्द-रचना

कहा जा चुका है कि रूपों से शब्दों की रचना होती है। ये रूप व्युत्पादन, समासीकरण तथा पुनरुक्ति की प्रक्रिया के माध्यम से शब्दों की रचना करते हैं। नागा-भाषाओं और हिन्दी में शब्द-निर्माण की यह प्रक्रिया समान है, परन्तु प्रयोग के क्षेत्र में अन्तर विद्यमान है। फलस्वरूप नागाभाषी छात्रों के सामने हिन्दी शब्द-रचना तथा प्रयोग में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

शब्द-रचना सम्बन्धी समस्याओं में सबसे पहले नागाभाषी छात्रों द्वारा प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी अधिगम पर मातृभाषा के प्रभाव तथा अन्तर भाषा की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में प्रत्यय, समास तथा पुनरुक्ति के प्रयोग पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। अन्त में त्रुटियों के निष्कर्ष के आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

३.३.१ प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर प्राप्त त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण इस प्रकार है :

३.३.१.१ प्रत्यय-प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में प्रत्यय-प्रयोग से सम्बन्धित तीन प्रकार की त्रुटियाँ सामने आयी हैं—उपसर्ग (पूर्व-प्रत्यय), कृत प्रत्यय (पर-प्रत्यय) तथा तद्धित प्रत्यय (पर-प्रत्यय) से सम्बन्धित त्रुटियाँ। इनका विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया गया :

३.३.१.१.१ पूर्व-प्रत्यय की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र पूर्व-प्रत्ययों (उपसर्गों) के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

अवपूर्ण (अपूर्ण), अपगुण (अवगुण), परिउचित (अनुचित)

उपर्युक्त त्रुटियों में छात्र मूल शब्दों के पूर्व उपसर्गों का सही प्रयोग नहीं करते। फलस्वरूप विकृत शब्दों की रचना होती है।

३.३.१.१.२ **कृत प्रत्यय की त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र क्रिया धातु के पश्चात् कृत प्रत्ययों के प्रयोग में निम्न-लिखित त्रुटियाँ करते हैं :

बिक + अंत → बिकंत (बिकाउ)

हँस + आउ → हँसाउ (हँसी)

उपर्युक्त त्रुटियों में छात्र क्रिया धातु के पश्चात् सही कृत प्रत्ययों का प्रयोग नहीं करते। अतः विकृत शब्दों की रचना होती है।

३.३.१.१.३ **तद्धित प्रत्यय की त्रुटियाँ**

छात्र नामिक शब्दों के साथ तद्धित प्रत्ययों के संयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

ईमान + वान → ईमानवान (ईमानदार)

धन + दार → धनदार (धनवान)

उपर्युक्त त्रुटियों में नामिक शब्दों के साथ सही तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग नहीं हुआ है। इससे विकृत शब्दों की रचना होती है।

लिंग प्रत्यय : लिंग प्रत्यय तद्धित प्रत्यय के अन्तर्गत ही आते हैं। इन लिंग प्रत्ययों के प्रयोग में नागाभाषी छात्र अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं; यथा—

(क) बाघनी, बाघी, बाघाइन (बाघिन)

(ख) चुहेया, चुही, चुहियाँ, चुहाइन, चुहीनी, चुहि (चुहिया)

(ग) नौकरनी, नौकरआनी, नौकरी, नौकररानी (नौकरानी)

(घ) दारोगी, दारा, दारोगया, दारोगानी, दारोगिनी (दारोगाइन)

(च) शेरानी, शेराइन, शेरया, शेरिनि, शेरियाँ, (शेरनी)

(छ) लड़केया, लड़किया (लड़की)

उपर्युक्त प्रकार की त्रुटियों में 'इन', 'इया', 'आनी', 'आइन', 'नी' तथा 'ई' स्त्रीलिंग प्रत्ययों के स्थान पर अन्य स्त्रीलिंग प्रत्ययों तथा कल्पित प्रत्ययों के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। इससे विकृत स्त्रीलिंग शब्दों की रचना हुई है। अग्र-लिखित सारिणी से प्रत्ययों (पूर्व-प्रत्यय, पर-प्रत्यय) से सम्बन्धित त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ३८—शब्द-रचनागत त्रुटियाँ

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	कुल
पूर्व प्रत्यय	अशुद्ध संयोजन→विकृत शब्द-रचना	आओ	१७५	—	१७५
		लोथा	१०४	—	१०४
		अंगामी	१४८	—	१४८
		सेमा	१२६	—	१२६
		कुल	५५३	—	५५३
कृत प्रत्यय	अशुद्ध संयोजन→विकृत शब्द-रचना	आओ	१८२	—	१८२
		लोथा	१३६	—	१३६
		अंगामी	१५४	—	१५४
		सेमा	१४०	—	१४०
		कुल	६१२	—	६१२
तद्धित प्रत्यय	अशुद्ध संयोजन→विकृत शब्द-रचना	आओ	६५	—	६५
		लोथा	७१	—	७१
		अंगामी	६८	—	६८
		सेमा	७०	—	७०
		कुल	२७४	—	२७४
स्त्रीलिंग प्रत्यय	अशुद्ध संयोजन—'इन' प्रत्यय के स्थान पर (२०७) अशुद्ध संयोजन—'इया' प्रत्यय के स्थान पर (१७३) अशुद्ध संयोजन—'आनी' प्रत्यय के स्थान पर (१७६) अशुद्ध संयोजन—'आइन' प्रत्यय के स्थान पर (१८०) अशुद्ध संयोजन—'नी' प्रत्यय के स्थान पर (१५६) अशुद्ध संयोजन—'ई' प्रत्यय के स्थान (७०) तथा कल्पित प्रत्यय संयोजन	आओ लोथा अंगामी सेमा अन्य	१६२ १८६ १७५ १७३ ५०	७६ २५ ४८ ३२ ३५	२३८ २११ २२३ २०५ ८५
		कल	७४६	२१६	९६२

३.३.१.२ समास रचना की त्रुटियाँ

समास रचना की त्रुटियों में तत्पुरुष, द्विगु एवं कर्मधारय समास रचना की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं; यथा—

३.३.१.२.१ तत्पुरुष समास की त्रुटियाँ

छात्र तत्पुरुष समास की निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :
घोड़ दौड़ (घुड़दौड़), पानी घाट (पनघट)
उपर्युक्त त्रुटियों में छात्र अपेक्षित रूप-स्वनिमिक परिवर्तन करने में असमर्थ रहे।

३.३.१.२.२ द्विगु समास की त्रुटियाँ

छात्र द्विगु समास रचना में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :
पाँच भूत (पंचभूत), चार भुजा (चतुर्भुज)
उपर्युक्त त्रुटियों में भी अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव है।

३.३.१.२.३ कर्मधारय समास की त्रुटियाँ

छात्र कर्मधारय समास की निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

आधा मरा (अधमरा)
दो पट्टा (दुपट्टा)

उपर्युक्त त्रुटियों में भी रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव है।

प्रश्नावली के आधार पर द्वन्द्व, अव्ययीभाव तथा बहुव्रीहि समास तथा पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ प्राप्त न हो सकीं। द्वन्द्व एवं अव्ययीभाव समास की रचना सही हुई। पुनरुक्त शब्द-प्रयोग सही हुए। छात्रों ने बहुव्रीहि समास की रचना ही नहीं की क्योंकि ऐसी शब्द-रचना उनके लिए कठिन साबित होतीं हैं। निम्नलिखित सारणी से समास रचना की त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हो जाती हैं :

सारिणी ३९

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	योग
तत्पुरुष समास रचना	अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	आओ	८०	—	८०
		लोथा	९३	—	९३
		अंगामी	८९	—	८९
		सेमा	९२	—	९२
		कुल	३५४	—	३५४

द्विगु समास रचना	अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	आओ लोथा अंगामी सेमा	१६५ १९२ १९० १८५	— — — —	१६५ १९२ १९० १८५
		कुल	७३२	—	७३२
कर्मधारय समास रचना	अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	आओ लोथा अंगामी सेमा	१३५ ११२ १२६ १००	— — — —	१३५ ११२ १२६ १००
		कुल	४७३	—	४७३

३.३.२ नागा-भाषाओं में शब्द-रचना : प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्ति

नागा-भाषाओं में प्रत्यय, समास (सीमित) तथा पुनरुक्ति की प्रक्रिया से शब्दों की रचना होती है। इनके उदाहरण निम्नलिखित हैं :

३.३.२.१ प्रत्ययों का प्रयोग

नागा-भाषाओं में पूर्व-प्रत्ययों (उपसर्ग) तथा पर-प्रत्ययों (कृत और तद्धित) के प्रयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा—

३.३.२.१.१ पूर्व-प्रत्यय

नागा-भाषाओं में क्रिया-रूपों के साथ पूर्व-प्रत्ययों के योग से मिश्र शब्द की रचना होती है। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

भाषाएँ	पूर्व-प्रत्यय	धातु		मिश्र शब्द
आओ	ता–	–आतोक (क्षमा करना)	>	तातोक (क्षमा)
लोथा	ए–	–कम (जीवित रहना)	>	एकम (जीवन)
अंगामी	क–	–जिए (प्रकाश होना)	>	कजिए (प्रकाश)
सेमा	आकी–	–थी (मरना)	>	आकिथी (मृत्यु)

नागा-भाषाओं की यह विशेषता है कि नामिक शब्दों के साथ पूर्व-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना प्रायः नहीं होती।

३.३.२.१.२ कृत-प्रत्यय (पर-प्रत्यय)

नागा-भाषाओं में धातुओं के साथ कृत-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

भाषाएँ	धातु	कृत प्रत्यय	मिश्र शब्द
आओ	आली (रहना)+	–दाक	> आलिदाक (रहने का स्थान)
लोथा	खा (पढ़ना)+	–फेन	> ख़ाफेन (पढ़ने का स्थान)
अंगामी सेमा	अंगामी और सेमा भाषा में धातुओं के साथ कृत-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना प्रायः नहीं होती ।		

३.३.२.१.३ **तद्धित प्रत्यय**

नागा-भाषाओं में नामिक मूल शब्दों के साथ तद्धित प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा—

भाषाएँ	मूल शब्द	तद्धित प्रत्यय	मिश्र शब्द
आओ	आसेम (तीन)+	–बेन	आसेमबेन (तिगुना)
लोथा	शिरो (स्तन) +	–च	शिरोच (दूध)
अंगामी	क्रो (भीड़) +	–दी	क्रोदी (बहुत भीड़)
सेमा	आफू (गाँव) +	–गी	आफुगी (नगर)

नागा-भाषाओं में लिंग प्रत्यय

नागा-भाषाओं के मनुष्यवाची संज्ञाओं में प्राकृतिक लिंग की व्यवस्था है। मनुष्येतर प्राणीवाचक संज्ञा शब्दों के साथ पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग द्योतक प्रत्यय जुड़ते हैं। चारों भाषाओं में लिंग प्रत्ययों के भिन्न रूप प्रयुक्त होते हैं।

आओ में पुंल्लिग प्रत्यय 'तेबोङ' तथा स्त्रीलिंग प्रत्यय 'तेत्ज' का प्रयोग होता है। लोथा में पुंल्लिग प्रत्यय 'पोङ' तथा स्त्रीलिंग प्रत्यय 'क्यू' है। अंगामी में पुंल्लिग प्रत्यय 'त्छ'~'द्ज' तथा स्त्रीलिंग प्रत्यय 'क्र' है। सेमा में पुंल्लिग प्रत्यय 'ली'~'त्च'~'दू' तथा स्त्रीलिंग प्रत्यय 'कू' है। निम्नांकित सारिणी से लिंग प्रत्यय तथा इनके प्रयोग स्पष्ट होते हैं :

सारिणी ४०

नागा-भाषाओं के मनुष्येतर प्राणीवाचक संज्ञाओं में लिंग-प्रत्यय

भाषाएँ	मूल शब्द	पुंल्लिग प्रत्यय	स्त्रीलिंग प्रत्यय		व्युत्पन्न शब्द
आओ	आक (सूअर+सूअरी)	तेबोङ	—	>	आकतेबोङ (सूअर)
	आक	—	तेत्ज	>	(आकतेत्ज) (सूअरी)
लोथा	फेरो (कुत्ता+कुतिया)	पोङ	—	>	फेरोपोङ (कुत्ता)
	फेरो	—	क्यू	>	फेरोक्यू (कुतिया)

भाषाएँ	मूल शब्द	पुल्लिग प्रत्यय	स्त्रीलिंग प्रत्यय		व्युत्पन्न शब्द
अंगामी	किएर (घोड़ा+घोड़ी)	त्छ	—	>	किएरत्छ (घोड़ा)
	किएर	—	क्र	>	(किएरक्र) (घोड़ी)
	पेरा (नरपक्षी+मादा पक्षी)	द्ज	—	>	पेराद्ज (नर पक्षी)
	पेरा	—	क्र	>	पेराक्र (मादा पक्षी)
सेमा	आत्च (कुत्ता+कुतिया)	ली	—	>	आन्चली (कुत्ता)
	आत्च	—	कू	>	आत्चकू (कुतिया)
	आमिशी (बैल+गाय)	त्च	—	>	आमिशित्च (बैल)
	आमिशी	—	कू	>	आमिशिकू (गाय)
	आबू (मुर्गा+मुर्गी)	दू	—	>	आबुदू (मुर्गा)
	आबू	—	कू	>	आबुकू (मुर्गी)

३.३.२.२. **यौगिक शब्द-रचना**

नागा-भाषाओं में द्वन्द्व समास को छोड़कर शेष समासों (तत्पुरुष, कर्मधारय आदि) के माध्यम से यौगिक शब्दों (Compound words) की रचना प्रक्रिया प्रचलित नहीं है।

द्वन्द्व समास के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं :

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
तान आसंग	एङ्जुमो	तिसो तिजी	किजे कतला
आज कल	दिन रात	दिन रात	बड़ा छोटा

३.३.२.३ **पुनरुक्ति**

पुनरुक्ति से भी नागा-भाषाओं में यौगिक शब्दों की रचना होती है; यथा—

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
तेसेम तेसेम	छमछमना	रली रली	पापासे
जगह जगह	धीरे-धीरे	धीरे-धीरे	जल्दी जल्दी

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नागा-भाषाओं में उनकी प्रकृति के अनुरूप समास तथा पुनरुक्ति के माध्यम से शब्द-रचना की प्रक्रिया वर्तमान है।

३.३.३ **हिन्दी भाषा में शब्द-रचना : प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्ति**

हिन्दी भाषा में प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्ति के माध्यम से शब्दों की रचना होती है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

३.३.३.१ **प्रत्यय**

हिन्दी भाषा में क्रिया और नामिक के साथ पूर्व-प्रत्ययों (उपसर्गों) तथा पर-प्रत्ययों (क्रमशः कृत और तद्धित) के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा—

३.३.३.१.१ **पूर्व प्रत्यय**

हिन्दी में अ, अन अव, अप, आ, उत्, उप, कु, सम्, निः, प्र, परि, वि, वे आदि पूर्व-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा—

अ + न्याय > अन्याय, अप + मान > अपमान आदि

नागा-भाषाओं में नामिक शब्दों के साथ पूर्व-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना प्रायः नहीं होती।

३.३.३.१.२ **कृत प्रत्यय**

हिन्दी में मूल धातुओं के साथ अन, अन्त, आव, अंत, आई, आउ, ई, अक्कड़, आन, आवट आदि कृत प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों (कृदन्त) की रचना होती है; यथा—

चल + अन > चलन, पढ़ + आई > पढ़ाई आदि

नागा-भाषाओं के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अंगामी और सेमा भाषा में मूल धातुओं के साथ कृत प्रत्ययों के संयोग से संज्ञा, विशेषण आदि की रचना की सुदृढ़ परम्परा नहीं मिलती।

३.३.३.१.३ **तद्धित प्रत्यय**

हिन्दी में मूल शब्दों के साथ इन, आर, आई, आपा, आस, इया, ई, इला, आ, गर, दार, वान, नी, आदि तद्धित प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों (तद्धितांत) की रचना होती है; यथा—

धोबी + इन > धोबिन, मीठा + आई > मिठाई आदि

लिंग प्रत्यय—हिन्दी भाषा में लिंग-व्यवस्था तथा लिंग प्रत्ययों का प्रयोग जटिल है, इसलिए नागाभाषी छात्रों को इस दृष्टि से हिन्दी अधिगम में अनेक कठिनाइयाँ होती हैं।

हिन्दी में पुल्लिग से स्त्रीलिंग रूप वनाने के लिए मुख्य रूप से इ, इया, इन, आनी, आइन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

३.३.३.२ **यौगिक शब्द-रचना**

हिन्दी में यौगिक शब्दों की रचना में निम्नलिखित प्रक्रिया दृष्टिगत होती है:

१. धातु+धातु=खेलकूद, मारपीट आदि

२. मूल शब्द+मूल शब्द=माँ-बाप, माता-पिता आदि

३. धातु+मूल शब्द=हँसमुख, मरघट आदि

४. मूल शब्द+धातु=चिड़ीमार, गिरहकट।

यौगिक शब्द-रचना में समासों की प्रमुख भूमिका होती है। हिन्दी में समासों के ६ प्रकार हैं—

द्वन्द्व, द्विगु, तत्पुरुष, कर्मधारय, अव्ययीभाव तथा बहुब्रीहि।

३.३.३.३. **पुनरुक्ति**

'पुनरुक्ति' से भी यौगिक शब्दों की रचना होती है; यथा—

पूर्ण पुनरुक्ति—पास-पास, जहाँ-जहाँ, हरा-हरा आदि।

अपूर्ण पुनरुक्ति—बीचबचाव, वालबच्चे, कामकाज आदि।

३.३.४ **शब्द-रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण**

प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त शब्द-रचनागत त्रुटियों के विवेचन और विश्लेषण के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आते हैं। ये निष्कर्ष तथा इनके आधार पर निर्धारित शिक्षण बिन्दु निम्नलिखित हैं:

३.३.४.१ **निष्कर्ष**

नागाभाषी छात्रों की शब्द-रचनागत त्रुटियों में मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं—प्रत्ययों का अशुद्ध संयोजन तथा यौगिक शब्द-रचना में अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव।

प्रत्ययों के अशुद्ध संयोजन की कुल १४३९ त्रुटियाँ हुईं जिनमें पूर्व प्रत्यय की ५५३, कृत प्रत्यय की ६१२ तथा तद्धित प्रत्यय की २७४ त्रुटियाँ हुईं।

तद्धित प्रत्ययों में लिंग से सम्बन्धित प्रत्ययों की कुल ९६२ त्रुटियाँ हुईं। पुल्लिग से स्त्रीलिंग रूप बनाते समय प्रत्ययों के अशुद्ध संयोजन की प्रवृत्ति ही प्रधान रही है।

अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन के अभाव के कारण कुल त्रुटियाँ १५५९ हुईं जिनमें तत्पुरुष समास, द्विगु समास तथा कर्मधारय समास रचना की क्रमशः ३५४, ७३२ तथा ४७३ त्रुटियाँ हैं। अग्रांकित सारिणी से शब्द-रचनागत त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हो जाती हैं:

सारिणी ४१

शब्द-रचनागत त्रुटियों की प्रवृत्तियों का सारांश

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों के प्रकार	प्रकृतियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. अशुद्ध संयोजन	पूर्व प्रत्यय कृत प्रत्यय तद्धित प्रत्यय	५५३ ६१२ २७४	१४३९	३६·७
	लिंग प्रत्यय	९६२	९६२	२४·२
२. अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	तत्पुरुष समास रचना द्विगु समास रचना कर्मधारय समास रचना	३५४ ७३२ ४७३	१५५९	३९·१
कुल २	६	३९६०	३९६०	१००

३.३.४.२ **शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण**

आवृत्ति-गणना तथा त्रुटियों के प्रकार को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया जा सकता है :

(क) तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग का अभ्यास। इसमें स्त्रीलिंग प्रत्ययों के प्रयोग का अभ्यास भी अपेक्षित है।

(ख) पूर्व-प्रत्ययों के प्रयोग का अभ्यास।

(ग) कृत प्रत्ययों के प्रयोग का अभ्यास।

(घ) समास रचना का अभ्यास—इसमें तत्पुरुष, द्विगु, कर्मधारय, द्वन्द्व, अव्ययीभाव तथा बहुब्रीहि समास रचना का अभ्यास कराना आवश्यक है।

(ङ) पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग का अभ्यास।

३.४ विविध प्रयोग

रूप-रचना, शब्द-रचना तथा वाक्य-रचना के अतिरिक्त नागाभाषी छात्र विभिन्न प्रयोगों से सम्बन्धित त्रुटियाँ करते हैं। इनमें अविकारी शब्द, निपात, परसर्ग आदि के प्रयोग की त्रुटियाँ आती हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर प्राप्त इन त्रुटियों के विवेचन एवं विश्लेषण के पश्चात नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में अविकारी शब्दों, निपातों एवं परसर्गों आदि के प्रयोग पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया

है। अन्त में त्रुटियों के निष्कर्ष तथा उनके आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं की चर्चा की गयी है।

३.४.१ अविकारी शब्दों, निपातों, परसर्गों, सहायक तथा रंजक क्रियाओं एवं अन्यान्य प्रयोगों से सम्बन्धित त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र विविध प्रयोगों से सम्बन्धित अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। उनका विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया जा रहा है :

३.४.१.१ अविकारी शब्दों की प्रयोगगत त्रुटियाँ

अविकारी शब्दों (अव्यय)[1] से तात्पर्य ऐसे शब्दों से है जिन पर लिंग, वचन, कारक आदि व्याकरणिक कोटियों का प्रभाव नहीं पड़ता। इनके अन्तर्गत क्रिया-विशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात आते हैं। नागाभाषी छात्र इनसे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

३.४.१.१.१ क्रिया-विशेषण शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्रों की क्रिया-विशेषणगत त्रुटियों में केवल रीतिवाचक शब्दों के प्रयोग में ही त्रुटियाँ पायी गयीं। ये निम्नलिखित हैं :

चर्च अच्छी से (अच्छी तरह) चलता है।
लड़का किधर में (किधर) गया ?

उपर्युक्त त्रुटियों में 'तरह' का अप्रयोग तथा 'से', 'में' के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.४.१.१.२ सम्बन्धसूचक शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ

छात्र सम्बन्धसूचक अविकारी शब्दों के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

वह नोकदेन का साथ (के साथ) नहीं जायेगा।
माँ घर का बाहर (के बाहर) है।

उपर्युक्त त्रुटियों में अविकारी के स्थान पर विकारी रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है।

३.४.१.१.३ समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ

समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग में छात्र निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

यह अच्छा है की (कि) मैं गाँव में रहता हूँ।
मेरेन आरू (और) तेमजेन बाजार जायेंगे।

---

१ 'सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् ॥

—भट्टोजि दीक्षित **'सिद्धान्त कौमुदी'**

उपर्युक्त त्रुटियों में संयोजक 'कि' का प्रयोग दीर्घ 'की' के रूप में हुआ है तथा और संयोजक के स्थान पर नागामिज 'आरू' का प्रयोग हुआ है। छात्र 'कि' तथा 'और' के सही रूप से परिचित नहीं हैं।

३.४.१.१.४ विस्मयादिबोधक शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ

हाय ! (अहा) वह पास हो गया।
आह ! (आहा) कितना मजा आया।

उपर्युक्त त्रुटियों में छात्रों ने हर्षसूचक शब्दों के स्थान पर शोकसूचक शब्दों का प्रयोग किया है। छात्र हर्षसूचक तथा शोकसूचक शब्दों के सही प्रयोग से परिचित नहीं हैं।

३.४.१.१.५ सकारात्मक तथा नकारात्मक निपातों के प्रयोग की त्रुटियाँ

छात्रों ने सकारात्मक तथा नकारात्मक निपातों के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ कीं :

हाँ जी (जी हाँ) मैं जरूर आओंगा।
तुम शराब नहीं (मत) खाओ।
गुरु जी, आप पैदल नहीं (न) जाओ।

उपर्युक्त त्रुटियों में 'जी हाँ' के स्थान पर 'हाँ जी' का प्रयोग हुआ है। इसमें 'क्रम विपर्यय' की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। 'मत' (आज्ञार्थ) के स्थान पर 'नहीं' (निश्चयार्थ) तथा 'न' (शिथिल आज्ञार्थ) के स्थान पर 'नहीं' (निश्चयार्थ) के प्रयोग से यह स्पष्ट होता है कि छात्र इनकी प्रयोगगत विशिष्टता से परिचित नहीं हैं। निम्नलिखित सारिणी से उपर्युक्त त्रुटियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ४२

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्नावली	मुक्त	कुल
१. क्रिया विशेषण (रीतिवाचक)	'तरह' का अप्रयोग तथा 'से', 'में' का अनावश्यक प्रयोग	आओ	३२७	११५	४४२
		लोथा	४१५	४६	४६१
		अंगामी	३७५	८८	४६३
		सेमा	३९५	७३	४६८
		कुल	१५१२	३२२	१८३४

२. सम्बन्धसूचक	अविकारी के स्थान पर विकारी रूप का प्रयोग	आओ	—	२०५	२०५
		लोथा	—	१०३	१०३
		अंगामी	—	१६३	१६३
		सेमा	—	१२८	१२८
		कुल	—	५९९	५९९
३. समुच्चय-बोधक	ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ (कि→की)(३९५)	आओ	२६५	४६	३११
४. विस्मयादि-बोधक	विपर्यय (२२७)	लोथा	३०८	१७	३२५
५. सकारात्मक एवं नकारात्मक निपात	विपर्यय (६१५)	अंगामी	२५२	२८	२८०
		सेमा	२९०	२५	३२१
		कुल	११२१	११६	१२३७

३.४.१.२ **परसर्ग प्रयोग की त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र हिन्दी परसर्गों—ने, को, से, का, के, की, में, पर—के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं; यथा—

३.४.१.२.१. **'ने' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'ने' के प्रयोग में निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

नारोला (ने) गाना गाया।

मैं ने चाहता हूँ।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'ने' के अप्रयोग की प्रवृत्ति है तथा दूसरे वाक्य में 'ने' का अनावश्यक प्रयोग है। इससे स्पष्ट है कि छात्र 'ने' के सही प्रयोग से अपरिचित हैं।

३.४.१.२.२ **'को' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'को' के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं—

नारोला (को) गाना चाहिए।

मुझका (को) खाना दो।

आप कहाँ को रहता है ?

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'को' परसर्ग का अप्रयोग, दूसरे में 'को' के स्थान पर 'का' का अशुद्ध प्रयोग तथा तीसरे वाक्य में 'का' परसर्ग के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.४.१.२.३ **'से' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'से' के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

बकरी (से) चला नहीं जाता ।
वह अचानक से कहाँ चला गया ?

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'से' परसर्ग का अप्रयोग तथा दूसरे वाक्य में 'से' का अनावश्यक प्रयोग है ।

३.४.१.२.४ **'का' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'का' परसर्ग के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

आप (का) घर कहाँ है ?
हम ईश्वर की (का) भजन करते हैं ।
महात्मा गांधी का हमारे देश के पिता हैं ।

पहले वाक्य में 'का' का अप्रयोग है । दूसरे वाक्य में 'का' के स्थान पर 'की' का अशुद्ध प्रयोग तथा तीसरे वाक्य में 'का' के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

३.४.१.२.५ **'के' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'के' परसर्ग के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

छत (के) ऊपर एक लड़का था ।
तुम अतुला की (के) पास जाओ ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'के' परसर्ग के अप्रयोग तथा 'के' के स्थान पर 'की' परसर्ग के अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

३.४.१.२.६ **'की' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'की' परसर्ग के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

तेमजेन (की) गाय अच्छी है ।
यह विहोतो का (की) किताब है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'की' परसर्ग के अप्रयोग तथा 'की' के स्थान पर 'का' के अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है ।

३.४.१.२.७ **'में' प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र 'में' परसर्ग के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

करीम स्कूल (में) पढ़ता है ।
मेज के ऊपर **में** एक कलम है ।
आप कहाँ **में** रहता है ?
मैं ईश्वर की (में) विश्वास करती हूँ ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'में' परसर्ग के अप्रयोग, अनावश्यक प्रयोग तथा 'में' के स्थान पर 'की' परसर्ग के अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है ।

३.४.१.२.८ **'पर' प्रयोग की त्रुटियाँ**

पेड़ में (पर) पक्षी बैठे हैं।

ईश्वर से (पर) विश्वास रखना चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों वे 'पर' परसर्ग के स्थान पर 'में' तथा 'से' परसर्ग के अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है। 'पर' परसर्ग के प्रयोग में एक मात्र अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

निम्नलिखित सारिणी से परसर्ग-प्रयोग की त्रुटियों के प्रकार, प्रवृत्ति तथा उनकी आवृत्ति स्पष्ट होती है—

सारिणी ४३

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्न	मुक्त	कुल
१. वे	अप्रयोग (६६५) अनावश्यक प्रयोग (५१३)	आओ	१०५	२२२	३२७
		लोथा	२१५	९५	३१०
		अंगामी	१५२	११६	२६८
		सेमा	१६५	१०८	२७३
		कुल	६२७	५४१	११७८
२. को	अनुप्रयोग (३०६) अशुद्ध प्रयोग (२०५) अनावश्यक प्रयोग (१०१)	आओ	७२	११०	१८५
		लोथा	१०१	५०	१५१
		अंगामी	८६	७७	१६३
		सेमा	९२	५१	१४३
		कुल	३५१	२६१	६४२
३. से	अप्रयोग (२४४) अनावश्यक प्रयोग (३९७)	आओ	६८	१०६	१७४
		लोथा	११६	४२	१५२
		अंगामी	९०	७२	१६२
		सेमा	८४	६३	१४७
		कुल	३५८	२८३	६४१
४. का	अप्रयोग (२६०) अशुद्ध प्रयोग (१५१) अनावश्यक प्रयोग (१०६)	आओ	३८	११०	१४८
		लोथा	८८	५१	१३९
		अंगामी	५७	६०	११७
		सेमा	४६	६७	११३

५. के	अप्रयोग (३९७) अशुद्ध प्रयोग (२६१)	आओ लोथा अंगामी सेमा	८२ ११२ ८७ १०२	१२६ ३८ ५८ ५३	२०८ १५० १४५ १५५
		कुल	३८३	२७५	६५८
६. की	अप्रयोग (३५६) अशुद्ध प्रयोग (२०५)	आओ लोथा अंगामी सेमा	४२ ९५ ६५ ७२	११२ ५६ ५३ ६६	१५४ १५१ ११८ १३८
		कुल	२७४	२८७	५६१
७. में	अप्रयोग (१७७) अनावश्यक प्रयोग (३५२) अशुद्ध प्रयोग (१९३)	आओ लोथा अंगामी सेमा	८७ ११५ ८० ८४	१२० ३८ ९२ ९६	२०७ १५३ १७२ १८०
		कुल	३६६	३४६	७१२
८. पर	अशुद्ध प्रयोग (३९५)	आओ लोथा अंगामी सेमा	२८ ६५ ३७ ४०	८७ ३७ ४८ ५३	११५ १०२ ८५ ९३
		कुल	१७०	२२५	३९५

३.४.१.३ सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं की प्रयोगगत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र हिन्दी की सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं के प्रयोग में निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

३.४.१.३.१ सहायक क्रिया के प्रयोग की त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र सहायक क्रियाओं के प्रयोग में निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं :

····जाकर करता (जाया करता) है ।

····खाकर जाता (खाया जाता) है।
वह खाकर रहता (खाता रहता) है।

उपर्युक्त वाक्यों में मूल क्रिया में अपेक्षित रूपान्तर के स्थान पर 'कर' के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.४.१.३.२ **रंजक क्रिया के प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र रंजक क्रियाओं के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

काँप कर उठा (काँप उठा)।
सुनकर रखो (सुन रखो)।
सँभलकर बैठो (सँभल बैठो)।

उपर्युक्त वाक्यों में मूल क्रिया के साथ 'कर' के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति वर्तमान है।

३.४.१.३.३ **मिश्र क्रिया के प्रयोग की त्रुटियाँ**

छात्र मिश्र क्रियाओं के प्रयोग में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

खेल-कूद में भाग करते (लेते) हैं।
मैं आपका आभारी करूँगा (रहूँगा)।
साल में एक बार हम लोग पूजा (करते) हैं।

उपर्युक्त त्रुटियों में मिश्र क्रिया के अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति दिखायी देती है।

३.४.१.४ **अन्य प्रयोगगत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र कुछ अन्य प्रकार की प्रयोगगत त्रुटियाँ करते हैं। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

३.४.१.४.१ **संज्ञा के स्थान पर विशेषण का प्रयोग**

मुझे खुश (खुशी) है।
फूल में सुन्दर (सुन्दरता) है।

यहाँ संज्ञा के स्थान पर विशेषण का अशुद्ध प्रयोग हुआ है।

३.४.१.४.२ **विशेषण के स्थान पर संज्ञा का प्रयोग**

मैं खुशी (खुश) हूँ। लड़की सुन्दरता (सुन्दर) है।
हुमायूँ एक साहस (साहसी) राजा था।

यहाँ विशेषण के स्थान पर संज्ञा का अशुद्ध प्रयोग हुआ है।

३.४.१.४.३ **नागामिज शब्दों का प्रयोग**

गाँव में खाने-पीने का दिक्तार (कठिनाई) है।
मेरा कमरा होरू (छोटा) है।

यहाँ हिन्दी शब्दों के स्थान पर नागामिज शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निम्नलिखित सारिणी से सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं के साथ-साथ अन्य प्रयोगगत त्रुटियों के प्रकार एवं प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं।

सारिणी ४४

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्न	मुक्त	कुल
१. सहायक क्रिया	मूल क्रिया के अपेक्षित रूपांतर के स्थान पर 'कर' का अनावश्यक प्रयोग	आओ	१०२	—	१०२
		लोथा	६६	—	६६
		अंगामी	८८	—	८८
		सेमा	७७	—	७७
		कुल	३३३	—	३३३
२. रंजक क्रिया	मूल क्रिला के साथ 'कर' का अनावश्यक प्रयोग	आओ	१०८	—	१०८
		लोथा	६२	—	६२
		अंगामी	९२	—	९२
		सेमा	८०	—	८०
		कुल	३४२	—	३४२
३. मिश्र क्रिया	अशुद्ध प्रयोग (४५८)	आओ	—	१४५	१४५
		लोथा	—	९३	९३
		अंगामी	—	११५	११५
		सेमा	—	१०५	१०५
		कुल	—	४५८	४५८
४. अन्य त्रुटियाँ संज्ञा के स्थान विशेषण का प्रयोग	वर्ग-परिवर्तन (२०२)	आओ	—	१३६	१३६
		लोथा	—	८३	८३
५. विशेषण के स्थान पर संज्ञा का प्रयोग	वर्ग-परिवर्तन (१८७)	अंगामी	—	१०५	१०५
६. नागामिज शब्दों का प्रयोग	नागामिज-पर्याय का प्रयोग (४६)	सेमा	—	१११	१११
		कुल	—	४३५	४३५
कुल			६७५	८९३	१५६८

३.४.२ नागा-भाषाओं में अविकारी शब्द, निपात, परसर्ग, सहायक तथा रंजक क्रियाओं के प्रयोग

नागा-भाषाओं में अविकारी शब्द, निपात, परसर्ग तथा सहायक क्रियाओं के भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं।

३.४.२.१ नागा-भाषाओं में अविकारी शब्द

हिन्दी के समान नागा-भाषाओं में भी अविकारी शब्दों के सभी भेद उपलब्ध हैं। यहाँ मुख्य रूप से अविकारी शब्दों के अन्तर्गत क्रिया-विशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात की चर्चा की गयी है।

३.४.२.१.१ क्रिया-विशेषण

नागा-भाषाओं में अर्थ के आधार पर क्रिया-विशेषण के चार प्रकार—स्थान-वाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक तथा रीतिवाचक—मिलते हैं। निम्नलिखित सारिणी से इनके सभी रूप स्पष्ट होते हैं :

सारिणी ४५

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के कुछ उदाहरण

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
यहाँ	याङी	हेलो	हानू	हिले
वहाँ	याङची	होचिलो	सनू	हुला
कहाँ जहाँ	कोङ	कुलो	केदिकिपुओ कहोउरा	खिलाउ खिले
आगे	तामा	म्हातुङी	म्होद्ज	आजउ

कालवाचक क्रिया-विशेषण के कुछ उदाहरण

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
आज	तान	न्छङ	थिए	इशी
कल (भविष्यत)	आसङ	ओच्यु	सोदू	थोगुउ
कल (भूत)	याशी	न्च्यु	न्दू	इगिनानो
अब	ताङ	एनहाङा	त्चिए	इतही
कब-जब	कोदाङ	कुथङ	केदिकेत्च किपुओ	कुगोउनो

परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के कुछ उदाहरण

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
बहुत	काङा	एलामोतो	से	कुतोमो
कुछ	तारा	दारा	म्हादुओ	आगुलो
थोड़ा	इशिका	एचकारो	केदियोयो	ता
काफी	तेपेरी	त्छोछूआ	फी	कुगोमो

रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के कुछ उदाहरण

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
ऐसे	यामाई	शी एस्सा	हाम्हिए	हितोइ
वैसे	यामाची	ची एस्सा	स केम्हिए	तितोइ
कैसे-जैसे	कोदा	कुतो	केम्हिए	किउतोइ
अचानक	आओक्सा	जकतोले	म्हाई	जलेनो

३.४.२.१.२ **सम्बन्धसूचक अव्यय**

नागा-भाषा के सम्बन्धसूचक अव्ययों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित सारिणी में हैं :

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
(के) पीछे	सलेन	सलानी	सिए	थिउ
(के) बाद	कलन	ले	त्चे	केथिनो
(के) सामने	चाकदाङ	म्हातुङो	म्होद्जनू	जलोनो

नागा-भाषाओं में सम्बन्धसूचक कारकीय प्रत्ययों का प्रयोग नहीं होता, इसलिए इन्हें कोष्ठक में दिखाया गया है।

३.४.२.१.३ **समुच्चयबोधक अव्यय**

नागा-भाषाओं में समुच्चयबोधक अव्ययों के कुछ उदाहरण अग्रवत् हैं—

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
और	आसर	ओसी	मू	एनो
या	मेसरा	मेकाना	मोरेइ	मोआये
लेकिन	साका	तोखा तोला	देरेइ	इकमू
इसलिए	आनोङची	होचित्सकोना	सला	तिगेङुनो

३.४.२.१.४ **विस्मयादिबोधक अव्यय**

नागा-भाषाओं में विस्मयादिबोधक अव्ययों के कुछ उदाहरण निम्न-लिखित हैं :

सारिणी ४६

	हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
हर्षसूचक	अहा~आहा	ओह	हा~हेहे~होहो	आयाह	हा
शोक/दुख-सूचक	हाय~हा~आह	आया	आको~आया~आब	यूहा	ओह~ओइजे
स्वीकृति-सूचक	हाँ	अउ	हो	पुओतोउ	आकिचिखी

३.४.२.१.५ **निपात**

नागा-भाषाओं में नकारात्मक, स्वीकारात्मक, बलद्योतक आदि सभी प्रकार के निपात प्रयुक्त होते हैं। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

सारिणी ४७

हिन्दी	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
हाँ	अउ	हो	ऊ	इये
न/नहीं	मा	मेक~मेका~न	मो~ल्हो~मोन्यू~ज	मोए~कुमोए~कुमोनो~मो~म
मत	ते	ती	हिए	केविलो
ही	सा	ताए	रवेइ	लिखी
भी	आ	हा	रइ	गी
तो	बो	चो	जोवे	नो
तक	तोङा	नानदाङ	कत्चो	कुतोलो

३.४.२.२ नागा-भाषाओं में परसर्गों का प्रयोग

नागा-भाषाओं में सम्बन्ध तथा कर्मकारक को छोड़ शेष सभी प्रकार के कारकों—कर्ता, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण से सम्बन्धित परसर्गों का प्रयोग होता है। चारों नागा-भाषाओं में इनके लिए भिन्न परसर्ग प्रचलित हैं। इन सभी परसर्गों तथा इनके प्रयोग की चर्चा विस्तार से की जा चुका है।

३.४.२.३ नागा-भाषाओं में सहायक क्रियाओं का प्रयोग

नागा-भाषाओं में रंजक क्रियाओं का प्रयोग प्रायः नहीं होता। इन भापाओं में सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है; यथा—

आओ—बेना आरु
ले आओ

लोथा—नीना बो कोका
तुम जा सकते हो

अंगामी—अंगामी में सहायक क्रियाओं का प्रयोग बहुत कम होता है। 'चाहना', 'सकना' आदि के लिए सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है; यथा—
आ फ न्य बा
मैं पढ़ना चाहता हूँ।

सेमा—नियें आकम्ला हिपाउ म्ला लोवी
मैं काम यह कर सकता हूँ।

३.४.३ हिन्दी भाषा में अविकारी शब्द, निपात, परसर्ग, सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं के प्रयोग

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी अधिगम के समस्यात्मक बिन्दुओं की पहचान के लिए यह आवश्यक है कि उसके विभिन्न प्रयोगों का परिचय प्राप्त किया जाय। इसी दृष्टि से हिन्दी भाषा में अविकारी शब्द, निपात, परसर्ग, सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं के प्रयोगों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.४.३.१ हिन्दी में अविकारी शब्दों के प्रयोग

हिन्दी में अविकारी शब्दों के विविध रूप—क्रिया-विशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात मिलते हैं। यहाँ इनकी संक्षिप्त चर्चा करते समय नागा-भाषाओं में अविकारी शब्दों के प्रयोगों को ध्यान में रखा गया है जिससे कठिनाई के स्थलों की ओर संकेत किया जा सके।

३.४.३.१.१ क्रिया-विशेषण

हिन्दी में क्रिया-विशेषण के कई प्रकार मिलते हैं; यथा—कालवाचक (अब,

जब, कब, आजकल आदि), स्थानवाचक (यहाँ, वहाँ आदि), परिमाणवाचक (इतना, उतना आदि) तथा रीतिवाचक (यों, ज्यों, चुपके-चुपके आदि)।

अर्थ के स्तर पर नागा-भाषाओं तथा हिन्दी के क्रिया-विशेषणों में कोई अन्तर नहीं है किन्तु प्रयोग के स्तर पर नागाभाषी छात्र हिन्दी क्रिया-विशेषणों के प्रयोग में अनेक त्रुटियाँ करते हैं।

३.४.३.१.२ **समुच्चयबोधक**

हिन्दी में समुच्चयबोधक शब्द भी कई प्रकार के हैं; यथा—

संयोजक—और, एवं, तथा, कि, जो आदि।

विभाजक—या, अथवा, न कि आदि।

प्रतिषेधक—पर, परन्तु, किन्तु, अपितु आदि।

निर्देशक—अर्थात्, यानी, यदि ···तो आदि।

हेतुवाचक—क्योंकि, फलस्वरूप, परिणामतः आदि।

नागाभाषी छात्रों को समुच्चयबोधक शब्दों के विभाजक रूपों—नकि, चाहे··· चाहे, या···या, न···न आदि के प्रयोग में बहुत कठिनाइयाँ होती हैं। प्रश्नावली के उत्तर में छात्र ऐसे शब्दों से वाक्य नहीं बना सके।

३.४.३.१.३ **विस्मयादिबोधक**

हिन्दी में विस्मयादिबोधक शब्द भी कई प्रकार के हैं; यथा—

आश्चर्यसूचक—अरे, ओह, ओ हो आदि।

शोकसूचक—हाय, हा आदि।

घृणासूचक—छिः, थू आदि।

क्रोधसूचक—रे, अबे आदि।

व्यथासूचक—दैया रे, हाय रे आदि।

३.४.३.१.४ **सम्बन्धसूचक**

सम्बन्धसूचक के लिए हिन्दी में परसर्गीय शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में इनका प्रयोग कारकीय परसर्गों के साथ होता है; यथा—उसके साथ, घर से दूर, घर के बाहर आदि।

नागाभाषी छात्र सम्बन्धसूचक अव्यय के प्रयोग में कठिनाई अनुभव करते हैं क्योंकि हिन्दी में सम्बन्धसूचक अव्ययों का प्रयोग अधिकतर परसर्गों के साथ होता है। नागाभाषी छात्र हिन्दी के परसर्गों—विशेषतः सम्बन्धसूचक परसर्गों (का, के, की) के प्रयोग में अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं क्योंकि नागा-भाषाओं में सम्बन्धसूचक परसर्ग नहीं होते।

३.४.३.१.५ **निपात**

हिन्दी में कई प्रकार के निपात हैं; यथा—

सकारात्मक निपात—हाँ, जी, जी हाँ, अवश्य आदि।

नकारात्मक निपात—न, नहीं, मत आदि ।

बलात्मक निपात—ही, भी, तो, तक, मात्र, भर आदि ।

नागाभाषी छात्र उपर्युक्त अविकारी शब्दों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं क्योंकि वे इनके प्रयोग से अपरिचित हैं ।

३.४.३.२ हिन्दी में परसर्गों के प्रयोग

हिन्दी में ने, को, से, का, के, की में तथा पर परसर्गों का प्रयोग होता है । इन परसर्गों के लिए कारक विभक्तियों का भी प्रयोग किया जाता है ।

हिन्दी परसर्गों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

ने : हिन्दी में कर्ता कारक के परसर्ग के रूप में 'ने' का प्रयोग होता है । किन्तु इसके प्रयोग में बहुत विधि और निषेध है । 'ने' परसर्ग का प्रयोग कुछ अपवादों को छोड़कर सभी सकर्मक क्रियाओं के साथ केवल सामान्य भूत, पूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, संभाव्य भूत में होता है । नहाना, छींकना, खाँसना आदि अकर्मक क्रियाओं के साथ भी 'ने' का प्रयोग होता है ।

नागा-भाषाओं में कर्ता कारक के परसर्ग के प्रयोग में विधि-निषेध की इतनी जटिलताएँ नहीं हैं, इसलिए नागाभाषी छात्र हिन्दी के 'ने' परसर्ग के प्रयोग में अधिक त्रुटियाँ करते हैं ।

को : हिन्दी में 'को' कर्म कारक के परसर्ग के रूप में प्रयुक्त होने के साथ-साथ कर्ता कारक सम्प्रदान कारक के परसर्ग के रूप में भी प्रयुक्त होता है; यथा—

चोर ने लड़कों को मारा (कर्म कारक)

लड़के को लड़की पसन्द है (कर्ता कारक)

मुझको रोटी दो और मेरेन को भात (सम्प्रदान कारक)

नागा-भाषाओं में कर्म कारक के लिए प्राय: कोई परसर्ग का प्रयोग नहीं होता ।

से : हिन्दी में 'से' परसर्ग का प्रयोग करण और अपादान कारक के रूप में होता है; यथा—

वह चाकू से फल काटता है । (करण कारक)

पेड़ से पत्ते गिरते हैं । (अपादान कारक)

हिन्दी में 'से' परसर्ग का प्रयोग भोक्ता कर्ता के रूप में भी होता है; यथा—

'मेरेन से चला नहीं जाता ।'

नागा-भाषाओं में भोक्ता कर्ता के लिए 'से' परसर्ग के पर्याय का प्रयोग नहीं होता ।

का, के, की : हिन्दी में का, के, की परसर्गों का प्रयोग सम्बन्ध द्योतित करने के लिए होता है किन्तु नागा-भाषाओं में सम्बन्धसूचक इन परसर्गों का अभाव है; यथा—

हिन्दी	आओ
मेरेन का घर	मेरेन की
मेरेन की किताब	मेरेन काकत
मेरेन के कुते	मेरेन आजबोङतेम

इसी प्रकार लोथा, अंगामी तथा सेमा भापा में सम्बन्धसूचक परसर्गों का अभाव है।

में : हिन्दी में 'में' परसर्ग अन्तर्गत स्थिति का बोध कराता है; यथा—

दूध में मिठास है।

पर : हिन्दी में 'पर' परसर्ग बाह्य स्थिति तथा ऊपर की स्थिति का बोध कराता है; यथा—

मोहन का घर सड़क पर है।

नागा-भाषाओं में 'में' तथा 'पर' परसर्गों के पर्याय मिलते हैं किन्तु नागा-भाषी छात्र हिन्दी के 'में' तथा 'पर' परसर्गों में स्पष्ट अन्तर नहीं समझ पाते, अत: इनसे सम्बन्धित अशुद्ध प्रयोग होते हैं।

३.४.३.३ हिन्दी में सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं के प्रयोग

हिन्दी में संयुक्त क्रियाओं के अन्तर्गत सहायक, रंजक क्रियाओं की चर्चा होती है। धातुओं के कुछ विशेष कृदन्तों के आगे (विशेष अर्थ में) अन्य क्रियाएँ जोड़ने से जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं; यथा—'करने लगना', 'जा सकना' में 'करने', 'जा' मुख्य क्रियाएँ हैं तथा 'लगना', 'सकना' सहायक क्रियाएँ हैं।

३.४.३.३.१ सहायक क्रियाएँ

हिन्दी में सहायक क्रियाओं का प्रयोग अधिक होता है; यथा—करना, चुकना, जाना, देना, पड़ना, पाना, बनना, रहना, लगना, सकना आदि का प्रयोग सहायक क्रियाओं के रूप में होता है।

३.४.३.३.२ रंजक क्रियाएँ

वे सहायक क्रियाएँ जो अपने मूल अर्थ को त्याग कर केवल मुख्य क्रिया के अर्थ को बलवती तथा रंजित करती हैं, रंजक क्रियाएँ कहलाती हैं; यथा—'आ धमका', 'चल बसा', 'लिख मारा' इत्यादि। इनमें 'आ', 'चल', 'लिख' मुख्य क्रियाएँ हैं तथा 'धमका', 'बसा', 'मारा' रंजक क्रियाएँ हैं।

नागा-भाषाओं में रंजक क्रियाओं का प्रयोग नहीं मिलता, साथ ही सहायक क्रियाओं का बहुप्रचलित प्रयोग नहीं होता। फलस्वरूप नागाभाषी छात्र हिन्दी की सहायक क्रियाओं तथा रंजक-क्रियाओं के प्रयोगगत अन्तर को पहचानने में असमर्थ हैं, अत: अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

३.४.३.३.३ मिश्र क्रियाएँ

संज्ञा या विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है, उसे नामबोधक या मिश्र क्रिया कहते हैं; यथा—स्वीकार होना, क्षमा करना, बधाई देना आदि।

नागाभाषी छात्र हिन्दी की मिश्र क्रियाओं के प्रयोग से सुपरिचित नहीं हैं, फलस्वरूप मिश्र क्रियाओं के प्रयोग में अनेक त्रुटियाँ करते हैं।

३.४.४ निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर प्राप्त अविकारी शब्दों, निपातों आदि के प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों के विवेचन तथा विश्लेषण के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आते हैं। ये निष्कर्ष तथा उनसे सम्बन्धित शिक्षण-बिन्दु निम्नलिखित हैं :

३.४.४.१ अविकारी शब्दों के प्रयोग की त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

निष्कर्ष—नागाभाषी छात्रों ने अविकारी शब्दों के प्रयोग से सम्बन्धित ३६७० त्रुटियाँ कीं। इनमें प्रश्नावली की २६३३ तथा मुक्त-रचना की १०३७ त्रुटियाँ हुईं। क्रिया-विशेषण की कुल त्रुटियाँ १८३४, सम्बन्धसूचक की ५९९, समुच्चयबोधक की ३९५, विस्मयादिबोधक की २२७ तथा सकारात्मक एवं नकारात्मक निपातों के प्रयोग की ६१५ त्रुटियाँ हुईं। सबसे अधिक त्रुटियाँ क्रिया-विशेषण के प्रयोग में हुई हैं तथा सबसे कम त्रुटियाँ विस्मयादिबोधक शब्दों के प्रयोग में हुई हैं। प्रश्नावली में निर्दिष्ट कुछ प्रयोगों के प्रति छात्रों की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई; यथा—न....न, तक, भर इत्यादि।

अविकारी शब्दों की प्रयोगगत त्रुटियों में क्रिया-विशेषण के अन्तर्गत 'तरह' के अप्रयोग तथा 'से', 'में' के अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट हुई है। सम्बन्ध-सूचक शब्दों के प्रयोग की त्रुटियों में अविकारी रूप के स्थान पर विकारी रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है। समुच्चयबोधक की त्रुटियों में ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ (कि→की) के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है तथा विस्मयादिबोधक की त्रुटियों में हर्ष के स्थान पर शोकसूचक शब्द रूप का प्रयोग दिखता है जिसे विपर्यय की प्रवृत्ति कहेंगे। सकारात्मक तथा नकारात्मक निपातों के प्रयोग में भी विपर्यय की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—त्रुटियों के प्रकार, उनकी आवृत्ति-संख्या तथा प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

१. क्रिया-विशेषण के प्रयोग का अभ्यास।
२. सम्बन्धसूचक शब्द के प्रयोग का अभ्यास।
३. समुच्चयबोधक शब्द के प्रयोग का अभ्यास।
४. विस्मयादिबोधक शब्द के प्रयोग का अभ्यास।
५. सकारात्मक तथा नकारात्मक निपातों के प्रयोग का अभ्यास।

३.४.४.२ परसर्ग के प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

निष्कर्ष—नागाभाषी छात्रों ने परसर्ग के प्रयोग सम्बन्धी कुल ५३०४ त्रुटियाँ कीं जिनमें तीन प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं—(१) परसर्गों के अप्रयोग, (२) परसर्गों के अनावश्यक प्रयोग, तथा (३) परसर्गों के अशुद्ध प्रयोग। सबसे अधिक त्रुटियाँ परसर्गों के अप्रयोग की हुईं। इनकी त्रुटि संख्या २४३५ है। अनावश्यक तथा अशुद्ध प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों की संख्या क्रमशः १४५६ और १४१० है।

परसर्गों के अप्रयोग की प्रवृत्ति 'ने', 'को', 'से', 'का', 'के', 'की' तथा 'में' परसर्गों के प्रयोग में देखी गयी। अनावश्यक प्रयोग की प्रवृत्ति 'ने', 'को', 'से', 'का' तथा 'में' के प्रयोग में दिखायी देती हैं तथा अशुद्ध प्रयोग की प्रवृत्ति 'को', 'का', 'के', 'की', 'में', 'पर' के प्रयोग में स्पष्ट होती हैं। निम्नलिखित सारिणी से त्रुटियों की ये प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ४८

परसर्ग प्रयोग की त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ त्रुटियों के प्रकार में	प्रवृत्तियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. अप्रयोग			
ने	६६५		
को	३३६		
से	२४४		
का	२६०	२४३५	४५·७
के	३९७		
की	३५६		
में	१७७		

२. अनावश्यक प्रयोग ने को से का में	 ५१३ १०१ ३९७ १०६ ३४२	१४५९	२७·७
३. अशुद्ध प्रयोग को का के की में पर	 २०५ १५१ २६१ २०५ १९३ ३९५	१४१०	२६·६
कुल	५३०४	५३०४	१००

त्रुटियों के प्रकार की दृष्टि से सबसे अधिक त्रुटियाँ 'ने' के प्रयोग में हुईं। द्वितीय स्थान पर 'में' के प्रयोग की त्रुटियाँ आती हैं। सबसे कम त्रुटियाँ 'पर' के प्रयोग में हुईं। 'को', 'से', 'का', 'के', 'की' के प्रयोग में लगभग समान त्रुटियाँ मिलती हैं। सारिणी ४९ से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—त्रुटियों के प्रकार तथा उनकी प्रवृत्तियों तथा आवृत्ति-संख्या को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

'ने' के प्रयोग का अभ्यास

'में' के प्रयोग का अभ्यास

'पर' के प्रयोग का अभ्यास

का, के, की, को, के प्रयोग का अभ्यास

'से' के प्रयोग का अभ्यास

३.४.४.३ सहायक, रंजक तथा मिश्र क्रियाओं की त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

निष्कर्ष—सहायक तथा रंजक क्रियाओं इत्यादि के प्रयोग से सम्बन्धित कुल

सारिणी ४६

परसर्ग प्रयोग की त्रुटियों का सारांश

त्रुटियों के प्रकार	आओ			लोथा			अंगामी			सेमा			कुल त्रुटियों की संख्या			प्रतिशत
	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	प्रश्न	मुक्त	कुल	
१. ने	१०५	२२२	३२७	२१५	९५	३१०	१५२	११६	२६८	१६५	१०८	२७३	६३७	५४१	११७८	२२·२
२. में	८७	२०	२०७	११५	३८	१५३	८०	९२	१७२	८४	९६	१८०	३६६	३४६	७१२	१३·४
३. के	८२	१२६	२०८	११२	३८	१५०	८७	५८	१४५	१०२	५३	१५५	३८३	२७५	६५८	१२·४
४. को	७२	११३	१८५	१०१	५०	१५१	८६	७७	१६३	९२	५१	१४३	३५१	२९१	६४२	१२·१
५. से	६८	१०६	१७४	११६	४२	१५८	९०	७२	१६२	८४	६३	१४७	३५८	२८३	६४१	१२·१
६. की	४२	११२	१५४	९५	५६	१५१	६५	५३	११८	७२	६६	१३८	२७४	२८७	५६१	११·३
७. का	३८	११०	१४८	८८	५१	१३९	५७	६०	११७	४६	६७	११३	२२९	२८८	५१७	९·१
८. पर	२८	८७	११५	६५	३७	१०२	३७	४८	८५	४०	५३	९३	१७०	२२५	३९५	७·४
कुल	५२२	९९६	१५१८	९०७	४०७	१३१४	६५४	५७६	१२३०	६८५	५५७	१२४२	२७६८	२५३६	५३०४	१००

त्रुटियाँ १५६८ हुईं । इनमें सहायक क्रियाओं तथा रंजक क्रियाओं के प्रयोग की त्रुटियाँ लगभग समान हैं । मिश्र शब्दों के अशुद्ध प्रयोग की त्रुटियाँ ४५८ हैं । संज्ञा के स्थान पर विशेषण का प्रयोग तथा विशेषण के स्थान पर संज्ञा के प्रयोग की त्रुटियाँ लगभग समान हैं । पर्याय के रूप में नागामिज शब्दों के प्रयोग की त्रुटियाँ मात्र ४६ मिलीं । सारिणी ४४ से यह बात स्पष्ट होती है ।

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—त्रुटियों के प्रकार, प्रवृत्ति तथा आवृत्ति-संख्या की दृष्टि से निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(१) सहायक क्रियाओं के प्रयोग का अभ्यास
(२) रंजक क्रियाओं के प्रयोग का अभ्यास
(३) मिश्र क्रियाओं के प्रयोग का अभ्यास
(४) संज्ञा तथा विशेषणों के विभिन्न प्रयोगों का अभ्यास

३.५ वाक्य-रचना

वाक्य भाषा का वह स्तर है जिसके विखण्डन से उपवाक्य तथा उपवाक्य के विखण्डन से पदबन्धों की प्राप्ति होती है । व्याकरणिक कोटियों की दृष्टि से इन पदबन्धों के बीच अन्विति होती है । अतः 'वाक्य-रचना' के अन्तर्गत यहाँ अन्विति, पदबन्ध-संरचना तथा वाक्य-संरचना की दृष्टि से त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । त्रुटियों से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए तथा अन्य भाषा के रूप में हिन्दी अधिगम के समस्यात्मक बिन्दुओं की पहचान के लिए हिन्दी तथा नागा-भाषाओं में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-संरचना की प्रक्रिया पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है । अन्त में निष्कर्ष तथा उसके आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है ।

३.५.१ अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचनागत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र हिन्दी में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचनागत अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर संकलित इन त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया गया है :

३.५.१.१ अन्वितिगत त्रुटियाँ

अन्विति वह भाषायी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पदबन्ध या वाक्य के अन्तर्गत एक या अनेक व्याकरणिक कोटियाँ, अन्य एक या अनेक व्याकरणिक कोटियों के अनुसार परिवर्तित हो जाती हैं; यथा—

पदबन्ध स्तर—काला कौआ, काली कोयल ।

वाक्य स्तर—मोहन जाता है । कमला जाती है ।

नागाभाषी छात्र हिन्दीं-अन्विति के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं, यथा—

३.५.१.१.१ **कर्ता-क्रिया की अन्विति**

नागाभाषी छात्र कर्ता-क्रिया की अन्विति में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

(क) तुम भात खाएँ (खाओ)।
आप खाना खाओ (खाइए)।
वह बाजार जाऊँ (जाये)।

उपर्युक्त विधि वाक्यों में छात्र पुरुष-वचन सम्बन्धी त्रुटियाँ करते हैं। इन वाक्यों में मध्यम पुरुष एकवचन का उत्तम पुरुष एकवचन में, आदरसूचक मध्यम पुरुष का सामान्य मध्यम पुरुष में तथा अन्य पुरुष एकवचन का उत्तम पुरुष एकवचन में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(ख) मैं भात खायेगा (खाऊँगा)।
हम फल खायेगा (खायेंगे)।
तुम भात खायेगा (खाओगे)।
मैं भात खायेगी (खाऊँगी)।
तुम गाना गायेगी (गाओगी)।

इस प्रकार के भविष्यत्सूचक वाक्यों में पुरुष-वचन तथा लिंग-वचन की अन्वितिगत अनेक प्रकार की त्रुटियाँ हुईं। उपर्युक्त वाक्यों में उत्तम पुरुष एकवचन, बहुवचन तथा मध्यम पुरुष एकवचन का अन्य पुरुष एकवचन में; उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन तथा मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन का अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन में प्रयोग करने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है।

(ग) गाय दूध देता (देती) है।
नदी बहते (बहती) है।
पिता जी घर से आता (आते) हैं।
वह हमें प्यार करते (करता) है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के वर्तमान कालिक कृदंत रूपों में लिंग-वचन की अन्वितिगत त्रुटियाँ दिखती हैं; यथा—स्त्रीलिंग एकवचन के लिए पुल्लिग एकवचन तथा पुल्लिग बहुवचन रूपों का प्रयोग मिलता है। पुल्लिग बहुवचन के लिए पुल्लिग एकवचन तथा पुल्लिग एकवचन के लिए पुल्लिग बहुवचन के प्रयोग की प्रवृत्ति भी स्पष्ट दिखती है।

(घ) कल नारोला स्कूल नहीं आया (आई)।
हम बहुत खुश हुआ (हुए)।
क्या तुम कल सोया (सोये) थे ?

इस प्रकार के भूतकालिक कृदंत रूपों में लिंग-वचन की अन्वितिगत अनेक

प्रकार की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उपर्युक्त वाक्यों में स्त्रीलिंग के लिए पुल्लिग रूप तथा एकवचन के लिए बहुवचन रूप के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

(च) गाँधीजी पवित्र था (थे)।
मेरे पिताजी बीमार है (हैं)।
मैं अच्छा है (हूँ)।
ठण्डी हवा चल रहा (रही) है।

इस प्रकार के बंधिनी (कोपुला) क्रियाओं एवं कालवाची सहायक क्रियाओं में लिंग-वचन अन्वितिगत त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उपर्युक्त वाक्यों में बहुवचन का एकवचन, एकवचन का बहुवचन, स्त्रीलिंग का पुल्लिग रूप में प्रयोग हुआ है।

३.५.१.१.२ **कर्म-क्रिया की अन्विति**

नागभाषी छात्र कर्म-क्रिया की अन्वितिगत निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं; यथा—

नारोला ने चिट्ठी लिखा (लिखी)।
साधुओं ने सत्य कही (कहा)।
मैंने कई लड़के देखा (देखे)।

उपर्युक्त वाक्यों में लिंग-वचन की अन्वितिगत त्रुटियों में स्त्रीलिंग एकवचन के स्थान पर पुल्लिग एकवचन, पुल्लिग एकवचन के स्थान पर स्त्रीलिंग एकवचन तथा पुल्लिग बहुवचन के स्थान पर पुल्लिग एकवचन के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.५.१.१.३ **कर्ता-पूरक अन्विति**

छात्रों ने कर्ता-पूरक अन्वितिगत निम्नलिखित त्रुटियाँ कीं :
पिताजी अच्छा (अच्छे) हैं।
हम लड़का (लड़के) हैं।
हवा अच्छा (अच्छी) है।
गाँव में खेती अच्छा (अच्छी) है।

उपर्युक्त उदाहरणों में पुल्लिंग बहुवचन के स्थान पर पुल्लिग एकवचन तथा स्त्रीलिंग एकवचन के स्थान पर पुल्लिग एकवचन के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.५.१.१.४ **कर्म-पूरक अन्विति**

छात्र कर्म-पूरक अन्वितिगत निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :
मेरेन ने इमारत पक्का (पक्की) बनवाई है।
तेमजेन ने मकान पक्के (पक्का) बनवाया है।

उपर्युक्त त्रुटियों में स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिग तथा एकवचन के स्थान पर बहुवचन के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.५.१.१.५ कर्ता-रीतिवाचक कृदन्त अन्विति

छात्र कर्ता और रीतिवाचक कृदन्त अन्विति मम्बन्धित निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

लड़कियाँ रोते (रोती) आईं।
लड़का रोते (रोता) आया।
सभी घोड़े दौड़ता (दौड़ते) आए।

उपर्युक्त त्रुटियों में स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग, एकवचन के स्थान पर बहुवचन तथा बहुवचन के स्थान पर एकवचन के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

३.५.१.१.६ तटस्थ क्रिया

नागाभाषी छात्र तटस्थ क्रिया के प्रयोग में भी त्रुटियाँ करते हैं; यथा—
उसने एक लड़की को देखी (देखा)।
माता ने बच्चे को प्यार की (किया)।

उपर्युक्त वाक्यों की तटस्थ क्रियाओं में भी छात्रों ने कर्ता और कर्म के अनुसार क्रिया को अन्वित किया है।

३.५.१.१.७ विशेषण-विशेष्य अन्विति

छात्र विशेषण और विशेष्य की अन्विति में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :
मेरा (मेरे) दो कान हैं।
मेरा (मेरे) पिता जी किसान हैं।
छोटी (छोटे) लड़के खेलते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में विशेष्य अपने विशेषण के लिंग और वचन के अनुसार अन्वित नहीं हो पाया है।

३.५.१.१.८ नियमन

नागाभाषी छात्र नियमन से सम्बन्धित निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :
मेरा (मेरे) जीवन में............।
वह (उस) गाँव में............।
१५ अगस्त हमारा (हमारे) लिए खुशी का दिन है।

परसर्गों के कारण पूर्व-पदबन्धों के रूप में अपेक्षित परिवर्तन करना अनिवार्य होता है। नागाभाषी छात्र इस प्रकार के परिवर्तन में त्रुटियाँ करते हैं।

अग्रलिखित सारिणी से अन्वितिगत तथा नियमन से सम्बन्धित त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ५०

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्न	मुक्त	कुल
कर्ता-क्रिया (विधि वाक्य)	पुरुष-वचन (७००)	आओ	८०	१२६	२०६
		लोथा	१०२	५०	१५२
		अंगामी	८७	८०	१६७
		सेमा	९३	८२	१७५
		कुल	३६२	३३८	७००
कर्ता-क्रिया (भविष्यतकाल	पुरुष-वचन, लिंग-वचन (१५५७)	आओ	१४२	३७४	५१६
		लोथा	१८०	१४७	३२७
		अंगामी	१७१	१९०	३६१
		सेमा	१७५	१७८	३५३
		कुल	६६८	८८९	१५५७
कर्ता-क्रिया (वर्तमान कृदंती रूप)	लिंग-वचन (२३५०)	आओ	२८५	३९०	६७५
		लोथा	३५८	२९२	६५०
		अंगानी	३०५	२३३	५३६
		सेमा	२९०	२०७	४९७
		कुल	१२३८	११२२	२३६०
कर्ता-क्रिया (भूत कृदंती रूप)	लिंग-वचन (४००)	आओ	३२	९१	१२३
		लोथा	६७	४०	१०७
		अंगामी	४२	५१	९३
		सेमा	३५	४२	७७
		कुल	१७६	२२४	४००
कर्ता-क्रिया (कालवाची हायक क्रिया तथा कोपुला)	लिंग-वचन (९६५)	आओ	८०	२०२	२८२
		लोथा	१७५	८०	२५५
		अंगामी	१२६	९२	२१८
		सेमा	१२२	८८	२१०
		कुल	५०३	४६२	९६५

कर्म-क्रिया	लिंग-वचन (९१८)	आओ	७५	१९८	२७३
		लोथा	१६८	७२	२४०
		अंगामी	१२२	९०	२१२
		सेमा	१२०	७३	१९३
		कुल	४८५	४३३	९१८
कर्ता-पूरक	लिंग-वचन (६५०)	आओ	७८	११६	१९४
		लोथा	१०५	४३	१४८
		अंगामी	९०	६५	१५५
		सेमा	९५	५८	१५३
		कुल	३६८	२८२	६५०
कर्म-पूरक	लिंग-वचन (२०५)	आओ	६१	—	६१
		लोथा	५३	—	५३
		अंगामी	४५	—	४५
		सेमा	४६	—	४६
		कुल	२०५	—	२०५
कर्ता-रीतिवाचक कृदंत	लिंग-वचन (३५५)	आओ	२६	६५	९१
		लोथा	५२	३५	८७
		अंगामी	३८	४६	८४
		सेमा	४२	५१	९३
		कुल	१५८	१९७	३५५
तटस्थ क्रिया	तटस्थ क्रिया→ अन्विति (५०८)	आओ	४२	११३	१५५
		लोथा	९४	४१	१३५
		अंगामी	५४	६३	११७
		सेमा	६१	४०	१०१
		कुल	२५१	२५७	५०८
विशेषण-विशेष्य	लिंग-वचन (१५७५)	आओ	१४०	३६८	५०८
		लोथा	१८८	१३५	३२३
		अंगामी	१७६	२०७	३८३
		सेमा	१८७	१७४	३६१

नियमन	नियमन-अनियमन (८९२)	आओ	७९	१७२	२५१
		लोथा	१४५	७६	२२१
		अंगामी	१३०	८७	२१७
		सेमा	११२	९१	२०३
		कुल	४६६	४२६	८९२

३.५.१.२ **पदबन्ध-रचनागत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र पदबन्ध संरचना के स्तर पर अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। मुक्त रचना के आधार पर मुख्यत: संज्ञा पदबन्ध तथा क्रिया पदबन्ध से सम्बन्धित त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं। इनका विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित है :

३.५.१.२.१ **संज्ञा पदबन्ध**

छात्रों ने संज्ञा पदबन्ध की निम्नलिखित त्रुटियाँ कीं :

हमारे गाँव के मुहल्ला आठ (आठ मुहल्ले) हैं।
आदमी चार (चार आदमी) आ रहे हैं।
फल पक्का (पक्के फल) खाओ।

उपर्युक्त वाक्यों में संज्ञा के बाद विशेषण के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। कारण यह है कि नागा-भाषाओं में संज्ञा पदबन्ध की रचना का यही क्रम है।

३.५.१.२.२ **क्रिया पदबन्ध**

छात्र क्रिया पदबन्ध रचना की निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

वह अच्छा तरह देखता नहीं (नहीं देखता)।
उसके मुँह में घाव हो गया है, इसलिए वह खाता नहीं (नहीं खाता)।

उपर्युक्त वाक्यों में मुख्यत: क्रिया रूपों के निषेधात्मक प्रयोग की त्रुटियाँ हैं। यहाँ क्रिया के बाद नकारात्मक निपातों का प्रयोग हुआ है।

३.५.१.३ **वाक्य-रचनागत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र साधारणत: सरल वाक्यों की रचना में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं करते। इसका कारण यह है कि नागा-भाषाओं तथा हिन्दी के आधारभूत वाक्य-साँचों में पदक्रम लगभग समान है। आगे इसकी चर्चा (३.५.३.३) विस्तार से की गयी है।

छात्र मिश्र तथा संयुक्त वाक्य की रचना में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त मिश्र तथा संयुक्त वाक्य रचनागत त्रुटियाँ निम्न-लिखत हैं :

३.५.१.३.१ **सरल वाक्य से मिश्र वाक्य रचना**

छात्र सरल वाक्य को मिश्र वाक्य में परिवर्तित करते समय अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। त्रुटियों के कुछ उदाहरण अग्रवत् हैं :

सरल वाक्य		मिश्र वाक्य
पुलिस ने खतरनाक डाकू को मारा	→	मैंने देखा कि पुलिस डाकू मारा।
तुम बस ठहरने के स्थान पर आना	→	तुम आओ, बस ठहरनी है।
ईमानदार को सभी चाहते हैं	→	मुझे ईमानदार चाहिए।

उपर्युक्त प्रथम दो वाक्यों में छात्रों ने मिश्र वाक्य की रचना में न केवल अर्थ-परिवर्तन किया बल्कि वाक्य-रचना भी अशुद्ध है। तीसरे वाक्य में अर्थ-परिवर्तन के साथ-साथ मिश्र वाक्य के बदले सरल वाक्य-रचना की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है।

३.५.१.३.२ संयुक्त वाक्य-रचना की त्रुटियाँ

छात्र सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाने में निम्नलिखित त्रुटियाँ करते हैं :

सरल वाक्य		संयुक्त वाक्य
सत्य बोलने से उसकी इज्जत होती है	→	सत्य बोलने से इज्जत होती है।
सूर्योदय होने पर प्रकाश फैलने लगा	→	सूर्योदय होता है प्रकाश फैलता है।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में संयुक्त वाक्य की रचना न होकर सरल वाक्य ही रह गया है। दूसरे वाक्य में दो उपवाक्यों के बीच संयोजक का अप्रयोग है। निम्नलिखित सारिणी से पदबन्ध तथा वाक्य-रचनागत त्रुटियों के प्रकार एवं प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ५१

पदबन्ध तथा रचनागत त्रुटियाँ

त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या			
		भाषाएँ	प्रश्न	मुक्त	कुल
१. संज्ञा पदबंध	विशेष्य के बाद विशेषण	आओ	—	९६	९६
		लोथा	—	७३	७३
		अंगामी	—	९८	९८
		सेमा	—	८०	८०
		कुल	—	३४७	३४७
२. क्रिया पदबंध	क्रिया के बाद नकारात्मक निपात	आओ	—	—	—
		लोथा	—	—	—
		अंगामी	—	१५२	१५२
		सेमा	—	१०३	१०३
		कुल	—	२५५	२५५

३. सरल वाक्य से मिश्र वाक्य रचना	अर्थ-परिवर्तन तथा अशुद्ध मिश्र वाक्य	आओ	१५५	—	१५५
		लोथा	१३२	—	१३२
		अंगामी	१५८	—	१५८
		सेमा	१६७	—	१६७
		कुल	६१२	—	६१२
४. सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य	संयुक्त वाक्य के स्थान पर सरल वाक्य तथा संयोजक का अप्रयोग	आओ	१३८	—	१३८
		लोथा	८७	—	८७
		अंगामी	१३२	—	१३२
		सेमा	१२७	—	१२७
		कुल	४७४	—	४७४

३.५.२ नागा-भाषाओं में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचना

नागा-भाषाओं में वाक्य-रचना की प्रकृति से अवगत होने के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचना की प्रक्रिया का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत किया जाय।

३.५.२.१ नागा-भाषाओं में अन्विति (लिंग, वचन एवं पुरुष की दृष्टि से)

नागा-भाषाओं में पदबन्ध स्तर या वाक्य स्तर पर लिंग, वचन और पुरुष की अन्विति नहीं होती। वाक्य में क्रियाएँ कर्ता, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के प्रभाव से मुक्त होती हैं। इसी प्रकार विशेषण भी पदबन्ध स्तर पर अपने विशेष्य के लिंग और वचन के प्रभाव से मुक्त होता है। नीचे लिखे उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है :

आओ भाषा :

लिंग —तेमजेन आओर. नारोला आओर.
तेमजेन जाता है। नारोला जाती है।

वचन —चाला आओर. चालातेम आओर.
लड़की जाती है। लड़कियाँ जाती हैं।

पुरुष —नी आओर. पा आओर.
मैं जाता हूँ। वह जाता है।

यही प्रवृत्ति तीनों भाषाओं में वर्तमान है।

३.५.२.२ नागा-भाषाओं में पदबन्ध-रचनागत विशेषताएँ

नागा-भाषाओं में पदबन्ध-रचनागत कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। इनमें पदबन्ध-रचना के अग्रलिखित रूप मिलते हैं :

३.५.२.२.१ **संज्ञा पदबन्ध**

संज्ञा पदबन्धों में विशेषक शीर्ष के बाद आता है; यथा—

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
तानुर ताचोङ	ङारो म्होम	न्यू केवी	आत्चली किवी
बच्चा अच्छा	बच्चा अच्छा	बच्चा अच्छा	कुत्ता अच्छा

३.५.२.२.२ **विशेषण पदबन्ध**

विशेषण पदबन्धों में विशेषक विशेषण के बाद आता है; यथा—

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
ताचोङ काङा	म्होम एलम	वी से	आलो इगोनो
अच्छा बहुत	अच्छा बहुत	अच्छा बहुत	अच्छा बहुत

इसका विपरीत क्रम भी कहीं-कहीं देखने में आता है।

३.५.२.२.३ **क्रिया पदबन्ध**

क्रिया पदबन्ध में क्रिया का विशेषक क्रिया के बाद आता है; यथा—

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
आ सकेत	त्सङकाता ओम्है	तेश पेखा	सन्हे पुको
खींचना ऊपर	खींचना ऊपर	खींचना ऊपर	खींचना ऊपर

इसका विपरीत क्रम भी कहीं-कहीं देखने में आता है।

३.५.२.२.४ **क्रिया-विशेषण पदबन्ध**

आओ, लोथा तथा सेमा में विशेषक क्रिया-विशेषण के पहले आता है किन्तु अंगामी में बाद में आता है; यथा—

आओ	**लोथा**	**सेमा**	**अंगामी**
काङा मिलोङी	एलम छमना	इगोनो आशेशेना	रलिसे
बहुत धीरे	बहुत धीरे	बहुत धीरे	धीरे बहुत

३.५.२.२.५ **सर्वनाम पदबन्ध**

सर्वनाम पदबन्धों में विशेषक सर्वनाम के प्राय: पहले आता है; यथा—

आओ	**लोथा**	**अंगामी**	**सेमा**
तेमिम्त्स पा	न्जान्तिओ ओची	थ्रोही केजओ	मिगेमी पा
बेचारा वह	बेचारा वह	बेचारा वह	बेचारा वह

नागा-भाषाओं की पदबन्ध-संरचना में वचन से सम्बन्धित विशेषता यह है कि जब बहुवचन द्योतक पदबन्ध बनाये जाते हैं तब बहुवचन सूचक प्रत्यय शीर्ष से न जुड़कर विशेषक के साथ जुड़ते हैं; यथा—

आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
तानुर ताचोङतेम	ङारो म्होमतेन	न्योकेविको	आत्चली किविको
बच्चा अच्छे	बच्चा अच्छे	बच्चा अच्छे	कुत्ता अच्छे

३.५.२.३ वाक्य-रचनागत विशेषताएँ

नागा-भाषाओं में हिन्दी की भाँति ही सरल, मिश्र तथा संयुक्त वाक्य की रचनाएँ होती हैं। आधारभूत वाक्य-साँचों में पदक्रम भी समान होता है; यथा—

३.५.२.३.१ सरल वाक्य

आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
नी आरु	आना रोछा	आ वोरवाते	नीना इगी
मैं आया।	मैं आया।	मैं आया।	मैं आया।

३.५.२.३.२ मिश्र वाक्य

आओ — नी कुताङआरु पा जङ्या लियास.
मैं जब आया वह पढ़ रहा था।

लोथा — आनाकुथङ रोछोसाना इम्पो खा वान्छो.
मैं जब आया वह पढ़ रहा था।

अंगामी— आ वोर चेकी पो फ़जिये.
मैं आया जब वह पढ़ रहा था।

सेमा — नी इगी केला पा फी आनी.
मैं आया जब वह पढ़ रहा था।

३.५.२.३.३ संयुक्त वाक्य

आओ — मेरेन कतेम्बा आसेर पा मोकोकचुङ नुङ आलियेर.
मेरेन मेरा मित्र और वह मोकोकचुङ में रहता है।

लोथा — न्रीनिमो चो आशोमू ओसी इम्पो वोखाइ वानाला.
न्रीनिमो मेरा मित्र और वह वोखा में रहता है।

अंगामी— निवोत्यो आख्रे थोउ मू पो दीमापुर नू बाया.
निवोत्यो मेरा मित्र और वह दीमापुर में रहता है।

सेमा — पोखावी इशोउ एनो पा जुनोबोतो लो आचिनी.
पोखावी मेरा मित्र और वह जुनोबोतो में रहता है।

नागा-भाषाओं में संयुक्त वाक्य-रचना की यह मुख्य विशेषता है कि पूर्वार्ध उपवाक्य की बँधिनी क्रिया (कोपुला) लुप्त रहती है।

३.५.३ हिन्दी भाषा में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचना की प्रक्रिया

हिन्दी भाषा में अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचना की अपनी विशिष्टता है। संक्षेप में इनका परिचय अग्रलिखित है :

३.५.३.१ हिन्दी में अन्विति (लिंग, वचन एवं पुरुष की दृष्टि से)

हिन्दी में लिंग, वचन एवं पुरुष की अन्वितियाँ पदबन्ध एवं वाक्य स्तरों पर विविध रूपों में दृष्टिगत होती हैं। इनके अतिरिक्त नियमन होता है जिसमें 'ने', 'को', 'से' इत्यादि परसर्ग अपने पूर्व पदों को तिर्यक रूप में नियन्त्रित (नियमित) करते हैं। हिन्दी में अन्विति और नियमन नीचे लिखे उदाहरणों से स्पष्ट होते हैं :

१. **कर्ता-क्रिया अन्विति**—विधि वाक्यों में पुरुष-वचन की अन्विति होती है; यथा—

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	मैं पढ़ूँ	हम पढ़ें
मध्यम पुरुष	तू पढ़	तुम पढ़ो
आदरसूचक	आप पढ़िए	—
अन्य पुरुष	वह पढ़े	वे पढ़ें

२. **कर्ता-क्रिया**—भविष्यत वाक्यों में पुरुष-वचन, लिंग-वचन की अन्विति होती है; यथा—

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष (पु०)	मैं जाऊँगा	हम जायेंगे
(स्त्री०)	मैं जाऊँगी	हम जायेंगी
मध्यम पुरुष (पु०)	तू जायेगा	तुम जाओगे
(स्त्री०)	तू जायेगी	तुम जाओगी
अन्य पुरुष (पु०)	वह जायेगा	वे जायेंगे
(स्त्री०)	वह जायेगी	वे जायेंगी

३. **कर्ता-क्रिया**—वर्तमानकालिक कृदन्त रूपों में क्रिया-कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित होती है; यथा—

मोहन आता है, कमला आती है।
लड़का आता है, लड़कियाँ आती हैं।

४. **कर्ता-क्रिया**—भूतकालिक कृदन्त रूप कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित होते हैं; यथा—

लड़का आया — लड़की आयी।
लड़के आये — लड़कियाँ आयीं।

५. **कर्ता-क्रिया**—कालवाची सहायक क्रिया तथा कोपुला के रूप कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित होते हैं; यथा—

मैं गया था मैं गयी थी।
वह जाता है वे जाते हैं।
वह गरीब है वे अमीर हैं।

६. (क) **एक से अधिक कर्ता-क्रिया**—एक से अधिक कर्ता होने पर क्रिया बहुवचन में होती है; यथा—

मोहन और सोहन पढ़ते हैं।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों कर्ता हों तो क्रिया पुल्लिंग में होती है; यथा—

लड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं।

(ख) **कर्म-क्रिया**—जब कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग हो तो सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त के रूप कर्म के लिंग-वचन से प्रभावित होते हैं; यथा—

मैंने एक घोड़ा देखा। मैंने कई घोड़े देखे।

(ग) **कर्ता-पूरक**—वाक्य में कर्ता का पूरक शब्द कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित होता है; यथा—

घोड़ा काला है। घोड़े काले हैं। बिल्ली काली है।

(घ) **कर्म-पूरक**—वाक्य में कर्म का पूरक शब्द कर्म के लिंग-वचन से प्रभावित होता है; यथा—

नरेश कपड़े को काला कर देता है।

सुरेश धोती को काली कर देता है।

(च) **कर्ता-रीतिवाचक कृदन्त**—जब वाक्य में रीतिवाचक कृदन्त प्रयुक्त होता है, तब वह कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित होता है; यथा—

लड़का दौड़ता आया — लड़की दौड़ती आयी।

लड़के दौड़ते आये — लड़कियाँ दौड़ती आयीं।

(छ) **तटस्थ क्रिया**— जब वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग तथा कर्म के साथ 'को' परसर्ग आये तो क्रिया कर्ता या कर्म के लिंग, वचन, पुरुष से प्रभावित न होकर तटस्थ (neutral) होती है। भाववाच्य के कुछ उदाहरणों में भी क्रिया तटस्थ रहती है; यथा—

गाँव वालों ने डाकुओं को पकड़ा।

मेरेन से सोया नहीं जाता। नारोला से सोया नहीं जाता।

मोहन को पागल समझा गया। मकान को झोपड़ी समझा गया।

(ज) **विशेषण-विशेष्य**—पदबन्ध स्तर पर विशेषण के रूप पर उसके विशेष्य के लिंग-वचन का प्रभाव पड़ता है; यथा—

छोटा लड़का, छोटे लड़के, छोटी लड़की।

(झ) **नियमन**— हिन्दी भाषा में वाक्यगत एक प्रकार का अधिशासन होता है। वाक्यों में परसर्गों के प्रयोग के आधार पर मूल तथा तिर्यक रूपों का निर्धारण होता है।

जब वाक्यों में परसर्गों का प्रयोग होता है, तब वे परसर्ग के साथ में आने वाले सम्पूर्ण पदबन्ध को नियमित (अधिशासित) करते हैं अथवा रूप प्रदान करते हैं; यथा–

'आगरे के रहने वाले मेरे मित्र के बड़े लड़के ने'

नागा-भाषाओं में चूँकि लिंग, वचन, पुरुष की अन्विति नहीं होती तथा नियमन की प्रक्रिया का अभाव है, अतः नागाभाषी छात्र उपर्युक्त अन्वय तथा नियमन सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ करते हैं। सारिणी संख्या ५० से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

३.५.३.२ **पदबन्ध रचनागत विशेषताएँ**

हिन्दी पदबन्धों के अन्तर्गत संज्ञा पदबन्ध, सर्वनाम पदबन्ध, विशेषण पदबन्ध, क्रिया पदबन्ध तथा क्रिया-विशेषण पदबन्धों की चर्चा होती है। इनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं; यथा—

(क) **संज्ञा पदबन्ध :** संज्ञा पदबन्ध में संज्ञा शीर्षस्थान पर प्रायः अन्त में आती है। विशेषक प्रायः पहले आता है। यह एक अन्तःकेन्द्रित संरचना है। यह पदबन्ध उपवाक्यों में कर्ता, कर्म तथा पूरक के स्थान पर आता है। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :
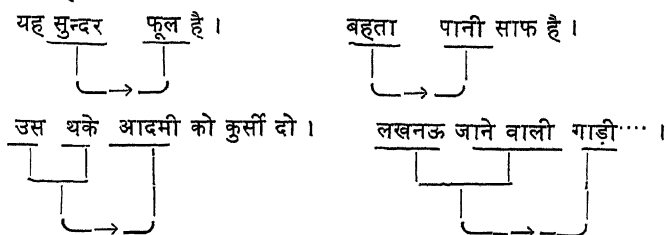
हिन्दी की तुलना में नागा-भाषाओं में विशेषण शीर्ष के बाद आता है। यही कारण है कि नागाभाषी छात्र संज्ञा पदबन्ध की रचना में त्रुटियाँ करते हैं।

(ख) **सर्वनाम पदबन्ध :** हिन्दी में सर्वनाम पदबन्ध भी एक अन्तःकेन्द्रित संरचना है जिसमें सर्वनाम आदि तथा अन्त दोनों में आता है; यथा—
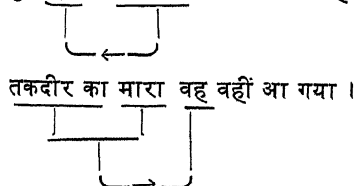
नागा-भाषाओं में सर्वनाम पदबन्धों की रचना हिन्दी की भाँति होती है। अतः छात्र इस पदबन्ध की रचना में त्रुटियाँ प्रायः नहीं करते।

(ग) **विशेषण पदबन्ध :** हिन्दी में विशेषण पदबन्ध अन्तःकेन्द्रित संरचना है जिसमें विशेषण अन्त में आता है। यह उपवाक्य में पूरक के रूप में तथा संज्ञा शीर्ष वाले पदबन्ध में विशेषक के रूप में आता है। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

सामान्य उक्ति—बहुत अच्छा

उपमावाचक विशेषण पदबन्ध—मोहन के जैसा अच्छा

तुलनावाचक विशेषण पदबन्ध—राम से अच्छा

संख्यावाचक विशेषण पदबन्ध—ठीक चार, लगभग चार

कृदन्त विशेषण पदबन्ध—दौड़ता हुआ लड़का

सार्वनामिक विशेषण पदबन्ध—तुम दोनों, वह बेचारा

संज्ञा से बने विशेषण पदबन्ध—हिन्दुस्तानी कुशल घोड़ा

नागा-भाषाओं में विशेषक विशेषण के बाद आता है। आओ, लोथा भाषाओं में विशेषक विशेषण के पहले भी आता है। यही कारण है कि नागाभाषी छात्र विशेषण पदबन्धों में पदक्रम विपर्यय की त्रुटियाँ करते हैं।

(घ) १. **क्रिया पदबन्ध :** क्रिया पदबन्ध भी अन्तःकेन्द्रित संरचना है। इसके अन्त में एक समापिका-क्रिया आती है तथा उसके पहले क्रिया-विशेषण या नकारात्मक निपात आते हैं। क्रिया पदबन्ध में एक क्रियारूप तथा कई क्रियाएँ आ सकती हैं; यथा—

वह कलम से लिखे।

उसे लिखना पड़ रहा होगा।

२. **क्रिया-विशेषण पदबन्ध :** क्रिया-विशेषण पदबन्ध की चर्चा क्रिया पदबन्धों में की जाती है; यथा—
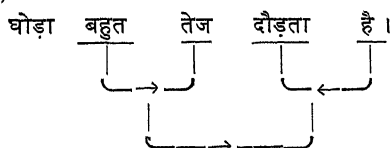
घोड़ा बहुत तेज दौड़ता है।

उपर्युक्त क्रिया पदबन्ध 'बहुत तेज दौड़ता है' में 'बहुत तेज' क्रिया-विशेषण पदबन्ध है जिसमें 'तेज' क्रिया-विशेषण (शीर्ष) है और 'बहुत' उसका विशेषक है।

नागा-भाषाओं के क्रिया-विशेषण पदबन्ध में विशेषक प्रायः क्रिया-विशेषण के बाद आता है। अतः हिन्दी क्रिया-विशेषण पदबन्ध के अधिगम में भी नागाभाषी छात्रों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

हिन्दी में क्रिया-विशेषण पदबन्ध जब सम्बन्धात्मक पदबन्ध (Adjuncts) के रूप में कई परसर्गों से युक्त होता है, तो परसर्गों की भिन्नता के आधार पर इसके कई प्रकार मिलते हैं। ऐसी स्थिति में यह संरचना बहिकेन्द्रित होती है; यथा—

दूध में पानी है । मन्दिर मेरे घर से दूर है ।

शाम को मिलना । मैं भोजन के बाद आऊँगा ।

उपर्युक्त परसर्गात्मक क्रिया-विशेषण पदबन्धों की संरचना अधिगम की दृष्टि से नागाभाषी छात्रों के लिए बहुत ही कठिन है । नागाभाषी छात्र परसर्गों के प्रयोग में ही अनेक त्रुटियाँ करते हैं । अतः परसर्गों से बने पदबन्धों के अधिगम में कठिनाई का होना स्वाभाविक है ।

३.५.३.३ वाक्य-रचनागत विशेषताएँ

हिन्दी में तीन प्रकार के वाक्य—सरल, मिश्र और संयुक्त—होते हैं; यथा—

मैं घर गया । (सरल)

मोहन आया और चला गया । (संयुक्त)

हमें जान पड़ता है कि तुमने पढ़ा नहीं था । (मिश्र)

नागाभाषी छात्रों को सरल वाक्य की संरचना में कोई कठिनाई नहीं होती । यदि छात्र संयोजक और वियोजक अव्ययों से परिचित हैं, तब वे संयुक्त वाक्य की संरचना करने में सक्षम होते हैं किन्तु मिश्र वाक्य की रचना में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । मिश्र वाक्यों में केवल एक वाक्य मुख्य वाक्य होता है तथा शेष वाक्य गौण होते हैं जिनके कई प्रकार हैं । यही कारण है कि छात्रों ने सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाने में संयुक्त वाक्य की अपेक्षा अधिक त्रुटिया कीं ।

३.५.४ निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर अन्विति, पदबन्ध तथा वाक्य-रचना से सम्बन्धित त्रुटियों के कुछ निष्कर्ष सामने आते हैं । उनके आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है ।

३.५.४.१ अन्वितिगत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

प्रस्तुत विवरण के आधार पर यह स्पष्ट है कि नागाभाषी छात्रों ने अन्वितिगत कुल ११०७५ त्रुटियाँ कीं । नियमन सहित त्रुटियों के आठ प्रकार हैं जिनका उल्लेख किया जा चुका है । इन त्रुटियों में पाँच प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं : (क) पुरुष-वचन, (ख) पुरुष-वचन, लिंग-वचन, (ग) लिंग-वचन, (घ) तटस्थ क्रिया में अन्विति, (च) नियमन-अनियमन ।

कर्ता-क्रिया की अन्वितिगत त्रुटियाँ कई प्रकार के वाक्यों में विविध प्रवृत्तियों के साथ स्पष्ट होती हैं; यथा—(क) विधि वाक्य (पुरुष-वचन ७००), (ख) भविष्यत वाक्य (पुरुष-वचन-लिंग-वचन १५५७), (ग) वर्तमानकालिक कृदन्त रूप (लिंग-वचन २३५०), (घ) भूतकालिक कृदन्त रूप (लिंग-वचन ४००), (च) कालवाची सहायक क्रिया तथा कोपुला (लिंग-वचन ९६५) । इन पाँचों प्रकार के वाक्यों में त्रुटियों की संख्या कुल ५९७२ है ।

इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ, उनकी प्रवृत्तियाँ तथा उनकी त्रुटि संख्या इस प्रकार है—कर्म-क्रिया (लिंग-वचन ९१८), कर्ता-पूरक (लिंग-वचन ६५०), कर्म-पूरक (लिंग-वचन २०५), कर्ता-रीतिवाचक कृदन्त (लिंग-वचन ३५५), विशेषण-विशेष्य (लिंग-वचन १५७५), तटस्थ क्रिया (अन्विति ५०८) तथा नियमन (अनियमन ८९२)।

अन्विति की कुल त्रुटियों में प्रश्नावली की ५५७१ तथा मुक्त-रचना की ५५१४ त्रुटियाँ हुईं।

निम्नलिखित सारिणी से त्रुटियों के प्रकार तथा प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ५२

अन्वितिगत त्रुटियों की प्रवृत्तियों का सारांश

त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों के प्रकार में त्रुटियों की प्रवृत्तियों की आवृत्ति	प्रवृत्तियों में त्रुटियों की संख्या	कुल त्रुटियाँ	प्रतिशत
१. पुरुष-वचन	कर्ता-क्रिया (विधि वाक्य)	७००		
२. पुरुष-वचन लिंग-वचन	कर्ता-क्रिया (भविष्यत काल)	१५५७		
३.१ लिंग-वचन	कर्ता-क्रिया (वर्तमान-कालिक कृदन्त रूप)	२३५०	५९७२	५३·८
३.२ लिंग-वचन	कर्ता-क्रिया (भूतकालिक कृदन्त रूप)	४००		
३.३ लिंग-वचन	कर्ता-क्रिया (कालवाची सहायक क्रिया, कोपुला)	९६५		
३.४ लिंग-वचन	कर्म-क्रिया	९३८	९१८	८·२
३.५ लिंग-वचन	कर्ता-पूरक	६५०	६५०	५·८
३.६ लिंग-वचन	कर्म-पूरक	२०५	२०५	१·८
३.७ लिंग-वचन	कर्ता-रीतिवाचक कृदन्त	३५५	३५५	३·१
३.८ लिंग-वचन	विशेषण-विशेष्य	१५७५	१५७५	१४·२
४. तटस्थ क्रिया-अन्विति	तटस्थ क्रिया	५०८	५०८	४ ५
५. नियमन-अनियमन	नियमन	८९२	८९२	८·५
कुल ५	१२	११०७५	११०७५	१००

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

त्रुटियों की प्रवृत्तियों एवं उनकी आवृत्ति-संख्या को ध्यान में रखते हुए अन्विति से सम्बन्धित अग्रलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) पुरुष-वचन—कर्ता-क्रिया अभ्यास (विधि वाक्य में)
(ख) लिंग-वचन—कर्ता-क्रिया अभ्यास (वर्तमानकालिक क्रिया, कालवाची सहायक क्रिया एवं कोपुला; भूतकालिक कृन्दत तथा रीति-वाचक कृन्दत रूप में), कर्ता-पूरक, कर्म-क्रिया, कर्म-पूरक तथा विशेषण-विशेष्य का अभ्यास।
(ग) पुरुष-वचन, लिंग-वचन—कर्ता-क्रिया का अभ्यास (भविष्यत रूप में)
(घ) तटस्थ क्रिया का अभ्यास
(च) नियमन का अभ्यास

नियमन का समावेश सामान्यत: अन्विति के अन्तर्गत नहीं किया जाता। फिर भी शिक्षण की दृष्टि से अन्विति के तुरन्त बाद ही इसका अभ्यास कराना उचित होगा।

३.५.४.२. **पदबन्ध तथा वाक्य-रचनागत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण**

निष्कर्ष—प्रस्तुत अध्ययन में नागाभाषी छात्रों ने संज्ञा पदबन्ध की ३४७ त्रुटियाँ कीं और क्रिया पदबन्ध की त्रुटियाँ मात्र २५५ थीं। संज्ञा पदबन्ध से सम्बन्धित त्रुटियाँ आओ, लोथा, अंगामी तथा सेमा भाषी छात्रों ने क्रमश: ९६, ७३, ९८, ८० कीं। परन्तु क्रिया पदबन्ध से सम्बन्धित त्रुटियाँ केवल अंगामी और सेमा भाषी छात्रों ने क्रमश: १५२ और १०३ कीं।

संज्ञा पदबन्ध में विशेष्य के बाद विशेषण रखने की प्रवृत्ति रही है तथा क्रिया पदबन्ध में क्रिया के बाद नकारात्मक निपात रखने की प्रवृत्ति है।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाने की कुल त्रुटियाँ ६१२ हुईं तथा सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाने की कुल त्रुटियाँ ४७४ प्राप्त हुईं।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाने में अर्थ-परिवर्तन तथा अशुद्ध वाक्य-रचना की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य के निर्माण में संयुक्त वाक्य के स्थान पर सरल वाक्य का प्रयोग करने तथा संयोजक का प्रयोग न करने की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है।

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—हिन्दी तथा नागा-भाषाओं के पदबन्ध तथा वाक्य संरचनागत अन्तर एवं त्रुटियों की प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए निम्नलिखित शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) संज्ञा पदबन्धों की रचना का अभ्यास।
(ख) क्रिया पदबन्धों की रचना का अभ्यास।
(ग) क्रिया-विशेषण पदबन्धों का अभ्यास।
(घ) संयुक्त वाक्य-रचना का अभ्यास।
(च) मिश्र वाक्य-रचना का अभ्यास।

अध्याय ४

नागाभाषी छात्रों की हिन्दी वर्तनीगत त्रुटियाँ

४.१ स्वर, अनुनासिक-अनुस्वार (चिह्न) तथा व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ।

४.२ नागा-भाषाओं में वर्तनी व्यवस्था।

४.३ हिन्दी में वर्तनी व्यवस्था।

४.४ वर्तनीगत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण।

वर्तनीगत शुद्धता लिखित भाषा की शुद्धता का अनिवार्य अंग है। इसके अभाव में भाषा की शक्ति अपना महत्व खो देती है। अशुद्ध वर्तनी भाषा का एक विकृत रूप प्रस्तुत करती है तथा संप्रेषणीयता की दृष्टि से व्यवधान उपस्थित करती है।

यदि अशुद्ध वर्तनी में लिखित सामग्री सह्य सीमा (Tolerance Zone) के अन्तर्गत नहीं होती, तब वह पाठक के लिए अधिक कठिनाई उत्पन्न करती है। इसलिए शिक्षित जनसमुदाय से यह अपेक्षा की जाती है कि वह शुद्ध और मान्य वर्तनी में लिखित सामग्री प्रस्तुत करे।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि नागाभाषी छात्र हिन्दी वर्णों को सुडौल रूप में लिखते हैं किन्तु जहाँ तक वर्तनी का सम्बन्ध है, उसमें अनेक प्रकार की त्रुटियाँ मिलती हैं। फलस्वरूप उनकी लिखित सामग्री ग्रहणशीलता की सह्य सीमा को पार कर जाती है। इस आधार पर छात्रों की 'हिन्दी सीखने की समस्याओं' में उनके द्वारा की गयी हिन्दी वर्तनीगत त्रुटियों का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

४.१ स्वर, अनुनासिक-अनुस्वार (चिह्न) तथा व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

मुक्त-रचना के आधार पर नागाभाषी छात्रों द्वारा की गयी हिन्दी वर्तनीगत त्रुटियों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है :

(१) स्वर-वर्णों से सम्बन्धित त्रुटियाँ।

(२) अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्नों) की वर्तनीगत त्रुटियाँ।

(३) व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ।

इन त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण इस प्रकार है :

४.१.१ स्वर-वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

नागाभाषी छात्र स्वर-वर्णों से सम्बन्धित अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। अग्रलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है :

४.१.१.१ **ह्रस्व-दीर्घ**

छात्रों ने ह्रस्व वर्णों के स्थान पर दीर्घ स्वर वर्णों के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ कीं; यथा—

अ>आ—अच्छा>आच्छा, घर>घार, पूरब>पूराब

इ>ई—किताब>कीताब, नदिया>नदीया, जाति>जाती

उ>ऊ—दुख>दूख, बहुत>बहूत, खुश>खूश

ठीक इसके विपरीत दीर्घ स्वर वर्णों के स्थान पर ह्रस्व स्वर वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी स्पष्ट होती है; यथा—

आ>अ—आराम>अराम, हमारा>हमरा, गाना>गना

ई>इ—तीन>तिन, शरीर>शरिर, दीजिए>दिजिए

ऊ>उ—खूब>खुब, दूर>दुर, पूरब>पुरब

दीर्घ के स्थान पर ह्रस्वीकरण के प्रयोग की प्रवृत्ति ह्रस्व के स्थान पर दीर्घीकरण के प्रयोग की प्रवृत्ति से कम है।

४.१.१.२ **संध्यक्षर**

नागाभाषी छात्रों ने संध्यक्षरों के लेखन में 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग किया है; यथा—

ऐ>ए—पैर>पेर, जैसा>जेसा, कैसा>केसा

औ>ओ—और>ओर, औरत>ओरत, कौन>कोन

इन दोनों प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है।

४.१.१.३ **स्वर व्यत्यय**

नागाभाषी छात्रों ने वर्तनी में एक स्वर के स्थान पर भिन्न स्वर के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की हैं। नीचे लिखे उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है :

अ>ए—नहीं>नेहीं, सुबह>सुबेह, आजकल>आजकेल

अ>ओ—सब>सोब, ऊपर>ऊपोर, कल>कोल

इ>ए—इकट्ठा>एकट्ठा, लेकिन>लेकेन, सिखा>सेखा

उ>ओ—खुल>खोल, बहुत>बहोत, हुआ>होआ

ऊ>ओ—नूतन>नोतन, जाऊँगा>जाओगा, पूरब>पोरब

ए>इ~ई—बेटा>बिटा, बेचने>बिचने, मेला>मीला

ऐ>इ—ऐसा>इसा, कैसा>किसा, जैसा>जिसा

औ>आ~उ—कौवा>कावा, मौका>मुका, सरौता>सरूता

४.१.२ **अनुनासिक और अनुस्वार (चिह्नों) की वर्तनीगत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्रों ने अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) सम्बन्धित केवल अप्रयोग की त्रुटियाँ की हैं; यथा—

४.१.२.१ अनुनासिक ' ँ ' का अप्रयोग

हाँ>हा, कहाँ>कहा, गाँव>गाव

जहाँ>जहा, बनूँगा>बनूगा

उपर्युक्त त्रुटियों में अनुनासिक के स्थान पर निरनुनासिक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

४.१.२.२ अनुस्वार ' ं ' का अप्रयोग

में>मे, अहिंसा>अहिसा

हैं>है, कहीं>कही

उपर्युक्त त्रुटियों में अनुस्वार चिह्नों का प्रयोग नहीं हुआ।

अनुनासिक के अप्रयोग की अपेक्षा अनुस्वार के अप्रयोग की त्रुटियाँ अधिक हुईं।

४.१.३. व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

मुक्त-रचना के आधार पर नागाभाषी छात्रों ने व्यंजन वर्णों की वर्तनी सम्बन्धी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ कीं। इन त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नवत् है :

४.१.३.१ अल्पप्राण-महाप्राण

छात्रों ने महाप्राण व्यंजन वर्णों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया है। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

ख>क—खेल>केल, दिखाऊँगा>दिकाऊँगा, आँख>आँक

घ> ग—घर>गर, घास>गास, बाघ>बाग

झ>ज—झरना>जरना, सूझता>सूजता, झाडू>जाड़ू

थ> त—थन>तन, मथनी>मतनी, साथ>सात

ध> द—धर>दर, उधार>उदार, दूध>दूद

फ>प—फल>पल, सफल>सपल, साफ>साप

भ>ब—भाई>बाई, भगवान>बोकवान, अभी>अबी

उपर्युक्त त्रुटियों में महाप्राण व्यंजन वर्णों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है किन्तु ठीक इसके विपरीत त्रुटियाँ भी मिलती हैं, जिसका कारण सम्भवतः भ्रम है।

क>ख—कुश्ती>खुश्ती, किताब>खिताब

इस प्रकार की त्रुटियों में अल्पप्राण व्यंजन वर्ण के स्थान पर महाप्राण व्यंजन वर्ण के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है किन्तु इसकी आवृत्ति-गणना पहले प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा बहुत ही कम है।

४.१.३.२ अघोष-सघोष

छात्रों ने सघोष व्यंजन वर्णों के स्थान पर अघोष व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया है। अग्रलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

ग>क—भगवान>भकवान, लोग>लोक, अलग>अलक

ज>च—जाकर>चाकर, बाजार>बचार, आज>आच

ब>प—कब>कप, किताब>किताप, सब>सप

उपर्युक्त वर्तनीगत त्रुटियों में सघोष व्यंजन वर्णों के स्थान पर अघोष व्यंजन वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है किन्तु ठीक इसके विपरीत अघोष व्यंजन वर्णों के स्थान पर सघोष व्यंजन वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी मिलती है; यथा—

च>ज—चोर>जोर, चौदह>जौदह, नाच>नाज

छ>ज—पूछा>पूजा, बछड़ा>बजड़ा, पीछे>पीजे

त>द—तेरह>देरह, कितने>किदने, जूता>जूदा

प>ब—पन्द्रह>बन्द्रह, कृपालु>कृबालु, पान>बान

४.१.३.३ मूर्धन्य-वत्स्र्य

नागाभाषी छात्रों ने मूर्धन्य वर्णों के स्थान पर वत्स्र्य वर्णों के प्रकार में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ कीं; यथा—

ट>त—टाटा>ताता, होटल>होतल, छोटा>छोता

ठ>थ~द—आठ>आथ, ठनठन>थनथन, बैठ>बैद

ड>द—डकैत>दकैत, डाल>दाल, झंडा>झंदा

ढ>ध—ढाई>धाई, ढोता>धोता, ढोलक>धोलक

ण>न—प्राण>प्रान, मणिपुर>मनिपुर

उपर्युक्त वर्तनीगत त्रुटियों में मूर्धन्य वर्णों के स्थान पर वत्स्र्य वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

४.१.३.४ उत्क्षिप्त वर्ण

छात्रों ने उत्क्षिप्त वर्णों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ कीं; यथा—

ड़>र—पड़ोसी>परोसी, उड़>उर, पेड़>पेर

ड़>ड—लड़का>लडका, पड़ेगी>पडेगी, पहाड़>पहार

ढ़>र—पढ़ता>परता, चढ़ता>चरता, बाढ़>बार

ढ़>ढ—पढ़ता>पढता, बढ़कर>बढकर, चढ़ता>चढता

उपर्युक्त त्रुटियों में उत्क्षिप्त 'ड़' के स्थान पर लुण्ठित 'र' तथा स्पर्श अल्पप्राण मूर्धन्य वर्ण 'ड' के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है, तथा उत्क्षिप्त 'ढ़' के स्थान पर लुण्ठित 'र' तथा स्पर्श महाप्राण मूर्धन्य वर्ण 'ढ' के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

४.१.३.५ ऊष्म वर्ण

छात्रों ने ऊष्म वर्णों के प्रयोग में विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ कीं; यथा—

श>स—शहर>सहर, इशारे>इसारे, देश>देस

स>श—सफेद>शफेद, सामान>शामान, सुबह>शुबह

ष>स—विषय>विसय

उपर्युक्त त्रुटियों में 'श' के स्थान पर 'स' के प्रयोग तथा इसके विपरीत 'स' के स्थान पर 'श' के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। ऐसा सम्भवतः भ्रम के कारण होता है। 'ष' के स्थान पर 'स' के प्रयोग की प्रवृत्ति भी दिखायी पड़ती है।

४.१.३.६ **व्यंजन वर्ण व्यत्यय**

नागाभाषी छात्रों ने कुछ व्यंजन वर्णों के स्थान पर अन्य व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया है; यथा—

छ>श—छाता>शाता, छात्रावास>शात्रावास

ज>स—कागज>कागस, चीज>चीस, नराज>नरास

उपर्युक्त त्रुटियों में 'छ' के स्थान पर 'श' तथा 'ज' के स्थान पर 'स' के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है।

४.१.३.७ **ब>व**

छात्रों ने 'ब' वर्ण के स्थान पर 'व' वर्ण के प्रयोग की त्रुटियाँ कीं; यथा—

बड़ा>वड़ा

आबादी>आवादी

किताब>किताव

छात्र वर्तनी के मानक प्रयोग में अभ्यस्त नहीं है, इसलिए 'ब' के स्थान पर 'व' के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखती है।

४.१.३.८ **'ह' का अप्रयोग**

छात्रों ने कुछ शब्दों की वर्तनी में 'ह' का प्रयोग नहीं किया है; यथा—

हमारा>मारा, जगह>जगा, तरह>तरा

उपर्युक्त उदाहरणों में 'ह' के अप्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। अन्त के 'ह' के लोप के बाद 'आ' का अनावश्यक प्रयोग होता दिखता है।

४.१.३.९ **संयुक्त व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ**

नागाभाषी छात्र हिन्दी के संयुक्त व्यंजन वर्णों की तीन प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं; यथा—

(क) संयुक्त>अशुद्ध संयुक्त—

कृपा>कार्पा, उन्नति>उन्तीत, स्कूल>स्कल

(ख) संयुक्त>अशुद्ध असंयुक्त—

सत्य>सतय, कक्षा>काकसा, स्कूल>सकूल

(ग) असंयुक्त>अशुद्ध संयुक्त—

इनका>इन्का, सवार>स्वार, जानता>जान्ता

उपर्युक्त संयुक्त व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियों से स्पष्ट होता है कि छात्र जैसा बोलते हैं, वैसा लिखते हैं। संयुक्त वर्तनी के स्थान पर अशुद्ध संयुक्त या अशुद्ध असंयुक्त के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि छात्र हिन्दी में संयुक्त व्यंजन वर्णों की वर्तनी व्यवस्था से परिचित नहीं हैं।

४.२ नागा-भाषाओं में वर्तनी व्यवस्था

नागा-भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है। १९वीं शताब्दी में विदेशी मिशनरियों ने नागा-भाषाओं को रोमन लिपि में लिखना प्रारम्भ किया। आज नागालैण्ड की सभी भाषाएँ रोमन लिपि में ही लिखी जाती हैं।

यद्यपि रोमन लिपि ध्वन्यात्मक लिपि नहीं है, तथापि नागा-भाषाओं में इसे ध्वन्यात्मक बनाने की कोशिश की गयी है। नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है :

लिपिग्राम

ध्वनियाँ	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
/ i / इ	i	yi,i	i	i
/ e / ए	e	e	e	e
/ ɯ / अ	ü	ü	ü	ü
/ a / आ	a	a	a	a
/ u / ऊ	u	u	u	u
/ o / ओ	o	o	o	o
/ p / प	p	p	p	p
/ Ph / फ	[Ph] Ph	Ph	Ph	Ph
/ t / त	t	t	t	t
/ th / थ	[th] th	th	th	th
/ k / क	k	k	k	k
/ kh / ख	[kh] kh	kh	kh	kh
/ b / ब	[b] b	[b] b	b	b
/ d / द	[d] d	[d] d	d	d
/ g / ग	[g] g	[g] g	g	g
/ c / च	ch j	ch	ch	ch
/ č / त्स	ts	ts	ts	ts
/ ch / छ	—	ch,chh	ch	chh
/ j /	—	—	j	j
/ pf / प्फ	—	pf	pf	—

ध्वनियाँ	आओ	लोथा	अंगामी	सेमा
/ pv / प्व	—	pu	—	—
/ bv / ब्व	—	—	bv	—
/ dz / द्ज	—	—	dz	—
/ f / फ	—	f	f	f
/ x / ख	—	—	—	x
/ ɣ / ग	—	—	—	gh
/ v / व	—	v	v	v
/ s / स	s	s	s	s
/ š / श	sh	sh	sh	sh
/ z / ज	z	z	z	z
/ ž / ज्ह	—	zh	zh	—
/ h / ह	h	h	h	h
/ ɱ / म्व	—	—	mv	—
/ m / म	m	m	m	m
/ mh / म्ह	—	mh	mh	—
/ n / न	n	n	n	n
/ nh / न्ह	—	nh	nh	—
/ ŋ / ङ	ng	ng	ng	ng
/ l / ल	l	l	l	l
/ lh / ल्ह	r	lh	lh	lh
/ r / र	—	r	r	—
/ rh / र्ह	—	rh	rh	—
/ w / व	w	w	w	w
/ wh / व्ह	—	—	wh	—
/ y / य	y	y	y	y
/ yh / य्ह	—	—	yh	—

४.३ हिन्दी में वर्तनी व्यवस्था

हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि ध्वन्यात्मक लिपि है। हिन्दी में स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों के लिए देवनागरी के निम्नलिखित वर्ण प्रयोग में आते हैं :

स्वर वर्ण—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन वर्ण—क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ (ड़, ढ़), त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ, य, र, ल, व, श, ष, स, ह

अनुनासिक वर्ण—ङ, ञ, ण, न, म

संयुक्त वर्ण—ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

स्वर वर्णों तथा अनुनासिक और विसर्ग के लिए चिह्नों का प्रयोग होता है।

नागाभाषी छात्रों को हिन्दी की वर्तनी व्यवस्था को सीखने में बहुत कठिनाइयाँ होती हैं, यथा—

(क) नागा-भाषी छात्र हिन्दी के दीर्घ और ह्रस्व स्वरों के लेखन में त्रुटियाँ करते हैं क्योंकि उनकी भाषा में दीर्घ स्वरों का प्रयोग अधिक होता है।

(ख) चूँकि नागा-भाषाओं में ट, ठ, ड, ढ, ण मूर्धन्य ध्वनियाँ नहीं होतीं, इसलिए इन वर्णों के लेखन में नागा-भाषी छात्र त्रुटियाँ करते हैं।

(ग) (ड़, ढ़), ञ, ष वर्णों के लेखन में छात्र त्रुटियाँ करते हैं क्योंकि ये ध्वनियाँ भी नागा-भाषाओं में नहीं हैं।

(घ) छात्र संयुक्त वर्णों—ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र —के लेखन में कठिनाई अनुभव करते हैं क्योंकि इनकी भाषाओं में संयुक्त वर्णों के लेखन में इस तरह की व्यवस्था नहीं है। नागा-भाषाओं में दो व्यंजनों के बीच स्वर के न होने से वर्ण संयुक्त होंगे, यथा— आओ में Lepsa (लेप्सा—मांस काटना)।

(च) नागा-भाषी छात्रों को हिन्दी की मात्राओं तथा अनुनासिक, अनुस्वार एवं विसर्ग चिन्हों के लिखने में अधिक कठिनाइयाँ होती हैं क्योंकि उनकी भाषा में मात्रा-व्यवस्था नहीं है।

(छ) छात्र कुछ हिन्दी वर्णों के वर्णिमों (Graphemes) तथा उप-वर्णिमों (Allographs) से परिचित नहीं होते, इसलिए इनसे सम्बन्धित वर्तनी में अनेक त्रुटियाँ करते हैं। छात्र 'र' वर्णिम के उप-वर्णिमों के लेखन में त्रुटियाँ करते हैं क्योंकि इन उप-वर्णिमों के कई रूप हैं, यथा—
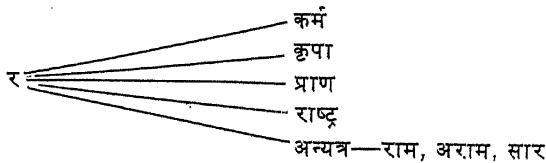
(ज) संधि और समास रचना के नियमों से अपरिचित होने के कारण भी छात्र त्रुटियाँ करते हैं; यथा—समान (सम्मान), आहिंसा (अहिंसा), घोड़सवार (घुड़सवार) आदि।

(झ) व्याकरणिक रूपों के ज्ञान के अभाव में छात्र त्रुटियाँ करते हैं; यथा—आदमीयों (आदमियों), मछलीयों (मछलियों)।

(ट) लिपि-व्यवस्था की अस्पष्टता भी त्रुटियों का कारण बनती है क्योंकि कुछ लोग जो मानक वर्तनी नहीं है, उसे भी लिखते हैं; यथा—चाहिये (चाहिए), जावेगा (जायेगा) आदि।

४.४ वर्तनीगत त्रुटियों का निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

मुक्त-रचना के आधार पर प्राप्त वर्तनीगत त्रुटियों के विवेचन और विश्लेषण के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आये हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण किया गया है।

४.४.१ स्वर-वर्णों तथा अनुनासिक चिह्नों की वर्तनीगत त्रुटियों के निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

निष्कर्ष— स्वर-वर्णों तथा अनुनासिक चिह्नों की वर्तनीगत कुल त्रुटियाँ १४३०३ हुईं। इन त्रुटियों में चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं; यथा—

(क) ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ स्वर-वर्ण के प्रयोग की प्रवृत्ति तथा दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व वर्ण के प्रयोग की प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत कुल ९७६० त्रुटियाँ हुईं।

(ख) संध्यक्षर वर्णों के प्रयोग में 'ऐ' के स्थान पर 'ए', 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग हुआ है। इसकी कुल त्रुटियाँ ३०७ हुईं।

(ग) स्वर व्यत्यय में अ→ए, अ→ओ, इ→ए, उ→ओ, ऊ→ओ, ए→इ∼ई, ऐ→ई तथा औ→आ∼उ की उच्चारणगत त्रुटियाँ मिलती हैं। इनकी कुल त्रुटियाँ ३०५९ हैं।

(घ) अनुनासिक और अनुस्वार के चिह्नों के अप्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट हुई है। इनकी कुल त्रुटियाँ ११७७ हुईं।

उल्लेखनीय है कि कुल स्वर-वर्णों की वर्तनीगत १४३०३ त्रुटियों में दीर्घता से सम्बन्धित वर्तनीगत त्रुटियाँ ९७६० हुई हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्वर-वर्णों से सम्बन्धित वर्तनीगत त्रुटियों का मुख्य कारण शुद्ध उच्चारण का अभाव है।

अग्रांकित सारिणी से स्वर-वर्णों तथा अनुनासिक चिह्नों की वर्तनीगत त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

सारिणी ५३

स्वर-वर्णों तथा अनुनासिक चिह्नों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की संख्या				कुल	त्रुटियों के प्रकार की कुल त्रुटियाँ
		आओ	लोथा	अंगामी	सेमा		
ह्रस्व-दीर्घ	अ>आ	१२१८	६९०	११५६	१४७२	४५३६	९७६०
	आ>अ	३६०	२२५	३७२	५६६	१५२३	
	इ>ई	२०८	२२८	५२७	५६२	१५२५	
	ई>इ	२४६	१५८	१७३	१६८	७४५	
	उ>ऊ	२१२	१७६	१२८	२८२	७९८	
	ऊ>उ	१२७	१६३	१६८	१७५	६३३	
संध्यक्षर	ऐ>ए	६२	५२	—	४६	१६०	३०७
	औ>ओ	६६	८१	—	—	१४७	
स्वर व्यत्यय	अ>ए	—	१५५	१०८	२१२	४७५	३०५९
	अ>ओ	११०	१४६	४८०	४१५	११५१	
	इ>ए	१२३	—	१६४	१६५	४५२	
	उ>ओ	४२	४५	५६	१२२	२६५	
	ऊ>ओ	—	४८	—	१२२	१७०	
	ए>इ~ई	५८	१४७	—	—	२०५	
	ऐ>इ	८८	९२	—	—	१८०	
	औ>आ~उ	५२	—	५३	५६	१६१	
अनुनासिक और अनुस्वार का अप्रयोग	ँ का प्रयोग	८७	९२	१६६	१३२	४७७	११७७
	ं का प्रयोग	८५	३१८	१२५	१७२	७००	
कुल		३१४४	२८१६	३६७६	४६६७	१४३०३	१४३०३

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—त्रुटियों के कारणों तथा त्रुटियों की प्रवृत्तियों तथा उनकी आवृत्ति को दृष्टि में रखते हुए स्वर वर्णों तथा अनुनासिक चिह्नों के निम्नलिखित वर्तनीगत शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं :

(क) ह्रस्व ←→ दीर्घ

(ख) संध्यक्षर

(ग) स्वर व्यत्यय

(घ) अनुनासिक और अनुस्वार चिह्नों के प्रयोग।

४.४.२ व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियों के निष्कर्ष तथा शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण

निष्कर्ष—व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत कुल त्रुटियाँ १३३६४ हुईं। इन त्रुटियों में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं :

(क) महाप्राण ←→ अल्पप्राण = कुल त्रुटियाँ २४२८ हुईं।

(ख) अघोष ←→ सघोष = कुल त्रुटियाँ ३९३५ हुईं।

(ग) मूर्धन्य ←→ वर्त्स्य = कुल त्रुटियाँ २२३४ हुईं।

(घ) उत्क्षिप्त = कुल त्रुटियाँ १३३९ हुईं।

(च) ऊष्म = कुल त्रुटियाँ २११ हैं।

(छ) वर्ण व्यत्यय = कुल त्रुटियाँ २९८ हैं।

(ज) ब → व = कुल त्रुटियाँ २९० हैं।

(झ) 'ह' का अप्रयोग = कुल त्रुटियाँ २८० हैं।

(ट) संयुक्त वर्ण वर्तनी = कुल त्रुटियाँ १५८९ हैं।

(ठ) अन्य त्रुटियाँ ७६० हुईं।

निम्नलिखित सारिणी से व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ तथा उनकी आवृत्ति-संख्या स्पष्ट होती है :

सारिणी ५४

व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की संख्या				कुल	त्रुटियों के प्रकार की कुल त्रुटियाँ
		आओ	लोथा	अंगामी	सेमा		
महाप्राण-अल्पप्राण	ख>क,क>ख	२९७	५६	१११	६२	५२६	
	घ>ग	१२६	—	५७	—	१८३	
	छ>च	१६२	८३	७८	१५२	४७५	
	झ> ज	४७	—	—	—	४७	२४२८
	घ>त	४७	५६	८२	८८	२७३	
	ध>द	८२	४५	४८	९२	२६७	
	फ>प	९१	—	३६	६२	१८९	
	भ>ब	११८	—	१२२	२२८	४६८	

अघोष-सघोष	ग>क	१६८	१२६	८७	३३६	७१७	
	ज>च	२८८	७२	१५२	२४८	७६०	
	च>ज	२४८	१२३	२३०	२१२	८१३	३९३५
	छ>ज	८०	—	४२	१२६	२४८	
	त>द	९८	१६४	—	२४८	५१०	
	प>ब,ब>प	३२५	२१०	१२६	२२६	८८७	
मूर्धन्य-वर्त्स्य	ट>त	२८०	२१३	२८६	३६२	११४१	
	ठ>ढ~थ	१५७	—	—	—	१५७	
	ड>द	२०२	—	२१३	२७५	६९०	२२३४
	ढ>ध	९६	—	—	—	९६	
	ण>न	१२	१८	३७	८३	१५०	
उत्क्षिप्त	ड़>र	२८२	८८	१५२	३१०	८३२	
	ड़>ड	७७	७२	११२	१२२	३८३	१३३९
	ढ़>र, ड़>ढ	२६	४८	२२	२८	१२४	
ऊष्म	श>स, स>श, ष>स	३६	३२	२८	११५	२११	२११
वर्ण व्यत्यय	छ>स	१७	१८	९२	१३	१४०	२९८
वर्ण व्यत्यय	ज>स	—	—	१५८	—	१५८	—
ब>व	ब→व	८७	—	१५८	४५	२९०	२९०
ह का अप्रयोग	ह का लोप	—	८०	१२२	७८	२८०	२८०
संयुक्त	संयुक्त>अशुद्ध संयुक्त	११५	७६	१०६	११३	४१०	
	संयुक्त>अशुद्ध असंयुक्त	२०७	१४२	२२३	२३२	८०४	१५८९
	असंयुक्त> अशुद्ध संयुक्त	१०२	८३	९२	९८	३७५	
अन्य	अन्य	११०	२३२	१४२	२७६	७६०	७६०
कुल		३९८३	२०३७	३११४	४२३०	१३३६४	१३३६४

शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण—आवृत्ति-गणना तथा व्यंजन वर्णों की उच्चारणिक तथा वर्णिम व्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए व्यंजन वर्णों के निम्नलिखित वर्तनीगत शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये जा सकते हैं : .

१. अघोष—सघोष

२. अल्पप्राण—महाप्राण

३. अल्पप्राण—महाप्राण, अघोष—सघोष

४. वर्त्स्य—मूर्धन्य

५. संघर्षी

६. उत्क्षिप्त

७. ब—व

८. ह की वर्तनी-व्यवस्था का अभ्यास

९. संयुक्त वर्णों की वर्तनी

अध्याय ५

त्रुटियाँ—अर्थ, महत्व, कारण तथा सुझाव

५

५.१ त्रुटियाँ—अर्थ, महत्व एवं कारण

त्रुटियों की प्रवृत्तियों को ही जानना पर्याप्त नहीं है बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि त्रुटियाँ, त्रुटियों के महत्व तथा कारण क्या हैं।

५.१.१ त्रुटियाँ—अर्थ एवं महत्व

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या के स्पष्टीकरण (१.४.१) में हमने त्रुटियों तथा उनके महत्व पर किंचित् उल्लेख किया है। यहाँ इन पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता है।

त्रुटि-विश्लेषणकर्ताओं तथा भाषा-शिक्षण विशेषज्ञों ने भिन्न-भिन्न तरह से त्रुटियों की व्याख्या की है। भाषा सीखने में की जाने वाली सामान्य त्रुटियों की व्याख्या करते हुए जॉर्ज (१९७२) ने त्रुटियों को भाषा का अवांछनीय रूप कहा है। अवांछनीय रूप से उनका तात्पर्य ऐसे रूपों से है जिन्हें पाठ्यक्रम-निर्माता या शिक्षक पसन्द नहीं करते। प्रथम और द्वितीय भाषा के बीच सादृश्य दर्शाते हुए कुक (१९६९) ने त्रुटियों के सन्दर्भ में कहा है कि प्रथम भाषा सीखने के क्रम में की जाने वाली त्रुटियों का अर्थ है कि अभी सीखने वाले ने वयस्क-क्षमता प्राप्त नहीं की है जबकि दूसरी भाषा सीखने के क्रम में की जाने वाली त्रुटियों का अर्थ है कि इन त्रुटियों को ही गलती से सीख लिया गया है।

कोडर (१९६७) और रिचर्ड्स (१९७१- ब) ने दक्षता और क्रिया (Competence and Performance) की त्रुटियों में अन्तर स्पष्ट किया है। भाषा-क्रिया की त्रुटियाँ इन विद्वानों की दृष्टि में मात्र भूलें (mistakes) हैं और इसलिए अव्यवस्थित हैं जबकि वे त्रुटियाँ जो भाषा के ज्ञान से सम्बन्धित हैं, दक्षता की त्रुटियाँ हैं तथा अध्येता की संक्रमण-दक्षता (Transitional Competence) का अंग हैं। कोडर ने गलती (slips), चूक (lapses) तथा भूलों (mistakes) से त्रुटियों (errors) का अन्तर स्पष्ट किया है। उनकी दृष्टि में त्रुटियाँ व्यवस्थित होती हैं तथा वे अध्येता

की दक्षता के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनाएँ देती हैं जबकि गलतियाँ, चूकें या भूलें क्रिया की त्रुटियाँ हैं और इनका होना मात्र संयोग की बात है। ऐसे शोधकर्ता के लिए जिसकी रुचि भाषा सीखने के मनोवैज्ञानिक पक्ष में हो, गलतियों, चूकों तथा भूलों का कोई विशेष महत्व नहीं है क्योंकि उनमें कोई अन्तर्निहित व्यवस्था नहीं होती और न वे अध्येता द्वारा भाषा सीखने के क्रम में प्रयोग की जाने वाली युक्तियों (Strategies) के सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण सूचना ही दे पाती हैं।

कोडर निम्नलिखित दो प्रकार की त्रुटियों में अन्तर दर्शाते हैं—(१) गलत व्याकरणिक नियमों के प्रयोग द्वारा भाषा-नियमों (Code) का उल्लंघन करना जिसके परिणामस्वरूप अव्याकरणिक संरचनाएँ परिलक्षित होती हैं, तथा (२) भाषा-नियमों (Code) के प्रयोग की त्रुटियाँ जिसमें कोई संरचना पूर्णतः व्याकरणिक होते हुए भी अनुपयुक्त होती है। कोडर इन अनुपयुक्त रचनाओं के चार प्रकार बतलाते हैं—

(१) सन्दर्भ सम्बन्धी त्रुटियाँ
(२) रजिस्टर सम्बन्धी त्रुटियाँ
(३) सामाजिक त्रुटियाँ
(४) मौलिक त्रुटियाँ (देखें—**कोडर १९७४, रिचर्ड्स १९७१**)

द्वितीय भाषा सीखने की दृष्टि से डुले और बर्ट (१९७४) तथा बर्ट एवं किपार्स्की (१९७२) त्रुटियों को गूफ (Goof) कहना श्रेयस्कर समझते हैं क्योंकि गूफ ऐसी त्रुटियों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें छात्र सामान्य रूप से करते हैं और जिसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाता।

डुले और बर्ट गूफ के निम्नलिखित चार प्रकार स्पष्ट करते हैं :

(१) **व्याघात सम्बन्धी गूफ**—द्वितीय भाषा के प्रयोग में ये गूफ मातृभाषा की संरचनाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। ऐसे गूफ मातृभाषा के सीखने के क्रम में होने वाले विकासात्मक गूफों से भिन्न होते हैं।

(२) **विकासात्मक गूफ**—ये गूफ मातृभाषा के अपूर्ण आँकड़ों (Data) पर आधारित अति-सामान्यीकरण के कारण होते हैं।

(३) **द्विअर्थक** (Ambiguous) **गूफ**—ऐसे गूफ मातृभाषा के सीखने के क्रम में होने वाले विकासात्मक गूफों के रूप में चित्रित किये जा सकते हैं अथवा द्वितीय भाषा सीखने के क्रम में होने वाले व्याघातिक गूफों के रूप में देखे जा सकते हैं।

(४) **विचित्र गूफ** (Unique goof)—ऐसे गूफ जिन्हें न तो विकासात्मक गूफ कहा जा सकता है और न ही व्याघातिक गूफ।

डुले और बर्ट का विचार है कि बिना गुफिंग के कोई भी नहीं सीख सकता (१९७४)।

बर्ट और किपार्स्की (१९७२) त्रुटियों को व्यापक (global) तथा स्थानीय

(local) त्रुटियों की श्रृंखला के रूप में वर्गीकृत करते हैं। व्यापक त्रुटियाँ वे हैं जो वाक्य की सामान्य संरचना सम्बन्धी नियमों के उल्लंघन के कारण होती हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ किसी शब्द-घटकों के सम्बन्ध में या किसी सामान्य वाक्य में मुख्य घटकों के सम्बन्ध में हुआ करती हैं। स्थानीय त्रुटियाँ किसी निश्चित घटक या किसी जटिल वाक्य के किसी निश्चित अंश में संकट पैदा करती हैं (बर्ट और किपार्स्की, १९७२)। इन लोगों की राय में स्थानीय त्रुटियों की अपेक्षा व्यापक त्रुटियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि वे आदान-प्रदान (Communication) के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं।

क्लार्क (१९७५) की राय में त्रुटियाँ ऐसे अवांछनीय रूप नहीं हैं जिनके लिए छात्र को दण्डित किया जाय। वे छात्रों के लिए सूचना, फीडबैक का एक रूप हो सकती हैं। जैन (१९७४) की राय में त्रुटियाँ यह बताने में सहायक होती हैं कि भाषा अनुशिक्षण के किन क्षेत्रों में अधिक ध्यान तथा किस प्रकार के ध्यान देने की आवश्यकता है। त्रुटियों के महत्व पर कोडर (१९६७) तथा विल्किन्स (१९७४) के विचार हम पहले ही (१.४.१) व्यक्त कर चुके हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जिन त्रुटियों को पहले संशय की दृष्टि से देखा जाता था, उन्हें अब उद्दिष्ट भाषा की क्रमिक उपलब्धि के आवश्यक स्तर (Stage) के रूप में देखा जा सकता है (रिचर्ड्स और सेम्पसन, १९७४)।

५.१.२ भाषा-शिक्षण की दृष्टि से त्रुटि-विश्लेषण का महत्व

त्रुटि-विश्लेषण पूर्णतः नया सिद्धान्त नहीं है। इसका इतिहास उतना पुराना है जितना स्वयं भाषा-शिक्षण का इतिहास। शताब्दियों तक शिक्षक और विशेषतः भाषा-शिक्षक छात्रों की त्रुटियों का उपयोग निम्नलिखित साधनों के रूप में करते आ रहे हैं :

(क) छात्रों की दक्षता या उनकी उपलब्धि को मापने के उद्देश्य से।

(ख) भाषा-प्रयोग में छात्रों की त्रुटियों के विश्लेषण (Diagnosis) के उद्देश्य से।

(ग) शिक्षण-बिन्दुओं को प्रभावशाली ढंग से छात्रों के मस्तिष्क में स्थापित करने के सिलसिले में अपनी सफलता को मापने के उद्देश्य से।

श्रीधर (१९७६) ने कहा है कि परम्परागत त्रुटि-विश्लेषण के उद्देश्य को निम्नलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है :

(i) पाठ्यक्रम और कक्षा में शिक्षण-बिन्दुओं के प्रस्तुतीकरण की क्रमबद्धता को निश्चित करने के लिए।

(ii) शिक्षण के क्रम में शिक्षण-बिन्दु पर बल देना, उसकी व्याख्या तथा अभ्यास की आवश्यकताओं को सापेक्षिक डिग्री के रूप में निर्णय करने के लिए।

(iii) सुधारात्मक पाठ तथा अभ्यास मात्रा के निर्माण के लिए ।

(iv) छात्रों की दक्षता परखने के लिए बिन्दुओं का चयन करने हेतु ।

परम्परागत त्रुटि-विश्लेषण के क्षेत्र में किये जाने वाले बहुत से अध्ययन इस अनावश्यक मान्यता पर आधारित थे कि त्रुटियाँ छात्रों की जड़ता और बुरे शिक्षण का परिणाम हैं, किन्तु इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मनोविज्ञान तथा भाषाविज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति ने परम्परागत धारणाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये । वे सिद्धान्त जो व्यवहार-वादी मनोवैज्ञानिकों के अधिगम सिद्धान्त तथा संरचनात्मक भाषाविज्ञान के विकास से प्रभावित हैं, त्रुटियों की व्याख्या मातृभाषा की व्याघातिक आदतों के परिणाम के रूप में करते हैं । इसी मान्यता के कारण फ्रीस (१९४५) ने अध्येता की मातृभाषा के वैज्ञानिक विवरण की बात कही है । लाडो ने फ्रीस के कथन का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया । फ्रीस की यह मान्यता लाडो की पुस्तक की मौलिक मान्यता बनी कि अध्येता अपनी भाषा और संस्कृति के रूप और अर्थ को विदेशी भाषा पर स्थानान्तरित करने की प्रकृति दिखाता है (लाडो, १९५७ : २) ।

इस मान्यता से कि त्रुटियों का कारण मातृभाषा की आदतों का व्याघात है, व्यतिरेकी विश्लेषण सबल हुआ तथा अधिगम में होने वाली त्रुटियों की भविष्यवाणी करने वाले विकसित वैज्ञानिक साधन के रूप में इसे लोकप्रियता प्राप्त हुई । इस शताब्दी का सातवाँ दशक व्यतिरेकी विश्लेषण के वे गौरवशाली वर्ष थे जब ख्याति-लब्ध भाषा-वैज्ञानिकों तथा भाषा-शिक्षण विशेषज्ञों ने व्यतिरेकी विश्लेषण परि-योजनाओं और इसके सिद्धान्तों में महत्तम रुचि दिखायी ।

सातवें दशक के उत्तरार्द्ध तथा आठवें दशक में व्यतिरेकी विश्लेषण को सार्थक नहीं पाया गया और इसके साथ ही समग्र व्यतिरेकी सिद्धान्त की सार्थकता के सन्दर्भ में प्रश्न पूछे जाने लगे । परिणामतः व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त की विभिन्न स्तरों पर कटु आलोचनाएँ होने लगीं (देखें—**डिपिक्ट्रो** १९७१, १९७२) । व्यतिरेकी सिद्धान्त की परिकल्पनाओं के सैद्धान्तिक आधार के बारे में केवल द्वितीय भाषा अनु-शिक्षण सिद्धान्तवादियों द्वारा ही नहीं बल्कि शाब्दिक शिक्षण तथा स्मृति के मनो-वैज्ञानिकों द्वारा भी गम्भीरतापूर्वक शंकाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं (डुले और बर्ट, १९७४) ।

छात्र ऐसी त्रुटियाँ करते हैं जो धनात्मक स्थानान्तरण की परिकल्पना को निरर्थक साबित कर देती हैं और वे त्रुटियाँ जिनकी भविष्यवाणी की गयी थी, नहीं हुईं और ऐसी त्रुटियाँ जिनकी भविष्यवाणी नहीं की गयी थी, वे हुईं (मैकी, १९६६) ।

इस परिकल्पना की सर्वाधिक कटु आलोचना फ्रेंच ने की है जो यह कहकर इसे चुनौती देते हैं कि त्रुटियों को मातृभाषा से कुछ लेना-देना नहीं है । इनकी राय में कुछ त्रुटियाँ विशुद्ध रूप में क्षेत्रीय होती हैं, अन्य त्रुटियाँ जिनकी संख्या और जिनके

प्रकार बहुत अधिक हैं, सम्पूर्ण विश्व में प्रायः समान रूप से पायी जाती हैं (फ्रेंच, १९४९, १९५८)।

व्यतिरेकी विश्लेषण की ऐसी आलोचनाओं के आलोक में ही त्रुटि-विश्लेषण में रुचि का उफान आया। अद्यतन विधाओं के अनुसार त्रुटियों तथा अध्येता की समग्र अधिगम व्यवस्था को "उद्दिष्ट भाषा की क्रमिक प्राप्ति के आवश्यक स्तर" के रूप में देखा जाता है (रिचर्ड्स और सेम्पसन, १९७४)। अब त्रुटियों को पृथक रूप में नहीं बल्कि अध्येता की समग्र व्यवस्था के अंग के रूप में देखा व समझा जाता है। कोडर (१९७१-ए) के अनुसार अध्येता की यह व्यवस्था वह कोड है जो न तो पूर्णतः मातृभाषा है और न ही उद्दिष्ट भाषा बल्कि मातृभाषा और उद्दिष्ट भाषा दोनों की विशेषताओं से भरी अन्तरभाषा है।

इस व्यवस्था को रिचर्ड्स और सेम्पसन (१९७४) ने 'अध्येता की भाषा', सेलिंकर (१९७२) ने 'अन्तरभाषा', नेमसर (१९७४) ने 'लगभग व्यवस्था', कोडर (१९७१) ने 'व्यक्तिगत बोली' एवं 'अध्येता की संक्रमणात्मक दक्षता' कहकर सम्बोधित किया।

अध्येता की अनुशिक्षण व्यवस्था मनोविज्ञान की दृष्टि से इसलिए रुचि का क्षेत्र है कि उससे अध्येता के मस्तिष्क की कार्य-प्रणाली की जानकारी मिलती है। भाषा-विज्ञान के लिए यह रुचिकर इस अर्थ में है कि अध्येता की भाषा-अर्जन की प्रक्रिया की जानकारी मिलती है।

इन प्रगतियों के आलोक में अध्येता की त्रुटियों से सम्बन्धित चिन्तन व्यतिरेकी विश्लेषण से हटकर त्रुटि-विश्लेषण परिकल्पना की ओर बढ़ गया है।

सेलिंकर की राय में त्रुटियाँ अध्येता द्वारा अर्जित अन्तरभाषा में होने वाले स्तब्धीकरण (Fossilization) के परिणाम हैं। कोडर (१९६७) भी प्रायः इन्हीं तथ्यों का निरूपण करना चाहते हैं जब वे कहते हैं कि त्रुटि-विश्लेषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष भाषा-अर्जन में अध्येता द्वारा प्रयोग की जाने वाली युक्तियों को प्रकाश में लाना है। भाषा-अर्जन की जटिल प्रक्रिया की विवेचना करते हुए कोडर (१९७५) त्रुटियों को इस रूप में चित्रित करते हैं कि ये भाषा-अर्जन की प्रक्रिया को समझने के लिए उपलब्ध महत्वपूर्ण प्रमाण हैं। अतः त्रुटि-विश्लेषण को महत्वपूर्ण विधा मानने का एक कारण यह है कि इससे हमें यह जानकारी मिलती है कि भाषा-अर्जन के उद्देश्य से किस प्रकार मानव-मस्तिष्क अपने को व्यवस्थित करता है।

त्रुटियों की विवेचना का सम्बन्ध उस मनोवैज्ञानिक, भाषा-वैज्ञानिक प्रक्रिया से है जिससे यह पता लगाया जा सके कि त्रुटियाँ क्यों और कैसे होती हैं। इसका सम्बन्ध उस समाज-भाषा-वैज्ञानिक प्रक्रिया से भी है जिससे यह निश्चित किया जा सके कि संप्रेषण तथा आदर्श (नॉर्म) से भटकने के अर्थ में किस त्रुटि द्वारा कितनी

बाधाएँ उत्पन्न की जाती हैं (देखें—**दस्क्वा १९६९, श्रीधर १९७६**)। भाटिया (१९७५) ने भारतीय सन्दर्भ में त्रुटियों तथा अध्येता की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठ-भूमि के बीच महत्तम सहसम्बन्ध की सम्भावना पर बल दिया है। अतः त्रुटि-विश्लेषण समाज-भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त त्रुटि-विश्लेपण पाठ्यक्रम-निर्माताओं, पाठ्यपुस्तक-लेखकों, पूरक शिक्षण-सामग्री लेखकों, परीक्षण व्यवस्थापकों तथा शिक्षकों के लिए सन्दर्भ बिन्दु प्रदान करते हैं और इस प्रकार शिक्षण की दृष्टि से यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

संक्षेप में, त्रुटि-विश्लेषण का महत्व इस बात में है कि इसके माध्यम से हमें भाषा-अर्जन की प्रक्रिया के बारे में मूल्यवान जानकारी मिलती है। यह सामाजिक-सांस्कृतिक तथा सामाजिक-आर्थिक तथ्यों द्वारा भापा-अर्जन की प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में हमारी जानकारी में योगदान करता है तथा हमें इस अर्थ में सहायता पहुँचाता है कि हम किस प्रकार यथार्थवादी तरीके से शिक्षण-सामग्रियों तथा तकनीकियों को सजायें।

५.१.३ त्रुटियों के कारण

त्रुटियों की प्रवृत्तियों को ही जानना पर्याप्त नहीं है, यह जानना भी आवश्यक है कि त्रुटियों की इन प्रवृत्तियों के मुख्य कारण क्या हैं।

विभिन्न कारणों से नागाभाषी छात्र हिन्दी सीखने में उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियाँ करते हैं। त्रुटियों के इन कारणों में मुख्य निम्नलिखित हैं :

५.१.३.१ मातृभाषा का व्याघात

द्वितीय भापा सीखने में त्रुटियों का सबसे महत्वपूर्ण कारण मातृभाषा का व्याघात माना जाता है। रॉबर्ट लीडो भी इस तथ्य से सहमत हैं कि भाषा अधिगम में त्रुटियों का सबसे महत्वपूर्ण कारण मातृभाषा का व्याघात है। फर्ग्यूसन (१९६५), जॉर्ज (१९७२), जेम्स (१९७२), सेलिंकर (१९७२), रिचर्ड्स (१९७४) तथा टेलर (१९७५) आदि का भी यही मत है कि द्वितीय भाषा अधिगम में त्रुटियों का प्रमुख कारण मातृभाषा का व्याघात है।

५.१.३.१.१ उच्चारणिक व्यवस्था पर मातृभाषा का व्याघात

नागाभाषी छात्रों की हिन्दी ध्वनियों से सम्बन्धित उच्चारणिक त्रुटियों का प्रमुख कारण उनकी मातृभाषा का व्याघात है।

हिन्दी के स्वर स्वनिम / अ /, / इ /, / उ /, / ऐ / तथा / औ / नागा-भाषाओं में स्वनिम स्तर पर उपलब्ध नहीं हैं तथा हिन्दी के सभी घोप महाप्राण स्वनिम, उत्क्षिप्त तथा मूर्धन्य स्वनिम भी नागा-भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं। अतः नागाभाषी छात्र हिन्दी के इन स्वनिमों के स्थान पर अपनी मातृभाषा के निकटवर्ती स्वनिम का उच्चारण करते हैं, जिसमें उनका हिन्दी शब्दों का उच्चारण त्रुटिपूर्ण माना जाता है।

५.१.३.१.२ व्याकरणिक व्यवस्था पर मातृभाषा का व्याघात

नागाभाषी छात्रों द्वारा प्रयुक्त हिन्दी के व्याकरणिक रूपों पर उनकी मातृ-भाषा का व्याघात स्पष्ट दिखायी देता है। रूप-रचना की दृष्टि से नागा-भाषाओं के **नामिक रूपों** पर लिंग, वचन तथा कारक का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु हिन्दी भाषा के नामिक शब्द-रूपों पर लिंग, वचन तथा कारक का प्रभाव प्रमुख है। यही कारण है कि नागाभाषी छात्र हिन्दी के नामिक शब्दों—संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण—की रूप-रचना में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

इसी प्रकार नागा-भाषाओं में **क्रिया-रूपों** पर लिंग, वचन, पुरुष, काल, अर्थ, वाच्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हिन्दी में क्रियाएँ इन व्याकरणिक कोटियों से प्रभावित होती हैं। नागा-भाषाओं में धातुओं का ह्रस्वीकृत रूप, द्वितीय प्रेरणार्थक रूप, नामिक रूप तथा क्रिया का सम्भावनार्थ रूप प्राप्त नहीं है। हिन्दी में क्रियाओं के ये सभी रूप मिलते हैं। अतः क्रियारूप-रचना की दृष्टि से नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में पर्याप्त अन्तर विद्यमान है। स्पष्ट है कि नागाभाषी छात्रों की हिन्दी क्रिया-रूप-रचना में मातृभाषा की व्यवस्था व्याघात पहुँचाती है।

व्युत्पादन, समासीकरण तथा पुनरुक्ति की प्रक्रिया से **शब्द-रचना** का विधान नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में समान है किन्तु शब्द-रचना की प्रक्रिया के क्षेत्र विशेष में अन्तर विद्यमान है।

नागा-भाषाओं में नामिक शब्दों के साथ पूर्व-प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना प्रायः नहीं होती। अंगामी और सेमा भाषा में धातुओं के साथ कृत प्रत्ययों के संयोग से संज्ञा, विशेषण आदि की रचना की सुदृढ़ परम्परा नहीं है।

इन भाषाओं में पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के प्रत्यय नहीं हैं। मनुष्येतर प्राणीवाचक संज्ञाओं में पुल्लिग और स्त्रीलिंग के लिए भिन्न-भिन्न प्रत्यय हैं।

नागा-भाषाओं में द्वन्द्व समास को छोड़कर शेष समासों के माध्यम से यौगिक शब्दों की रचना की प्रक्रिया प्रचलित नहीं है। इस प्रकार शब्द-रचना-प्रक्रिया के क्षेत्र विशेष में नागा-भाषाओं तथा हिन्दी में पर्याप्त अन्तर विद्यमान है। नागाभाषी छात्र अपनी मातृभाषा की व्यवस्था के अनुरूप ही हिन्दी शब्दों की रचना करते हैं, अतः शब्द-रचनागत त्रुटियों का मूल कारण मातृभाषा का व्याघात प्रतीत होता है।

नागा-भाषाओं में कर्ता-कारक के लिए परसर्गों का प्रयोग होता है किन्तु प्रयोगगत विधि-निषेध की जटिलता नहीं है। हिन्दी में कर्ता-कारक के साथ 'ने' परसर्ग के प्रयोग में विधि-निषेध की अनेक जटिलताएँ हैं। नागा-भाषाओं में कर्म-कारक तथा सम्बन्ध-कारक के लिए प्रायः परसर्ग प्रयोग में नहीं लाये जाते। यही कारण है कि नागाभाषी छात्र हिन्दी के परसर्गों के प्रयोग में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

नागा-भाषाओं में कर्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया, विशेषण-विशेष्य आदि में लिंग-

वचन, पुरुष-वचन की अन्विति नहीं होती। हिन्दी की वाक्य-रचना में अन्विति का महत्वपूर्ण स्थान है। नागा-भाषाओं में विशेषक अपने शीर्ष के बाद आता है। सहायक क्रियाओं के सहयोग से बड़े-बड़े क्रिया पदबन्ध भी नहीं होते। चूँकि नागा-भाषाओं में सम्बन्धसूचक प्रत्यय नहीं होते, इसलिए सम्बन्धात्मक पदबन्ध की भी रचना नहीं होती। अंगामी और सेमा में नकारात्मक निपात क्रिया के बाद आते हैं। हिन्दी में इससे भिन्न व्यवस्था वर्तमान है।

हिन्दी भाषा की अपनी व्यवस्था है जो उपर्युक्त दृष्टियों से नागा-भाषाओं से भिन्न है। नागाभाषी छात्र अपनी भाषा की व्यवस्था के अनुरूप हिन्दी का प्रयोग करते हैं, अतः व्याघात सम्बन्धी त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है।

शब्द-प्रयोग के स्तर पर मातृभाषा व्याघात उत्पन्न करती है। जब अध्येता कोई विचार व्यक्त करना चाहता है जिसके लिए उसके उद्दिष्ट भाषा के शब्द-भण्डार में कोई समानार्थी शब्द नहीं मिलता तो वह शब्दानुवाद का मार्ग अपनाता है। हिन्दी के 'कठिनाई', 'छोटा', 'भाई' शब्दों के लिए नागाभाषी छात्रों ने क्रमशः नागामिज के शब्दों—'दिक्तार', 'होरू', 'दादा'—का प्रयोग किया है।

५.१.३.१.३ वर्तनी व्यवस्था पर मातृभाषा का प्रभाव

मातृभाषा की उच्चारण-व्यवस्था उद्दिष्ट भाषा में न केवल मौखिक अभि-व्यक्ति के स्तर पर अपना प्रभाव दिखाती है बल्कि वर्तनी-व्यवस्था पर भी उसका प्रभाव परिलक्षित होता है।

कहा जा चुका है कि हिन्दी के कुछ स्वर स्वनिम, घोष महाप्राण, उत्क्षिप्त तथा मूर्धन्य स्वनिम नागा-भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं। इस कारण नागाभाषी छात्रों के हिन्दी उच्चारण में त्रुटियाँ मिलती हैं। इसका सीधा प्रभाव उनके हिन्दी वर्तनी प्रयोग पर पड़ता है। फलस्वरूप नागाभाषी छात्र हिन्दी वर्तनीगत अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

नागालैण्ड के हिन्दी शिक्षकों की प्रश्नावली के उत्तर से प्राप्त सूचनाएँ इस तथ्य को अधिक संपुष्ट करती हैं कि नागाभाषी छात्रों की मातृभाषा का प्रभाव विशेष रूप से हिन्दी की उच्चारण-व्यवस्था, वर्तनी-व्यवस्था तथा सामान्य रूप ने व्याकरणिक व्यवस्था पर पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मातृभाषा का व्याघात मुख्यतः सीखने के स्तर पर होता है। सीखने के क्रम में अध्येता जो त्रुटियाँ करता है, वे 'अन्तरभाषा' के क्षेत्र में आती हैं। अतः हिन्दी-अधिगम की प्रक्रिया में नागाभाषी छात्रों ने निम्नलिखित कारणों से त्रुटियाँ कीं :

५.१.३.२ अति-सामान्यीकरण

'लेना', 'देना' के विधि रूप में छात्रों ने 'लेओ', 'देओ' का प्रयोग किया है। यहाँ 'खाओ', पीओ' के आधार पर नियमों का अति-सामान्यीकरण है।

५.१.३.३ नियमों की जानकारी न होना

छात्र एक सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले नियमों का दूसरे सन्दर्भ में प्रयोग करते हैं; यथा—'लड़कियाँ जाते हैं।' 'जाते हैं' क्रिया-पदबन्ध 'लड़के' कर्ता-पदबन्ध के सन्दर्भ में ठीक है किन्तु 'लड़कियाँ' कर्ता-पदबन्ध के सन्दर्भ में अशुद्ध प्रयोग है।

५.१.३.४ नियमों का अपूर्ण प्रयोग

भाषा में एक नियम को लागू करने के लिए कई उपनियमों की व्यवस्था देखनी पड़ती है; जैसे—'ने', 'को' परसर्गों के प्रयोग में उपनियमों की व्यवस्था पर ध्यान देना आवश्यक होता है। नागाभाषी छात्र इनसे अपरिचित हैं, नियमों के अपूर्ण प्रयोग के कारण वे अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। इसी प्रकार संज्ञा-रूप तथा क्रिया रूप-परिवर्तन के कई नियम हैं। छात्र इन नियमों के प्रयोग की जानकारी के अभाव में बहुत सी त्रुटियाँ करते हैं।

५.१.३.५ अध्येता द्वारा ग्रहीत द्वितीय भाषा की सीमित सामग्री के आधार पर गलत रूपों का निर्माण

नागाभाषी छात्र कुछ प्रत्ययों के सहारे कल्पित विकृत रूपों की रचना करते हैं; यथा—'मैं पढ़ऊँगा'। 'पढ़ऊँगा' क्रिया में 'ऊँगा' प्रत्यय ठीक है किन्तु जिस प्रकार वह क्रिया-रूप में लगकर 'पढ़ूँगा' क्रिया-रूप का निर्माण करता है, वैसा न होकर कल्पित विकृत रूप की रचना हुई है।

छात्र द्वितीय भाषा की सीमित सामग्री के आधार पर कल्पित तथा विकृत रूपों का निर्माण करते हैं।

५.१.३.६ भाषा-अधिगम की सामाजिक पृष्ठभूमि

समाजभाषा-शास्त्रियों के अनुसार अध्येता की आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, अनु-प्रेरणाएँ बहुत हद तक उसके भाषा सीखने के सामाजिक संदर्भ द्वारा निर्धारित होती हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त-रचना के आधार पर प्राप्त त्रुटियों के विश्लेषण में सामान्य-तया यह देखा गया है कि पूर्ण शहरी परिवेश के छात्र मुक्त-रचना की त्रुटियाँ अधिक करते हैं क्योंकि वे भाषायी अभिव्यक्ति की दृष्टि से अधिक समर्थ हैं। इसी प्रकार ग्रामीण परिवेश के छात्रों में मुक्त-रचना की कमी पायी गयी। अर्द्ध-शहरी परिवेश के छात्रों की स्थिति इन दोनों के बीच रही। प्रश्नावली की त्रुटियों में सबसे कम त्रुटियाँ शहरी परिवेश के छात्रों ने कीं और सबसे अधिक त्रुटियाँ ग्रामीण परिवेश के छात्रों ने कीं। अर्द्ध-शहरी परिवेश के छात्रों की स्थिति मध्य की रही।

विश्लेषण में यह भी पाया गया कि सम्पन्न परिवार के छात्रों में मुक्त-रचना पर आधारित अभिव्यक्ति पक्ष निर्धन परिवार के छात्रों की अपेक्षा प्रबल है। ठीक इसके विपरीत प्रश्नावली की त्रुटियों में निर्धन छात्र अधिक त्रुटियाँ करते हैं तथा सम्पन्न परिवार के छात्र कम त्रुटियाँ करते हैं।

५.१.३.७ त्रुटियों के अन्य कारण

त्रुटि-विश्लेषकों ने द्वितीय भाषा के अधिगम में होने वाली त्रुटियों के कई कारणों का उल्लेख किया है । उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त अन्य कारणों में दोषपूर्ण शिक्षण (कोडर १९७४), शिक्षक-छात्र के बीच अच्छे सम्बन्ध का न होना, कमजोर स्मरण-शक्ति (डिपेक्ट्रो १९७१) मुख्य हैं । प्रस्तुत शोध का उद्देश्य त्रुटियों के इन सभी कारणों का विवेचन करना नहीं है । अपने सीमित उद्देश्य के अनुरूप विविध कारणों की चर्चा की गयी है ।

५.२ सुझाव

प्रस्तुत शोध-कार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं के समाधान से सम्बन्धित कुछेक व्यावहारिक सुझाव देना उचित होगा । अतः कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

५.२.१ पाठ्यक्रम-निर्माताओं के लिए सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में नागाभाषी छात्रों की उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत अनेक त्रुटियाँ सामने आयी हैं । इनके आधार पर शिक्षण-बिन्दु निर्धारित किये गये हैं । पाठ्यक्रम-निर्माताओं से यह आशा की जाती है कि वे पाठों के चयन एवं निर्माण में इन शिक्षण-बिन्दुओं का समावेश करेंगे ।

उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत शिक्षण-बिन्दुओं से समाविष्ट पाठ्य-क्रम का अनुस्तरित होना भी आवश्यक है । पाठ्यक्रम-योजना में इस बात पर ध्यान देना भी उचित होगा कि विभिन्न शिक्षण-बिन्दु विभिन्न स्तरों पर अनुक्रमित रूप से प्रस्तुत किये जायँ ।

पाठ्यक्रम के विविध स्तरों में समन्वय होना आवश्यक है । उदाहरण के लिए, पाँचवीं कक्षा से निकलते समय अध्येता यदि पाँच सौ शब्दों और पच्चीस संरचनाओं में प्रवीणता प्राप्त कर चुका है तो छठवीं कक्षा के प्रारम्भिक पाठों में ज्ञात शब्दों और संरचनाओं का अधिक समावेश होना चाहिए तथा धीरे-धीरे सुनियोजित ढंग से नये पाठों में शिक्षण-बिन्दुओं का समावेश करना उचित होगा ।

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि पाठ्यक्रमों में ऐसे शब्दों या संरचनाओं का समावेश हो जो दैनिक व्यवहार से सम्बन्धित हों । अतः पाठ्यक्रम बनाते समय अध्येता की सामाजिक, भाषायिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक परिस्थितियों पर ध्यान देना उचित होगा ।

५.२.२ पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण-सामग्री-निर्माताओं के लिए सुझाव

अन्य भाषा-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण-सामग्री का विशेष महत्व है । पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण-सामग्री-निर्माताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे

नागाभाषी छात्रों के लिए पाठ्य-पुस्तकों तथा पाठों के निर्माण में प्रस्तुत अध्ययन में उपलब्ध शिक्षण-बिन्दुओं का अधिक से अधिक उपयोग करें।

शिक्षण-सामग्री के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की शिक्षण-सामग्री तैयार की जा सकती है, यथा—उच्चारण शिक्षण की सामग्री, व्याकरणिक संरचनाओं पर आधारित सामग्री तथा वर्तनी अभ्यास आदि की सामग्री।

प्रस्तुत शिक्षण-बिन्दुओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के उच्चारण अभ्यास, साँचा अभ्यास, सारिणी अभ्यास, भाषायी प्रयोग अभ्यास, वार्तालाप अभ्यास तथा लेखन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के अभ्यासों का निर्माण किया जा सकता है।

शिक्षण-बिन्दुओं को दृष्टि में रखते हुए अध्यापक निर्देशिकाओं का निर्माण किया जा सकता है। भाषा-शिक्षण की नवीनतम तकनीकों एवं युक्तियों का उल्लेख, विविध भाषायी अभ्यासों के क्रियान्वयन-सम्बन्धी मार्ग-निर्देश अध्यापन कार्य में सहायक हो सकेंगे। इससे न केवल शिक्षण के स्तर में सुधार होगा बल्कि सुधारात्मक/निदानात्मक शिक्षण में भी सहायता मिलेगी।

५.२.३ शिक्षकों के लिए सुझाव

पाठ्य-पुस्तकें कितनी भी सावधानी से बनें, शिक्षक की सूझबूझ एवं दूरदर्शिता के बिना शिक्षण में उनसे विशेष लाभ नहीं पहुँचता। अतः हिन्दी शिक्षक को पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन तथा उसमें निर्धारित उद्देश्यों की जानकारी होनी चाहिए।

हिन्दी शिक्षक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि उसे अन्य भाषा-शिक्षण की विधियों, तकनीकों, युक्तियों का अधुनातन ज्ञान हो। अतः नवीकरण पाठ्यक्रमों द्वारा हिन्दी शिक्षकों को भाषा-शिक्षण की अधुनातन तकनीकों से परिचित कराया जा सकता है।

हिन्दी शिक्षक के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अन्य भाषा के रूप में साहित्य एवं कौशल पाठों के अन्तर को पहचानते हुए भाषायी कौशलों के विकास पर पर्याप्त ध्यान दे। उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों के निराकरण के लिए यह भी आवश्यक है कि सुधारात्मक शिक्षण की व्यवस्था हो। यह भी आवश्यक है कि शिक्षक विद्यालय में हिन्दी का वातावरण तैयार करे जिससे छात्रों को हिन्दी भाषा के सहज व्यवहार का अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो। विभिन्न सन्दर्भों के अनुकूल वार्तालाप तथा मौखिक अभिव्यक्ति का पर्याप्त अवसर छात्रों को प्रदान किया जाय।

हिन्दी शिक्षण के लिए समुचित वातावरण तैयार करने में श्रव्य-दृश्य उपादानों का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रव्य-दृश्य उपादानों के माध्यम से हिन्दी शिक्षण-अनुशिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। श्रव्य-दृश्य उपकरणों में विभिन्न प्रकार के चित्र, रेखाचित्र, विभिन्न प्रकार के चार्ट, पोस्टर, कार्टून, स्लाइड तथा शैक्षिक फिल्मों

का उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में रोचकता, सरसता एवं जीवन्त वातावरण उत्पन्न करने के लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार श्रव्य-दृश्य उपकरणों का उपयोग कर सकता है।

भाषा-अधिगम में उत्प्रेरण का विशेष महत्व है। अध्यापक अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व, शिक्षण-विधियों तथा तकनीकों के समुचित प्रयोग द्वारा छात्रों में भाषा सीखने की अभिवृत्ति जागृत कर सकता है। वह ही छात्रों में अन्य भाषा की संस्कृति के प्रति समन्वयात्मक एवं आस्थामूलक दृष्टिकोण का विकास कर सकता है। भाषा-शिक्षण एवं अधिगम में यह विशेष सहायक हो सकता है।

५.२.४ सम्भावित शोधकार्य के लिए सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन नागाभाषी छात्रों (आओ, अंगामी, सेमा तथा लोथा) की हिन्दी सीखने की समस्याओं से सम्बन्धित है। नागालैण्ड में लगभग २२ भाषाएँ बोली जाती हैं, अतः अन्य नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं का अध्ययन-कार्य शेष रह गया है। भाषा शोध-संस्थानों तथा भाषा-शोधकर्ताओं के लिए हमारा यह नम्र सुझाव है कि अन्य नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं पर शोधपरक अध्ययन किया जाय।

नागाभाषी छात्रों की हिन्दी सीखने की समस्याओं पर यह शोध-कार्य अपनी निश्चित सीमा और उद्देश्य के अनुरूप किया गया है। इस दिशा में भी शोध-कार्य के लिए अभी कई आयाम शेष रह गये हैं; यथा—अर्थ-संरचना के स्तर पर हिन्दी सीखने की समस्याएँ आदि। इससे सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त कार्य किया जा सकता है। भाषा के विभिन्न स्तरों पर विस्तृत शोध-कार्य करने की आवश्यकता है।

परिशिष्ट

उच्चारण परीक्षण-तालिका

एकल ध्वनियों का शब्दों के आदि, मध्य और अन्त में परीक्षण

स्वर ध्वनियाँ

	आदि	मध्य	अन्त
अ	अब	बादल	रत्न
आ	आप	समान	अपना
इ	इनाम	कोहिमा	कवि
ई	ईशु	जमीन	धरती
उ	उसका	बहुत	दयालु
ऊ	ऊन	खजूर	लड़ाकू
ए	एक	अकेली	लड़के
ऐ	ऐसा	विषैला	बरवै
ओ	ओर	कठोर	देखो
औ	औरत	सरौता	चसौत

अनुनासिक ध्वनियाँ

	आदि	मध्य	अन्त
अँ	अँगीठी	महँगा	—
आँ	आँचल	छलाँग	कहाँ
इं	इंगुवा	घुइंया	—
ईं	ईंगुर	—	परछाईं
उँ	उँगली	पहुँच	—
ऊँ	ऊँघना	—	खड़ाऊँ
एँ	रेंगना	दहेंड़ी	चलें
ऐं	ऐंठना	—	हैं
ओं	घोंसला	खरोंच	हों
औं	औंधा	घरौंदा	भौं

व्यंजन ध्वनियाँ

	आदि	मध्य	अन्त
क	कमल	संकट	कंटक
ख	खटमल	मुखड़ा	लाख
ग	गमला	मंगल	पतंग
घ	घतासी	सघन	बाघ
ङ	—	कंकड़	भाङ
च	चमड़ा	बचपन	सच
छ	छल	बछड़ा	छाछ
ज	जलेबी	काजल	आज
झ	झगड़ा	झंझट	समझ
ञ	—	चञ्चल	—
ट	टमाटर	मटर	खाट
ठ	ठठेरा	बैठना	ओठ
ड	डमरू	खण्डन	घमण्ड
ढ	ढक्कन	—	—
ण	—	प्रणय	प्राण
त	तबला	कातर	सात
थ	थकान	कथनी	साथ
द	दस	बादल	खाद
ध	धन	विधवा	मगध
न	नकल	मानव	मन
प	पतला	कपड़ा	पाप
फ	फसल	सफल	बरफ
ब	बगुला	सबल	करीब
भ	भवन	सांभर	लाभ
म	मगन	कमला	कलम
य	यश	कायर	समय
र	रस	बारह	घर
ल	लहर	कलम	बादल
व	वचन	अवसर	मानव
श	शक्कर	मशक	यश
ष	—	भूषण	पुरुष

	मध्य	आदि	अन्त
स	सरल	असल	दस
ह	हल्दी	लहर	वाह
ड़	—	लड़का	पकड़
ढ़	—	चढ़ना	बाढ़

संयुक्त वर्ण

	आदि	मध्य	अन्त
क+र	क्रम	विक्रम	शुक्र
व+य	व्यस्त	अव्यय	कर्तव्य
ग+ल	ग्लानि	—	—
ष+प	—	—	वाष्प
त+य	त्यौहार	—	—
ष+य	—	—	मनुष्य
ल+म	—	—	जुल्म
स+म	—	—	किस्म

उच्चारण-परीक्षण

(शब्द-युग्मों तथा वाक्यों में)

ब/म

बात — भात   बाबी — भाभी

बात कहो और भात पकाओ। वह कब गया जो अभी नहीं आया।

द/ध

दान — धान   उदार — उधार   आदी — आधी

कमीज धो दो। मेरेन बहुत उदार है। उसने मुझे उधार दिया। आधी ले लो और आधी रकम मुझे दे दो।

ग/घ

गात — घात   जगत — जघन   बाग — बाघ

गात मेरा है, घात मत लगाओ। आगरा आओ किन्तु घाघरा मत जाओ। मेरे बाग में एक बाघ है।

ज/झ

जला — झला   सूजना — सूझना   साज — साझ

लेंप जलाकर लाओ, मेरी ओर मत झुको। उसका पैर सूजता गया किन्तु उसे सूझता नहीं। तुम्हारे साज में मैं भी साझ हूँ।

प/फ

पल — फल पीता — फीता कापी — काफी

एक पल रुको और फल खाओ। फीता दे दो और पानी पी लो। गप मत करो। यह गफ कपड़ा है।

त/थ

तल — थल पोती — पोथी सात — साथ

उसका तान सुन्दर है। एक थान कपड़ा दो। माता का माथा गरम है। सात आदमी मेरे साथ आये।

क/ख

कल — खल बकरी — बखरी चक — चख

वह कल आया। वह खल नहीं है। बकरी आती है। बखरी में धान है। आम चख लो। सोने को कनक भी कहते हैं।

च/छ

चल — छल मचली — मछली कच्चा — कच्छा

घर चलो, छल मत करो। बस में उसे मचली आ गई। नदी से मछली लाओ। सच बोलो। मुझे कुछ नहीं चाहिए।

स/श

सब — शव साल — शाल कस — कश

एक दिन सबकी शव-यात्रा होगी। इस साल मेरेन की शादी होगी। कमर कस कर आ जाओ। सिकरेट का कश खींचो।

त/ट

तन — टन रतना — रटना बात — बाट

तन पर कपड़े रखो। टन-टन की आवाज सुनो। रतना ने कहा कि हमें रटना नहीं चाहिए, अपना पाठ याद करना चाहिए। मेरी बात मानो, खट-खट मत करो।

ढ़/ड

ढर — डर उदार — निडर दंद — दंड

दस पैसे दो। डरो मत उदार बनो। निडर रहो। चंद मिनट की बात है। रुपये की गड्डी ले लो।

थ/ठ

थन — ठन पथार — पठार साथ — साठ

गाय के थन से दूध निकालता है। रुपया ठन ठन करता है। धान का पथार उठा लो। पठार पर धान नहीं होता। मेरे साथ आठ आदमी हैं।

घ/ढ

घर — ढर घाई — ढाई बुद्धि — बुड्ढी

चोरों का धरपकड़ हो रहा है। पानी के बर्तन से पानी ढरता है। घाई ने मुझे ढाई रुपये दिए। नारोला की बुद्धि अच्छी है। बुड्ढी औरत चली गई।

र/ड़

दौरा — दौड़ा सर — सड़

शिक्षा निदेशक नागालैंड का दौरा कर रहे हैं। वह दौड़ा हुआ आया। मेरा सर दुख रहा है। फल सड़ गया।

ढ/ढ़

बुड्ढा — बूढ़ा ढाई — पढ़ाई

मैं बुड्ढा हो गया। बूढ़ा आदमी लाठी लेकर चलता है। मुझे ढाई रुपये दो। पढ़ाई ठीक से करो।

अ/आ

अब — आब कमल — कमाल कमल — कमला

अब आप मेरे घर कल आइए। सबको एक दिन काल खा जायेगा। कमाल ने एक कमल फूल देखा। कमला ने कहा कि उसे एक कमल फूल चाहिए।

ए/ऐ

मेल — मैल एक — ऐक्य सबेरा — सवैया हे — है

मेल-मिलाप से रहिए। पानी में मैल है। सबेरा हो गया। मुझे एक के बदले सवैया दो। हे भाई ! अचिला कहाँ है ?

ओ/औ

ओर — और खोल — खौल जो — जौ

मेरी ओर देखिए। मेरेन और तेमजेन आ रहे हैं। कमरा खोल दीजिए। पानी खौल रहा है। जो गये सो नहीं आये। जौ की रोटी खाओ।

आए/आइए

आए — आइए खाए — खाइए खाएगा — खाइएगा

वह आए तो मैं जाऊँगा। जब आप मेरे घर आइए तो कृपया अपनी कलम लेते आइए।

अनुनासिक/निरनुनासिक

सास — साँस वही —वहीं कहा — कहाँ

मेरी सास चल रही है। मेरी साँस चल रही है। वह वही आदमी है जो वहीं था। उसने कहा कि वह कहीं नहीं जायेगा।

परिशिष्ट २

प्रश्नावली

(छात्र-छात्राओं के लिए)

(१) नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

(क) **उदाहरण :** लड़का घर जाता है—लड़के घर जाते हैं ।

१. घोड़ा दौड़ता है । ______________

२. एक आदमी घर में बैठा है । ______________

३. साधु सत्य बोलता है । ______________

४. कवि कविता बनाता है । ______________

(ख) **उदाहरण :** लड़की स्कूल जाती है—लड़कियाँ स्कूल जाती हैं ।

१. बकरी घास खाती है । ______________

२. माता बच्चे को प्यार करती है । ______________

३. लता पेड़ पर फैली है । ______________

४. पुत्रवधु सास की सेवा करती है । ______________

(ग) **उदाहरण :** लड़का खाना खाता है—लड़के ने खाना खाया ।

१. घोड़ा घास खाता है । ______________

२. आदमी भात खाता है । ______________

३. साधु सत्य कहता है । ______________

४. कवि कविता बनाता है । ______________

(घ) **उदाहरण :** लड़की चिट्ठी लिखती है—लड़की ने चिट्ठी लिखी ।

१. बकरी घास खाती है । ______________

२. माता बच्चे को प्यार करती है । ______________

३. लता पैर पकड़ती है । ______________

४. पुत्रवधु सास की सेवा करती है । ______________

(ङ) **उदाहरण :** लड़के खाना खाते हैं—लड़कों ने खाना खाया ।

१. घोड़े चना खाते हैं । ______________

२. आदमी दूध पीते हैं । ______________

३. साधु सत्य कहते हैं । ______________

४. कवि कविता बनाते हैं । ______________

(च) **उदाहरण :** लड़कियाँ भात खाती हैं—लड़कियों ने भात खाया ।

१. बकरियाँ घास खाती हैं । ————————

२. माताएँ बच्चों को प्यार करती हैं । ————————

३. लताएँ पैर पकड़ती हैं । ————————

४. पुत्रवधुएँ सास की सेवा करती हैं । ————————

(छ) उदाहरण के अनुसार लिंग बदलिए :

उदाहरण :

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**
पुत्र	पुत्री
कुत्ता	कुतिया
सुनार	सुनारिन
लाला	ललाइन
ऊँट	ऊँटनी
पिता	माता
भैंसा	भैंस

१. लड़का ————————

२. चूहा ————————

३. धोबी ————————

४. बाघ ————————

५. नौकर ————————

६. दारोगा ————————

७. शेर ————————

८. भाई ————————

६. बहनोई ————————

(२) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

I go to school. We go to school. Thou art great ! You go to school. He goes to school. She goes to school. They go to school. Our headmaster is a religious man. He loves us.

(३) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

उदाहरण : (क) हम चल नहीं सकते—हमसे चला नहीं जाता ।

१. मैं चल नहीं सकता । ————————

२. तू चल नहीं सकता । ————————

३. तुम चल नहीं सकते । ————————

४. यह चल नहीं सकता । ____________

५. वह चल नहीं सकता । ____________

६. ये चल नहीं सकते । ____________

७. वे चल नहीं सकते । ____________

८. कौन चल नहीं सकता ? ____________

९. जो चल नहीं सकता । ____________

१०. आप चल नहीं सकते । ____________

उदाहरण : (ख) मैं खाना खाता हूँ—मैंने खाना खाया ।

१. हम खाना खाते हैं । ____________

२. तू खाना खाता है । ____________

३. तुम खाना खाते हो । ____________

४. यह खाना खाता है । ____________

५. वह खाना खाता है । ____________

६. वे खाना खाते हैं । ____________

७. ये खाना खाते हैं । ____________

८. जो खाना खाता है । ____________

९. सो खाना खाता है । ____________

१०. कौन खाना खाता है ? ____________

११. आप खाना खाते हैं । ____________

१२. कोई खाना खाता है । ____________

(४) **उदाहरण** : (क) मैं जाता हूँ—मुझे जाने दो ।

१. हम जाते हैं । ____________

२. कोई (एकवचन) जाता है । ____________

३. कोई (बहुवचन) जाते हैं । ____________

४. यह जाता है । ____________

५. ये जाते हैं । ____________

६. वह जाता है । ____________

७. वे जाते हैं । ____________

८. आप जाते हैं । ____________

उदाहरण : (ख) मैं कलम रखता हूँ—वह मेरी कलम है ।

१. हम कलम रखते हैं । ____________

२. तू कलम रखता है । ____________

३. तुम कलम रखते हो । ____________

४. यह कलम रखता है। ——————
५. ये कलम रखते हैं। ——————
६. वह कलम रखता है। ——————
७. वे कलम रखते हैं। ——————
८. कौन कलम रखता है? ——————
९. जो कलम रखता है। ——————
१०. सो कलम रखता है। ——————
११. आप कलम रखते हैं। ——————
१२. कोई कलम रखता है। ——————
१२. कोई कलम रखते हैं। ——————

(५) उदाहरण के अनुसार कोष्ठकों में दिये गये विशेषणों के उचित रूप से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

उदाहरण : ———घोड़े दौड़ते हैं। (लाल)   लाल घोड़े दौड़ते हैं।

१. ————लड़के खेलते हैं। (छोटा)
२. ————लड़के खेलते हैं। (बड़ा)
३. ————कलम है। (नकली)
४. ————खेत अच्छे लगते हैं। (हरा)

(६) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

(क) **उदाहरण** : मैं पुस्तक पढ़ता हूँ—मैं पुस्तक पढ़ूँ।

१. वह बाजार जाता है। ——————
२. हम खाना खाते हैं। ——————
३. तू भात खाता है। ——————
४. तुम भात खाते हो। ——————
५. वे बाजार जाते हैं। ——————
६. आप गाना गाते हैं। ——————

(ख) उदाहरणों के अनुसार कोष्ठकों में दिये गये क्रियाओं के भविष्यत रूप से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

उदाहरण : तू (पुल्लिग) घर————(जाना)
तू घर जायेगा।
तू (स्त्रीलिंग) घर————(जाना)
तू घर जायेगी।

१. तू (पुल्लिग) भात————(खाना)
२. तुम (,,) भात————(,,)

३. वह (पुल्लिग) भात——————(खाना)
४. मैं (,,) भात——————(,,)
५. हम (,,) फल——————(,,)
६. वे (,,) गाना——————(गाना)
७. आप (,,) गाना——————(,,)
८. मेरेन (,,) लकड़ी——————(काटना)
९. तू (स्त्रीलिंग) भात——————(खाना)
१०. तुम (,,) भात——————(खाना)
११. मैं (,,) भात——————(,,)
१२. वह (,,) भात——————(,,)
१३. हम (,,) फल——————(,,)
१४. वे (,,) गाना——————(गाना)
१५. आप (,,) गाना——————(गाना)
१६. नारोला (,,) लकड़ी——————(काटना)

(ग) कोष्ठकों में दिये गये क्रियाओं के सही रूप से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

१. मैंने एक लड़का——————(देखना)
२. मैंने कई लड़के——————(देखना)
३. मैंने एक लड़की——————(देखना)
४. मैंने कई लड़कियाँ——————(देखना)
५. मैंने एक लड़की को——————(देखना)
६. मैंने कई लड़कों को——————(देखना)

(घ) कोष्ठकों में दिये गये शब्दों के सही रूपों से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

१. ——————कलम दो। (मेरा, मेरे, मेरी)
२. ——————लड़का दौड़ता है। (उसके, उसकी, उसका)
३. ——————लड़कियाँ नाचती हैं। (उसके, उसका, उसकी)
४. ——————कुत्ता भूँकता है। (काले, काला, काली)

(ङ) कोष्ठकों में दिये गये शब्दों के सही रूपों से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

१. घोड़ा —————— है। (काले, काला, काली)
२. घोड़ी —————— है। (काला, काले, काली)
३. कलम —————— है। (अच्छा, अच्छी, अच्छे)
४. घोड़े —————— हैं। (उजला, उजले, उजली)

(च) कोष्ठकों में दिये गये शब्दों के सही रूपों से वाक्य की पूर्ति कीजिए :

१. तेमजेन ने मकान——————बनवाया है। (पक्का, पक्की, पक्के)

२. मेरेन ने इमारत———बनवायी है। (पक्के, पक्की, पक्का)
३. लड़का———आया। (रोता, रोती, रोना)
४. लड़कियाँ———आयीं। (रोता, रोती, रोते)

(७) निम्नलिखित क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(क) आना, उठना, पढ़ना, देखना, देना, बताना, पिटवाना, बनवाना।

(ख) निम्नलिखित सहायक क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
खा लेना, सो जाना, तोड़ डालना, उछल पड़ना, मार देना, खा जाना, गाने लगना, बोल उठना, छीन लेना, सकना, चुकना।

(८) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

(क) **उदाहरण** : मैं घर जाता हूँ—मैं घर जाऊँगा।
१. मैं किताब पढ़ता हूँ। ————————
२. हम सिनेमा देखते हैं। ————————
३. वह ईश्वर की प्रार्थना करता है। ————————
४. अचिला गाना गाती है। ————————
५. तू क्या करता है? ————————

(ख) **उदाहरण** : मैं घर जाता हूँ—मैं घर गया।
१. हम ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। ————————
२. तू कहाँ जाता है? ————————
३. तुम कहाँ जाते हो? ————————
४. नारोला गाना गाती है। ————————
५. आप हिन्दी पढ़ते हैं। ————————

(ग) **उदाहरण** : मैं खाना खाता हूँ—क्या मैं खाना खाऊँ?
१. हम भात खाते हैं। ————————
२. वह किताब पढ़ता है। ————————
३. वे चिट्ठी लिखते हैं। ————————
४. मैं घर से आता हूँ। ————————

(९) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

(क) **उदाहरण**—नोकदेन पुस्तक पढ़ता है—पुस्तक पढ़ी जाती है।
१. मेरेन फल खाता है। ————————
२. नारोला रोटी खाती है। ————————
३. तेमजेन पेड़ काटता है। ————————
४. वह ताला खोलता है। ————————

(ख) **उदाहरण** : वह खा नहीं सकता—उससे खाया नहीं जाता ।

१. मैं उठ नहीं सकता । ______________

२. तुम बैठ नहीं सकते । ______________

३. बच्ची चल नहीं सकती । ______________

४. नारोला सो नहीं सकती । ______________

(१०) (क) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अब ______________

आजकल ______________

कभी-कभी ______________

सोमवार को ______________

यहाँ ______________

ऊपर ______________

आसपास ______________

जैसे ______________

धीरे-धीरे ______________

अचानक ______________

इतना ______________

और ______________

या ______________

किन्तु ______________

तथा ______________

न ______________

वाह ! ______________

अरे ! ______________

हाँ ! ______________

जी ______________

अवश्य ______________

जी नहीं ______________

न ______________

मत ______________

नहीं ______________

ही ______________

भी ______________

तो ————————
तक ————————
भर ————————

(११) (क) कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उदाहरण के अनुसार उपसर्ग जोड़-कर नया शब्द बनाइए :

(सफल, पूर्ण, देश, चैन, हार, मान, गुण, उचित)

उदाहरण : अ + न्याय = अन्याय
उपसर्ग + मूल शब्द = नया शब्द

अ———————— अव————————
अन्———————— अप————————
प्र———————— वि————————
परि———————— बे————————

(ख) कोष्ठक में दिए हुए क्रिया-धातुओं से उदाहरण के अनुसार क्रिया-धातुओं में कृत प्रत्यय जोड़कर कृदन्त शब्द (नया शब्द) बनाइए :

(बिक, बह, पढ़, हँस, भूल, मिल, चल, रट)

उदाहरण : चल (क्रिया-धातु)+अन (कृत प्रत्यय)=चलन (कृदन्त)
क्रिया-धातु+प्रत्यय (कृत) =शब्द (कृदन्त)

—अन —आव
—अन —आई
—आउ —अक्कड़
—ई —आवट

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार मूल शब्दों के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़कर नया शब्द (तद्धितान्त) बनाइए :

(ऊँट, धन, ईमान, जहर, तेल, बूढ़ा, सोना, बोध)

उदाहरण :

धोबी (मूल शब्द) + इन (तद्धित प्रत्यय) = धोबिन (नया शब्द—तद्धितान्त)

मूल शब्द + प्रत्यय (तद्धित) = शब्द (तद्धितान्त)

—इन —आपा
—आर —ई
—ईला —वान
—दार —नी

(घ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार चार शब्द बनाइए :
(माता और पिता, पाप और पुण्य, छोटा और बड़ा, ऊँच और नीच)
उदाहरण : रात और दिन = रातदिन

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(ङ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार मूल शब्द के शुरू में संख्यावाचक शब्द जोड़कर चार शब्द बनाइए :
(दश आनन, तीन नेत्र, पाँच भूत, चार भुजा)
उदाहरण : नौ + रत्न = नवरत्न

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(च) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार चार शब्द बनाइए :
(राजा का पुत्र, देश की भक्ति, देश से निकाला, घोड़े की दौड़)
उदाहरण : राम का राज्य = रामराज्य ।

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(छ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार विशेषण और विशेष्य मिलाकर चार शब्द बनाइए :
(शुभ + अशुभ, परम + आनन्द, आधा + मरा, दो + पट्टा)
उदाहरण : पीत + अम्बर = पीताम्बर

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(ज) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार अव्यय और मूल शब्द मिलाकर चार शब्द बनाइए :
(यथा + विधि, भर + सक, वि + अर्थ, प्रति + मान)
उदाहरण : प्रति + दिन = प्रतिदिन

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(झ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार दो शब्दों को मिला-कर तीसरे अर्थ देने वाले चार शब्द बनाइए :
(दश + आनन, नील + कंठ, चक्र + पाणि, गज + आनन)
उदाहरण : गिरि + धर = गिरिधर (श्रीकृष्ण)

१. ——————— २. ———————
३. ——————— ४. ———————

(ञ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उदाहरण के अनुसार मिलते-जुलते शब्दों का दो बार प्रयोग करके चार शब्द बनाइए :

(धीरे+धीरे, नए+नए, बीच+बचाव, झन+झन)

उदाहरण : पीछे+पीछे=पीछे-पीछे

गर्म+गर्म =गर्म-गर्म

कूट+काट=कूटकाट

इसी प्रकार आप भी चार शब्द बनाइए :—

१. ________________ २. ________________

३. ________________ ४. ________________

(ट) नीचे लिखे परसर्गों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

ने, को, से, के लिए, का, के, की, रा, रे, री, में, पर, हे

(१२) (क) दिए हुए उदाहरण के आधार पर सरल वाक्यों को मिश्र वाक्यों (Complex Sentences) में बदलिए :

उदाहरण : मैंने दौड़ते हुए लड़के को देखा। (सरल वाक्य)

मैंने देखा कि लड़का दौड़ रहा था। (मिश्र वाक्य)

१. मेरेन ने नाचती हुई लड़की को देखा। (सरल वाक्य)

____

२. पुलिस ने एक खतरनाक डाकू को मार दिया। (सरल वाक्य)

____

३. ईमानदार को सभी चाहते हैं। (सरल वाक्य)

____

४. तुम बस ठहरने के स्थान पर आ जाना। (सरल वाक्य)

____

(ख) दिए गए उदाहरण की तरह संयुक्त वाक्य बनाइए :

उदाहरण—मेरे स्टेशन पहुँचते ही गाड़ी छूट गयी। (सरल वाक्य)

मैं स्टेशन पहुँचा और गाड़ी छूट गयी। (सयुक्त वाक्य)

१. सूर्योदय होने पर प्रकाश फैलने लगा। (सरल वाक्य)

____

२. मेरे आने पर भी तुम नहीं आये। (सरल वाक्य)

____

३. सत्य बोलने से उसकी इज्जत होती है। (सरल वाक्य)

____

४. परमेश्वर की प्रार्थना करने से हमें पाप से मुक्ति मिलेगी। (सरल वाक्य)

____

परिशिष्ट ३

मुक्त-रचना के लिए प्रश्न

प्रश्न १—रूपरेखा के आधार पर चार या पाँच अनुच्छेदों में लेख लिखें।

निबन्ध का शीर्षक : 'आपका गाँव या शहर और उसमें रहने वाले लोग'

रूपरेखा : १. अपने गाँव या शहर का परिचय, नाम, पुराना इतिहास आदि।

२. अपने गाँव या शहर में रहने वाले लोग, उनका धन्धा आदि।

३. भौगोलिक स्थिति।

४. लोगों की संस्कृति, रीति-रिवाज, उनके उत्सव तथा उनके जीने का ढंग।

५. लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए सुझाव।

प्रश्न २—आप अपने एक मित्र जो गौहाटी में रहता हो और जो आपके गाँव/शहर आना चाहता हो, उसके यहाँ लगभग दस वाक्यों का एक पत्र लिखें। आप अपने मित्र को सलाह दीजिए कि वह आपके गाँव कैसे आ सकता है—बसों, रेलों तथा अन्य रास्तों का विवरण दीजिए।

प्रश्न ३—लगभग दस वाक्यों वाला एक अनुच्छेद लिखें कि आपने बड़े दिन की छुट्टी कैसे बितायी?

परिशिष्ट ४

परिचय

(छात्रों के लिए)

---

(१) छात्र/छात्राएँ

१. नाम : ——— ——

२. उम्र : —————

३. मातृभाषा : —————

४. कक्षा : —————

(२) विद्यालय

१. नाम : —————

२. ग्राम : —————

३. मुहल्ला : —————

४. जिला : —————

५. छात्र/छात्राओं के गाँव का नाम जहाँ वे पले हैं —————

६. पिता का नाम : —————

७. पिता का व्यवसाय : —————

८. माँ का व्यवसाय : —————

आवश्यक सूचना :

१. केवल ५, ६, ७ और ८वीं कक्षा के छात्र ही यह प्रश्नावली भरें।

२. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्नों के कई-कई उत्तर दिये गये हैं। केवल सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए।

(१) आपको कक्षा ८वीं तक हिन्दी पढ़नी होती है। लगभग चार वर्षों तक हिन्दी पढ़ने के बाद आपके विचारों में किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है, या हिन्दी के इस ज्ञान का आपके जीवन में क्या उपयोग है ?

१. लोगों के साथ हिन्दी में बातचीत कर सकते हैं। ( )

२. हिन्दी में पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। ( )

३. हिन्दी सीखकर हम हिन्दी प्रदेशों के साथ सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। ( )
४. हिन्दी सीखकर हम में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न होगी। ( )
५. केन्द्रीय सेवाओं में जाने का अवसर मिलेगा। ( )
६. हिन्दी अध्यापक बन सकेंगे। ( )
७. हिन्दी प्रदेशों में जाकर पढ़ने में सुविधा होगी। ( )
८. हिन्दी से हमारे ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होगी। ( )
९. हिन्दी साहित्य और संस्कृति का ज्ञान होगा। ( )
१०. अन्य ——————

(२) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस समय अपनी कक्षा के हिन्दी के पाठ्यक्रम के बारे में आप क्या सोचते हैं?

१. पाठ्यक्रम लक्ष्यों के अनुरूप है। ( )
२. पाठ्यक्रम भाषा का व्यावहारिक ज्ञान देता है। ( )
३. पाठ्यक्रम लक्ष्यों के अनुरूप नहीं है। ( )
४. पाठ्यक्रम केवल पुस्तकीय ज्ञान पर बल देता है। ( )
५. पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत है। ( )
६. बोलचाल की भाषा पर बहुत बल देना चाहिए। ( )

(३) बहुत से लोग हिन्दी को सरल भाषा मानते हैं, कुछ लोग कठिन भाषा कहते हैं। इस बारे में आपका क्या अनुभव है?

१. हिन्दी एक सरल भाषा है। ( )
२. हिन्दी एक कठिन भाषा है। ( )
३. हिन्दी भाषा न कठिन है, न सरल। ( )
४. सर्व-सामान्यजन हिन्दी भाषा बोलते हैं, अतः सरल है। ( )
५. थोड़े से परिश्रम से हिन्दी भाषा सीखी जा सकती है, अतः सरल है। ( )
६. हिन्दी बोलचाल में सरल है, लिखने में कठिन है। ( )
७. हिन्दी सीखने में सरल है, बोलचाल में कठिन है। ( )
८. लिंग आदि व्याकरणिक व्यवस्था के कारण हिन्दी सीखने में कठिन है। ( )
९. हिन्दी में संस्कृत के शब्दों के प्रयोग के कारण वह कठिन है। ( )

(४) हिन्दी पढ़ने के लिए उत्साह है। यह प्रोत्साहन आपको कहाँ से मिलता है?

१. कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता। ( )

२. प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं। ( )
३. माता-पिता से। ( )
४. विद्यालय से। ( )
५. समाज से। ( )
६. सरकार से। ( )
७. अन्य——— ( )

(५) हिन्दी पढ़ने में क्या आपकी रुचि है ?
१. हाँ। ( )
२. नहीं। ( )
३. कह नहीं सकता। ( )

(६) यदि 'हाँ', तो इस रुचि का प्रमुख कारण क्या है ?
१. हिन्दी अखिल भारतीय संस्कृति की भाषा है। ( )
२. हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। ( )
३. हिन्दी और नागा-भाषाओं में सम्बन्ध है। ( )
४. बुद्धि के विकास के लिए हिन्दी आवश्यक है। ( )
५. हिन्दी कहानी पढ़ने में आनन्द आता है। ( )
६. हिन्दी नौकरी दिलाती है। ( )
७. हिन्दी एक सरल और मधुर भाषा है। ( )
८. अन्य ———

(७) यदि 'नहीं', तो इसका प्रमुख कारण क्या है ?
१. रटना पड़ता है। ( )
२. पढ़ने-लिखने से ज्ञान-विज्ञान की आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती। ( )
३. शब्दार्थ या व्याकरण के नियम याद नहीं कर पाते। ( )
४. हिन्दी की कोई उपयोगिता नहीं। ( )
५. हिन्दी पढ़ने के लिए किसी तरह का प्रोत्साहन नहीं मिलता। ( )
६. हिन्दी एक कठिन और कठोर भाषा है। ( )
७. कोई कारण नहीं बता सकता। ( )
८. पाठ्य-पुस्तकें कठिन हैं। ( )
९. अन्य ———

(८) कक्षा के अनेक विषयों और भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी पढ़ने में क्या अनुभव करते हैं ?

१. हिन्दी भी एक महत्वपूर्ण विषय है, इसे पढ़ने में लाभ ही होता है। ( )

२. हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा नहीं है, इसे पढ़ना समय बरबाद करना है। ( )
३. हिन्दी न होती तो दूसरे विषय अच्छी तरह पढ़े जा सकते हैं। ( )
४. हिन्दी से दूसरे विषयों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। ( )
५. अन्य भाषा पढ़ने में हिन्दी से कुछ सहयोग मिलता है। ( )
६. हिन्दी से हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है। ( )
७. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अधिक से अधिक भाषाओं की जानकारी प्राय: लाभदायक है। ( )
८. राष्ट्रीयता और भावात्मक एकता के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। ( )

(९) आपके घर के पड़ोस में या मुहल्ले में आपकी मातृभाषा के अलावा अन्य किस भाषा के बोलने वाले लोग रहते हैं ?

१. नागा-भाषा ( )
२. हिन्दी ( )
३. अंग्रेजी ( )
४. अन्य ( )

(१०) आप स्वयं अपनी मातृभाषा के अलावा और कौन-कौन सी भाषा जानते है ? उस भाषा से सम्बन्धित विभिन्न योग्यताओं का उल्लेख कीजिए।

	समझ सकता हूँ	बोल सकता हूँ	पढ़ सकता हूँ
आओ	( )	( )	( )
अंगामी	( )	( )	( )
सेमा	( )	( )	( )
लोथा	( )	( )	( )
हिन्दी	( )	( )	( )
अंग्रेजी	( )	( )	( )
नागामिज	( )	( )	( )
अन्य	( )	( )	( )

परिशिष्ट ५

विद्यालय-सूची

निम्नलिखित विद्यालयों के छात्रों से प्राप्त उच्चारणिक, व्याकरणिक तथा वर्तनीगत त्रुटियों को अध्ययन का आधार बनाया गया :

१. राजकीय उच्च. विद्यालय, कोहिमा।

२. राजकीय टी. एम. उच्च. विद्यालय कोहिमा।

३. राजकीय उच्च. विद्यालय, मोकोकचुङ।

४. बेप्टिस्ट इंगलिश स्कूल, मोकोकचुङ।

५. राजकीय उच्च. विद्यालय, जुनहेबोतो।

६. केम्ब्रिज होम स्कूल, जुनहेबोतो।

७. राजकीय उच्च. विद्यालय, बोखा।

८. डन वोस्को स्कूल, वोखा।

परिशिष्ट ६

प्रश्नावली

(शिक्षकों के लिए)

परिचय

कृपया अपने और अपने विद्यालय के बारे में आवश्यक जानकारी देने के लिए सम्बन्धित सूचना के आगे कोष्ठक में सही (√) का निशान लगायें और खाली स्थानों में सम्बन्धित सूचना लिखिए :—

१. अध्यापक :

(१) नाम (अगर नाम न लिखना चाहें तो न लिखें)

(२) पुरुष ( ) (३) स्त्री ( )

(४) आयु——वर्ष (५) मातृभाषा

२. विद्यालय :

(क) नाम

(ख) किस प्रकार का है ?

	बालक	बालिका	सहशिक्षा
(१) हाई स्कूल	( )	( )	( )
(२) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	( )	( )	( )
(३) बहुद्देशीय माध्यमिक विद्यालय	( )	( )	( )

(ग) माध्यम क्या है ?

(१) नागा-भाषा ( ) (२) अंग्रेजी ( )

(३) उर्दू ( ) (४) अन्य ( )

(घ) संचालक कौन है ?

(१) सरकार ( ) (२) जिला-परिषद ( )

(३) नगरपालिका ( ) (४) सहायता-प्राप्त ( )

(५) निजी ( ) (६) अन्य ( )

(ङ) कहाँ स्थित है ?

(१) गाँव ( )——————नाम

(२) जिले या शहर में ( )——————

(३) तालुक्के या टाउन में ( )——————

(४) राजधानी में ( )——————

आवश्यक सूचना

१. केवल पाँचवीं, छठवीं, सातवीं और आठवीं कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापक इस प्रश्नावली को भरें :

१. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

२. कुछ प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में हैं। केवल अपने उत्तर के आगे सही (√) का निशान लगाएँ; जैसे—

१. हाँ (√), २. नहीं (√)

३. कह नहीं सकता। (√)

४. कुछ प्रश्नों के बहुविकल्पीय उत्तर दिये गये हैं। केवल एक उत्तर के आगे सही (√) कीजिए; जैसे—

१. ( ), २. ( ) ३. ( )

५. कहीं-कहीं एक से अधिक उत्तर हो सकते हैं; जैसे—

१. ( ), २. ( ), ३. ( ) ४. ( )

(कृपया अध्यापक उत्तर पर ही निशान लगायें।)

६. प्रश्नों के अन्त में 'अन्य' या 'अन्य कोई' में आपको अपनी ओर से लिखना है। वहाँ स्पष्ट और सुन्दर लिखिए।

(**विशेष नोट**—प्रश्नों के उत्तर में जहाँ-जहाँ छात्रों की त्रुटियों के नमूने आप देना चाहते हैं उन्हें अन्त में अतिरिक्त स्थान में या अलग कागज पर लिखें।)

१. आजकल लोगों की शिकायत है कि अधिक संस्कृत शब्द आ जाने से हिन्दी कठिन होती जा रही है। आपके अनुभव के अनुसार हिन्दी का कौन-सा रूप छात्रों के लिए सरल होगा ?

१. संस्कृतनिष्ठ ( )

२. उर्दू (अरबी-फारसी) निष्ठ ( )

३. जिसमें संस्कृत और उर्दू शब्दों का समान व्यवहार होता है ( )

४. अन्य——————

२. आप इस सरलता के लिए मुख्य कारण क्या समझते हैं ?

१. छात्र उन शब्दों को पहले से ही जानते हैं। ( )

२. सिखाने में हमें सुविधा होती है। ( )

३. छात्रों को सीखने में सुविधा होती है। ( )
४. हमारी अपनी संस्कृति के निकट होता है। ( )
५. हिन्दी का यह रूप हमारी अपनी भाषा के निकट होता है। ( )
६. कोई अन्य————

३. हिन्दी के कुछ स्वरों का उच्चारण नागा-भाषाभाषी छात्र ठीक नहीं कर पाते। नागा-भाषाभाषी छात्र किन स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं, कुछ उदाहरण दीजिए।

स्वर :

अ	( )	१.————
आ	( )	२.————
इ	( )	३.————
ई	( )	४.————
उ	( )	५.————
ऊ	( )	६.————
ए	( )	७.————
ऐ	( )	८.————
ओ	( )	९.————
औ	( )	१०.————

४. महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में और लिखने में नागा-भाषाभाषी छात्र कुछ त्रुटियाँ करते हैं। आपके अनुभव के अनुसार कहाँ-कहाँ ऐसी त्रुटियाँ होती हैं, कुछ उदाहरण दीजिए।

व्यंजन :

ध्वनियाँ	उच्चारण	लेखन	त्रुटियों के उदाहरण
१. ख	( )	( )	१. ————
२. घ	( )	( )	२. ————
३. छ	( )	( )	३. ————
४. झ	( )	( )	४. ————
५. थ	( )	( )	५. ————
६. ध	( )	( )	६. ————
७. फ	( )	( )	७. ————
८. भ	( )	( )	८. ————

९. अन्य————

५. ट वर्ग के उच्चारण और लेखन में नागा-भाषाभाषी छात्र त्रुटियाँ करते हैं। अपने अनुभव के आधार पर कुछ उदाहरण दीजिए।

ध्वनियाँ	उच्चारण	लेखन	त्रुटियों के उदाहरण
१. ट	( )	( )	१. ————
२. ठ	( )	( )	२. ————
३. ड	( )	( )	३. ————
४. ढ	( )	( )	४. ————
५. ण	( )	( )	५. ————

६. नागा-भाषाभाषी छात्र कुछ सघोष व्यंजनों के भी उच्चारण और लेखन में त्रुटियाँ करते हैं। अपने अनुभव के आधार पर कुछ उदाहरण दीजिए।

ध्वनियाँ	उच्चारण	लेखन	त्रुटियों के उदाहरण
१. ग	( )	( )	१. ————
२. ज	( )	( )	२. ————
३. द	( )	( )	३. ————
४. ब	( )	( )	४. ————
५. अन्य ————			

७. हिन्दी को छोड़कर अन्य भाषाओं में अरबी-फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं की कुछ ध्वनियाँ नहीं हैं। इसलिए हिन्दी सीखने में यह एक समस्या है। आपके छात्रों को किन ध्वनियों को सिखाने में आपको कठिनाई होती है :

ध्वनियाँ	उच्चारण	लेखन	त्रुटियों के उदाहरण
१. क़	( )	( )	१. ————
२. ख़	( )	( )	२. ————
३. ग़	( )	( )	३. ————
४. ज़	( )	( )	४. ————
५. फ़	( )	( )	५. ————
६. ड़	( )	( )	६. ————
७. ढ़	( )	( )	७. ————
८. ऑ	( )	( )	८. ————
९. आ	( )	( )	९. ————
१०. अन्य	( )	( )	१०. ————

८. देखने में आया है कि नागा-भाषाभाषी छात्र हिन्दी के शब्द लिखने में अनेक प्रकार की वर्तनी की त्रुटियाँ करते हैं। आपके छात्र मुख्य रूप से कहाँ-कहाँ त्रुटियाँ करते हैं :

१. संयुक्ताक्षर लिखने में (जैसे—गुप्त को गुत्प) ( )
२. ध्वनि का भ्रम (भारत—बारत, ऊँट—बूँट) ( )
३. पंचमाक्षर का भ्रम (रग—रंग, मंजन—मजन) ( )
४. स्वर-लोप (बकरी—बक्री, सकता—सक्ता) ( )
५. ह्रस्व-दीर्घ (स्त्री—स्त्रि, कल—काल) ( )
६. महाप्राण ध्वनियाँ (घर—गर, खेत—केत) ( )

९. हिन्दीतर भाषाभाषियों की शिकायत है कि हिन्दी के शब्दों की लिंग-व्यवस्था बहुत कठिन है। आप इस सन्दर्भ में कहाँ-कहाँ सिखाने की कठिनाइयाँ अनुभव करते हैं ?

१. संज्ञाओं के लिंग बताने में (पुलिस, घी, दही) ( )
२. विशेषण और विशेष्य में (अच्छी पुस्तक, अच्छा ग्रन्थ) ( )
३. विभक्ति चिह्नों में
(उसकी आँख, उसका कान, मेरी नाक, मेरा मुँह) ( )
४. कर्ता और क्रिया में (घोड़ा जाता है, बकरी जाती है) ( )
५. कर्म और क्रिया में (दो आम खाये, दो रोटियाँ खायीं) ( )
६. अन्य————— ( )

१०. हिन्दी में वचन की व्यवस्था भी कुछ कठिन मानी गई है। अनुभव के आधार पर कठिनाइयाँ बतायें :—

१. शब्दों के वचन-परिवर्तन में
(घण्टा-घण्टे, किताब-किताबें, हाथी-हाथी) ( )
२. विशेषण और विशेष्य में (अच्छा लड़का, अच्छे लड़के) ( )
३. विभक्ति चिह्नों में (आपका कपड़ा, आपके कपड़े) ( )
४. कर्ता और क्रिया में (बच्चा रोता है, बच्चे रोते हैं) ( )
५. कर्म और क्रिया में (रोटी खायी, रोटियाँ खायीं) ( )
६. अन्य —————

११. हिन्दी और नागा-भाषाओं में सर्वनामों के प्रयोग और रूप-रचना में बहुत भिन्नताएँ हैं। आपके अनुभव के अनुसार नागा-भाषाभाषी छात्रों की हिन्दी के सर्वनामों के प्रयोग तथा रूप-रचनागत त्रुटियाँ कौनसी हैं :—

	सर्वनाम	प्रयोग	रचना	त्रुटियों के उदाहरण
१.	मैं	( )	( )	१. —————
२.	हम	( )	( )	२. —————
३.	तू	( )	( )	३. —————
४.	तुम	( )	( )	४. —————

५. वह ( ) ( ) ५. ——————
६. वे ( ) ( ) ६. ——————
७. आप ( ) ( ) ७. ——————
८. अन्य ——————

१२. हिन्दी में अपने शब्दों के अलावा अन्य स्रोतों से आये हुए अन्य शब्द भी हैं। लिंग पहचानने या सिखाने की दृष्टि से आप किस स्रोत से आये हुए शब्द को अधिक कठिन मानते हैं ?

१. हिन्दी के अपने शब्द (बात, घर, औरत, लड़का) ( )
२. उर्दू से आये हुए शब्द (किताब, पाजामा, कलम, कमीज) ( )
३. अंग्रेजी से आये हुए शब्द (पोलिस, स्टेशन, कार्ड, पैन, फिल्म) ( )
४. संस्कृत से आये हुए शब्द (वायु, आयु, आय) ( )
५. अन्य ——————

१३. हिन्दी के विभक्ति चिह्नों का प्रयोग अनिश्चित है। अपने छात्रों को हिन्दी सिखाने में किन-किन विभक्ति चिह्नों में आपको अधिक कठिनाई होती है ?

१. ० ( )
२. ने ( )
३. को ( )
४. से ( )
५. के द्वारा ( )
६. में ( )
७. पर ( )
८. का, की, के ( )
९. रा, रे, री ( )
१०. अन्य ——————

१४. हिन्दीतर भाषाभाषी हिन्दी की क्रियाओं के कई रूपों के प्रयोग में त्रुटियाँ करते हैं ? जैसे—'लिखता रहा हूँ' को 'लिख रहा हूँ' लिखते हैं। नीचे कुछ क्रिया के रूप दिये गये हैं। आपके छात्र प्रायः कहाँ-कहाँ त्रुटियाँ करते हैं या सिखाने में आपको कहाँ-कहाँ कठिनाई होती है ?

१. लिखता रहा हूँ। ( )
२. यदि वह लिखता होता तो——————
३. यदि वह लिखता हो, तो—————— ( )
४. यदि वह लिख रहा होता तो——————
५. यदि वह लिख रहा हो, तो—————— ( )

६. यदि उसने लिखा होता, तो————
७. यदि उसने लिखा हो, तो———— ( )
८. शायद वह लिखता हो।
९. वह लिखता होगा। ( )
१०. संभव है वह लिखे।
११. शायद वह लिख रहा हो। ( )
१२. शायद वह लिख रहा होगा।
१३. शायद उसने लिखा होगा। ( )
१४. आप जाएँ/जाइए।
१५. अन्य————

१५. किस प्रकार के वाक्यों को सिखाने में आपको अधिक कठिनाई होती है या छात्र त्रुटियाँ करते हैं ?

१. हम खा चुके। ( )
२. हमने नहीं खाया। ( )
३. तुम खाओ। ( )
४. क्या तुम खा रहे हो ? ( )
५. अरे ! तुम तो लिखने ही जा रहे हो। ( )
६. उसने खा लिया होगा। ( )
७. तुम अपने कार्य में सफल रहो। ( )
८. यदि तुम लिखो तो मैं भी लिखूँ। ( )
९. अन्य————

१६. वाच्य सम्बन्धी हिन्दी की अनेक रचनाएँ हिन्दीतर भाषा-भाषियों के लिए कठिन मानी जाती हैं। सीखने या सिखाने की दृष्टि से नीचे दी गयी रचना में आपको कौन सी रचना कठिन लगती है ?

१. वह हँस रहा है। ( )
२. वह मुझे पुस्तक देता है। ( )
३. राम ने पुस्तक पढ़ी। ( )
४. राम ने पुस्तकें पढ़ीं। ( )
५. वह मुझे चोर लगता है। ( )
६. राम ने श्याम को मारा। ( )
७. राम को बुखार है। ( )
८. तुम्हारा काम अवश्य किया जायेगा। ( )
९. उससे चला नहीं जाता। ( )

१०. राम से मोहन की चिट्ठी पढ़ी नहीं जाती । ( )
११. आज के समारोह में अवश्य पहुँचा जायेगा । ( )

१७. सिखाने की दृष्टि से नीचे लिखे मिश्र वाक्य बनाने के प्रयोगों में सबसे अधिक कठिन प्रयोग कौन-कौन से हैं ?

१. जो-सो ( ) जो कमायेगा सो खायेगा ।
२. जैसे-वैसे ( ) जैसे वे मेरे घर आये, वैसे आप चले गये ।
३. जिसकी-उसकी ( ) जिसकी लाठी उसकी भैंस ।
४. जितना-उतना ( ) जितना आप परिश्रम करेंगे, उतना पायेंगे ।
५. ज्योंही-त्योंही ( ) ज्योंही स्टेशन पहुँचा त्योंही] गाड़ी चल दी ।
६. जहाँ-वहाँ ( ) जहाँ आप जायेंगे, वहाँ में भी जाऊँगा ।
७. जब-तब ( ) जब आप जायेंगे, तब मैं भी जाऊँगा ।
८. जहाँ तक-वहाँ तक ( ) जहाँ तक तुम्हें ज्ञात हो जीप वहाँ तक चलेगी ।
९. जब तक-तब तक ( ) जब तक आप परिश्रम नहीं करेंगे तब तक आपको सफलता नहीं मिलेगी ।
१०. जब-जब तब-तब ( ) जब-जब देश में भूकम्प आया है, तब-तब जानमाल का खतरा हुआ है ।
११. अन्य————

१८. नीचे लिखे निम्न वाक्य के प्रयोग में सिखाने की दृष्टि से सबसे अधिक कठिन प्रयोग कौन से हैं ?

१. कि——— ( ) वह चाहता है कि उसे हिन्दी बोलना शीघ्रातिशीघ्र आ जाय ।

१९. संयुक्त वाक्य बनाने के प्रयोगों को सिखाने में आप कहाँ-कहाँ कठिनाई अनुभव करते हैं ?

१. और——— ( ) मोहन बाजार जायेगा और तेमजेन लकड़ी काटने जंगल जायेगा ।
२. या——— ( ) आप जहाँ जायेंगे मैं वहाँ जाऊँगा ।
३. ही———वरन्——— ( ) तुम ही नहीं वरन् मैं भी जाऊँगा ।
४. न———न——— ( ) न वह आया न मैं बाजार गया ।
५. या तो———या——— ( ) या तो आप माँस खाइए या दूध पीजिए ।

६. परन्तु———— ( ) मैं कल ही आने वाला था परन्तु आ न सका ।

७. किन्तु———— ( ) मैं बीच में बाहर चला जाऊँगा किन्तु तुम आ जाना ।

८. इसलिए———— ( ) आप इस पर विश्वास नहीं करते इसलिए कष्ट होता है ।

२०. सिखाने की दृष्टि से सबसे कठिन युग्म कौन से हैं ?

१.१ जहाँ-जहाँ ( ) २. जहाँ-तहाँ ( )
२.१ जैसे-जैसे ( ) २. जैसे-तैसे ( )
३.१ जब-जब ( ) २. जब-तब ( )
४.१ ज्यों-ज्यों ( ) २. ज्यों-त्यों ( )
५.१ जहाँ-जहाँ ( ) २. जहाँ-तहाँ ( )
६.१ कहीं-कहीं ( ) २. कहीं न कहीं ( )
७.१ ज्यों-त्यों ( ) २. ज्यों का त्यों ( )
८.१ जब-जब ( ) २. जब का तब ( )
९.१ किसी-किसी ( ) २. किसी न किसी ( )
१०.१ जहाँ-तहाँ ( ) २. जहाँ का तहाँ ( )
११. अन्य कोई————

२१. सिखाने की दृष्टि से प्रयुक्त सर्वनामों से बने विशेषण के रूपों में सबसे अधिक कठिन रूप कौन से हैं ?

१.१ मैंने ( ) २. मुझ ( )
२.१ यह आदमी ( ) २. इस आदमी को ( )
३.१ ये आदमी ( ) २. इन आदमियों ने ( )
४.१ वह मनुष्य ( ) २. उस मनुष्य को ( )
५.१ वे लड़के ( ) २. उन लड़कों को ( )
६.१ तू ने ( ) २. तुझ ( )
७.१ जो व्यक्ति ( ) २. जिस व्यक्ति से ( )
८.१ कोई काम ( ) २. किसी काम को ( )
९.१ कौन मित्र ( ) २. किस मित्र से ( )
१०.१ अन्य कोई————

२२. मातृभाषा और अंग्रेजी के अलावा यदि आपके छात्र अन्य कोई भाषा जानते हैं तो हिन्दी सिखाने में इस ज्ञान से कोई सुविधा होती है ?

१. हाँ ( ), २. नहीं ( ), ३. कह नहीं सकता ( )

२३. यदि 'हाँ', तो भाषा की किस योग्यता को सिखाने में आप इस सुविधा का उपयोग कर रहे हैं ?

१. उच्चारण ( )
२. शब्दावली ( )
३. व्याकरण ( )
४. लेखन ( )
५. सामान्य भाषा का व्यवहार ( )
६. संस्कृति का परिचय ( )
७. अन्य कोई————————

२४. यह माना जाता है कि अधिक भाषाओं का ज्ञान किसी नयी भाषा को सीखने में बाधक भी है। आपके जो छात्र अनेक भाषाएँ जानते हैं, उन भाषाओं का उनके हिन्दी सीखने पर क्या बुरा प्रभाव पड़ रहा है ?

१. हिन्दी का उच्चारण कभी-कभी गलत हो जाता है। ( )
२. हिन्दी बोलते समय उस भाषा के शब्द आ जाते हैं। ( )
३. हिन्दी सीखते समय उस भाषा की वर्तनी आ जाती है। ( )
४. वाक्य-रचना में व्याकरण की त्रुटियाँ हो जाती हैं। ( )
५. अन्य कोई————————

२५. हिन्दी पढ़ने और सीखने में छात्र बहुत सी सामान्य त्रुटियाँ करते हैं ? आप बताइए कि ये त्रुटियाँ मुख्य रूप से किस-किस कारण से होती हैं ?

१. हिन्दी भाषा का व्याकरण सही न जानने के कारण ( )
२. शब्दों के सही रूप और अर्थ न समझने के कारण ( )
३. मातृभाषा के प्रभाव के कारण ( )
४. भूल के कारण ( )
५. गलत शिक्षण के कारण ( )
६. भ्रम के कारण ( )
७. अन्य————————

२६. यदि आप मानते हैं कि मातृभाषा के प्रभाव के कारण अधिक त्रुटियाँ होती हैं तो यह बताइए कि मातृभाषा का प्रभाव सबसे अधिक हिन्दी के किस पक्ष पर पड़ता है ?

१. उच्चारण ( )
२. वर्तनी ( )
३. अनुतान ( )
४. व्याकरण ( )

५. शैली ( )
६. अन्य————————

२७. इन त्रुटियों को सुधारने का सबसे अच्छा तरीका आप क्या मानते हैं ?
१. अभ्यास के द्वारा ( )
२. त्रुटियों का कारण बताकर ( )
३. धीरे-धीरे अपने आप सुधार होगा ( )
४. सुधारना बहुत मुश्किल है ( )
५. सुधारी नहीं जा सकतीं ( )
६. अन्य कोई————————

२८. छात्र जब आपके साथ हिन्दी में बातचीत करते हैं या कोई हिन्दी की किताब पढ़ते हैं, तो क्या आप यह अनुभव करते हैं कि पहले वे अपनी मातृभाषा में सोचते हैं और तब उसका अनुवाद करके हिन्दी में बोलते हैं या लिखते हैं ?
१. हाँ ( ), २. नहीं ( ), ३. कह नहीं सकता

२९. यदि 'हाँ', तो इस अनुवाद-प्रक्रिया का मुख्य कारण क्या है ?
१. आदत ( )
२. हिन्दी में सोचने का अभ्यास नहीं है ( )
३. वातावरण नहीं है ( )
४. अन्य————————

३०. हिन्दी पढ़ाते समय क्या आप अनुभव करते हैं कि आप किसी दूसरी संस्कृति की भाषा पढ़ रहे हैं ?
१. हाँ ( ), २. नहीं ( ), ३. कह नहीं सकता ( )

३१. यदि 'हाँ', तो इसका कारण बताइए :
१. हिन्दी में त्यौहार के नाम भिन्न होते हैं। ( )
२. खान-पान और पहनाव की चीजें अजनवी होती हैं। ( )
३. नृत्य, गायन और वाद्य-यन्त्रों के नाम नये होते हैं। ( )
४. धार्मिक और पूजा-पाठ की विधियाँ समझ में नहीं आतीं। ( )
५. तीर्थस्थान, मन्दिर आदि अपरिचित होते हैं। ( )
६. अन्य कोई कारण————————

३२. "राष्ट्रीय चेतना को और भी गहरा बनाने के लिए विशेष रूप से हमारी सांस्कृतिक विरासत का फिर से मूल्यांकन करना होगा।" (डॉ. कोठारी) क्या आप इस वक्तव्य से सहमत हैं ?
१. हाँ ( ), २. नहीं ( ), ३. कह नहीं सकता ( )

३३. यदि 'हाँ', तो बताइए कि इस मूल्यांकन के लिए आप किस विषय का अध्ययन सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं ?

१. भारतीय इतिहास ( )

२. भारतीय धर्म और दर्शन ( )

३. भारतीय कला ( )

४. भारतीय साहित्य और भाषाएँ ( )

५. विज्ञान ( )

६. अन्य————————

परिशिष्ट ७

उच्चारणिक त्रुटियाँ

स्वर ध्वनियाँ

अ → आ	वह आमर (अमर) है।
	कमाल (कमल) का फूल अच्छा है।
इ → ई	ईनाम (इनाम) पाओ।
	कवीता (कविता) सुनो।
	प्रती (प्रति) दिन काम करो।
उ → ऊ	दूक (दुख) मत मानो।
	कोहिमा बहूत (बहुत) अच्चा सहर है।
	साधू (साधु) आते हैं।
ई → इ	वह तिन (तीन) दिन के बाद आया।
	वह गरिब (गरीब) है।
ऊ → उ	दिल्ली दुर (दूर) है।
	कजुर (खजूर) काओ।
	नोकदेन लराकु (लड़ाकू) है।
अ → ओ	सोबेरे (सबेरे) आओ।
	कोई खोबर (खबर) नहीं है।
अ → आ ← अ	वह वपास (वापस) नहीं आया।
ए → इ	वह सब्जी बिचता (बेचता) है।
	जलिबी (जलेबी) लाओ।
ऐ → इ	तुम इसा (ऐसा) मत करो।
ऐ → ए	वह पेदल (पैदल) जाता है।
	साँप विषेला (विषैला) है।
ओ → औ	वह ओरत (औरत) है।
	सरोता (सरौता) लाओ।
	सो (सौ) रुपये दो।

इए → ए	मेरे गर आए (आइए) ।
आ → का ह्रास	वह गर से सामान लेया (ले आया) ।
अउ → औ	ओषध (अउषधि/औषधि) काओ ।
अइ → ए	भेया ! (भइया/भैया) इदर आइए ।
अन्य	लजीले → लाजले
	कौवा → काआ
	किताब → कताब
	देखा → दखा

अनुनासिक ध्वनियाँ

अनुनासिक → निरनुनासिक	मेरा आचल (आँचल) पकरो ।
	न्रीनिमो गर पहुच (पहुँच) गया ।
	वह कहा (कहाँ) गया ?
अनुनासिक → नासिक्य	चाँद (चांद) चमकता है ।
	छलाँग (छलांग) लगाओ ।

व्यंजन ध्वनियाँ

भ → ब	बात (भात) पकाओ ।
	साँबर (साँभर) काओ ।
	इसमें कोई लाब (लाभ) नहीं है ।
ध → द	मेरेन दनी (धनी) है ।
	यह विदवा (विधवा) औरत है ।
	मगद (मगध) का राजा अच्चा है ।
झ → ज	जरना (झरना) बहता है ।
	उसे कुच नहीं सूजता (सूझता) ।
	मेरी समज (समझ) में नहीं आता ।
घ → ग	मेरे गर (घर) आओ ।
	जंगल सगन (सघन) है ।
	जंगल में बाग (बाघ) हैं ।
फ → प	पल (फल) काओ ।
	यह कपन (कफन) का कपड़ा है ।
	यह गप (गफ) कपड़ा है ।
थ → त	नारोला तक (थक) गई ।
	करनी करो, कतनी (कथनी) मत करो ।
	मेरे सात (साथ) आओ ।

छ → च	चल (छल) मत करो ।
	मचली (मछली) काओ ।
	मुजे कुच (कुछ) नहीं चाहिए ।
ख → क	यहाँ कतमल (खटमल) हैं ।
	उसका मुकरा (मुखड़ा) अच्चा है ।
	चक (चख) कर देको ।
प → ब	एक बल (पल) रुको ।
च → ज	तेमजेन जला (चला) गया ।
	मेरेन बजपन (बचपन) में अच्चा था ।
	हमेशा सज (सच) बोलो ।
ग → क	कमला (गमला) में पानी है ।
ट → त	तमातर (टमाटर) काओ ।
	मतर (मटर) मत काओ ।
	नाक में चोत (चोट) लगी है ।
ड → द	बिच्चू ने दस (डस) दिया ।
	यीशु की बात का खंदन (खंडन) मत करो ।
	किसी को दंढ (दंड) मत दो ।
ठ → त/थ	थथेरा (ठठेरा) आया है । ततेरा (ठठेरा) आया है ।
	हमेशा बैंथना (बैठना) अच्चा नहीं ।
	हमेशा बैंतना (बैठना) अच्चा नहीं ।
	आप आथ/आत (आठ) दिन के बाद आइए ।
ढ → द/ध	दक्कन/धक्कन (ढक्कन) कोल दो ।
	मेरेन बोज दोता/धोता (ढोता) है ।
	यह बुद्दि/बुद्धि (बुड्ढी) औरत है ।
श → स	सक्कर (शक्कर) काओ ।
	मसक (मशक) बजाओ ।
	यस (यश) पाओ ।
ड़ → र	लरका (लड़का) आता है ।
	सारामती पहार (पहाड़) बहुत ऊँचा है ।
ढ़ → र्‌ह	लरका किताब पर्‌हता (पढ़ता) है ।
	वीरो ! बर्‌हे (बढ़े) चलो ।
ह → का लोप	वह किस जगा (जगह) है ?

व्यंजन संयोग

क+र	कम (क्रम) थीक करो।
	विकम (विक्रम) आता है।
	शुकवार (शुक्रवार) को मत जाओ।
व+य	वह वयस्त (व्यस्त) है।
	अवय (अव्यय) शब्द पर्हो।
	कर्तवय (कर्तव्य) करो।
ग+ल	उसे गलानी (ग्लानि) हुई।
वष+प	पानी से वाषप (वाष्प) बनता है।
त+य	एक्समस हमारा तयौहार/तयहार (त्यौहार) है।
ष+य	अच्छा मनुषय (मनुष्य) बनो।
ल+म	जुलुम (जुल्म) मत करो।
स+म	किसिम-किसिम (किस्म-किस्म) के लोग यहाँ रहते हैं।
अन्य	कार्पा (कृपा) कीजिए।
	वह घोड़े पर स्वार (सवार) है।
	नागालैण्ड की जन्ता (जनता) अच्छी है।

परिशिष्ट ८

व्याकरणिक त्रुटियाँ

संज्ञा रूप-रचनागत त्रुटियों के नमूने

१. पुंल्लिग आकारान्त संज्ञा शब्द (मूल रूप की त्रुटियाँ)

घोड़ों (घोड़े) घास खाता (खाते) है (हैं)।
बच्चों (बच्चे) गीत गाते हैं।
लड़कों (लड़के) खेलता (खेलते) हैं।
लड़कों (लड़के) खेलना (खेलने) जायेंगे।
मैदान में लड़का (लड़के) खेलते हैं।
आकाश में तारा (तारे) हैं।
लड़कों (लड़के) स्कूल जाता (जाते) हैं।
बच्चों (बच्चे) रोता (रोते) हैं।

२. पुंल्लिग आकारान्त संज्ञा शब्द (तिर्यक रूप की त्रुटियाँ)

घोड़े (घोड़ों) ने चने खाए।
लड़के (लड़कों) ने गाना गाया।
मैं कई रास्ते (रास्तों) से आया।
इस बच्चा (बच्चे) को मिठाई दो।
मेरा बकरा (मेरे बकरे) को मत मारो।
मेरा रास्ता (मेरे रास्ते) से हट जाओ।
एक लड़का (लड़के) ने देखा कि— — — —
बच्चा (बच्चे) को खेलने दो।
वह (उस) लड़का (लड़के) ने कहा — — —
सब कोना-कोना (कोने-कोने) में गाय (गायें) हैं।
घोड़ेओं (घोड़ों) ने चने खाए।
लड़काओं (लड़कों) ने खाना खाया।

३. आकारान्त को छोड़ शेष पुंल्लिग शब्दों (आदमी, साधु, कवि आदि) की मूल रूप की त्रुटियाँ

आदमियों (आदमी) खाना खाता (खाते) हैं ।
साधुओं (साधु) सत्य कहते हैं ।
कवियों (कवि) कविता बनाते हैं ।
विद्यालय में सात शिक्षकों (शिक्षक) हैं ।
विद्यालय में दो सौ छात्रों (छात्र) हैं ।
नागालैण्ड में डाकुओं (डाकू) नहीं हैं ।
चीनी सैनिकों (सैनिक) चारों तरफ थे ।
छात्रों (छात्र) पढ़ते हैं ।
साधुएँ (साधु) सत्य कहते हैं ।
कविएँ (कवि) कविता बनाते हैं ।
नागालैण्ड में छोटे-छोटे शहरे (शहर) हैं ।
शिक्षकें (शिक्षक) अच्छे सिखाते हैं ।
कई आदमियाँ (आदमी) घर में बैठे हैं ।
कवियाँ (कवि) कविता बनाते हैं ।

४. आकारान्त को छोड़ शेष पुंल्लिग शब्दों की तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

साधु (साधुओं) ने सत्य कहा ।
कवि (कवियों) ने कविता बनाई ।
साधों (साधुओं) ने सत्य कहा ।
कविओं (कवियों) ने कविता बनाई ।
साधुएँ (साधुओं) ने सत्य कहा ।
साधूओं (साधुओं) ने सत्य कहा ।
कविएँ (कवियों) ने कविता बनाई ।
आदमी (आदमियों) ने दूध पीया ।
आदमी (आदमियों) के लिए खाना लाओ ।
आदमियाँ (आदमियों) ने भात खाया ।
बहुत आदमीयों (आदमियों) के साथ जाना है ।
आदमीयों (आदमियों) ने दूध पीया ।
गाँव का (के) आदमियाँ (आदमियों) में मेल-मिलाप है ।

५. स्त्री. इकारान्त, ईकारान्त, आकारान्त आदि की मूल रूप की त्रुटियाँ

हमारे गाँव में कई बुढ़िया (बुढ़ियाँ) हैं ।

नागालैण्ड में कई नदी (नदियाँ) हैं ।
यहाँ ऐसी रीती (रीतियाँ) नहीं हैं ।
नागालैण्ड में कई रीति (रीतियाँ) हैं ।
बकरीयों (बकरियाँ) घास खाती हैं ।
दीमापुर में जातो (जातियाँ) बहुत हैं ।
लोग मिठाइयों (मिठाइयाँ) खाते हैं ।
चिड़ियों (चिड़ियाँ) चिड़ियाघर में मिलता (मिलती) हैं ।
दीमापुर में सभी जातियों (जातियाँ) रहता (रहती) हैं ।
रानी अच्छी लड़किया (लड़की) है ।
हमारा (हमारे) गाँव में कई बुढ़िया (बुढ़ियाँ) हैं ।

६. स्त्री. इकारान्त, ईकारान्त, आकारान्त आदि की तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

छुट्टियाँ (छुट्टियों) में हम खेलता (खेलते) हैं ।
नदी (नदियों) के किनारे पेड़ हैं ।
नागालैण्ड का (की) नदियाँ (नदियों) में पानी नहीं है ।
छुट्टियाँ (छुट्टियों) में हम घर जाता (जाते) है (हैं) ।
चिड़ियाँ (चिड़ियों) ने गाना गाया ।
हम रीतीयाँ (रीतियों) के अनुसार काम करता (करते) हैं ।
बकरीयों (बकरियों) ने घास खाया (खाई) ।
कई लड़की (लड़कियों) ने खाना खाया ।

७. स्त्री. शेष शब्दों (लता, वधु, आँख आदि) की मूल रूप की त्रुटियाँ

माता (माताएँ) बच्चे को प्यार करती हैं ।
लता (लताएँ) पैर पकड़ती हैं ।
पुत्रवधुओं (पुत्रवधुएँ) सास की सेवा करती हैं ।
माताओं (माताएँ) बच्चों को प्यार करती हैं ।
लताओं (लताएँ) पैर पकड़ती हैं ।
पुत्रवधु (पुत्रवधुएँ) सास की सेवा करती हैं ।
कवि कविताओं (कविताएँ) बनाते हैं ।
गाय का (की) दो आँख (आँखें) होता (होती) हैं ।
पुत्रवधुयाँ (पुत्रवधुएँ) सास की सेवा करती हैं ।
लतायाँ (लताएँ) पैर पकड़ती हैं ।
लतियों (लताएँ) पैर पकड़ती हैं ।
लते (लताएँ) पेड़ पर फैली हैं ।

८. स्त्री. शेष शब्दों (लता, बधु, आँख इत्यादि) की तिर्यक रूप की त्रुटियाँ

माता (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया ।
लता (लताओं) ने पैर पकड़ा ।
पुत्रवधुएँ (पुत्रवधुओं) ने सास की सेवा की ।
लताएँ (लताओं) ने पैर पकड़ा ।
माताएँ (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया ।
मातायों (माताओं) ने बच्चों को प्यार किया ।
लतायों (लताओं) ने पैर पकड़ा ।
लतों (लताओं) ने पैर पकड़ा ।
पुत्रवधुयों (पुत्रवधुओं) ने सास की सेवा की ।

सर्वनाम रूप-रचनागत त्रुटियाँ

वर्ग १ : पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष + मध्यम पुरुष)

मुझे (मुझ) से चला नहीं जाता । मैं (मुझ) से चला नहीं जाता ।
मेरे (मुझ) से चला नहीं जाता । तुम्हें (तुम) से चला नहीं जाता ।
तुझे (तुझ) से चला नहीं जाता । तू (तुझ) से चला नहीं जाता ।
तूझ (तुझ) से चला नहीं जाता । हम (हमें) जाने दो ।
यह हमका (हमारी) कलम है । तुम्हें (तुम) ने खाना खाया ।
तूझे (तू) ने खाना खाया । तु (तू) ने खाना खाया ।
मुझे (मैं) हिन्दी सीखने दीमापुर आया । मुझे (मैं) नाराज होऊँगा ।
मुझे (मैं) ने आज दिनभर खाना नहीं खाया ।
हम (हमें) दुकान में सब कुछ मिलता है ।
सोमवार को हम (हमें) कोहिमा जाना है । मेरा (मैं) हिन्दी जानता हूँ ।
मेरा (मेरे) स्कूल में आओ । मेरा (मेरे) गाँव में किसान है ।
मेरा का (मेरा) नाम निजोविले है । मेरे (मेरा) गाँव अच्छा है ।
तुझ (तू) ने खाना खाया । तुमें (तुम्हें) पढ़ना चाहिए ।
तुम का (तुम्हारा) घर कहाँ है ? उससे तुम्हें (तुम) बातचीत करोगे ।
यह तुमारा (तुम्हारा) घर है । मुझे (मैं) ग्रेओ के घर जाता हूँ ।
मैं (मुझे) बाजार जाना है । मैं (मुझे) कोहिमा तक जाना है ।
यह हमका (हमारा) घर है । हमें (हम) घर जाऊँगा (जायेंगे) ।
तुझे (तू) क्या करता है ? मेरे (मेरा) गाँव बहुत बड़ा है ।
हम (हमें) बड़ों की सेवा करनी चाहिए । आज मुझे (मैं) बहुत काम करूँगा ।
तुम (तुम्हें) सुबह उठना चाहिए । उससे तुम्हें (तुम) बातचीत करोगे ।
तुमका (तुम्हारा) स्कूल कहाँ है ? तुम (तुम्हारा) नाम क्या है ?

तुझे (तू) ने खाना खाया। मोरा (मेरे) गाँव का नाम लोत्सा है।
हमारे (हमारा) संस्थान अच्छा है। हमको (हमारा) गाँव बड़ा है।
मेरा (मेरे) पिताजी किसान हैं। तुझे (तुझ) ने काम किया।
तु (तू) ने क्या किया? मेरा के (मेरे) घर में आओ।
तुमका (तुम्हारा) नाम क्या है? मोर (मेरा) घर अच्छा है।
मारे (हमारे) पिताजी किसान हैं। वह मेरे (मेरा) छाता है।
वह मेरे (मेरी) भेड़ है। मेरे (मेरा) गाँव बहुत सुन्दर है।
मैं (मुझे) गाँव आछा लगता है। तुमका (तुम्हारा) गाँव कैसा है?
तुम (तुम्हें) क्या चाहिए? हामाके (हमें) कलम दो।
हम (हमें) सताखा जाना है।

वर्ग २ : निश्चयवाचक/अन्य पुरुष, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक सर्वनामों की रूप-रचनागत त्रुटियाँ

यह (इस) ने खाना खाया। यह (इस) से चला नहीं जाता।
वह (उस) ने खाना खाया। वह (उस) को जाने दो।
यह (इसे) मत मारो। यह को (इसे) खाना दो।
वह (उसे) पढ़ने के लिए स्कूल जाना चाहिए। वह (उसे) भात दो।
इन्हें (इन) से चला नहीं जाता। उन्हें (उन) से चला नहीं जाता।
किसी (किस) ने खाना खाया? किसे (किस) ने खाना खाया?
कौन (किस) ने खाना खाया? जो (जिस) से चला नहीं जाता।
जो (जिस) ने काम किया ....। जिस (जिस) से चला नहीं जाता।
वह (उसे) ठीक समय पर उठना चाहिए। वे (उन्हें) भी आना है।
उन्हों (उन) से चला नहीं जाता। उस (उन्हों) (वे) ने खाना खाया।
इस (इन्हों) ने खाना खाया। उन्हें (उन्हों) ने खाना खाया।
वे (इन्हों) ने खाना खाया। यह (इस) पेड़ में बहुत आम हैं।
उसी (उन्हें) भी आना है। इसी (इसे) ठीक समय पर उठना चाहिए।
वह (उस) गाँव में विद्यालय हैं। वे (उन्हें) ठीक समय पर उठना चाहिए।
इस (इसे) जाने दो। किस (किसे) खाना है?
उस (उसे) जाने दो। उन (उन्हें) जाने दो।
वह (वे) हमें प्यार करते हैं। वह (उसे) नेपाली भाषा आती है।
इन्हों (इन) से चला नहीं जाता। उन्हों (उन) से चला नहीं जाता।
उन्हों (उन्हें) जाने दो। यह इन्हों (इन) की कलम है।
उन्हों (इनने) खाना खाया। ये (इन) ने खाना खाया।
वे (उन) ने खाना खाया। ये (इस) समय मत जाओ।

वह (उस) लड़के ने पानी पिया। वह (उस) फूल का नाम कमल है।
वह (उस) गाँव में स्कूल है। वह (उस) चर्च में लोग प्रार्थना करते हैं।
इस (यह) त्यौहार मनाया जाता है। उस (उसी) समय वह भाग गया।
वह (वे) लोग अभ्यास करते हैं। वह (उस) ने प्रयत्न किया।
वह (उस) ने पूजा की। जब वह (उस) ने सीमा पार की।
वह (उस) ने मिट्टी सिर पर लगाई।

वर्ग ३ : अनिश्चयवाचक सर्वनाम

कोई (किसी) ने खाना खाया। कोई (किसी) को जाने दो।
कोई (किसी) की कलम है। किस (किसी) ने खाना खाया।
किसे (किसी) ने खाना खाया। किसे (किसी) को जाने दो।
कौन (किसी) ने खाना खाया। किसी (किन्हीं) को जाने दो।
किसी (किन्हीं) की कलम है। किन (किन्हीं) को जाने दो।
किस (किन्हीं) की कलम है। कोई (किसी) लड़की ने गाना गाया।
कोई (किसी) ने बाघ मारा। कोई (किन्हीं) को कोहिमा जाना है।
किसा (किसी) से कलम ले लो। किसे (किसी) को मत आने दो।
कोई (किसी) को गाना होगा। किन्हा (किन्हीं) से यह काम होगा।

विशेषण के वर्ग २ (लाल, नकली) के शब्दों के रूप में संज्ञा के लिंग, वचन और कारक विभक्तियों का कोई रूपगत प्रभाव नहीं होता।

नागाभागी छात्रों द्वारा आकारान्त विशेषणों की रूप-रचनागत त्रुटियाँ इस प्रकार हैं :—

कोहिमा बड़ी (बड़ा) शहर है। कोहिमा अच्छी (आछा) शहर है।
छोटी (छोटे) लड़के खेलते हैं। बड़ी (बड़े) लड़के खेलते हैं।
हरी (हरा) खेत अच्छा लगता है। हरी (हरे) खेत अच्छे लगते हैं।
छोटा (छोटी) लड़की खेलती है। नारोला अच्छा (अच्छी) लड़की है।
छोटा (छोटे) लड़के खेलते हैं। बड़ा (बड़े) लड़के खेलते हैं।
हरा (हरे) खेत अच्छे लगते हैं। अच्छी-अच्छी (अच्छे-अच्छे) कपड़ा पहनते हैं।
अपने (अपनी) वेषभूषा बदल ली। ऊँचा (ऊँचे) पहाड़ पर गाँव हैं।
यह लड़की अच्छा (अच्छी) है। हमारा (हमारी) बिल्ली काला (काली) है।
हमारा (हमारे) गुरुजी भला (भले) आदमी हैं।
मेरा (मेरे) पिताजी बुढ़ा (बूढ़े) नहीं हैं।
हमारा (हमारी) माँ पढ़ा-लिखा (पढ़ी-लिखी) नहीं है।
ठंढा (ठंडी) हवा अच्छा (अच्छी) है।
यहाँ छोटा-छोटा (छोटे-छोटे) स्कूल बहुत हैं।

क्रिया-रूपरचना की त्रुटियाँ (काल, वाच्य की दृष्टि से)

तू भात खाएँ (खा)। वह किताब पढ़ो (पढ़े)।
क्या वे चिट्ठी लिखोगे (लिखें) ? वह बाजार गया (जाये)।
हम खाना खाया (खाएँ)। तू भात खाये (खा)।
तुम भात खाया (खाओ)। तुम कलम उठाओं (उठाओ)।
क्या हम भात खायेंए (खायें) ? क्या वह किताब पढ़ेअ ? (पढ़े) ?
क्या मैं घर से आऊँगा (आऊँ) ?
क्या मैं चिट्ठी लिखऊँ (लिखूं) ? मैं क्या करुऊँ (करूँ) ?
हम घर चेलें (चलें)। आप यहाँ बैठइए (बैठिए)।
यहाँ तक पढ़ओ (पढ़ो)। हम मैच देखूंगे (देखेंगे)।
हम मैच देखेंगें (देखेंगे)। वह चलोगा (चलेगा)।
वे मैच देखेगे (देखेंगे)। हम मैच देखेयेंगे (देखेंगे)।
क्या तुम कल सोगे (सोओगे) ? मेरेन लकड़ी काटयेगा (काटेगा)।
आप हिन्दी पढ़ूंगे (पढ़ेंगे) ? मैं किताब पढ़ाऊँगा (पढूंगा)।
वह ईश्वर की प्रार्थना करोगा (करेगा)।
वह ईश्वर की प्रार्थना करोंगा (करेगा)।
मैं किताब पढ़ऊँगा (पढूंगा)। हम सिनेमा देखंगे (देखेंगे)।
हम ईश्वर की प्रार्थना करूँगे (करेंगे)। मैं भात खाओंगा (खाऊँगा)।
हम खेत में जाऊँगे (जायेंगे)। मैं काम करता रहऊँगा (रहूँगा)।
मैं सिनेमा देखऊँगा (देखूंगा)। आप गाना जाएंगे (गायेंगे)।
इतना ही लिखऊँगी (लिखूंगी)। गाँव में आने नहीं देऊँगा (दूंगा)।
हम मैच देखयेंगे (देखेंगे)। जब तक मेरा पेट भरयेगा (भरेगा)।
तब तक मैं खाता रहाऊँगा (रहूँगा)। हम कौन सा पाठ पढ़येंगे (पढ़ेंगे)।
मैं बातें बताओंगा (बताऊँगा)।
वह हाथ मुँह धोइएगा (धोएगा)। मेरेन लकड़ी काटिएगा (काटेगा)।
मैं खाना खाओंगा (खाऊँगा)। कौन-कौन खेल देखना चाहितय (चाहेगा) ?
मैं कोहिमा जाओंगा (जाऊँगा)। मैं जरूर पढ़ऊँगा (पढूंगा)।
मैं यहीं बैठऊँगा (बैठूंगा)। मैं कहानियाँ बताओंगा (बताऊँगा)।
मैं तुमको पिताओंगा (पिटवाऊँगा)।
हमने ईश्वर की प्रार्थना कराया (की)। घोड़ा दौड़ाया (दौड़ा)।
मैंने हिन्दी सीख लेया (लिया)। उसने कमाल कर ढेया (दिया)।
मैं किताब पढ़ना (पढ़ने) जाता हूँ। मैं खेल देखना (देखने) जाता हूँ।
लड़की घर जाने (जा) नहीं सकता (सकती)। मैं दौड़ने (दौड़) नहीं सकता।

वह हिन्दी पढ़ने (पढ़) नहीं सकता ।
हम लोग रूटी (रोटियाँ) खाने (खा) नहीं सकता (सकते) ।
मैं स्कूल पढ़ना (पढ़ने) जाता हूँ ।
विहोतो हमेशा सिनेमा देखना (देखने) जाता है ।

कर्मवाच्य :

फल खाता (खाया) जाता है । रोटी खाता (खाया) जाता (जाती) है ।
फल खा (खाया) जाता है । रोटी खा (खायी) जाती है ।
पेड़ काट (काटा) जाता है । ताला खोल (खुल) जाता है ।
सिनेमा देख्या (देखा) जाता है । ताला खोल्या (खुल) जाता है ।

भाववाच्य :

नारोला से सो (सोया) नहीं जाता । नारोला से सोई (सोया) नहीं जाता ।
मुझसे उठया (उठा) नहीं जाता ।
तुमसे अच्छी तरह बैठया (बैठा) नहीं जाता ।
मुझसे उठाया (उठा) नहीं जाता । मुझसे उठ (उठा) नहीं जाता ।
मुझे (मुझ) से उठाए (उठा) नहीं जाता ।
तुम्हें (तुम) से बैठाए (बैठा) नहीं जाता ।
तुम से बैठ (बैठा) नहीं जाता । बच्चों से चल (चला) नहीं जाता ।
नारोला से सोना (सोया) नहीं जाता । लड़की से हँसना (हँसा) नहीं जाता ।
बच्चों से चलया (चला) नहीं जाता ।
१५ अगस्त को मिठाइयाँ बाँट (बँटी) जाता (जाती) हैं ।

शब्द-रचनागत त्रुटियाँ

उपसर्ग+मूल शब्द की त्रुटियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
अवपूर्ण	अपूर्ण
अपगुण	अवगुण
परिउचित	समुचित
अपचैन	बेचैन

क्रिया धातु+कृत प्रत्यय

अशुद्ध	शुद्ध
हँसाउ	हँसी
भुलाउ	भुलक्कड़
बिकई	बिकाऊ

मूल शब्द + तद्धित प्रत्यय

अशुद्ध	शुद्ध
बुढ़ाई	बुढ़ापा
धनदार	धनवान
सोनापा	सोनार

समास

अशुद्ध	शुद्ध
घोड़ादौड़	घुड़दौड़
पाँचभूत	पंचभूत
आधाभरा	अधमरा
दोपट्टा	दुपट्टा

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग		विकृत रूप
बाघ	>	बाघिन	>	बाघनी, बाघी, बाघाइन, बाघि, बाघीन ।
चूहा	>	चुहिया	>	चुहेया, चुही, चुहियां, चूह्नीनी, चुहि, चुहाइन, चह्यिा, चुहानी ।
धोबी	>	धोबिन	>	धोबिनी, धोबिया, धोबिनी, धोबियाँ, धोबिना, धोब, धोबिइन, धोबनी ।
नौकर	>	नौकरानी	>	नौकरनी, नौकरआनी, नौकरी, नौकररानी ।
दारोगा	>	दरोगाइन	>	दारोगी, दारा, दारोगाया, दरोइन, दारोगानी, दारोगनी, दारोगिनी, दारानी ।
शेर	>	शेरनी	>	शेरानी, शेराइन, शेरयाँ, शरनी, शेरनि, शेरियाँ ।
लड़का	>	लड़की	>	लड़ेकया
भाई	>	बहन	>	बहनी
बहनोई	>	बहन	>	बहनी, बहनियाँ, बहनाइन ।

वाक्यों में मुक्त-रचना के नमूने

बिल्ली चुहेया (चुहिया) पकड़ती है ।
नारोला मेरेन की बहनी (बहन) है ।
मेरा के (मेरे) तीन बहनी (बहनें) हैं ।
हमारा (हमारे) स्कूल में लड़ेकया (लड़कियाँ) बहुत हैं ।
गुरुजी के घर में एक नौकरनी (नौकरानी) है ।
घर में नौकररानी (नौकरानी) काम करती है ।
मेरे एक बेटा और दो बेटिया (बिटिया) है (हैं) ।

सेठनी (सेठानी) घर में हैं ।

मालकनी (मालकिन) से बात करेंगे ।

अविकारी शब्दों की प्रयोगगत त्रुटियाँ

क्रिया-विशेषण (रीतिवाचक)

चर्च अच्छी से (अच्छी तरह) चलता है ।

लोग गाँव में अच्छा से (अच्छी तरह) रहते हैं ।

आप अच्छे से (अच्छी तरह) जाइए ।

घोड़ा मैदान में अच्छा तरह (अच्छी तरह) दौड़ रहा है ।

नाच-गान अच्छा से (अच्छी तरह) करते हैं ।

मेरे गाँव का (के) लोग अच्छा से (अच्छी तरह) रहता (रहते) हैं ।

आप धीरे से (धीरे-धीरे) चलो (चलिए) ।

लड़का किधर में (किधर) गया ?

जिधर में (जिधर) आप जायेगा (जायेंगे), उधर में (उधर) मैं भी जाओंगा (जाऊँगा) ।

मैं घर से पैदल से (पैदल) आता है (हूँ) ।

लड़के तीन सौ से ऊपर (अधिक) हैं ।

समुच्चयबोधक (संयोजक)

यह अच्छा है की (कि) मैं गाँव में रहता हूँ ।

मेरेन आरु (और) तेमजेन बाजार जायेंगे ।

मेरा (मेरे) पिताजी ने कहा की (कि) तुम स्कूल मत जाओ ।

आपसे निवेदन है की·······(कि) ।

किसान ने वोखा से कहा की (कि) तुम घर का काम करो ।

विस्मयादिबोधक

हाय ! (अहा) वह पास हो गया ।

आह ! (आहा) कितना मजा आया ।

सम्बन्धसूचक

नोकदेन का साथ (के साथ) वह नहीं जायेगा ।

माँ घर का बाहर (के बाहर) है ।

स्कूल इतना दूर (इतनी दूर) नहीं है ।

मेरा पास (मेरे पास) आओ ।

सकारात्मक

हाँजी (जी हाँ) मैं जरूर आओंगा (आऊँगा) ।

नकारात्मक

तुम शराब नहीं (मत) खाओ (पीओ)।
गुरुजी, आप पैदल नहीं (न) जाओ/जायँ।

निपात

वह पेट भर खाता है → वह पेट भर हो गया।

परसर्ग प्रयोग की त्रुटियाँ

ने

छूट :

उस लड़का (लड़के) ϕ पानी पिया। हम ϕ ईश्वर की पूजा की।
नारोला ϕ गाना गाया। वह (उस) ϕ घड़ा देखा।
आप ϕ हिन्दी किताब पढ़ी। वह (उस) ϕ ईश्वर की प्रार्थना की।
माँ ϕ हमें प्यार किया। आप ϕ चिट्ठी पढ़ी।
इस ϕ फल खरीदा। लता ϕ पैर पकड़ा।
कवि ϕ कविताएँ बनाई।

अनावश्यक प्रयोग :

गुरुजी (ने) दीमापुर से आया। किस (ने) (कौन) खाना खाते हैं।
हम (ने) ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। मैं (ने) चाहता हूँ।
उन्हों (वे) (ने) फैसला करते हैं। उस (ने) (वह) आठ कक्षा में पढ़ता है।

को

छूट :

हम लोग (लोगों) ϕ लाभ होते हैं। मैं (मुझ) ϕ खाना दो।
छोटे लड़के ϕ गेंद खेलनी चाहिए। नारोला ϕ गाना गाना चाहिए।
आप ϕ हिन्दी सिखाना (सिखानी) चाहिए। तुम ϕ क्या चाहिए?
हम लोग (लोगों) ϕ क्या-क्या लेना चाहिए।
मेरे गाँव के आदमियों ϕ तकलीफ नहीं है।
किसी ϕ तकलीफ नहीं है। हम लोग (लोगों) ϕ साथ-साथ पढ़ना चाहिए।
सब लोग (लोगों) ϕ आराम मिलता है।

गलत प्रयोग :

मुझ (का) (को) खाना दो। भारत देश का (को) आजाद करवा दूँ।

अनावश्यक प्रयोग :

निवोत्यो जंगल में लकड़ी (को) काटता है।
आप कहाँ (को) रहाता (रहते) हैं? वह जंगल (को) जाता है।

से

अनावश्यक प्रयोग :

वह अचानक (से) कहाँ चला गया ?

मेरेन कभी-कभी (से) यह काम करता है।

आप धीरे-धीरे (से) आइए। सामान सस्ता (से) मिलता है।

कल अवश्य (से) आना। मैं नौ बजे रात (से) दीमापुर स्टेशन पहुँचा।

छूट :

बच्ची ϕ चला नहीं जाता।

नारोला ϕ सोया नहीं जाता।

का

छूट :

आप ϕ घर कहाँ है ? गाय ϕ दूध बहुत अच्छा खाना है।

मेरे शहर ϕ नाम पुगोबोतो है। मैं आचीकुचू गाँव ϕ आदमी हूँ।

हम लोगों ϕ समाज अच्छा है। राम ϕ कपड़ा अच्छा है।

गलत प्रयोग :

हम ईश्वर की (का) भजन करते हैं। आपको (का) नाम क्या है ?

मैं आपको (का) इंतजार करता हूँ। हम रेल को (का) इंतजार करते हैं।

आपके (का) घर कहाँ है ? कोहिमा नागालैण्ड के (का) बड़ा शहर है।

मेरे गाँव के (का) नाम मिसिलिमी है।

अनावश्यक प्रयोग :

२५ दिसम्बर को यीशु का जन्मदिन (का) माना जाता है।

महात्मा गाँधी (का) हमारे देश के पिता हैं।

हमारा गाँव (का) बहुत आछा है।

स्कूल भवन (का) बहुत अच्छा है।

के

छूट :

छत ϕ ऊपर एक लड़का था। मोहन ϕ भाई का नाम सोहन है।

हमारे गाँव ϕ खेतों में आलू, धान आदि होते हैं।

तेमजेन घर ϕ ऊपर चढ़ा।

हम लोग (लोगों) ϕ हैडमास्टर अच्छे हैं। गाय ϕ एक पूँछ होती है।

गाँव ϕ ऊपर रास्ता अच्छा है। गाँव ϕ लोग मैदान में खेलते हैं।

मेरे गाँव ϕ आदमियों को तकलीफ नहीं है। हमारे देश ϕ लोग……।

बुखार आने ϕ कारण……।

गलत प्रयोग :

तुम अतुला की (के) पास जाओ। घर की (के) ऊपर चिड़िया है।
आपका (के) पिताजी का नाम क्या है ? पानी का (के) पास जाओ।
ये मेरे गाँव की (के) आदमी हैं। लोथा का (के) पिताजी किसान हैं।
गाँधीजी लजीले स्वभाव में (के) थे।
गाँधीजी का (के) माता-पिता धार्मिक आदमी थे।
पीपल का (के) पड़े पर........। गाय का (के) चार पैर होते हैं।
रसोइया का (के) पास ....।
दीमापुर में किसिम-किसिम (किस्म-किस्म) की (के) आदमी हैं।
रेलगाड़ी से (के) अलावा ....। तीसरे अन्तर से (के) बाद........।
दीमापुर से (के) दक्षिण में। दूर-दूर का (के) छात्र पढ़ते हैं।

की

गलत प्रयोग :

यह विहोतो का (की) किताब है। छुट्टी देने को (की) कृपा करे (करें)।
पढ़ने से (की) छुट्टी का मतलब खेल की छुट्टी नहीं है।
हैडमास्टर का (की) बात सुनकर........।
खाने का (की) चीजें बहुत हैं। देश के (की) सेवा की।
महात्मा गाँधी का (की) मृत्यु........। शिलांग का (की) यात्रा।
अपाहिजों को (की) मदद करनी चाहिए।
प्रदेश का (की) राजधानी ....।
सब के (की) छुट्टी होती है। हमने ईश्वर का (की) प्रार्थना की।

छूट :

तेमजेन ϕ गाय अच्छी है। नोकदेन ϕ छड़ी अच्छी है।
नारोला ϕ घड़ी छोटी है। नागालैण्ड ϕ खेती में धान अधिक होता है।

में

अनावश्यक प्रयोग :

मेज के ऊपर (में) एक कलम है।
दीमापुर स्टेशन से गौहाटी (में) जा सकते हैं।
ऊपर (में) क्या है ? मेरा घर बहुत दूर (में) है।
पूजा करते समय (में) नाच भी करते हैं। यहाँ (में) पूजा करते हैं ?
आप कहाँ (में) रहते हैं ? आज मैं कोहिमा (में) जा रहा हूँ।
गुरुजी कोहिमा (में) आए हैं। मेरे घर के आसपास (में) एक तालाब है।

दो बजे (में) गाड़ी आई। मेरे गाँव के सामने (में) है।
दस बजे (में) स्टेशन आया। मैं बड़े दिन में घर (में) जाऊँगा।
मेरा गाँव नजदीक (में) है।

गलत प्रयोग :

मैं सदा ईश्वर (को) (में) विश्वास करती हूँ।
बच्चे मैदान से (में) खेलते हैं।
एक साल के लिए (में) पाँच पूजा करते हैं।

छूट :

करीम स्कूल ϕ पढ़ता है।
कभी-कभी मेरे दिल ϕ ख्याल आता है।

पर

गलत प्रयोग :

पेड़ में (पर) पक्षी बैठे हैं। कुर्सी में (पर) बैठो।
ईश्वर से (पर) विश्वास रखना चाहिए।

सहायक, रंजक क्रियाओं की प्रयोगगत त्रुटियाँ

सहायक क्रियाएँ :

जाकर (जाया) करता है। खाकर (खाया) जाता है।
वह खाकर (खाता) रहता है।

रंजक क्रियाएँ :

काँपकर (काँप) उठा। सुनकर (सुन) रखा है।
सँभलकर (सँभल) बैठा। तुम बोलकर (बोल) उठो।

अन्य प्रयोग की त्रुटियाँ

संज्ञा का विशेषणवत् प्रयोग :

मुझे खुश (खुशी) है।
फूल में सुन्दर (सुन्दरता) है।

विशेषण का संज्ञावत् प्रयोग :

मैं खुशी (खुश) हूँ।
लड़की सुन्दरता (सुन्दर) है।
हुमायूँ एक साहस (साहसी) राजा था।

पिजिन (नागामिज) शब्दों का हिन्दी में प्रयोग :

गाँव में खाने-पीने का दिक्तार (कठिनाई) है।

मेरा कमरा होरु (छोटा) है ।
हमारे वड़े दादा (भाई) आए हैं । इत्यादि

मिश्र क्रियाओं की प्रयोगगत त्रुटियाँ

वस्त्र पहनना → वस्त्र लगाना → हम लोग नए वस्त्र लगाते (पहनते) हैं ।
भाग लेना > भाग करना > खेलकूद में भाग करते (लेते) हैं ।
चढ़ना > उठना > वह छत के ऊपर उठा (चढ़ा) ।
भर जाना > भर होना > खाना खाते-खाते पेट भर हो गया ।
आभारी रहना > आभारी करना > मैं आपका आभारी करूँगा (रहूँगा) ।
गीत गाना > गीत करना > सब लोग मिलकर चर्च में गीत करते (गाते) हैं ।
पूजा करना > पूजा होना > साल में एक बार हम लोग पूजा होता (करते) हैं ।
तैयार होना > तैयार करना > हम मोकोकचुङ से कोहिमा आने के लिए तैयार किया (हुए) ।
सवार होना > सवार करना > मैं रेलगाड़ी में सवार करके (सवार होकर) आया ।
परिश्रम करना > परिश्रमी करना > हम लोग परिश्रमी (परिश्रम) करते हैं ।
प्यार करना > प्यार होना > हम जान से भी अधिक गाँव को प्यार होता (करते) हैं ।
खेल खेलता > खेल होना > गाँव के लोग खेल होते (खेलते) हैं ।
इकट्ठा होकर > जमाकर > सभी जमाकर (इकट्ठा) होकर प्रार्थना करते हैं ।
सभा समाप्त होना > सभा छोड़ना > ········इसके बाद सभा छोड़ेंगे (समाप्त) होगी ।
धर्म मानना > धर्म लेना > हम लोग धर्म से ईसाई लेते (मानते) हैं ।
जन्म होना > जन्म किया > पोरबंदर में गाँधीजी का जन्म किया (हुआ) ।
यात्रा करना > यात्रा होना > हमने यात्रा हुआ (करी) था ।
सामान तैयार करना > सामान तैयार होना > हमने सामान तैयार हुआ (किया) ।
प्रवेश करना > प्रवेश जाना > उन्होंने भारतीय सीमा में प्रवेश गया (किया) ।

प्रेरणार्थक क्रियाओं—बताना, पिटवाना, बनवाना, इत्यादि—का प्रयोग हो नहीं सका ।

अन्वितिगत त्रुटियाँ

१.१ कर्ता-क्रिया, पुरुष-वचन अन्विति (विधि रूप)

आप खाना खाओ (खाइए) । वह बाजार जाऊँ (जाये) ।

हम खाना खाऊँ (खाएँ)। तू भात खाऊँ (खा)।
तुम भात खाएँ (खाओ)। आप गाना गाऊँ (गाइए)।

१.२ कर्ता-क्रिया, पुरुष-वचन, लिंग-वचन अन्विति (भविष्य)

मैं स्कूल जायेंगी (जाऊँगी)। मैं भात खायेगा (खाऊँगा)।
मैं भात खायेगी (खाऊँगी)। हम फल खायेगा (खायेंगे)।
हम सिनेमा देखूँगी (देखेंगी)। हम सिनेमा देखूँगा (देखेंगे)।
हम कौन सा पाठ पढ़ेगा (पढ़ेंगे)? तुम भात खायेंगी (खाओगी)।
तुम गाना गायेंगी (गाओगी)। तुम भात खायेगा (खाओगे)।
तुम किताब पढ़ेंगे (पढ़ोगे)। तू किताब पढ़ेगे (पढ़ेगा)।
आप हिन्दी पढ़ोगे (पढ़ेंगे)। आप कहाँ जायेगा (जायेंगे)?
अचिला गाना गाऊँगी (गायेगी)। वे नहीं जायेगा (जायेंगे)।
गुरुजी अभी आयेगा (आयेंगे)।
सब आदमी मिलकर खाना खायेगा (खायेंगे)।
गुरुजी, आज हम कौन सा पाठ पढ़ेगा (पढ़ेंगे)? तू क्या करूँगा (करेगा)?
तू कहाँ जाऊँगा (जायेगा)? वह ईश्वर की प्रार्थना करूँगा (करेगा)।
आप यहाँ आयेगा (आयेंगे)।
तुम मेरा (मेरी) चिट्ठी का जवाब नहीं देगा (दोगे)?
तुम यहाँ बैठेंगे (बैठोगे)। तुम भात खायेंगे (खाओगे)।
नारोला लकड़ी काटेंगी (काटेगी)। मैं आगे बढ़ता जायेगा (जाऊँगा)।
वह मैच देखेंगे (देखेगा)। तुम माँ-बाप की सेवा करेंगे (करोगे)।
लड़कियाँ पढ़ने जायेंगे (जायेंगी)। हम अभी जायेगा (जायेंगे)।
रात होगा (होगी)।

१.२ कर्ता-क्रिया, लिंग-वचन अन्विति (वर्तमान कृदन्ती रूप में)

गाय दूध देता (देती) है। गाय घास खाता (खाती) है।
दो आँखें होता (होती) हैं। हम खाना खाता (खाते) हैं।
मैं अंग्रेजी जानते (जानता) हूँ। घोड़ा दौड़ते (दौड़ता) है।
पिताजी घर से आता (आते) है (हैं)।
तुम अधिक समय लगाता (लगाते) हो।
मैं आजकल दीमापुर में रहते (रहता) हूँ। ठंडी हवा चलता (चलती) है।
लड़कियाँ खेलने जाते (जाती) हैं। नदी बहते (बहती) है।
हम गाय और मुर्गी पालता (पालते) हैं।
पूजा नौ दिन (दिनों) तक होते (होती) है।

वह खाना खाते (खाता) है। तुम क्या करता (करते) है (हो) ?
मैं हिन्दी जानते (जानता) हैं (हूँ)।
हम हिन्दी जानता (जानते) है (हैं)।
मैं कक्षा सात में पढ़ते (पढ़ता) हूँ। वह हमें प्यार करते (करता) है।
पेड़ काटी (काटा) जाती (जाता) है। दीमापुर में गर्मी होता (होती) है।
पानी मिलती (मिलता) है। हम इंतजार करता (करते) रहा (रहे)।
संज्ञाएँ पाँच होते (होती) हैं। लोग चीते से डर सकता (सकते) हैं।
वह शिकार कर सकते (सकता) हैं (है)। लड़की स्कूल जाता (जाती) है।
करीम स्कूल में पढ़ते (पढ़ता) है। मैं कोहिमा जाते (जाता) हूँ।
टाटा गाड़ी आता (आती) है। गाँव बड़ा का हुकुम चेलेत (चलता) है।
मेरा परिवार अच्छी तरह रहते (रहता) है।
दीमापुर में सभी जातियाँ रहता (रहती) हैं।
सभी रास्ता (रास्ते) दीमापुर में आता (आते) हैं।
रेलगाड़ी रोजाना चलते (चलती) रहते (रहती) है।
गाड़ी दिखाई पड़ता (पड़ती) है। बहुत छात्र पढ़ता (पढ़ते) हैं।
चोर-डकैत नहीं होता (होते)। गर्मी अधिक नहीं होता (होती)।
नौकरी करने वाले लोग अच्छे काम करता (करते) रहता (रहते) हैं।
मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होती (होता) है।
मास्टर लोग सिखाता (सिखाते) हैं। गाय हमें दूध देता (देती) है।
गाय के दो कान होती (होते) हैं। एक्समस पूजा अधिक होते (होती) है।
माताएँ बच्चे को प्यार करते (करती) हैं। लता पैर पकड़ता (पकड़ती) है।

१.४ कर्ता-क्रिया, लिंग-वचन अन्विति (भूत कृदन्ती रूप में)

कल नारोला स्कूल नहीं आया (आयी)। वह नहीं आये (आया)।
हम स्टेशन पहुँचा (पहुँचे)। रेलगाड़ी गया (गयी)।
हम लोग चाय पीने गया (गये)। क्या तुम कल सोया (सोये) थे।
हम लोग आराम से कोहिमा पहुँच गया (गये)। हम बहुत खुश हुआ (हुए)।

१.५ कर्ता-क्रिया, लिंग-वचन अन्विति (कालवाची सहायक क्रिया के रूप में)

तुम भी किसान हूँ (हो)। गांधीजी पवित्र था (थे)।
मेरे पिताजी बीमार है (हैं)। आप कैसा (कैसे) है (हैं) ?
मैं अच्छा है (हूँ)। मैं भी किसान है (हूँ)।
तुम भी किसान है (हो)। किसान काम कर चुकी (चुका) है।
ठंडी हवा चल रहा (रही) है। काल रात आ रहा (रही) है।

तुम लोग अच्छे है (हो) । एक आदमी घर में बैठे (बैठा) हैं (है) ।
आप कैसे हो (हैं) ? लड़की चल रहा (रही) है ।
बाप-बेटे एक साथ चल रहा था (रहे थे) ।
हम लोग अच्छे है (हैं) ।
घोड़े दौड़ रही (रहे) हैं । कोहिमा में बहुत ठंडा हैं (है) ।

२. **कर्म-क्रिया, लिंग-वचन अन्विति**

नारोला ने चिट्ठी लिखा (लिखी) । घोड़ों ने घास खाया (खायी) ।
बकरी ने घास खाया (खायी) । लताओं ने पैर पकड़ा (पकड़े) ।
मैंने कई लड़कियाँ देखे (देखीं) । कवियों ने कविताएँ बनाए (बनाईं) ।
उसने ईश्वर की प्रार्थना किया (की) ।
उसने मिट्टी सिर पर लगाया (लगाई) ।
कवि ने कविता बनाया (बनाई) । आपने हिन्दी पढ़ा (पढ़ी) ।
मैंने कई लड़का देखा (देखे) । मैंने कविता पढ़ाया (पढ़ाई) ।
लताओं ने पैर पकड़ी (पकड़े) । साधुओं ने सत्य कही (कहा) ।
पुत्रवधुओं ने सास की सेवा किया (की) ।
तुम्हें बड़ों की सेवा करना (करनी) चाहिए ।
मुझे बहुत से काम करनी (करने) हैं । मुझे बहुत से काम करना (करने) हैं ।
हमें ईश्वर की प्रार्थना करना (करनी) चाहिए ।

३. **कर्ता-पूरक, लिंग-वचन अन्विति**

पिताजी अच्छा (अच्छे) हैं । हम लोग अच्छा (अच्छे) हैं ।
हम लड़का (लड़के) हैं । आप बहुत अच्छा (अच्छे) है (हैं) ।
हवा बहुत अच्छा (अच्छी) है । घड़ी अच्छा (अच्छे) है ।
मेरा गाँव बहुत अच्छी (अच्छा) है ।
लड़का और लड़की बहुत अच्छा (अच्छे) हैं ।
गाँव में खेती अच्छा (अच्छी) है । नदी बड़ा (बड़ी) है ।
हम अच्छा (अच्छे) लड़का (लड़के) हैं । कलम अच्छा (अच्छी) है ।
जलवायु अच्छा (अच्छी) है ।

४. **कर्म-पूरक, लिंग-वचन अन्विति**

मेरेन ने इमारत पक्का (पक्की) बनवाई है ।
तेमजेन ने मकान पक्के (पक्का) बनवाया ।

५. **कर्ता-रीतिवाचक कृन्दती संरचक, लिंग-वचन अन्विति**

लड़कियाँ रोते (रोती) आईं । लड़का रोते (रोता) आया ।
सभी घोड़े दौड़ता (दौड़ते) आए ।

६. अन्वितिहीनता

उसने एक लड़की को देखी (देखा)। मैंने कई लड़कियों को देखे (देखा)।
मैंने कई लड़कों को देखे (देखा)। माता ने बच्चों को प्यार की (किया)।

७. विशेषण-विशेष्य, लिंग-वचन अन्विति

मेरे (मेरा) तीसरा गाँव है। यह उसका (उसकी) घड़ी है।
मेरा (मेरी) घड़ी दो। उसकी (उसका) लड़का दौड़ता आया।
मेरे (मेरा) नाम मयङ्ला है। मेरा (मेरे) दो कान हैं।
मेरा (मेरे) पिताजी का नाम मेरेन है। यह तुम्हारा (तुम्हारी) घड़ी है।
यह आपका (आपकी) घड़ी है। यह किसका (किसकी) घड़ी है ?
उसके (उसकी) लड़कियाँ नाचती हैं। यह हमारा (हमारी) घड़ी है।
दीपावली एक ऐसी (ऐसा) त्यौहार है।
मैंने छोटा-छोटा (छोटे-छोटे) स्टेशन बहुत देखा (देखे)।
छोटी (छोटे) लड़के खेलते हैं। नकला (नकली) घड़ी है।
हरी (हरे) खेत अच्छे लगते हैं। यह पक्का (पक्की) सड़क है।
........सात कमरा (कमरे) हैं। मेरी (मेरे) गाँव में............।
गाँव में तीन मुहल्ला (मुहल्ले) हैं। हमारी (हमारे) चार भाई हैं।
आपके पास इतना (इतनी) कलम हैं क्या ?
मैं तुम्हारा (तुम्हारे) घर नहीं आऊँगा।
तुम मेरा (मेरी) चिट्ठी का जवाव दो। थोड़ा (थोड़ी) देर के बाद........।
अच्छी (अच्छा) गाँव............। पुगोबोतो अच्छी (अच्छा) शहर है।
सभी चीज (चीजें) सुन्दर हैं। एक बड़े (बड़ा) रास्ता है।
हमारे (हमारा) गाँव नागालैण्ड में सबसे बड़ा है।
मेरा (मेरे) पिताजी किसान हैं। रानी अच्छा (अच्छी) लड़की है।
............नये-नये कपड़ा (कपड़े) पहनता (पहनते) हैं।

८. नियमन

मेरा (मेरे) जीवन में........... ....।
मेरा छोटा भाई (मेरे छोटे भाई) को खेलना चाहिए।
वह (उस) गाँव में ....। मेरा (मेरे) गाँव का नाम जाखामा है।
मेरा (मेरे) गाँव में किसान हैं।
खाना-पीना (खाने-पीने) के लिए चीजें आती हैं।
मेरा (मेरे) पिताजी का नाम अंगामी है। मेरा (मेरे) साथ आइए।
आज मेरा (मेरे) घर जरूर आना।

१५ अगस्त हमारा (हमारे) लिए खुशी का दिन है।
मेरा (मेरे) गाँव में स्कूल है। हमारा (हमारे) स्कूल में लड़कियाँ अधिक हैं।
हमारा (हमारे) प्रदेश में ऊँचा (ऊँचे) पहाड़ हैं।
मेरा (मेरे) पिताजी का नाम किहोतो सेमा है।
आपका (के) पिताजी का क्या नाम है ?
मेरा (मेरे) परिवार के बारे में आप जानते हैं।

पदबन्ध-रचनागत त्रुटियाँ

हमारे गाँव के मुहल्ला आठ (आठ मुहल्ले) हैं।
हमारा (हमारी) पूजा क्रिसमस (क्रिसमस पूजा) अच्छा तरह (अच्छी तरह) होता (होती) है।
आदमी चार (चार आदमी) आ रहे हैं।
खाना अच्छा (अच्छा खाना) खाओ।
फल पक्का (पक्के फल) खाओ।
वह अच्छा तरह (अच्छी तरह) देखता नहीं।
उसका मुँह (उसके मुँह) में घाव हो गया, इसलिए वह खाता नहीं।

वाक्य-रचनागत त्रुटियाँ

१. सरल से मिश्र वाक्य बनाने की त्रुटियाँ :

सरल—पुलिस ने खतरनाक डाकू को मारा।
मिश्र—पुलिस ने उस डाकू को मारा जो खतरनाक था।
त्रुटिपूर्ण—मैंने देखा कि पुलिस डाकू मारा।
सरल—ईमानदार को सभी चाहते हैं।
मिश्र—सभी उसे चाहते हैं जो ईमानदार है।
त्रुटिपूर्ण—मुझे ईमानदार चाहिए।
सरल—तुम बस ठहरने के स्थान पर आ जाना।
मिश्र—तुम वहाँ आना जहाँ बस ठहरती है।
त्रुटिपूर्ण—तुम आओ, बस ठहरती है।
सरल—मेरेन ने नाचती हुई लड़की को देखा।
मिश्र—मेरेन ने देखा कि लड़की नाच रही थी।
त्रुटिपूर्ण—मेरेन ने लड़की देखा नाचकर।

२. सरल से संयुक्त वाक्य बनाने की त्रुटियाँ :

सरल—मेरे आने पर भी तुम नहीं आए।
मिश्र—मैं आया पर तुम नहीं आए।
त्रुटिपूर्ण—मैं आ गया और तुम भी आ गये।

सरल—सत्य बोलने से उसकी इज्जत होती है।

मिश्र—वह सत्य बोलता है, इसलिए उसकी इज्जत होती है।

त्रुटिपूर्ण—सत्य बोलने से इज्जत होती है।

सरल—परमेश्वर की प्रार्थना करने पर हमें पाप से मुक्ति मिशेगी।

मिश्र—यदि हम ईश्वर की प्रार्थना करेंगे तो हमें पाप से मुक्ति मिलेगी।

त्रुटिपूर्ण—प्रार्थना करने से पाप से मुक्ति मिलती है।

सरल—सूर्योदय होने पर प्रकाश फैलने लगा।

मिश्र—सूर्योदय हुआ और प्रकाश फैलने लगा।

त्रुटिपूर्ण—सूर्योदय होता है, प्रकाश फैलता है।

परिशिष्ट ६

वर्तनीगत त्रुटियाँ

स्वर सम्बन्धी त्रुटियाँ

अ > आ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अच्छा	आच्छा	कमल	कामल
अच्छी	आच्छी	कलम	कालम
अचानक	आचानक/आचानाक	कविता	काविता
अधिक	आधिक	करता	कारता
अपना	आपना	कल	काल
अब	आब	कबुतर	कबुतार
अभी	आभी	करते	कारते/कराते
अमीर	आमीर	कम	काम
अदरख	आदरख	कहना	कहाना
असत्य	आसत्य	कहाँ	काहाँ
अनाज	आनाज	कोयल	कोयाल
अरुणाचल	आरुणाचल	किधर	किधार
अध्यापक	आध्यापक	क्रिसमस	क्रिसमास
अंग्रेज	आंग्रेज	खतरा	खातरा
अलग	अलाग	गया	गाया
अठारह	आठारह	गर्म	गार्म
असमर्थ	आसमर्थ	गाय	गाया
आजकल	आजकाल	घर	घार
इधर	इधार	चला	चाला
इमारत	इमारात	चर्च	चार्च
ईश्वर	ईश्वार	चलना	चालना
ऊपर	ऊपार	चलो	चालो
कमरा	कामरा	चलते	चालते

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
चाहता	चाहाता	बचपन	बचपान
चाहना	चहाना	बहता	बाहता
छत	छात	बहुत	बाहुत
जगह	जगाह	बजे	बाजे
जहाज	जाहाज	बगीचे	बागीचे
जमुना	जामुना	बस	बास
जंगली	जंगाली	बचन	बाचान/बाचन
जन	जान	बड़ा	बाड़ा
जलाता	जालाता	बनाता	बानाता
जंगल	जंगाल	बाहर	बाहार
झरना	झारना	बनी	बानी
टमाटर	टामाटर	बिरंगी	बिरांगी
तपता	तापता	भलाई	भालाई
तकलीफ	ताकलिफ	भरकर	भारकर
तक	ताक	भाषण	भाषाण
दस	दास	मनाता	मानाता
दिसम्बर	दिसम्बार	मनाया	मानाया
दीपक	दीपाक	रहता	रहाता/राहता
धनी	धानी	रस्सी	रास्सी
नया	नाया	रहा	राहा
नमन	नामन	रहकर	रहाकर
नम्र	नाम्र	राजभवन	राजभवान
पंखा	पांखा	लड़कपन	लड़कापन
पसीना	पासीना	लगा	लागा
पचीस	पाचीस	लायक	लायाक
पहाड़	पाहाड़	लड़की	लाड़की
पकाया	पाकाया	लड़का	लाड़का
पहले	पाहाले	लगता	लागता
प्रार्थना	प्रार्थाना	सकता	साकता
पूरब	पूराब	सभी	साभी
फल	फाल	संसार	सांसार

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
संबंध	साबंध	सुन्दर	सुन्दार
समूह	सामूह	सूर्य	सूर्या
सरकार	सारकार	स्थल	स्थाल
सभा	साभा	हम	हाम
सब	साब	हवाई	हावाई
सकेगा	साकेगा	हवा	हावा
सजाया	साजाया	हजार	हाजार
सड़क	सड़ाक	हमारा	हामारा
सूअर	सूआर	हँसी	हाँसी
अ>ए :			
आजकल	आजकेल	फहराया	फेहराया
चलें	चेलें	मास्टर	मास्तेर
दस	देस	सकते	सेकते
नहीं	नेहीं	सुबह	सुबेह
अ>ओ :			
ऊपर	उपोर	बस्ती	बोस्ती
कल	कोल	बड़ा	बोड़ा
कभी	कोभी	मजा	मोजा
कब	कोब	मनुष्य	मोनुष्य
छ	छो/छोय	मदन	मोदन
जंगल	जोंगोल	वास्तव	वास्तोव
दस	दोस	रविवार	रोविवार
पंचायत	पंचायोत	रंग	रोंग
फल	फोल	सब	सोब
बहुत	बोहुत	सस्ता	सोस्ता
बहन	बोहिन	हरिण	होरिण
आ>अ :			
आप	अप	अपादान	अपदान
आजकल	अजकल	आता	अता
आराम	अराम	आदमी	अदमी
आदेश	अदेश	कमाल	कमल

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
किसान	किसन	माता	मता
किताब	कितब	माया	मया
गाना	गना	वापस	वपास
गायी	गयी	सार्वनामिक	सर्वनामिक
चाहता	चहाता	साफ	सफा
तूफान	तूफन	रास्ता	रस्ता
पाइप	पइप	रोजाना	रोजना
पढ़ाई	पढ़ई	हमारा	हमरा
प्रार्थना	प्रर्थाना	हाई	हई
बाहर	बहार	हवाई	हवई

इ > ई :

आदमियों	आदमीयों	दिया	दीया
किताब	कीताब	देखिए	देखीए
किस	कीस	धार्मिक	धार्मीक
किसने	कीसने	नदियाँ	नदीयाँ
किया	कीया	निकल	नीकल
कि	की	पिता	पीता
गिरा	गीरा	प्रति	प्रती
गुड़िया	गुड़ीया	प्रिय	प्रीय
चिंता	चींता	बकरियाँ	बकरीयाँ
चिड़ियाँ	चीड़ियाँ	मिठाई	मीठाई
जिंदगी	जींदगी	मिलता	मीलता
जाति	जाती	लिए	लिए
दिन	दीन	लिखें	लीखें

इ > ए :

इकट्ठा	एकढ्ठा	बल्कि	बल्के
किताब	केताब	लेकिन	लेकेन
निवेदन	नेवेदन	सिखा	सेखा
पिता	पेता	सिटी	सेटी
फिर	फेर	सिनेमा	सेनिमा

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ई > इ :			
जीवन	जिवन	पीपल	पिपल
जल्दी	जल्दि	पीजिए	पिजिए
तीन	तिन	पकड़ी	पकड़ि
तीसरा	तिसरा	बीच	बिच
दीजिए	दिजिए	सीखना	सिखना
दीमापुर	दिमापुर	शरीर	शरिर
नीचा	निचा		
उ > ऊ :			
कुत्ता	कूत्ता	बुढ़ापा	बूढ़ापा
खुश	खूश	मुझे	मूझे
तुझे	तूझे	सुंदर	सूंदर
दुख	दूख	हिंदु	हिंदू
पहुँच	पहूँच	हुइ	हूई
बहुत	बहूत		
उ > ओ :			
खुल	खोल	हुआ	होआ
बहुत	बहोत	हुकुम	होकम
सगर	सोगर		
ऊ > उ :			
खूब	खुब	पूछ	पुछ
तू	तु	पूजा	पुजा
दूर	दुर	पूरब	पुरब
दूसरा	दुसरा	पूरा	पुरा
ऊ > ओ :			
खाऊँगा	खाओंगा	नूतन	नोतन
जाऊँगा	जाओंगा	पूरब	पोरब
ए > इ/ई :			
बेटा	बिटा	देखने	दिखने
बेचने	बिचने	मेला	मीला

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऐ > ए :			
कैसा	केसा	पैर	पेर
जैसा	जेसा	मैं	में
ऐ > इ :			
ऐसा	इसा	कैसा	किसा
जैसा	जिसा		
औ > ओ :			
और	ओर	कौन	कोन
औरत	ओरत	सौ	सो
औ > आ/उ			
कौवा	कावा	सरौता	सरुता
मौका	मुका		

अनुनासिक वर्तनीगत त्रुटियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ँ का लोप :			
कहाँ	कहा/काहा	बनूँगा	बनूगा
गाँव	गाव	हाँ	हा
जहाँ	जहा		
ँ > ं :			
माँ	मां		
ं का लोप :			
अहिंसा	अहिसा	में	मे
कहीं	कही	हैं	है
जंगल	जगल	नहीं	नही

व्यंजन वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ख > क :			
आँख	आँक	पंखा	पंका
खेल	केल	मुख	मुक
खाता	काता	सिखाता	सिकाता
दिखाऊँगा	दिकाऊँगा	सूख	सूक
ग > क :			
अलग	अलक	आग	आक

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
एग्यारह	एकारह	भगवान	भकवान
गाँव	काँव	माँग	माँक
गाय	काय	लगभग	लकभक
गाड़ी	कारी	लगता	लकता
कुरूजी	कुरुजी	लोग	लोक

क>ख/ग :

कुश्ती	खुश्ती	किताब	गिताब
करीब	गरीब		

घ>ग/क :

घास	गास	घर	कोर
घर	गर	बाघ	बाक

छ>च :

अच्छा	अच्चा	पूँछ	पूँच
अच्छी	अच्ची	पूछा	पूचा
छोटा	चोता	बछड़े	बचड़े
पीछे	पीचे		

ज>च :

आज	आच	पंजाब	पंचाब
कालेज	कालेच	पिताजी	पिताची
गिरिजा	गिरिचा	पूजा	पूचा
जाकर	चाकर	बजे	बचे
जाना	चाना	बाजार	बाचार
जंगल	चंगल	राजधानी	राचधानी

च>ज :

नाच	नाज	चर्च	चारज
नीचे	नीजे	चलेंगे	जलेंगे
चल	जल	चलते	जलते
चलती	जलती	चाय	जाय
चोर	जोर	चाहता	जाहता
चोरी	जोरी	चौदह	जौदह

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
चीज	जीस	मैच	मैज
पहुँचा	पहुँजा	संरचना	संरजना
पाँच	पाँज	सच्चा	सजा
बच्चा	बज्जा	समाचार	समाजार
छ > ज :			
अच्छा	अजा/आजा	पीछे	पीजे
झ > ज :			
झरना	जरना	सूझता	सूजता
झाड़ू	जाड़ू		
ट > त :			
काटा	काता	पोस्ट	पोस्त
छोटा	छोता	फुटबाल	फुतवाल
छोटी	छोती	मास्टर	मास्तर
छुट्टी	छुत्ती	मोटा	मोता
जोरहाट	जोरहात	मिनिस्टर	मिनिस्तर
टाटा	ताता	रोटी	रोती
टिकट	टिकत	होटल	होतल
डाक्टर	दाक्तर	होस्पिटल	होस्पितल
ठ > द/थ :			
पाठ	पाद	आठ	आथ
बैठ	बैद	ठनठन	थनथन
ड > द :			
गुडफ्राइडे	गुडफ्राइदे	डाल	दाल
झंडा	झंदा	डाक्टर	डाक्तर
डकैत	दकैत	डिस्पेंसरी	दिस्पेंसरी
डाकघर	दाकघर	मिडल	मिदल
डाला	दाला	रेडियो	रेदियो
ढ > ध :			
ढाई	धाई	ढोलक	धोलक
ढोना	धोना		

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
त > द :			
कितने	किदने	धरती	धरदी
किताब	किदाब	पंचायत	पंचायद
जूता	जूदा	सारामती	सारामदी
थ > त :			
थन	तन	साथ	सात
ध > द :			
इधर	इदर	दूध	दूद
उधर	उदर	प्रधान	प्रदान
उधार	उदार	बाँध	बाँद
प > ब, ब > प :			
कृपालु	कृबालु	कब	कप
पन्द्रह	बन्द्रह	खराब	खराप
पंजाब	बंजाब	किताब	किताप
पढ़े	बढ़े	पहाड़	बहाड़
पश्चिम	बश्चिम	बचपन	पचपन
पुल्लिग	बुल्लिग	बस्ती	पस्ती
पेपर	बेबर	बारह	पारह
पोरबन्दर	बोरबन्दर	बीमार	पीमार
फ > प :			
फल	पल	साफ	साप
फूल	पुल	सिर्फ	सिर्प
भ > ब :			
अभी	अबी	भालू	बालू
भगवान	बोकवान	कभी	कबी
भाई	बाई	सभी	सबी
ब > व :			
आबादी	आवादी	बहुत	वहुत
किताब	किताव	बादल	वादल
बड़ा	वड़ा	बीच	वीच

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ण>न :			
प्राण	प्रान	मणिपुर	मनिपुर
ड़>र :			
उड़	उर	पहाड़	पहार
कंकड़	कंकर	पड़ौसी	परौसी
कपड़ा	कपरा	पड़ते	परते
गाड़ी	गारी	पेड़	पेर
घड़ा	घरा	बड़ा	बरा
चमड़ा	चमरा	लड़का	लरका
थोड़ा	थोरा	लड़की	लरकी
ड़>ड :			
कपड़ा	कपडा	पड़ेंगी	पडेंगी
पहाड़	पहाड	लड़का	लडका
ढ़>र, ढ़>ढ :			
पढ़ता	परता	पढ़ता	पढता
चढ़ता	चरता	बढ़कर	बढकर
श>स, स>श, ष>स :			
इशारे	इसारे	पशु	पसु
खुश	खुस	शहर	सहर
खुशी	खुसी	शान्ति	सान्ति
देश	देस	शादी	सादी
सफेद	शफेद	सुबह	शुबह
सामान	शामान	विषय	विसय
छ>श :			
छाता	शाता	छात्रावास	शात्रावास
ज>स :			
कागज	कागस	नाराज	नाराश
चीज	चीस		
ह का लोप :			
जगह	जगा	हमारा	मारा

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
तरह	तरा	हमारे	मारे
तुम्हारा	तुमारा	सुबह	सुभा

असंयुक्त>अशुद्ध संयुक्त :

इनका	इन्का	नजदिक	नस्तिक
इनकी	इन्की	सवार	स्वार
उनको	उन्को	लगती	लग्ती
जानता	जान्ता	सुनने	सुन्ने
जनता	जन्ता	सुनता	सुन्ता

संयुक्त>अशुद्ध संयुक्त :

कृपा	कार्पा	संप्रदान	समप्रदान
सुंदर	संदर	उन्नति	उन्नीत
स्कूल	स्कल	पंद्रह	पंदह
जंगल	जगंल	संख्या	संखिया

संयुक्त—अशुद्ध असंयुक्त :

सत्य	सतय	मनुष्य	नुषयम
स्कूल	सकउल/सकूल	रास्ता	रसता
बंद	बोन	मंजूर	मनजूर
कक्षा	काकसा	सुंदर	सुनदर
कुत्ता	कुता	क्या	कया
ज्यादा	जादा	सुंदर	सुनदर
प्रार्थना	परथाना	प्रधान	परधान
आर्मी	अरमी	क्या	कया
तुम्हारी	तुमहारी	अध्यापिका	अधापिका
उन्होंने	उनहोने	लाइब्रेरी	लिबारी
केंद्रीय	केनदरिय	चिट्ठी	चीती
सिक्किम	सिककिम	मध्य	मधय

अन्य :

किसान	ाकसान	जलाता	जालवता
किताब	ाकताब	जाति	जयति
कौआ	काआ	दुकान	दकान/देकान
कोहिमा	काहिमा	दो	दा

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
केवल	कवेल	देश	दशे
कोहिमा	कहिमा	दुकान	दकान
उचित	वचित	दीमापुर	दामापुर
कीजिए	कीजय	निवेदन	निवादन
अनुवाद	अनवाद	तुम	तम
और	आर	देखा	दखा
आदमी	आदीमी	निम्न	ानम्न
किताब	कोताब	नदी	नदो
पिता	पाता	नाचा	नीचा
कुत्ता	काता	पहुँच	पहुँच
अँधेरा	आँधरा	प्रेम	येम
ईसाइयों	इसयों	पड़गी	पड़गा
कमरा	कमबरा	पश्चिम	पाश्चम
एक	यक	पढ़ो	पढ़ओ
गाय	गायी	पिताजी	पताजी
छोड़ा	छाड़ा	पानी	पानो
छोटा	छेटा	पढ़ूँगा	पढ़ऊँगा
चिड़ियों	चाड़ियों	बहुत	बहृत/बिहुत
बहन	बोहिन	मेरा	मेश
बगीचा	बगोचा	मनुष्य	मनष्य
बनाते	बनावते	भूमि	भाम
बहन	बहनी/बोयनि	लड़की	लड़ाकया
मुझे	मुझो	लिखित	ालखित
में	मों	विषय	विषी

परिशिष्ट १०

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

उप्रैति, मुरारीलाल : **हिन्दी में प्रत्यय विचार**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

कालरा, सुधा : **हिन्दी वाक्य विन्यास**, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

कुमार, राम कृपाल : **सेमा और हिन्दी के सर्वनामों का तुलनात्मक अध्ययन** (संकलित), जनजाति भाषाएँ और हिन्दी शिक्षण, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

गुरु, कामताप्रसाद : **हिन्दी व्याकरण**, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

गौतम, राधेश्याम सिंह : **आओ भाषा का व्याकरण**, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा।

गौतम, राधेश्याम सिंह : **सेमा भाषा का व्याकरण**, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा।

गौतम, राधेश्याम सिंह : **अंगामी भाषा का व्याकरण**, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा।

गौतम, राधेश्यामसिंह : **लोथा भाषा का व्याकरण**, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा।

चौधरी, अनन्त : **नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी**, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना-३।

जैन, महावीर सरन : **परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनि ग्रामिक अध्ययन**, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद-१।

दास, ठाकुर : **अध्येता भाषा दोष**, इण्डियन जरनल ऑफ एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स, वॉल्यूम २, नं० १ (१९७६)।

दीम शिव्स : **हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६।

पाठक, पी. डी. : **भारतीय शिक्षा के आयोग**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

भाटिया, ओमप्रकाश : **लिपि विज्ञान और नागरी लिपि**, सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६।

राजगोपालन, न. वी. : **हिन्दी का भाषावैज्ञानिक व्याकरण**, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

रेड्डी, विजय राघव : **नागाभाषी हिन्दी शिक्षकों की लेखनगत त्रुटियों का भाषा-वैज्ञानिक विश्लेषण** (लोथा भाषियों के विशेष सन्दर्भ में), (संकलित), जनजाति भाषाएँ और हिन्दी शिक्षण, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

वर्मा, धीरेन्द्र : **हिन्दी भाषा का इतिहास**, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।

व्यास, तिवारी, श्रीवास्तव : **हिन्दी व्याकरण और रचना**, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-१६ ।

सिंह, विद्याधर : **विद्यार्थी भाषा की गलतियाँ क्यों करते हैं ?**, नया शिक्षक, वॉल्यूम २०, नं०१ (१९७७) ।

शर्मा, देवेन्द्रनाथ : **राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६ ।

श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ : **भाषा-शिक्षण**, दी मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, दिल्ली (१९७९) ।

Acharya, K. P., *Lotha Phonetic Reader*, C.I.I.L., Mysore (1975).

Ao, M. Alemchiba, *A Brief Historical Account of Nagaland*, Naga Institute of Culture, Kohima (1970).

Allen, J. P. B. and Corder, S.P. (Ed.), *Papers in Applied Linguistics*, Vol. 2 (1977).

Avery, J., *The Ao Naga Language of Southern Assam*, American Journal of Phetology, Vol. 8, No. 27, 1886, pp. 334-6.

Balchandran, Lakshmi Bai, *A Case Grammar of Hindi*, C.I.H., Agra.

Barpujari, Dr. S. K., *Naga Education in the Nineteenth Century*, Highlander, Vol. I, No. 1, pp. 24-30, 1973.

Boruah, D., *Nagamese into Anglo-Hindi Ao*, Published by the author, Kokok Chung, 1969.

Belyayer, B. V., *The Psychology of Teaching Foreign Language*, Lond., Oxford etc., (1963).

Bernstein, B., *Social Class, Language and Socialization in Language and Social Contest*, 1972.

Bernstein, B., Quoted in the *Social Meaning of Language*, Pride, J. B. (Ed.), p. 12 (1971).

Bhattacharya, P. K., *Naga Vocabulary : A Brief Historical Account of Nagaland*, Naga Institute of Culture, Kohima, 1970.

Bhatiya, A. T., *Error Analysis and its Implication for Foreign Teaching in India*, Journal of Applied Linguistics, 1975.

Blair, M. G., *Diagnostic and Remedial Teaching*, London, Macmillan (1956).

Bright, J. A. and Greggor, G. P., *Teaching English as a Second Language*, London (1970).

Brown, Rev. Nathan, *Comparison of Indo-Chinese Language*, Journal of Asiatic Society of Bengal, Vol. 6, 1837.

Brown Roger, *Psycholinguistics*, The Free Press, New York.

Burt, K. and Keparsky, *The Goofican : A Repair Manual for English*, Rowley, Mass : Newbury House Publishers (1972).

Burt, K. and Keparsky, *Global and Local Mistakes : New Frontiers in Second Language*, Mass : Newbury House Publishers (1974).

Carrol, John B., *Contrastive Analysis and Interference Theory*. "Contrastive Linguistics and its Pedagogical Implications", Alatis, James, E. (Ed.), No. 21 (1968).

Census of India, *Language Monograph*, 1971.

Census of India, *District Handbook—Kohima District*, Part C, Delhi, 1972.

Chaturvedi, M. G., *A Contrastive Study of Hindi and English Phonology*, National Publishing House, Delhi.

Chomsky, N., *Aspects of the Theory of Syntex*, Massachusetts, Institute of Technology, (1965).

Clark, Mrs. E. W., *Ao Naga Grammar with Illustrated Phrases*, Shillong, Assam Secretariat Printing Office, 1893.

Clark, R., "Audit Theories, Child Strategies and their Implications for the Language Teacher," *Applied Linguistics*, Allen, J. P. B. and Corder, S. P. (Ed.), London, O.U.P., pp. 291-347 (1975).

Cohen, A. D. and Robbins, M., (1976), *Towards Assessing Inter-Language Performance*. "The relationship between selected error, learner's characteristics and learner's explanation", in LLJ, XXVI/I/1976, pp. 15-67.

Cook, J., (1969), *The Analogy between First and Second Language Learning*, in IRAL VII/3/1969, pp. 207 ff.

Corder, S. P., (1967), *The Significance of Learner's Error*, in IRAL V/4/1967, pp. 161-170.

Corder, S. P., (1971 a), *Describing the Learner's Language*, in CILT Reports and Papers, VI, pp. 57-64.

Corder, S. P., (1971 b), *Ideosyncratic Dialect and Error Analysis*, in IRAL IX/2/1971, pp. 148-169.

Corder, S. P., *Error Analysis : Techniques in Linguistics*, Vol. III, Allen, J. P. B. and Corder, S. P. (Ed.), London, O.U.P., pp. 122-154 (1974).

Corder, S. P., *A Review of Error Analysis : Perspective in Second Language Acquisition*, Richards, J. C. (Ed.), Longmans (1974), in RELC Journal VI/I, 1975, pp. 92-93.

Dipictro, R.J., *Language Structure in Contrast*, Rowley, Mass : Newbury House Publishers (1971).

Dipictro, R. J., "Contrastive Analysis : Demice or New Life", in *Proceedings in Applied Contrastive Linguistics*, Vol. I, Nickel, G. (Ed.), Julius Groas Verlage Heidelberge, p. 69 ff (1972).

Dulay, H. C. and Burt, M., (1972), *Goofing : The Indicator of Children's Second Language Learning Strategies*, in 'Language Learning', XXII/2/35-52.

Dulay, H. C. and Burt, M., "You cannot learn without Goofing", in *Error Analysis etc.*, Richards, J. C. (Ed.), London : Longmans, 1974, pp. 95-123.

Duskova, L., *On Sources of Errors in Foreign Language Learning*, in IRAL VII/I/1969, pp. 11-36.

Education Ministry, Government of India, *Progress of Hindi in the States.*

Elwin, Verrier, *The Nagas in the Nineteenth Century*, Oxford University Press, Bombay (1969).

Fergusson, C. A., (1965), General Introduction to the Contrastive Structure Series, in Stockwell, R. P., *The Grammatical Structure of English and Spanish*, Chicago and London, The University of Chicago Press.

Filipovie, R., (1974), "Testing the Result of Contrastive Analysis", in *Proceedings in Applied Linguistics*, Vol. I, Nickel, G. (Ed.).

French, F. G., (1958), *Common Errors in English : Their Cause, Prevention and Cure*, London : O.U.P., First Pub. 1949.

George, H. V., *Common Errors in Language Learning*, Rowley, Mass : Newbury House Publishers (1972).

Ghadassy, M., (1977), *Error Analysis : A Criterion for Development of Materials in Forcing Language Education*, in ELT Journal, XXXI/3/1977, pp. 244-248.

Gowda, K. S. Gurubasave, *Ao Grammar*, C. I. I. L., Mysore (1975).

Gowda, K. S. Gurubasave, *Ao Naga Phonetic Reader*, C. I. I. L., Mysore.

Grierson, Sir George A., *Linguistic Survey of India*, Vols. 1 and 3, Part 2, Superintendent of Government Printing Press, Calcutta (1903).

Haralu, *Angami English Dictionary*, Journal of the Royal Asiatic Society of Bengal, Vol. 29, pp. 117-57 (1933).

Hocket, Charles F., *A Course in Modern Linguistics*, Oxford and I. B. H. Publishing Co., New Delhi (1976).

Hutton, J. H., *The Sema Nagas*, Macmillan and Co., London (1920). Second Ed., Oxford University Press, Bombay (1968).

Hutton, J. H., *The Angami Nagas*, Macmillan and Co., London (1921). Second Ed., Oxford University Press, Bombay (1969).

Hutton, J. H., *A Rudimentary Sema Naga Grammar*, Shillong (1916).

Jain, M. P., *Error Analysis : Source, Cause and Significance in Error Analysis* (Richards, 1974).

Jain, M. P., (1975), *Error Analysis of an Indian English Corpus*, in Journal of the School of Language, III/I/1975, pp. 28-47.

James, C., (1972), *The Diagnosis of Errors*, in Visual Language Journal, X, pp. 76-79.

Joce da Rocha, F., (1975), *On the Reliability of Error Analysis*, in ELT, Review of Applied Linguistics, 29/1975, pp. 53-61.

Kumar Frop, B. B., (1973), *Origin of the Word Naga*, Highlander, Vol. 1, No. 1, pp. 31-34, Cultural Research and State Museum, Kohima.

Lado, R., *Linguistics Across Culture*, Michigan (1957).

Lado, R., "Language Testing : The Contrastive Use of Foreign Language Tests", *A Teacher's Book*, London, Longmans (1967).

Mackey, W. F., (1966), *Language Teaching Analysis*, Longmans Green & Co., Ltd., London.

Mackey, W. F., (1966), *Applied Linguistics*, in ELT Journal XX/3.

Marrison, G. E., (1967), *The Classification of the Naga Languages of the North-East India*, in two Volumes. Unpublished Ph. D. Dissertation, London.

McCabe, R. B., (1987), *An Outline Grammar of the Angami Naga Language*, Calcutta.

Mills, J. P., *The Lhotha Nagas*, with Introduction and Supplementary Notes by J. H. Hutton, London, (1922).

Mills, J. P., *The Ao Naga*, with a Foreword by Henry Balfour and Supplementary Notes by J. H. Hutton, Macmillan, London (1926).

Mills, J. P., *The Angami Nagas*, Assam Review, Vol. I, No. 6, Calcutta, 1928.

Moasosang, P., *Nagaland Education Bulletin* by Directorate of Education, Nagaland, Kohima (1970).

Moore, R. H., *Handbook of Effective Writing* (Second Ed.), New York, Holt etc. (1959).

N. Brown, *Specimen of Indo-Chinese Langugaes*, JASB, Vol. 6, 1837, pp. 1032-1038.

N. C. E. R. T., Delhi, *Field Studies in Sociology of Education* (1970).

Pride, J. B., (1971), *The Social Meaning of Language*, London, O.U.P., pp. 86-87.

Ravindran, N., *Angami Phonetic Reader*, C.I.I.L., Mysore (1974).

Richards, J. C., (1971a), *A Contrastive Approach to Error Analysis*, in E.L.T. Journal, XXV/3, pp. 204-219.

Richards, J. C., (1971b), *Error Analysis and Second Language Strategies*, in Language Sciences No. 16, Bloomington, Indiana, pp. 12-22.

Richards, J. C. (Ed.), *Error Analysis : Perspective in Second Language Acquisition*, London, Longmans (1974).

Ross, J., *The Habit of Perception in Foreign Language Learning : Insights into Error from Contrastive Analysis*, in TESOL X/2/1976, pp. 169ff.

Saksena, Babu Ram & Sahaya, Ramanath, *A Grammatical Sketch of Hindi*, Language Monograph, Government of India (1973).

Sharma, A., *A Basic Grammar of Modern Hindi*, Central Hindi Directorate, New Delhi (1972).

Selinker, L. F., *Inter-Language*, in IRAL X/3/1972, pp. 209-231.

Shefer, R., *Bibliography of Sino-Tibetan Languages* (in two volumes), Wiesbaden, 1957, 1964.

Shreedhar, M. V., *Sema Phonetic Reader*, C.I.I.L., Mysore (1976).

Shreedhar, M. V., *Naga Pidgin*, C.I.I.L., Mysore (1974).

Shreedhar, S. N., *Contrastive Analysis, Error Analysis and Interlanguage : Three Phases of One Goal*, in Indian Linguistics XXXVII/4/1976, pp. 258-281.

Subrahmanian, K., (1976), *The Need for a Contrastive Analysis of the Culture and Source and the Target Language*, in IRAL, VI/2/1975, pp. 1ff.

Taylor, C. V., *Sources of Error in Foreign Language Teaching*, in ELT Journal, No. 25 (1975).

Wilkins, D. A., (1974), *Linguistics in Language Teaching*, Guilford and London, Edward Arnold Ltd., pp. 190ff.

Witter, Rev. W. E., (1888), *Outline Grammar of the Lotha Naga Language with a Vocabulary and Illustrative Sentences*, Superintendent. Government Printing Press, Calcutta.